[illegible]

रांम रांम रांम रांम रांम रांम रांम रांम रांम रांम

अथ स्वांमी जी श्री रांमचरणजी म्हाराजि का स

बद लिष्यते ॥ स्तुति का ॥ किवत ॥ नमो रांमरम

तीत नमो गुरदेव स्वांमी ॥ नमो नमो सब संत नां केर

दिस हेतु स्वांमी ॥ जिन के चरणं [illegible]

हमारा ॥ तन मन धन अरु प्रांन करुं न्योछावर सा

रा ॥ रांमसतगुरदेव बिन नहीं और आधार ॥ रांमचर

ण करजोडि कै बंदै बारूं बार ॥१॥ निरंजण स्तुति ॥

नमो रांम रमतीत [illegible] ॥ स [illegible]

[illegible] स्वांमी ॥ [illegible]

[illegible] निवासी ॥ जगतिबिष्टलता ॥ ज
[illegible] जोरे ॥ राम चरण बंदन करै
सबईसनके ईस ॥ जगपालक तुम जगतगुर जग
जीवनजगदीस ॥ ३ ॥ आनंदघनसुषरासिचितानंद
करतारसांई ॥ [illegible] विरद पत्र [illegible]
[illegible] नाहिदरण [illegible] करो रास
[illegible] अजनमी अजयातिदेव
॥ रामचरणबंदनकरै अलदै अषमतनूर ॥ सुष
मिथ्यलषा लीनहीरहास कलनरपूर ॥ ३ ॥ नमो
नमोपरब्रह्मनमो [illegible] राया ॥ नमो [illegible]
[illegible] जगयान आया ॥ नमो अलेषपुरु

न हीं कोई करम न काया । नमो आप आप नहीं
ह्यार न पाया । सिव सनकादिक सेस तूं रटत न पावे
। राम चरण बंदन करे नमो निरंजण कंत ॥ १ ॥
क्रिपा राम कहि आवत रे जीव न भ्रम दरसम
म रे जन करा इस मि जांन लिपात हो वैक हूं नाहीं
जत वैकुंठ यूंहीं सब संतन मांही । परमारथ परबी
मि पीपा परमांन । दास गाथा अमरी कराम के प्राछे
। राम चरण बंदन करे माया मां जि आ लिपत रहे ।
पा राम कहि आवत रे जीव न भ्रम दरसण रहे ॥ २ ॥

हीत राम गुरदेव जी क्रांति हूं कालके संत । जन

रांमचरण की ॥ बंदन बार अनंत ॥१॥ ग्रंथ ॥ दुहा ॥ सत
गुर परम निधान पद ॥ हद संबेहद जोइ ॥ रांमचरण बंदन
करे ॥ ब्रह्मरूप नित सोइ ॥१॥ ब्रह्मरूप गुर संत सूं ॥ प्रग
रजन किरपाल ॥ रांमचरण बंदन करे ॥ सतगुर परम द
याल ॥२॥ बंदन कर बीनती करूं ॥ सुण परम गुर आप
रांमचरण की अरज एहो ॥ जो मेटे हरण संताप ॥३॥ झूल
णा ॥ भवभंजन कूं गुर आप सदी दिनरूप प्रकास करा
इ है जी ॥ जथा होइ सो चीज निजर आवे भघ छाफिन ग्रमगु
लाइ है जी ॥ गुर बाइक लाइक साहिब प्यारे निज धाम सो रांम
मिलाइ है जी ॥ जन रांमचरण होवे सिधि कारिज सो गुर सा
षि बताइ है जी ॥४॥ कवित ॥ परम परा सूं साषि काज सि
धि गुर सूं षिगावे ॥ गुर बिन काज न होइ जो इ तिरलोकी
आवे ॥ बेद पुरान कुरांन सासतर नौ ब्याकरण ॥ सिधि

साधिक जो गे सक है जो गुरु सांगि भति राणी । तिरि सागर
संसार कुं परसै रां मन्त्र रूप । रामचरण बंदन करै संत
गुरु ग्यान सरूप । प गरू ग्यान के रूप मन्त्र रूप मधर मे
देंगा वन सति ग्रस सिनि निसे दब्रह्म बार के सुष मंत्र
न परै । तितको इपि इ तासके पाप जर हरि है । माहा मंत्र
जो राम नाम बकसी सज करि है । ऐसे दीनदयाल गुरु त
रमै बसो सदीव । रामचरण सरणे सदा जो मेरी रक्षा की
व ६ [illegible] रक्षा करि गुरु देव है । ह वै साचो जाप
[illegible] सुमरवा तिकरे मिटै सकल संताप ७
[illegible] ताप मिटावन गरू त्वो तिकरन्स भव
ता है ज्ञान दकार उदार सार समता तस प्रवाहै
ऊध उदर ता तारी है [illegible] ब्रह्म स्वता है । ब्रह्म
भजन नसै [illegible] न तो न भूगा मे नही ज्ञा वै [illegible]

गोरख आतमी सतगुरजी सूंही बणै॥ रामचरणपीरं
रसबोहो सूं जन णीं ना जाणै॥८॥ अरु कस्यां जननीक
ना जणै जो पीवै रामरस्यां॥
पकी नाणि रामिटै जीव की बाणि हाणि॥
बजावै निरविष निरमल अणभै उपदेस मावै॥
गुर बाइ कम कही ही ऐ अकल निकु रिछा॥ [illegible] न॥
कब तेना जणै जो पीवै रामरसा॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible] रामरसांइ॥ पावौ सतगुर नै दखतावौ ताको
आप परम गुर परचे पूरा मो हिरदौ सो पाको आप
अगम की अणभै बोलौ॥ घो लै हम रासा सा निरसंसे
निरमल नरस पावौ जूं कोइ करै न बांसा॥ तिरलोकी त
रती क करां न तिं दूढो बेद पुरानां॥ ग्यान कला पर
कास करन को॥ सतगुर सम नहीं आंना॥

गुरसेवकसिरोमणि गिणिगुणकासंबतावै जाकीमहमासरवलोकमै सिवव्रमादिकगा वै गमकीवातकहैसबकोइ देवमुनीरवमा रा सतगुरभेदअगमकादावै जोजतकरने पारा तातैमैसरणगतिस्वामी अंतरिजामी देवा रामरसाइणिरसकेसागर मोहिबतावो भेवा भेदबतावैसतगुरयाकौ सुणि जैमनचितलाइ सुणिकरिरामरसाइणिपावै तेजारसमिटिजाइ
तेजारससबउंदन्यारे कीयाकिरतबोहोतेरा जाकीरासवताऊंतोक सुणायौवाइकेमेरा १०
अथउरधलोकध्यान सबलगे

आप चिरतैं निधांन ॥ अधिक रहै उपाउ ॥ याहां की याफ
रथपाउ ॥ मानि रसाइण करै क्रम ॥ जिनहो मनै
पावे सरम ॥ कहै है मनुर थलोक जांहि ॥ वांहां अम
षसो न पांहि ॥ ऐ मानि रसाइण करै लोग ॥ सो कैनां
तातें जरसाइण करऐ है ॥ मति करै सिष वास्रू सनेह
अब जो मित्लोक की सुण रीति ॥ जिहां करै जगत अबि
लाष प्रीति ॥ उजि मानि रसाइण पढे बेद ॥ ब्याकरन
सासतर और भेद ॥ जिते ग्रंथ बिद्या पुरान ॥ करै अ
लोकन अकलि वांन ॥ मानि अपन पो कुलाचार कू
रै रसाइण ऐह सार ॥ रण बेत रसाइ छित्री लोग ॥ बइस
रसाइण बिण ज जोग ॥ सुद्र रसाइण किर षिकीन क
कमाइ कि प्रबीन ॥ ११ ॥ उदा ॥ ब्रह्म चिर जग्र हबांन
पुष्ट संन्यास कहै क्रम नास ॥ अप क्रम रसाइण मानि

...नोंकहु। नोकनरसांइएन्हेबा मेरेचाहिरस्
...की कोलाप्रजजोमेवे ९५ ...
...मेसांइएन्हे दिमेदसारी मटिनावे पीवेपु
तिन्नपाइन्मापमु लन्हुरजेपाके बीतेकांमबिके
रजाहे श्रिमिनुलकेमारा इकुलनांमरसालिप
वेजननिमेसरी हेरनालिमस्रकेलिरेंजाएस्मि
म्हलप नांम ... जितीमनरंजणबि
... ९६ म्हेरिरसांइलिसजमनरंजणन्नंज
... नांमरसांइलिहेमनरंजणगारु
... जोलघसाधुनसाधेयाकोतोमन
कोवनलोरजावे ने विकारनिरमल नरबासीमोच
जोतोलोपावे सिलमनकाल म्होरम्मनंतजन
नारदकेनलकामांनां नांमचरणतेरसांइलामबके

श्रबकेजाणि

॥१६॥ कूं कल्या॥ रामरसांइणिं सिरोम
त॥ ताहिसा बिनोहो संतजन॥ पलटाएमनमत
कहोइनिवड़े सारा॥ तनमनसुलिसकूपतजेसब
॥ रसांणिउतिमसदारामचरणनही॥
॥ रामरसांइणिसरबकेजांणि सिरोमणितत॥१८
॥ रामरसांइणि अजबहै॥ ताकेतुलिनकोइ॥ बेद
॥ रामरसांइणि अजबहै॥ ताकेतुलिनकोइ॥१७॥ कूं
पुरांनरसासतर॥ चलिमुकतिपदारथहोइ॥१७॥ कूं
कल्या॥ च्यारिमुकतिचोदारतनअसट सिधिनो नि
धि॥ बेदपुरांणरसासतर॥ नोंब्याकरणमधि॥ नोंब्या
करणमधिरसांइणिसारागावे॥ मानमंदरबोजके
होतसकरकूंपावे॥ रामचरणचोगांनमेंजांणरांम
रसांणि॥ ताकूंसाध्यामिटितहैजनमरणकीबांणि
॥ तनमनइ

तांणि ॥ घरि रांम चरण सतगुर कहै ॥ पीवौ रांमरसां
णि ॥ २० ॥ [illegible] ॥ रांमरसांऽणि पीइकै कितेपल
टै अंग ॥ जी बुधि सब परहरी नऐ जसी वअ नंगा न
ऐ जसी वअ नंग संग संत न कै कानै ॥ बिषीया षो
ट निवारि सुधपद आतम चीन्है ॥ रांमचरणकुं नण
सही ज्यां लग्यो रांमको रंग ॥ रांमरसांऽणि पीइकै कित
पलटै अंग ॥ २१ ॥ नीच पोंच निरणै कीयां गिणती होइ न
बीर ॥ अजा मेल गज ग्यान बिनि गिनका औ रअ भीर
असा सा उर मति धारी ॥ पीपी रांमरसांणि नऐ पद के
अधिकारी ॥ रांमचरण कोहा नारि नर कोहा के गाल
अमीर ॥ नीच पोंच निरणै कीयां गिणती होइ न बीर ॥ २२
रांमरसांऽणि तैनक सी पीयां ज पलटै अंग ॥ अजा मेल
सुत हित पायो कीयो ताहि अनंग ॥ कीयो ताहि अनंग

गजमस्तजउबारयो॥नयो नयाकरिअंतरामरसनों
चासौ॥रामचरणकेचन जोगयेबिकार जंचगी
माइलितनकसीपीया जपलटेअंग॥२॥
पाज्ञा॥जगतपलटिकैनगताबाजे॥बिषपलटि
तानी॥छा॥मीसबेअ
जुगता॥छा॥कैकामसीलसुधिधारण॥तो जपलटिसं
तोष॥क्रोधपलटिकैषिम्यापाई॥फलपलटेमनमोष
मोहपलटिनिरमोहीऊवा॥ममतामोहबतिटारी॥सो
बतिसबैकुसंगतिछोरी॥उतिमसंगतिधारी॥ऊचपल
टिअरसाचसमाना॥तजिपाषंडअभिमाना॥निरप
षीनिरअभिमानी॥साईलषेसमाना॥चंचलचित
मनोरथपलटे॥धीरजमनिठहरानी॥त्रिसनाआसा
लोरकामना॥पलटावेसोग्यानी॥छा॥कैरमरुकर

म चरण ऐसा गम गति निति निरंजण रूप ॥ अंजण अंज
न होइ गे निरंजण सु बिरूप ॥ निरंजण सुध रूप
रूप सब उपजि षपांनो ॥ जथा अरघरै गपांन साष ब
चनां सूं जांनो ॥ तब ही न चेत्याइ है उतिम जुगति अनू
प ॥ राम चरण ऐसा गम गति निति निरंजण रूप ॥ ३७ ॥ नि
ति निरंजण राम की जांणि गुरां सूं होइ ॥ गुरां बिनां स
ब लोक मै नट क्यां न है न कोइ ॥ नट क्यां न है न कोइ कि
न बेद पुरांनां ॥ जा कूं बूझै जाइ करै क्यू और बषांनां ॥
राम चरण तातै रहो गुर बाइक चित पोइ ॥ निति निरंज
ण राम की जांणि गुरां सूं होइ ॥ ३८ ॥ साषी ॥ गुर सूं जांणै गप
न गति तब सितला वै ताप ॥ राम चरण हम जांणीया गु
रू सिरोमणि आप ॥ ४० ॥ तातै गुर सिरोमणि कहीयत है सो
कारण ॥ सकल सिरोमणि है गुरू संम्रथ परम दया

पलकमें करै निहाल॥पल
त्र॥रामचरण ताहि मिलत ही पलमें करै निहाल॥पल
लसाल दोऊ तुरत मिटावै॥ आन धरम पर
टावै॥ यू सतगुर परमार थी सहजकरै
॥सकल सिरोमणि हैं गरू सं मूथ परमद्या
॥त
ल॥४१॥ कुंडल्ल॥ सतगुर परमदयाल कालकी जाल
निवारण॥ नाव नाव बेगाऊ आप जो जलसू तारण॥
आपहोइ साही कबिघन छल छेद मिटावै॥ निरत्रपदि
पऊचाइफेरि संसेन उपावै॥ रामचरण परमार थी गुरग
रवा गुण जी ति जा सं मूथ की सरणि सै मिटै सहज बिप्री
ति॥४२॥ मिटै सहज बिप्रीति गरू के सरणै आया॥ गरु
बतावै राम राम रस नांस गाया॥ आन धरम अनेक दे
षि चित चलै न जाको॥ ग्यान भगति बैराग धरम धन दी
नै पाको॥ रामचरण ऐसे गरू सरू सदा उन सूरहो॥ तन

मनअरथ्यां ऐ करसिरामराम मुषिस्तंकहो ॥ ४३ ॥ रां
मनअरथ्यां ऐकरसिरामरामसुषिस्तंकहो ॥ गुरकिरपाकौअ
मरांम जो कहै सोही गुर क्रिपा जांनौ ॥ गुरकिरपाकौअ
मरांम जोकहैसोही गुरक्रिपाजांनौ ॥ जन्म भागसाइरलीनहोइधा
रघरांमपदमांहिमिलांनौ ॥ जनभागसाइरलीनहोइधा
रांअवनांही ॥ अंचलअमलअपीणपीणगतिहरि
तिगांही ॥ रांमचरणगुरअमरहैसमरकरपिकानैक
रे ॥ गुरपरतापलैसीसपरि ॥ लोत्नपोत्नतापरहरै ॥ ४
४ ॥ लोत्न निवारणगुरुस्तरुनिति उनसंरहीऐ ॥ वेपक
डावेग्यांनतास कै गाढोगहीऐ ॥ दहीऐ डुदडुरासग्रा
सइकउनकाचरण ॥ वेगुरहीनदयालमिटावेंनैवे
मरण ॥ करणासुणिकिरपाकरैसुमरावै सुषिराम रा
मचरणसंतोषधनबकसिकैअग्निरांम ॥ ४५ ॥
ग्यांन अध्यातम सार का सतगुरजीदातार ॥ वेदपु
रांणरसासतरफुनिब्याकरणबिचार ॥ फुनिब्याकरण

बिनारखवालै गुणमहीं गाया॥ गुणं पाव गुरदेव अगम की
बिष्याला॥ रामचरण तातै करौ गुरमुषि हरि को ध्यान
दै अध्यातम ग्यान॥ ४६॥ ग्यान अ
ग को सतगुर जी दातार॥ और ठौर पावै नहीं
तीनूं लोक मझारि॥ तीनूं लोक मझारि मोहो माया
का फंदा॥ माया रहत दयाल गुरू जी हरि का बंदा
रामचरण जौ नीर सूं गुरू चै त्यारणहार॥ ग्यान अ
गति बैराग का सतगुर जी दातार॥ ४७॥ सतगुर दीन
दयाल जी समरथ सारी रीति॥ बोध अध्यातम रूप हो
तन मन बैराग जीति॥ तन मन बैराग जीति नीति लीयां
निति चारी॥ सकल धरम मुंजाद बिषमता सब टारी
री॥ रामचरण की आप पै दिर हो निति नीतम प्रीति॥ सत
गुर दीन दयाल जी समरथ सारी रीति॥ ४८॥ गुर गुण अग
म

होइनजाको किरीयासबहीबादकिरतसबगुन कोघाको रामचरणपरहारी ऐसेकोसुन मान गुनबाइकसाहिकसदासोनहीलषे अगयान ५७
गुरपारषसोहीगरूगुणातीतिगनीर
आदीतजिसापरकासवंतनिरमलजेसानीर
निरमलजेसानीरधीरधंरसातिससीहै रामनाम दातारगरूगतिजांणिअसीहै रामचरणऐहलषणसोमेरेसिरपीर गुरपारषसोहीगुरूगुणातीतिगनीर ५५ गुणातीतिसोहीगरूतबहीगुरपद सोज सदासांतिसंतोषसतजि तइडीगतिलोज जितेइडीगतिलोजसदापरसनपदराता औरउपाइनमूरिउटेअध्यातममाता रामचरणचितएकरसिकदेनउपजेलोज गुणातीतसोहीगुरूतबही

गुरपदसोच॥पद॥छंद मनहर॥ ॥रूपदसोचजाके
।नेकोनलेसकोइनिमोंही निबंधनितिआनंदमैमं
॥गुणांतीतप्पांतासोविष्यातासारीसिसटिमांही
न नजाकेरांमरूपजांनीये॥ रांमरूपसहीआ
परांमकौलगांवैरंगकरलग्रेनंगासंजावासूंसदाबांनी
ये॥रांमहीचरणलोसरणिग्रेसेगुरूजीकेसीषहमसाच
काचकमनकूजांनीये॥५७॥ग्रेसेगुरांपेसिषसाच
सांचसोकहाहै॥छंद॥ उरिमुखिसाचबिच
ररांमकोनांमहै॥दगोकपटपाषंडरूपकीभांमहै॥सो
सबहीपरहारिजारिडारिआसरे पारिहोरांमचरण
सूषसोनहोइतबआसरे॥५८॥ साचरांमगुर
बकेमिहै॥रचनांजूगीकाचा॥रांमचरणतजिआंत
रो॥सीषिगुरांपेसाच छंद मनहर सीषेजबसाचनां

लिचालीएजिनकी बिचलीमूठि॥ मनमुषचालैमन मतैगुरबाइकदेपूठि॥ ६५॥ गुरबाइकमानैनहीसो सिषजांनिचमोड॥ जासूकदेनकीजीएहेत मिलापर जोड॥ तोडचूकरैधरमकोवाकैनहीलिवलेसहीया मेंकोईसरमको॥ असाकासंगमाष्यमैनहीधरमको षोड॥ गुरबाइकमानैनहीसोसिषजांनिचमोड॥ ६६॥ गुरतौदाताग्यानकाअरसिषअग्निमानीअंग्र ग॥ वाकैकदेनलागिहेरामअनगतिकोरंग॥ रामअन गतिकोरंगलगैतबसुधिजिग्यासा॥ रंगबिरंगहो इजाइजिनकीमैलीआसा॥ वाकूसाचसुणावता षडोहोइहैजंग॥ गुरतौदाताग्यानकाअरसिषा अग्निमानीअंग॥ ६७॥ अग्निमानीसूअंतरैरह्या रहैगुरग्यान॥ निकटिरह्यांनहचेसहीअधरमघाले

करै
कोन॥अधरमघालैकानसुण्यांसबधरमनसावै॥
वैपापपाषंडकूरसंगकुगतीजावै॥तातैलोकप
रैरामकाध्यान॥अचिमानीसूंआंतरैरह्यारहै॥
॥६८॥साषी॥मनमुषसूंनाहीमिलै॥जोचा
कैपदनिरबांन॥रामचरणवैगुरमुषी॥राषैगुरको
ग्यांन॥६९॥सिषगुरमुषी॥कुंडल्या॥गुरग्यांन
रषैसोगुरमुषीवैसतगुरजीकादास॥रामचरणवाकै
हीयैसदाधरमपरकास॥सदाधरमपरकासआसअ
तिगुतमजाको॥रामभजनमैंलीनरहैमनमनसापाकै
वैसिषसाचासुलषणगुरपदजाकोबास॥गुरग्यां
नरषैसोगुरमुषीवैसतगुरजीकादास॥७०॥दास
आसग्यांनकीऔरनआसाकोइ॥करैटहलबरीदीन
ताग्रंथभजनचितपोइ॥रामभजनचितपोइऔरहि

यामदस्वादरसकरैजगतकौत्याग॥ करैजगत
कौत्यागत्यागहरिसुमरणमांही॥ औरगैरकी
दोरकछमनदोरैनांही॥ रांमचरणहदचूरिकै
ककंनवांछैराग॥ गुरकैसरणैआइलेग्यांनज
गतिबैराग॥७७॥ ग्यांनजगतिबैरागहैगुरसर
णांकीसोज॥ सरणांलीयोसुफलहैजोमननहीं
उपजेलोज॥ जोमननहीउपजैलोजषोजता
सारनिवारै॥ चितसमताउपजाइबुसंसर
बाजिबिचारै॥ रांमचरणजीऐसदागुणइंडी
सबषोज॥ ग्यांनजगतिबैरागहैगुरसरणांकी
सोज॥७८॥ अथसरणांकीसोजकौअंग॥
दूहा॥१॥ रांमरसांइणमाहारस॥ गुरसिषपारषकी
न॥ सरणांकीसोजाकहूं॥ सोसुणीयोपरबीन॥

६०॥इतीश्रीरामरसांइणबोधआनंदप्रमोधरसा
णिगुरसिषपारषनिरूपणनामसबदू॥६०॥प्रघ्र
चकेरण॥१॥सिषवचन॥दुहा॥सरणांकीसोन्नाके
॥स्वांमीजीसमझाइ॥सोमेंकुलसिजपाइकोंरकंगा
रूसरणाइ॥१॥गुरवचन॥केकल्या॥गुरसरणांकी
सोअप्रतिकहीएकाहाबणाइ॥जनमेंअसरणनेत्रम
मिटैबिघननसकेंसंताइ॥बिघननसकेसंताइगरू
रुआकरिगठा॥सदारहैहोइसरणधरमधारणमेंगा
ढा॥रामचरणवोदासहैसुषआनंदपदपाइ॥गुर
सरणांकीसोअप्रतिकहीएकाहाबणाइ॥२॥गुरके
सरणेरयांनहैजगतिजनबैराग॥समतासांतासां
तिसुषमिटैसकलदुषदाग॥मिटैसकलदुषदागर
गबिबीयादिकमारै॥हांसीहरसांरूसमनोरथमेल

टारै राम चरण अति दीनता गुरु चरणों अनुराग
गुरु कै सरणै ग्यांन है अरु तजन बैराग ३
तजन बैराग ऐसें सरणि संतां तणी जन रामहरि सरणा
२ ऐसी दास धारण करै जगत जल निस तरै जा
२ निरन्नै घरबास पैसी जाहां कोई रीति विप्रीतिन
ही रूप जै रूप जै अमीरस नित पीजे रामही चरण
ऐसें सरणि निज राम की सरणि सो पिछाणीजे ४
[illegible] सरण अैसो राम को ताहि पिछांण दास
राम चरण सुष रूप जै उ षड दरतां नास उषडुदूर
तां नास निरासी निरन्नै रहनां क्रोलम सतगुरु दस
तली यां मुष राम जक हनां विपुरक्ता बैराग दट करैन
का तें अभ्यास सरणों अैसो राम को ताहि पिछांणें दास
५ दास पदी मैं निति रहै ऐसें सरण की रीति स्वामसुहा

याचालणंकोइकरैनहीबिप्रीति॥कोइकरैनहीबिप्री
।तिधरमसजुसदाइ॥अधरमअकनअंगिसं
जोणतहेसोइ॥रामचरणजिरामकेजोइअबि
दाबीति॥दासपदीमेंनितिरहैऐसरणकीरीति॥
दासनासी॥रामचरणजीऐसदा॥सुणिसंताकीसाषि
सरणांकीरीतिहे॥मनसंकडायोराखि॥७॥
जेसरणेल्योरामकोतोमतिमुकल्योमन॥याकेदी
ज्योसांकडै॥योसाधनजोगजतन॥योसाधनजोगजु
तनस्वादकेसंगिनबहज्यो॥सहजपुरेसोपाइसदासु
मरणमेंरहज्यो॥तबइदरयोबिचलेनहीसोज्ञेसमताधं
न॥जेसरणेल्योरामकोतोमतिमुकलाज्योमन॥८॥स
रणेल्लीजेरामकोतोकीजेउतिमआस॥परहरीएआ
सात्रसधजासेबुधबिनास॥जासेबुधिबिनासग्यान

वैराग न आवै अगति होइ वै जुगति कों मनो करम
कुमावै। रांम चरण अजि रांम कूं धरि हिरदै बिसवा
स। सर णों लीजे रांम कौ तो कीजे उतिम आस। ए उ
तिम आसै रांम अजित जिस वनी चो आस। नींची
आसै नींच पद ऊंचा ब्रह्म बिलास। ऊंचा ब्रह्म बिला
स वास अत्र न काऊं चा। रांम निमति जो बिरति उ
के तिउप जावै सऊं चा। रांम चरण सुमरण करै जे
जन सरणें दास। उतिम आसै रांम अजित जिस व
नींची आस १० नींची आसै ऊंच होइ धारै सो बिप्री
ति। ऊंचा ऊंची चाही ऐ हैवका की रीति। ऐ हैवका
की रीति जाति कानाका ऐही। अजेनिरंजण रांम देह
सुष जाणै बेही। रांम चरण सरणैं रहे पाछ्या धरम सुनी
ति। नींची आसै ऊंच होइ धारै सो बिप्रीति ११ आसै

उतिमचाहीऐसंतांसरणेंआइ॥रामचरणनीचीतज्या॥

५.

क

जुगतिसूंसहजेमुकतिसमाइ॥आसेउतिमचाहीऐसं
तांसरणेंआइ॥१४॥तनसुषमनसुषमांनमदऐसबनी
चीआस॥कांहांलोकपरलोककाजोगनचाहेदास॥
जोगनचाहेदासमदासरणेंजरहावे॥औरनकोई
उपाइरांमरसनांसूंगावे॥रामचरणनिरबासनांजा
केनितिबिलास॥तनसुषमनसुषमांनमदऐसबनी
चीआस॥१५॥नीचीनिरतीहृदकरिमनिनउपावेआ
र॥रांमचरणनजीऐसहीऔरघकावेदोर॥औरघका
वेदोरजोरबलअपणोंत्यागो॥सरणेरहोसदीवबंद
गीमांकंजागो॥ऐसिषगुरदेवजीत्राषेकारिजतो

नीची निरती हु रि करि मनिं तु पावौ श्रौर ॥१४॥ रांमच
रणकै रांमजी मति उपजा ज्यो कांम ॥ सरणें संत दया
लकै रस नां उचरू रांम ॥ रस नां उचरू रांम श्रान की
षाल रनांहीं ॥ श्रान रि श्रौर निवां सुरति सुमरणकै मां
हीं ॥ कांम णिकनकै श्रावैं यौं ही बक बिसरांम ॥ रांम
चरणकै रांमजी मति उपजा ज्यो कांम ॥१५॥ श्रौर ऊ
पजै कांम नां तौ रहै श्रांम नां नांहिं ॥ क्रूरि श्रांम नां चाल
तां धरम ध्यांन सब जांहिं ॥ धरम ध्यांन सब जांहिं होइ
निरधन जग जाचै ॥ ऊंच नीच नहीं गिणें जणं जणि
श्रागें नाचै ॥ रांम चरण नह कांम होइ रांमन्न जो उरि
मांहिं ॥ श्रौर ऊपजै कांम नां तौ रहै श्रांम नां नांहिं ॥१६॥
कांम ऊपज्यां रांम की न्नगति सधै नहीं क्रूरि ॥ ज्ञांन बि
चार नगा है रै श्रौगण होइ जरूरि ॥ श्रौगण होइ जरू

रिहरिसुषसाताजागे॥सुबुधिनरहैनजीककुबोध
रजागे॥रामचरणकेचितरहोरामतुम्हारे
नरि॥कोमऊपज्यांरामकीगतिसमझैनहीमूढ़॥१७
रामचरणकेरामकीगतिरहोउरमांहि॥नजन
रामकोनितिकरूंदूजोउचरूंनाहि॥दूजोचरूंनाहिस्यं
मकोसुमरणमेरै॥रामगरीबनवाजमहरिराषोनेरै॥घे
रेकबकंनांघिरूंमायामोहोकेजांहि॥रामचरणकेरांम
कीगतिरहोउरमांहि॥१८॥दूजीउपजेदिलमहीं
हीसरणांकीजांणि॥रामचरणजांण्यांपछेरहैनकोईबां
ण रहैनकोईबांणि॥आंणिइकतारअषंमा॥जीसांईकी
सरणरहैसबहीबिहमभा॥औसीनहचैराषिकरिमन
कूंनलटाआंणि॥दूजीऊपजेदिलमहींतोनहीसरणां
कीजांणि॥१९॥सरणोपायोरामकोतोमनकीबोरखबा

इ लोकालोकी भोगसुषजांहां न चित चलाइ ॥ जांहां
न चित चलाइ रहे रजवाई मांही ॥ स्यांम धरमीदास अ
समैली कोइ नांही ॥ रांमचरणवैरांमका सरणें आनंद
पाइ ॥ सरणें पायो रांमको तो मनकी षोइ षषाइ ॥ २०
मन राषो माहाराजि का भजन मांहि गलतांन ॥ कबहूं
न ऊपजे ऊरमांसदा निरंतरि ध्यांन ॥ सदा निरंतर
ध्यांन ग्यांन रूजौन ही जाके ॥ दोइ अबिर अहुति रांम
रसनां सुं लाषे ॥ रांमचरण वा दासको सब लोकासु
नमांन ॥ मन राषो माहाराजि का भजन मांहि गल
तांन ॥ २१ ॥ सरणें लेबो सुफल है जाके औसी रीति ॥
तन मन इंद्री बसि कीयां तज्या सकल बिप्रीति ॥ तज्या
सकल बिप्रीति जीति जुग जगतें न्यारा ॥ गुरपरता
पंजसी सिलीयां मांइका प्यारा ॥ रांमचरण चित ऐकर

तावै नितिनीति ॥ सरणै लेबो सुफल है जाकै
ति ॥२२॥ रीति धरम सिष धारीया गुर समर
दा अचाहि तो राम चरणा तासिष कै सदआनंद
बरताइ ॥ सद आनंद बरताइ कै दे दलगीरी नांही
राम जन जन सु प्रीति दिने दिन बधती जांही ॥ ऐ जुगति
सरणां तणी जगति करै सो पाइ ॥ रीति धरम सिष धारी
या गुर समृथ सदा अचाहि ॥२३॥ गुर समरथ सिष स
रणि रहै तो समृथ होत न बार ॥ ज्यु त्रगील टपल टिकै
करै जग निरधार ॥ करै जग निरधार दीप दीपक सभि
करहै ॥ होइ बेदरदरीया व बेदरदरीया जो परहै ॥ राम
चरण जजी ऐसदा ऐसे मर थका उपगार ॥ गुर समृथ सि
ष सरणि रहै तो समृथ होत न बार ॥२४॥ ॐ हा प्रिथी
मूल न संचस्यो ॥ उदिक उद को नाही ॥ व धत बेरला

कनक कै भेद जीव जगदीस बषानो ॥ रामचरण उती
या नहीं महीं बाजिगर कर राम है ॥ जाकूं परगट दरसि
है जेजन निति नह कौं म है ॥ ३४ ॥ कुंडल्या ॥ राम
भजन करतां गाई कांम कषाइ कूं बांण ॥ उज्जलत
न मन ध्यान मांणे भजन माहातम जांण ॥ ऐ भजन
माहातम जांणि जांणि अैसे निति भजी ऐ ॥ रामराम
दोइ अंक सदा मुष उरमे सजी ऐ ॥ रामचरण चित एक
रास सरूप साई कूं ताज ॥ सब धरमा कौ मूल है राम स
कल सिरताज ॥ ३५ ॥ सबही के सिरताज है राम निरंज
ण नाथ ॥ जाकूं पार पुगावही ताकौ पकडै हाथ ॥ ताकौ
पकडै हाथ घात मेटण घण नामी ॥ घटघट मैं ब्यापी
क सरब के अंतरि जांमी ॥ रामचरण जिज मिलि रहौ
ज्यूं कदे न बिछडै साथ ॥ सबही के सिरताज है राम नि

रजणनाथ॥३६॥ राम निरंजण नाथ कै रे मन सुमरि ॥ बेद पुराण र सासतर योसबही कोजी वायो जीव जगत गुर निति अबिनासी॥ जाके स रणे होइ पड़ै नही जम की पासी॥ राम चरणसब कोज सिधि सिरि परि सं मरण पीव॥ राम निरंजण नाथ कै रे मन सुमरि सदीव॥३७॥ सुमरण करो सदीव निति परापरै पद राम॥ राम चरण तब पाइहो अगम अचलमु काम॥ अगम अचल मु काम काम नासबसि त लावै॥ सदा साति सुष लीन कदे नही जो मैं आवै॥ निर भैपद आनंद मैं रहै सदा अब जाम॥ सुमरण करो सदी व निति परापरै पद राम॥३८॥ कवित॥ परम पद इक राम काम नासबही पूरन॥ उपजावै संतोष मनोरथ क रहै चूरन॥ सदा साति सुष लीन तीन गुण पार रहा॥

वै। उरै उरै की अजक उं द उरमति मिटावै रामचर
णइकरामजी सुषिमघफलसरबंग। जाकौ जेसुमरण
करै जाकै सुष अनंग उण। कवित्त। सुमरै राम अने
गके। जाको नेग न होइ। रामचरण निरनै सदा ने
र मर रहत नणसोइ। १०। कवित्त। नरमर रहत नेमे
ज पुंज धरम नको सांइ। अधरम और अग्यान आन
मत जाइ बिलाइ। करे सुध परबुधि पापपुंजनकंजारे
नेकबिघन अयसु गन सुमरतां हरि निबारै। आनंद
करि उरि मैं बसै राम निरंजण देव। रामचरण नितिसुम
रि हु मेरैया ही टेव। ११। चंद्रायणा। मेरैया ही टेवमज
नइक राम को। हरजा हरि निवारिकनद चौ नांमको। गुर
पकडायो ग्यान रहौ उरि मैसदा। परिहां रामचरण बिनि
रामनही हरजी कदा। १२। कुंडल्या। हरजी दिल सुध रैन

हीउधरैनांहीप्रांण॥प्रांणउधरयांबाहिरसबहीकि
रतअजांण॥सबहीकिरतअजांणकीयांकोहासि
लकांहीसमताउपजीनांहिआदगुरिअंतरिमांही
रांमचरणफलपाईतबलेगेनजमकाबांण॥६
जीदिलसुधरैनहीउधरैनांहीप्रांण॥४२॥प्रांणउधार
णपरमगुरजोभैनजनरांम॥रांमचरणजीयांघ
कोपावननखसखगंम॥पावननखसखगंमनाकिअं
तरिसुचिकारी॥बालतरणविधकंबनीचाकाहाना
री॥सबहीकेअधिकारहैसारधरमसुषधांम॥प्रांण
उधारणपरमगुरजोभैनजनरांम॥४४॥जोभैनजनमन
भजनेरांमतुम्हारोनांम॥लेतखेदखडखडनहीजीय
गतिनांहीरांम॥जीवागतिनांहीरांमकामनासकलनि
वारण॥जुगिजुगिबमीजिहाजअधमजीवयारउत

ता॥ रांमचरणचरणांरतामता। अगमउरिध्यांन प्रे
मप्रीतिपरतीतिपणकणरूपा निजगपांन ॥५०॥ क
णरूपाकरणीलीयांगपांनअ ध्यातमसार॥ उतीया
चरमनिवारकैरांमहीरांमउचार॥ रांमहीरांमउ
च्चार पारनै जाणसोही॥ उदरहतिनिरउदसदा
सुषीयाजनवोही॥ रांमचरणमनबिच्चिधरमजा
कैपरउपगार॥ कणरूपाकरणीलीयांगपांनअध्या
तमसार॥५१॥ सो अध्यातमज्ञानकहीए॥ अ
ध्यातमअणनेउकति जासजुगति बिचार॥ कार
णब्रह्मअगाधतितिकारिजसबसंसार॥ कारि
जसबसंसारछोटकाहामोटाहोइ॥ कंचनऐकस
रूपतिंनिभूषणमेजोइ॥ आदिअंतिसुषहेमहरि
भूषणजगतनिसार॥ अध्यातमअणनेउकति

जासूं जुगति बिचार ॥ ५२ ॥ जुगति अ जै निति राम
कूं उदै अध्यातम ग्यान ॥ उतिम जन उतिम कथा उ
तिम ब्रह्म समान ॥ उतिम ब्रह्म समान अआंन न अ
मन कोइ ॥ निरनै निरमल दिसटि बासना मैली
षोइ ॥ सदा तिरपत्या रहैत है प्रकासिक जंम आंन
जुगति अ जै निति रांम कूं उदै अध्यातम ग्यान ॥ ५३ ॥
ग्यान अध्यातम जांणीए जासूं अधातिम मिटि जा
समतालीयां सदीव जे सारासार दिषाइ ॥ जे सारासा
र दिषाइ अ सार जत्यागान करि है ॥ सार रांम कौ नां
म सदा रसनां उचरि है ॥ समरस कसंसे नहीं रहै सं
तोष जपाइ ॥ ग्यान अध्यातम जांणीए जासूं अधाति
म मिटि जाइ ॥ ५४ ॥ अभ्यास की आंन कीतिम अ
ग्यान अधीयार ॥ मिटै अध्यातम ग्यान सूं तब अर ।

सिपरसिदीदारतनबअरसिपरसिदीदार ॥ आप
आपणपौचेषेसुषमघूतन्नरिपूरिरामरमता
सबठूषे ॥ रामचरणरटीयाघकानगेनरमका
नार ॥ अधाआसकीआंनकीतिमअगपांनअ
धीयार ॥ ५५ ॥ साषी ॥ तिमरमिद्यासाइरद्याजा
णांऐकसमांनि ॥ रामचरणदीरघमताज्यांगरवा
णां ॥ ५६ ॥ कुंडल्या ॥ ज्यांगरवाइग्यांनकीकोइआंन
मांनकीनांहि ॥ जेन्याराजगतबिकारसेसमफिली
यांमननमांहि ॥ समफिलीयांमननमांहिउपाध्यांनि
कटिनजावै ॥ जेजावैतौसुषमताबादबधावै
रामनजनलागपारहैनहीफोडदिसाचलिजांहि
ज्यांगरवाइग्यांनकीकोइआंनमांनकीनांहि ॥ ५७
ग्यांनीजनगरवासहीसहीकीयाकरतारदूजी

कोई बा
दि लग्न आवै नही कोइ बातां करो हजार॥ कोइ बि
तां करो हजार सार बिनि क कसणा को॥ कण बि
नि मिटे न भूष गीत भोजन का गाके॥ राम चरण ल
छिपा न ए नजि ति रि ए लो धार॥ गपानी जन गरवा
सही सही कीया करतार॥ ५० ॥ गपानी गुण गंगीर है
धीर जलीया ध्यान॥ पीर प जो सिर परि सदा बरतै न
ही अगपान॥ बरतै नही अगपान अमान मतत न न जां
णे॥ एक राम सरबग अंग अंग आप बषाने॥ सु
षिम घूल न नर परन्हर निरमल सुषदानी॥ राम च
रण जि राम कहावै असे गपानी॥ ५१ ॥ छंद रूसन है
गपानी गुण पार निरधार सो अलेप अपलापद न
गरि बैठे बासना बिकारी है॥ निरबासी निरबं
धसदा फिरत सुछंद होइ दोइ पण टेरि कीया

कर्ताबिचारीहै ॥ ऐकसोअलेषलेषलषेकून
ऐसीगतिसतिचिदानंदकंदचोकसऐधारीहै
रामहीचरणनितिउतिमजनकरैरामरामऐक
रसिअनरमनासटारीहै ॥ ८० ॥ मारैअनरमनेचक
अनेकनानाफेलमनतनसेकतबकछूकरैन
करांवनां ॥ जांणेजगदीसईसरामजीअषकेसारेणि
णेकूणघाटिबाधिऐकरसिनावनां ॥ असेमनषी
रनितिग्यांनीकेगंभीरमतोरूपज्योअनितिसा
रोजांणेसबजावनां ॥ रामहीचरणजनसांसेसब
टारिबैरपैवेसुषसागरमेरामरामगावनां ॥ ८१ ॥
रामरामगावैनहींअनरममेअुलावेकदेसषेसबसा
धनचलैनकोईरीतिसूं ॥ नानासुषभोगकेसंजो
गआइमिलेतोहीवोहीग्यांनध्यानध्रमकिगैना

बिप्रातिस॥ तनकौबिकारनाडौनरैजोबिचारली
यामनडजीजेरबरतैजनीतिसं॥रामहीचरणजान
सुषीयासदीवग्यानीजानीयेजुगतिसारीनजनकी
जीतिस॥८२॥चेदजाइ[illegible]जीतेग्यानीजनमीन
कमारिकै॥इज्याकेरसजोगसकलहीटारिकै॥
नजैरामरमतीतिजनोकीरीतिहै॥परिहाराम
चरणऐदेबिउपज्याबीतिहै॥८३॥कैसैलोकही
तैहै॥कैसैत्या॥उपजीउपजीनरमनाउपजे
सोषपिजाइ॥निरउपजिकनिरतैसदारामनि
रंजणराइ॥रामनिरजणराइतासकोसुमरणकी
जे॥सुमरिसुमरिचितलोइज्यामीप्यालोनरिषी
जेरामचरणनिरतैरहोनिरउपजिकपदपाइ॥ ८४
उपजीउपजीनरमनाउपजेसोषपि

उपजै सो ही सब षपै पांच तीन कै मांहि छोट मोट ऊंचा तल्हा उबरै कोइ नांहि ॥ अकलि सूं सबै निहारो ॥ तातैं तलब लगाइ राम ही राम उचारो ॥ रामचरण तब होइ सुष दुष दूर ताजा हि ॥ उपजै सो ही सब षपै पांच तीन कै मांहि ॥ ६५ ॥ पांच तीन मे आवणां पांच तीन मे जात ॥ बार बार उपजे षपे काल करत है घात ॥ काल करत है घात बात ऐनां ही छांनै ॥ संत कहै समझाइ अधन रतो हीन मांनै ॥ रामचरण नर जीव सदा करि सतगुर को साथ ॥ पांच तीन मे आवणां पांच तीन मे जात ॥ ६६ ॥ आवणं जावणं जगत उपजे षपै नहीं जगत गुर चित पोइ ॥ चित चोगांन मे दडी ज्यूं रलत है टलत नहीं रैण दिन दुष होइ ॥ दुष दिन रात जां

सार

होस्यो ॥ तिसुषनां मिलै चलै चलन होइ ब्बहै नरमनो
रा ॥ ऐक अक्षर दोइ की बात मति जांणी यौ जांण अजो
णसंसारा ॥ जांण परबीण सोही जांणि हरि कै जपे
ऊपजै षपै नही जगत मांही ॥ रांमही चरण मनधी
र धर रहत है जिन कै आवण जांण नांही ॥ ६०॥
ऊदसांइ ॥ ऊपज्या आवै जाइ रहै नेही थीर रै ॥ बी
र बारै बद नीति नुजा ति रै नीर रै ॥ ताते रम न थीर
ऊवो जे चाही रै ॥ परहा निरऊपजि कनिरसिधरांमके
गाइ रो ॥ ६१ ॥ निरऊपजि कनिरबांण रांम परआप है ॥ स
दा थीर रग नीर जिन कूं काजाय है ॥ जे जपि है मन लाइ न ऊप
जे फेरि रे ॥ परिहा रांम चरण मन बिति लइ निज घेरि रे ॥
हरि ॥ ऊपज्या जावै बीति प्रीत कासं करै ॥ ऊंच नीच तिरो
लोक मांहि जो तन धरै ॥ तन मन

उपजै सो ही सब षपै पांच तीन कै मांहि छोट मोट ऊंचा तल्हा उबरै कोइ नांहिं अकलि सू सबै निहारो तातै तलब लगाइ राम ही राम उचारो राम चरण तब होइ सुष दुष दूर ता जांहि उपजै सो ही सब षपै पांच तीन कै मांहि ६५ पांच तीन मैं आवणां पांच तीन मै जात बार बार उपजै षपै काल करत है घात काल करत है घात बात ऐनां ही छांनै संत कहै समझाइ अधनर तो हीन मानै राम चरण नर जी सदा करि सतगुर को साथ पांच तीन मैं आवणां पांच तीन मै जात ६६ आवणां जावणां जगत उपजै षपै नहीं जगत गुरा चित पोइ चित चौगांन मै दडी ज्यूं रुलत है टलत नही रैण दिन दुष होइ दुष दिन रात जा

सार

होस्यो तिसुषनां मिलैचलैचलहोइ बहैनरमना

रा ऐकअक्षरदोइ कीबातमति जांणी थो जांणअजा

णसंसारा॥ जांणपरबीणसोही जांणहरिकं जपे

ऊपजेषपेनही जगतमांही॥ रामही चरणमनधी

रधररहतहै जिनकै आवणजांणनाही॥६७॥

बदराइया॥ उपज्याआवैजाइ रहै नही थीरदेवा

र बार बटनीति जुजा तिदं मीरदे ताते रमनथीर

ऊबीजे चाहीए॥ परहानिरउपजिकनिरलिषरामकं

गाइये॥६८॥ निरउपजिक निरबांणरामपरआपहै॥ स

रापीरगंचीरजिनकूंका जापहै॥ जेजपिहैमनलाइन्नूउप

जेफेरिपरिहां

६९॥ उपज्याजावबीतु

लोकमांहिजो

उपजेसोहीसबषपेपांचतीनकैमांहिछोटमो
टऊंचातल्हाउबरैकोईनांहिंअकलिसूंसबै
निहारौ॥तातैतलबत्नगाइरामहीरामउचारौ
रामचूरणतबहोइसुषडुषडुंदरताजांहि॥उप
जेसोहीसबषपेपांचतीनकेमांहि॥६५॥पांचती
नमैआवणांपांचतीनमेजात॥बारबारउपजे
षपेकालकरतहैघात॥कालकरतहैघातबात
ऐनांहीछांने॥संतकहैसमजाइअधनरतोहीनमा
ने॥रामचरणनजीऐसदाकरिसतगुरकोसाथ॥
पांचतीनमेंआवणांपांचतीनमेजात॥६६॥६६॥
ता॥आवणजावणजगतउपजेषपैनहीजग
तगुरचिंतपोइ॥चितचोगांनमेदडीज्यूंरूलत
हैंटलतनहीरैणदिनडुषहोइ॥डुषदिनरातजां

सार

होस्यो तिसुषनां मिलै चलै चल होइ बहै नर मन
रा॥ ऐके अरदोइ की बात मति जाणीयो जाण अजा
ण संसारा॥ जाण परबीण सोही जाणि हरि के जपे
ऊप जे थपे नही जगत मांही॥ रामही चरण मन धी
र धर रहत है जिन के आवण जाण नांही॥६७॥
चंदलाइगा॥ उपज्या आवे जाइ रहै नेही णीरसे॥ बी
र बारे बद नीति नुगा ति से नीरसे॥ ताते रमनथी र
उ बीजे चाहीए॥ परिहां निर उपजिक निरसिध राम के
गाइयो॥६८॥ निर उपजिक निरबाण राम परआपहे॥ स
दा थीर गंभीर जिन्हू का जाप है॥ जे जपिहै मन लाइ न उप
जै फेरिरे॥ परिहां राम चरण मन बिलिलै इ निज घेरिरे॥
६९॥ उपज्या जावै बीति प्रीत का संकरे॥ ऊंच नीच तिरलोक मांहि जो तन धरे॥

परिहरि रामचरण नजिकै गनो मपे : है ७॥
मकोरूपमन्ध्र कृपमन्धापुर कृपैतु मैनो क्रिष्ण
जायरे जाकेस्सू मसैसां कैसेक्रोनदर परिहरि रामचं
ण सुखपाइजा इउमवुदर ७८ ऊपजे सुख
इउपची ऊपज ऊपजे गंकुमरन जकेसारी
जेदेवदांगा मकै ऊपजे ऊपजे पुरुष म्मर स्मोरनारी
पजे सुक्रिमन्क्र पुरुष सारमल लोकपरलोक इग
कसार रचीरचनासन ऊपजी जाणीएका हाधर्म
रमरसे कुथाग ऊपजे कुलत पापिजाइ फिरि ऊपजे
तासकोस्थलकोमिलीजे रामकीचरणबिनि ऊपजो
रामहेतासकैमनि जुगिजुगिजीजे ७९ रामबिन
ऊपजोस्वर्ग वल क्रिगनी हैआपस्थेमन्म तिसारे
सकलघरमाहि नरपुरजोवजनः आपकवऊन

घरजू नां घरै रहै सो
रौ सं धारै ॥ घट धर घट तन्त्र रन्न घट जन्नतजन कहत
न्न होइ जात नाई ॥ ता सकी साखि सब संतजन अघट
रामः हत है बेद पुराण गाई ॥ ता ही ते सम किमन अघट
ति सुखु मरी रो उमरी ए दिल सूं इजि सारी ॥ राम ही चरण तु
न्न चिरंजीव तब सीव सानंद पद जेटि नारी ॥७३॥ सी वमे घं
री ॥ का जीव बुधि जात है बात पर सिधि सब संत गावै ॥ बेद ब
गया कहै सुख सनकादिका नेटि जो मांहि फिरि नांहि आवै ॥
अ बीन उवाजा हां जीन न्नागी सही कहीजो रीति प्रतीति सा
ची ॥ राम ही चरण निज भजन करि राम को मिलि रहौ अच
जाहो इ मन बाची ॥७४॥ पद राग प्रजाला ॥ अचलजू बा मिलि
बेहद पद मै ॥ हद की हरसति गाइवो ॥ राम राम कहै अण
नै छोला ॥ सरौ ऐसि धि पाइवो ॥ टेक ॥ जगति भजन अजपा
न्न आतम ॥ निज नरबे दस नाइवो ॥ मनो बास

संवादां बसि पड्या जाकौ सदा अदंन ॥ जोगां मांही
रोग है सो जांणै बिरला जंन ॥ ७० ॥ जोग करतां जोगी
यां रोग नहीं सै कोइ ॥ ज्यूं चोरी करतां चोर कूं मारन
सकै ऊ सोइ ॥ मार न सकै ऊ सोइ होइ अभ्यास कतिंन्ह पारा
होसी तबे हस्याब पडैगी मूढै छारा ॥ रांमचरणज
जी ऐसदा जोगां दिसा नजोइ ॥ जोग करतां जोगी
यां रोग नहीं से कोइ ॥ ७१ ॥ मीग के संगि जहर दे यूं
जोगां संगि ॥ षातां कुछि जांणै नहीं पीछै मास्यो जावै
जोग ॥ पीछै मास्यो जावै जोग लोग सबकरि है हांसी ॥
टूंपो आवै गलै लागी स्वादां की पासी ॥ रांमचरणजि
रांम कूं परहरी ऐसब जोग ॥ मीग के संगि जहर दे यूं जो
गां संगि रोग ॥ ७२ ॥ रोगी कौ मन बसि नहीं चाकै जोगस
वादां करै उपाइ बो ही जोति की नांनां करम बिषाद

नानांकरमबिषादैं बिषबधै अपारा॥सध्यांहोइसुष
चैनसध्या बिनिकरिहै कारा॥रामचरणजीरेसदा
परहरीएबिषबाद॥रोगीकोमनबसिनहीचाहेनो
गसवाद॥८३॥रोगीरोवैरोवणेजांहांतांहोआधीन॥
कांहांलोकपरलोकमैफिरेंदीनकोदीन॥फिरैदी
नकोदीनफीनगतिनोगेनांही॥सदाडुषीबेकाल
नकोदीनफीनगतिजोगेनांही॥सदाडुषीबेकाल
चालनीचीमनमांही॥जोगरोगपरहारीएमनति
रोगोकीन॥रोगीरोवैरोवणेजांहांतांहोआधीन॥
८४॥चंद्राइणा॥तजिआधीनीआसजोगपरहा
रीए॥माहारोगकौमूलकामनाकारीए॥नहकोसीलिर
रोषनेरोगाहेसही॥परिहांरामचरणजिरामबातस
चीकही॥८५॥ [illegible]॥साचीबातासाचमुषिाइम्रत
काप्याला॥रांमरसाइणपीजरे॥रहेनहीगला॥८६

श्रीरांमरसांइणिबोधग्रंथांनंदअमोधसरांमेंहुमरणा
ग्यांनअध्यारित्तांनिरूपणनांमसबद॥१७२॥उतीयो
परकरणा॥२॥अकलिबिचारकदीपेदे॥किवती
ऐहीअकलिबिचारकं॥वारसदेमेरा॥ताकूंकरितहती
करहामेंजाकेनेरा॥सोसतगुरसूंगीकसीषउनकीचित
धारे॥गुरूबतावेरांमकांमरागादिकटारे॥जीवब्रह्मकाअं
सहेउलटब्रह्मपदपाइऐ॥रांमचरणवारिसमिल्यांरांमरा
महीगाइऐ॥१॥वारसऐकोहीरांमकांमसबपूरणहारो॥२॥
जोवाकोकीयोजांण॥सकलपसारो॥उपजेषपेअनंत
ततयामेंकुछिनांही॥ऐहीजनांकीसाषिअकलिसूतो
लोमांही॥२॥बिचारजाउरिबसेकोइमुसेनषाटषाइरा
मचरणनिरसेंमजोअैसीअकलिउपाइ॥२॥कवित्त॥
पूंमूंचंदनबिंदी॥१॥ऐहअकलिकातोलपूरोऊवोसबीत

सीज्यूंजूनेंकपड़ैमोल॥ज्यूंजूनैकपड़ैमोलढोरनीजू
नीत्रैसै॥नवांबरोबरिनांहिमोलकोहोपावैकेसै॥रांमच
रणनिजित्रकलिसूंकदेनषावैझोल॥पून्यूंचंदनबिंदीण
हैत्रकलिकातोल॥३॥पूरणवासीचंद्रमाताहिनबदै
लोइ पिडवासेंघटतीकलादेषिबिचारोकोइ॥देषिबिच
रोकोइबीजसुदिसुघटरसावै॥पिदिनदिनचढतीदसा
होइयषमांहिपुजावै॥यूंनासतिबुधिमदमाघटैत्रास
तिप्रबतीहोइ॥पूरणवासीचंद्रमाताहिनबदैलोइ॥४॥
पूरणवासीकोबझोलुघदोजिकेदिन॥सुधपाषबध
तीकलासबैबिचारोमनि॥सबैबिचारोमनसबैबध
तीकचाकै॥ग्यानधरमकाहात्रोरउतिमघटतीन
हीजावै॥तातैंत्रकलिअध्यातमीबधतीहोइसंधु
पूरणवासीकोबझोलुघदोजिकैदिन॥५॥

होते हैं के मन ल्याय॥ अगनी चंचल अति बुरी दाहै ग्रिह वनसोइ॥ जसमकरै ज्ञ तिमत सूं ग्रिह मैं बीजो जोइ॥ ग्रिह मैं बीजो जो इअसैं त्रिसनां गुण जारै जसमकरै तलछि गपान ध्यानस्यूं सुरती टारै॥ राम चरण जनजिरामके त्रिसनां पावक गारि॥ चितबित धिरता राषीऐ चंचलता सब मारि॥ १६॥ सासैं सिलता चूम जल अगिपावसतणौ चढाव॥ ब साजाइ बेअकलि नरक कूटि कै नहीं पाव॥ करूटिकै नहीं पाव नाव बिनि तिरै न कोई॥ नांव नाव परमाण षेवट्या सतगुर होई॥ राम चरण तातैं कहूं ऐसा षि बिचारि सझाव॥ सासैं सिलता नर मजल अगिपावस तणौ चढाव॥ १७॥ बालक सुत मोहो चंचला देवै बुधि बिचलाइ॥ तातैं बसि करि राषीऐ मति मोहो

बसहोइजाइ॥मतिमोहो बसहोइ जाइ मोर फंद ग
लमैपासी॥बोलैसिसुसुनाइलोगसबकेरिहेंहासी॥
तातेहोइनिरमोहितारामचरणपदपाइ॥बालकसु
तमोहोचंचलादेवेबुधिबिचलाइ॥१०॥कवित॥न
रपचंचलबदनी तिनीधिध्रमचूरैसोइ॥बिगडैराजबि
कारसुषसातादेषोइ॥होइउदंगलकटकैकुजस
अरकरमबधावै॥बढैआपसिरआररैतिसबहीउ
षपावै॥तातेतजिचलपणोघणोसमावबककोक
ह्यो॥रामचरणजजिरामकंधीरधरमगाढोगह्यो॥११
॥कुंडल्या॥नारीचंचलअतिबुरीषरीबुराबीहोइ॥
जेमैआवरूआपकीपुरषरिसावैसोइ॥पुरषरिसा
वैसोइअरेसैमनसाबेराग्य॥जोअतिचंचलहोइफ
जातीकरैअजाग्य॥सोहीसजाग्यअटकदेमनो

कांमनां षोइ॥ नारी चंचल अति बुरी षरी षुराबी होइ
२०॥ कवित्त॥ हरिजन चंचल कोइ मांहा धीरज धर
म धास्यां॥ समता सील संतोष मोष पद आप बिचा
स्यां॥ सब बिधि तिरपति संत अचंचल पद चंचल ना
हीं॥ अकिंग अम्र करि तिरांम आप सुमरै मन मांहीं॥
जो कदापि चंचल ऊवै तौ जन पद रहै न कोइ॥ रांम
रा॥ न्ह चंचल सदा साधु सुष मई सोइ॥ २१॥ तुरी न मां
नै बाग ताहि चंचल अति जांनौ॥ तापरि होइ अस
वार कहै नहीं करै पयांनौ॥ यूं मन कहै निवारि अ
ती तीसो नां पावै॥ चंचल चपल जु होइ फजीती तुर
त करावै॥ ता तैं रषि बाग मैं मन तुरीयां समझाइ॥
समता सुष बधै उघउ दरता जाइ॥ २२॥ कवित्त॥
गजगमांनी चंचल बुरो करै घणां कौ नास बल बसै

हीउपहासि।करैनहीउपहास
किनल्यावै।पहिलीअंकुसधरमधस्यौ
नहीफैलउपावै।।तातैरहैमुरदैमैंतोसुषसोजात
स।।राजग्यानीचंचलबुरोकरैघणोकोनास।।२३।।
ऐमनजाणजोहिरोरिवबारकामनाहैति।।सावधा
नधीजैनहीधीजैकोइअचेत।।धीजैकोइअचेतन
मकूकाटैसोइ।।मरैमोतिबिनिअंधमंत्रतापरिना
हीहोइ।।तातैमनन्हकामकारहरिनाजिबिषलजि
देत।।ऐमनजाणजोहिरोरिवबारकामनाहैति।।२४।।
साषी।।ऐदसचंचलअतिबुरा।।धीमाहोइतोकाज।।
तोलमोलमहमांबधै।।नातिरसबैनिकाज।।२५।।सो
निकाजसालस्याकहीरहै।।कुमत्या।।सस्यामा
निमालस्याफिरैमुषमुकलाइकेपाणी।।ज्यूंआवैज्यूं

कोमनोषोइ॥ नारी चेचलअतिबुरीषरीषुराबीहोइ
२०॥ कवित॥ हरिजनचेचलकोइमाहाधीरजधर
मधास्यो॥ समतासीलसंतोषमोषपदआपविचा
स्यो॥ सबविधितिरपतिसंतअचलपदचचलनां
ही॥ अकिगअमरितिरामआपसुमरेमनमांही॥
जोकदापिचेचलहुवैतोजनपदरहैनकोइ॥ राम
रतनहुचलसदासाधसुषमईसोइ॥ २१॥ तुरीनमा
नैबागताहिचेचलअतिजानो॥ तापरिहोअस
वारकदेनहीकेरेपयानो॥ यूमनकदैनिवारिआ
तीतीसोनापावैचेचलचपलजहोइफजीतीतुर
तकरावै॥ तातेरषीबागमेमनतुरीयासमजाइ॥
समतासुषबधैइबउदरतनजाइ॥ २२॥ कमस्यो॥
गजगमनीनचेचलबुरीकरैघणांकोनासबलबसे

सो करै नहीं उपहासि
ताहि विषमें किन ल्यावै। पहिली अंकुस धरम धस्यो
नहीं फेलन पावै। ताते रहै मुरदै मेंतो सुष सो नातौ
सा॥ गाज ज्यानीचै चलबुरो करै घणा को नास॥२३॥
ऐमन जाणजो हिरो रिवबार कामना हेति॥ सावधा
न धीजे नहीं धीजे कोइ अचेत॥ धीजे कोइ अचेतता
मक काटे सोई॥ मरै मोति बिनि अधम न्रतापरिन
हीहोई॥ ताते मनन्ह काम कार हार जाजि बिषलजि
देत॥ ऐमन जाणजो हिरो रिवबार कामना हेति॥ र
साषी॥ ऐदस चंचल अति बुरा॥ धीमा होइ तो काज॥
तोलमोल मह माब थे॥ नातिर सबै निकाज॥२७॥ सो
निकाज सा ल्हा कहीं रहै॥ कै कल्हा॥ सल्हा म
निमाल्हा फिरै मुष मुकलाइकै पाणि॥ ज्यूं आवै जं

बरवरै नही बिरीयां बषत पिछांणि नही बिरी-
यां बषत पिछांणि ओर की सुणै न मांनै कोहाकू-
म काल्हा साच आप की सिरै बषांनै गुण औगुण
समझै नही कुंजस होइ न लिहांणि साल्हा मन
मांल्हा फिरै मुखि मुकलाइ कै पांणि २० साल्हा
मुख मुकलाइ करि बोलै बिना बिचार स्यांणां सु
णि मांनै नही उलटी देषि रकार उलटी देषि रका
रकार मुरजाद वहीं ना साल्हा साल्ही बात कर
तन बीना अैसे नर की आकलि मै केटे न उपजे सा
र साल्हा मुखि मुकलाइ करि बोलै बिना बिचा
र २१ अपणि बोल्या बचन की साल्हा बखै न पा
ज साच कूड को गाम नहीं बोलि र कै अकाज
बोलि र कै अकाज सुणै साल्हा की साल्हा जा

केधरमनथ्योनमुंदरीतोड्या गल्या॥रामजेजन३
षिसाचबिनिबोलेकोइनिलाजा॥अपणबोल्या
बेचनकीसाख्या॥बधेनपाजा॥३०॥साख्यासाख्या
रुलिमिलेसाख्यीबातबणाइ॥नगेफेटआइसाच
कीतबसारीहीउझिजाइ॥तबसारीहीउझिजाइक
णबिनाक्याउदरावे॥तातैनकणीबातकीयाका
हाहासिदआवे॥रामचरणनजिरामकूंसाख्यार
हौरिसा॥३१॥साख्यासाख्यारुलिमिलेसाख्यीबातबणाइ
३१॥साख्यासाख्यीबातकरिरूयांहीमनिमोद॥तोल
हीणतरकोकरैजाकेउरिननहींबोध॥जाकेउरिननहींबो
धसोधस्याणपकाटोया॥समझिनहीलगारअऊमम
तामनिमोया॥रामचरणऐसेनकूंदीजेकाहापरमोद
साख्यासाख्यीबातकरिरूयांहीमनिमोद॥३२॥ऐ(

सासा [illegible] साच सुजस

नहीं गहै रे झूठ के संगि साथि ॥ जलम गासी बाटो लगे

कछू न आवै हाथि ॥ कछू न आवे हाथि अकीरति अ

नरथ बोले ॥ चित ब्रति रहै न थीर ॥ भूत ज्यूं भरम मे ले

यूं लिषदो टाग्याही रामचंद्र जो दिनराति ॥ साच सुजस

नहीं गहै रे झूठ के संगि साथि ॥ २२ ॥ झूठ सूं टलि चाली

ऐ कदेन कीजे संगि ॥ झूठ का संग साथ सूं रामचरण

सुख भंग ॥ रामचरण सुख भंग साच उरि कदेन जागे ॥ उ

तिम गुण आ राम झूठ सूं दूरा भागे ॥ झूठ कौ आदर की

यां बिगडि जाइ सब बंग ॥ झूठ सूं टलि चाली ऐ कदेन की

जे संगि ॥ २४ ॥ झूठ पाप कौ मूल है झूठ षोटा षाइ ॥ मोटा रो

टाजा सकै का ह्नूं सूं न जराइ ॥ का ह्नूं सूं न जराइ दांइ है

रांन करावै झूठ तणौ फल कसटडु सटलै दोजिग जावै

रांमचरणतजि अवंकूरां हो रांम भयो लाइ॥ अवयापकौ
मूल है अग षोटा षाइ॥ ३५॥ साषी॥ षोटा षावे अवला॥ सा
चो रांमसनेही॥ रांमचरण ता कारणे अव परी छिटकाइ॥
३६॥ कुंकल्या॥ अव परहरे साच लो जाके साचो ग्यान॥ रां
मचरण उरमैं सदा रांम निरंजण ध्यान॥ रांम निरंजण ध्यान
ग्यान यारी न बिचारे॥ मन बच काइ कर साच संग अव
को टारे॥ हरिगुरको सरा षि मन करि निंदे हनकोन॥ अ
व परहरे साच लो जाकै ग्यान॥ ३७॥ साच ग्यान साई नजैत
जे नर मना अठ॥ अव जैसे अवला सो ही मिनष लबू
ट॥ सो ही मिनष लबूट ला पसु छापर जैसा॥ जा हा न अवो
घास धांन को हो निपजे कैसा॥ रांमचरण रहो आलिरे उप
जे अकलि अटूटि॥ साच ग्यान साई नजैत जे नर मना अ
व॥ ३८॥ रांमचरण अवगुण तणो परहर ऐपा डो सावाका

साचकाहाकरहोइसोनिजस्योआवै ॥ बिनाबाइदै
बोलिपछैसुकचैपिछतावै ॥ रामचरणपहलीसम
झिकस्योबाजीएतूर ॥ नेषिलीजेकीजेपछैबाता
कोमचकूर ॥ ४५ ॥ लछिधारीसूबातकरिबाचिक
कोतसकार ॥ लछिधारीसूलछिमिलैबाचिकसूं
संगिषुवार ॥ बाचिकसंगिषुवारसारक्रियानहीं
जाकै ॥ कीयाहीएजोहोइसंगिनहीरहीऐताकै ॥ रा
मचरणनजिरामकूकरणींकिरतबसार ॥ लछि
धारीसूबातकरिबाचिककोतसकार ॥ ४६ ॥ सा
खि बातसलगारवकीहीरषै ॥ सोरठा ॥ बाचिकबा
तलबालनकरतामनहारैनही ॥ तिनकाबाइकजा
लेकहैसुणिउलनफाडकू ॥ ४७ ॥ साषी ॥ केताही
बांच्यासुणिमनमेमोदउपाइ ॥ पेबिनिकरणीनह

चा बिना। त्ना त नहीं दरसाइ ॥ ६६ ॥ के कह्या॥ च
लिके ताही बांचो सुणो बिनि नहचै परतीति॥ ज्यूं बि
धवा गाइ रे नित्त रे ढोला मारू गीत॥ ढोला मारू जी
तह र बिमन मोद न पायो। गायो से ऊस वा गसुलो
प्रापति नहीं पायो॥ यूं किरतब को किर क्यों नहीं जे
बिना साच की रीति॥ त लिके ताही बान्चो सुणो बिनिन
हचै परतीति॥ ६७॥ बोहो बाचे बो हो साम्हले बोहो
तासिपती कीन॥ बांचि सुणि सिपती करै ग्ररथ ग्रथ
कोजीन॥ ग्ररथ ग्रथ को जीन होइ प्रबीन यसावे॥ रूजां
कूं गमनां हि बांचि सुणि मोद उपावे॥ रामचरण जी
यां बिनां रस्या दीनकादीन॥ बोहो बांचे बोहो साम्हलै बो
होतासिपती कीना॥
सुणि क्या

अत्र मांन जांण पण नांही चीन्हौ । रांमचरण बा विवेक
नरां बातां तण विनोद । बिनि करणी बातां करै बा
विवेक के मति मोद ॥ ५४ ॥ धरती बाह्यौ ऊगि है बिनि बा
ह्यौ ऊगै नांहि । रांमचरण इरै सिकू समझि देखि मन
मांहि ॥ समझि देखि मन मांहि लाभ करणी मे पावै ।
बिनि करणी सुण बाचि नफो नांही दरसावै ॥ नहब
सून जि रांम कू ज्यूं गया न ऊदो फल न पांहि ॥ धर
ती बाह्यौ ऊगि है बिनि बाह्यौ ऊगै नांहि ॥ ५५ ॥ करणी
बिनि क्या पाइ है जे अस तला की लोग । का हा विका
र बैराग मे का हा कोइ सा भी जोग । का हा कोइ सा
भी जोग बिनां सरधा नही कोइ । सरधा सू सब ब
लै जन सरधा सू होइ । रांमचरण सरधा लीया
कू दन ऊपजै सोग । करणी बिनि क्या पाइ है जे अ

सलाकीलोग॥५६॥असलाकीआसामुषीकहीए
है॥असलाकीआसामुषीउषीसदादिलकाच॥षप
तषराबीकोरह्या जाकीऐसीताछ॥जाकीऐसीता
छमनोरथषीएपराङ्॥हीए।धरमअरध्यानआन
दिसिनितिङलसा॥रामचरणहरिजनबिनि
काहादेसीदरिसाच॥असलाकीआसामुषीसदाउ
बीसदादिलकाच॥५७॥असलाक्यासंआपकोमील
नऐस्योजाइ॥आसणसजमनासधेबिकलरहेबिच
लाइ॥बिकलरहेबिचलाइसमथापकडेनांही॥जास्
केसोप्पानअसरधाअंतरिमांही॥रामचरणताआपत
एकहीकोदासमफाइ॥असलाक्यासंआपकोमीलन
ऐसोजाइ॥५८॥रामअगतिसरधालीयांकीयाकाजिसि
धहोइ॥बि

गाइबा तकूं गाडकै पाडउघाडै दास॥६९॥ रोमैं ...
लहै ... जोलिङ्गु ... प्रगट जोलिङ्गु सदास
सोई ... गुलाम ... ब्रह्म ... सो
सी ... दास नजे परब्रह्म पद हद की किरीया
त्यागि॥ बेहद मैं बासा कीया जग सुपनां सूं जागि॥
जग सुपनां सूं जागि आगि तिसनां की गरी॥ सदा सां
ति सुष पूरि हरि की एकन करनारी॥ रामचरण चित
एक रसि रहे राम त्यौ लागि॥ दास नजे परब्रह्म पद ह
द की किरीया त्यागि॥७०॥ दास कु दास्यां नां बणै जा
की आसै दोइ॥ वे समता ग है सांई नजे वे बिपतारत
जोइ॥ वे बिपतारत जोइ भोइ मा फिकजे चालै॥ दास
मनोरथ जीति आस त्रिसनां कू पालै॥ रामचरण यूं
नां बणै मिल्यां षडा सट होइ॥ दास कु दास्यां नां बणै जा

कीग्रासेदोइ॥७१॥दोहा॥ग्रायेमिलैनहींसोकहीए
हे॥कायाऐककरमकेमूंढादोइ॥ग्रमेल॥तौबो
होमूंढांबातांघणींकेसेमिलेजमेल॥केसेमिलेज
मेलमिलैनहींग्रासेमनकी॥मनमिलीयांबिनिबा
तकरैसोहीकनकनकी॥रामचरणातातेकरूप
रिसुधग्रासेनेला॥कायाऐककरमकेमूंढादोइग्रा
मेला॥७२॥बोहोमूंढाबुधिऐकहोइग्रासेऐकबिचार॥
तौवैघणानजाणीऐबोहोबूंदाइकधारा॥बोहोबूंदाइ
कधारनीरसोप्रगटकहीए॥सबकाजिसुधारण
जोगिऐकमेंग्रानदलहीए॥
रामनामततसार॥७३॥चंद्राइणा॥
ग्रुषपूरिहै॥ऐकबिनाउसदुदनिकटिपलाइ॥
तैंबातबिचारिऐकहोइकीजीएपरिहार

जिरांमन्त्रसैंसुषलीजीऐ॥७४॥दंत्यकल्याणि
मिलापमैंप्यारांकोबलहोइ॥ऐकऐकन
जासूंकहीऐदोइ॥तोजासूंकहीऐदो
बांकेरै॥दोइन्यारामासाजाइ॥आइदे
मचरणगुररांमकूंऐकरूपकरि
लापमैंप्यारांकोबलहोइ॥७५॥ऐव
इउरंगांजोइ॥दोइउपजैसोहरिका
ऐकैआंनंदहोइउरंगांरहीऐन्यार
लापऊपजैद्वैकारा॥रांमचर
आसाषोइ॥ऐकरंगासूंऐकतादे
आसैंजतिमनबिमांमिलैनमे
मिलिचालीऐतौउवैआंखिकं
संतापबोधबुधरहैनकोइ॥षे

दि
तैा
नैा
रां
कमि
ता
दै

॥ घोवैश्य कलि अध्यातम सौं जो मिलै ॥
आसें उतिमम घिमां मिलै न मैल न मिलाय ॥
नपूस्सरि न रिसां गिसरो न रि आसें नां ॥
इकत्यागी इकराग षुडा सरऊपजे मांहीं ॥ रजनी
नेलजल तेल न होई ॥ सुध आसु धन
पापपुनि मिलै न दोइ ॥ कानकरंग नांहीं मिलै
तातें रहो आप

जउदास ॥ ७८ ॥ एक कहै अहूति रामहीरा
मनचारन ॥ बेदपुराण साषि नांम जौ जल के लाय
णा ॥ एक सरल रेल बुधि कोइ व हसा वन जाके ॥ ज्यूं
वे ज्यूं कहै अन्नषां मूंढे जावै ॥ तातें ए को हो कूं मि
लैं काजा दोइ ॥ रामचरण नजि राम कूं मिलाया ॥
॥ ७७ ॥ साषी ॥ मिली यासों मिलै ॥

चाली ॥ ज्यासै उतिम देषि ॥ रामचरण कोई जहो
इ ॥ जे लिष टटर सण नेष ॥ ६० ॥ सो बेषू दूरस
णगति कसौटी कै ॥ कै कै ल्या ॥ सलिता साइर जल
बिना यूं रामजन जन बिनि नेष ॥ बाहद जाली तप
तिज्ञ तिया के त्रिसना रेष ॥ या के त्रिसना रेष ज्या लेषी
राम बिसार्‌या ॥ ज्या सालो नर कामरस गिमाम जहा
स्या ॥ साता समता नां नई करै जो हांता हाथे का ॥ सलि
तासाइर जल बिना यूं राम जन बिनि नेष ॥ ६१ ॥
साषी ॥ राम जन बिनि नेष धरि जु का ज्या इहवा
ल ॥ जू षहीं जू षपुकारि है ॥ करणी बिना कंगाल ॥ ६२ ॥
कं मक्या ॥ बिनि करणी सामी पण फीटी मानि मरो
ड ॥ जोगा की नाव टिलीया देस्वारथ स्वादा दोड ॥ दे
स्वारथ स्वादा दोड सभ्या सानंद उपजावै ॥ बिनि स

मांहोइबेजोषकरैकलचाउषपावै॥ गुणऔगुण
समझैनहींमांकैफ़गजोड॥ बिनिकरणीस्यांमीपरख
फीटीमांनिमरोड॥६३॥साषी॥अतीतअजुगती॥
बातकरि॥मनिमानतअहलाद॥परनारीफ़गेबा
जडो॥चाटैकरिकेरिस्वाद॥६४॥गाफिलतामैंगोब
स्यां॥दीन्होनेलमचाइ॥दमडीचमडीसूरता॥गुरसुष
पानगुमाइ॥६५॥कफ़ल्यो॥कनकमिल्योकामणि
मिलीमिलीयोउनीयांबारि॥जमीमिलीजाइगांमिली
बधेगायोजगतबिकार॥बधिगयोजगतबिकारअग
तिकोअेषबणाया॥असुषकामनालीनसीलसम
ताजगुमाया॥असेचहनकलूकालमैंकुकेमकोअ
बिकार॥कनकमिल्योकोमणिमिलीयोउनीयांबारि
६६॥एतामिलीयांमनछुसीसोकाहाकरैबैराग॥ते
।जपा॥
नसुषमांहीमगनअ

बोओउनी योरागत्रागमदन्नजनबहीणं॥ ग्यानही
णगुण चोर जो हो तो हो फिरिहै दीनां॥ रामविमुषत
नत्रे षधरिलायो विषीयादाग॥ ग्रहत्यागि ग्रिहसूं
रतामायामोहोसूंलाग॥ ८७॥ नगवी वोढपछे वडोक
हे गुसांई नाम॥ छोडै चालै जगत कै करै चाकरीको
म॥ करै चाकरी कामसकासंकरका॥ नाजे॥ नालस
ती तिलक गलै रुद्राससविराजे॥ सिवसुपनेसुम
रै नही निधड कन्त्राह्रजोम॥ नगवीवोढिपछेवडोक
हे गुसांई नाम॥ ८८॥ काहा गुसांई से वडा काहा जोगी
दरवेस॥ काहा ब्राह्मण काहा जंगम। काहा कोई धा
स्यांत्रेस॥ काहा कोई धास्या नेसपेसमनसांईकर
नो॥ ग्यांनन्त्रनरमनामेटनज नेन्त्रो सागरतिरनां॥ ए
गतिसबकूं उचितहै कहै गरूउपदेस॥ काहा गुसां
ई से वडा काहा जोगी दरवेस॥ ८९॥ काहा जोगी का

…जि॥काहाजंगत
हाजंगमांकाहासेषसन्यासीउजि॥
काहासेवडाऐहजगतमेंपुजि॥ऐहजगतमें पुजि
गुफिगायानहीजांणो॥स्वारथमांहीलीनअच
क्योफगडोगाणो॥सांगपलटिसूंनांनयारांमन
लाकेसुफि॥काहाजोगीकाहाजंगमांकाहासेष
सन्यासीउजि॥१०॥काहाभिसटबाचाभिसटसृष्ट
भिष्टगुणचोर॥दिनदोषअरउरबुधिबोलेबच
नकगोर॥बोलेबचनकगोरफिरैत्रिसनांकामास्थ
केउकपटपाषंडकरैगुरग्यानविसाऱ्या॥रामच
रण्यैसेनसूंदोडिमिलैसोहीचोर॥काहाभिसटबा
चाभिसटइसटभिष्टगुणचोर॥११॥इसटभिष्ट
जेभेषधरकसटसहैदिनराति॥उसटदिलबरी
जगतकीकरतनसातासाति॥करतनसातासा
तिअंजकअठपहररहावै॥गुरकीसीषउलंघि

जगत मनि आइ गावै॥ ऐसा मिलीया उपजै
कछु न आवै हाथि॥ २ सट त्रिसट जे जे भेष धरि क
सट सहै दिन राति॥ ए र॥ कसट सहै कीरीया बि
ना फिरीया आस्यूं देस॥ काहा बिरकत नांगा मूं
दड़ा काहा मुंकत सिर केस॥ काहा मुकत सिर
केस अंजन करि मन नहीं रोक्यो॥ संजम साधि
न म क्यो स्वाद करि तन कूं पोख्यो॥ रामचरण ए
न बात [illegible] सकल लोन दीसै भेस॥ कसट सहै कि
रीया बिना फिरीया आस्यूं देस॥ ८३॥ देस दिस
तरि फिरत ही अंतरि सोध्यो नांहि॥ परमोध्यो स
सार कूं आसा धरि मन मांहि॥ आसा धरि मन मां
हि आप आपो न बिचार्यो॥ परे परै अनंत सं
त मत नाहि निहार्यो॥ रामचरण अजि राम कै
हसंत मत आहि॥ देस दिसंतर फिरत ही अं

तरसोध्योनोहि॥ ए४॥ अतरसोधे आपकोसिरप
रिदलकबणाइ।परमोधेतनमनके स्वारथस्वा
दन्हसाइँपाइसतगुरकीसिष्या॥ नाडोदेतनप्रा
णअजगरीलावरत्रिष्या॥ रामचरणरामेंजेजेह
जीतजेत्रपाइ॥ अतरसोधेआपकोसिरपरदल
कबणइ॥ ए५॥ दलकबणवेदीनकोदामाति
लकसवारि॥ दामकोमदिलसूतज्योमाईबाइ
नारि॥ माईबाईनारिहारिहरसासूबेग॥ रामज
जनदिनरातिसीलसंजममेसेंग॥ रामचरणसो
नेतबेत्रिसनोआसनिवारि॥ दलकबणवेदी
नकोदामातिलकसवारि॥ ए६॥ रेषता॥ उजिंदर
बेसकाहाजंगमांजोगीयांसेवडाओरसंन्यासधारी

तेञ्राधीनपुजारी॥धरमधाराहराकरतकाराषंबु
राईवांधिसिरपोटलान्ही॥खादञ्ररबारफुनि
रतसिंगारसुषगरुकीसीषपलनांहिचीन्ही॥
मगनमायामहीमसतमनकामनाञ्रामनाचू
रञ्रग्यानपूरा॥रामहीचरणरजदरसणीलछि
विनारामसूंवेमुषमुषिनाहिन्रा॥ए७॥न्रर मु
षिनाहिंदुषमांहिनितिहीरहैवहैविनिनारसव
न्ररमधारा॥करमकिरीयानहीञ्रासमायामही
करतवोहोउदिमञ्ररकरतकारा॥किरषिवाणि
जञ्ररवेदविद्यापढैनीषञ्ररचाकरीकिसबके
ता॥त्यागवर्त्तलोभमनवोनतानातजेनजेनिति
सूवादसुषकामहेता॥दरसणीदलकधरिबलक
मेमिलिगयापलकपरब्रह्मकूनांहिगायोराम

हीचरणचलिरामरमतीतकेदरसणपारनि
जदरसपायो॥८०॥पांचइंद्रीअरुछठोमनजी
तीयांजीतीयांलोचनअरकामसारा॥रामबांमां
तज्यांसीलसंजमसज्यांसज्यांगुरसीषसंतोष
धारा॥रामकौचजनअरु तजनअपराधकेद
रसणीजांणितबदरसजोगा॥दरसंकीयांषका
डुरसिमनहोइहेघोइहैंजीवकाहरषसोगा॥अ
सातोदरसणीअसाहीभेषधरमांनिकररामको
सुधचाले॥रामहीचरणवैंउजिपरगटहेहवक
रिहरसकीफोजपालै॥८०॥कुंडल्या॥हरसफो
जकपालवैसोहीस्तरासाध॥कुंडासंगकोनेक
रैमेटैसबअौगुधा॥मेटैसबअपराधतबेदरसण
रीमो॥जब

राम भजन करिलीजीऐ परहरीऐ सब बाद हर
स फौज कू पाल वै सोही सूरा साध ॥१००॥ हरस
ऊ सषु सि ऊपजै ऐ माया का रंग । काहि जे षका द
हरसणं ऊपजै ताहि कु संग । ऊपजै ताहि कुसं
जोग सुष साता करि है ॥ जिक आपदा पूरि
मूरि मन धीर न धरि है ॥ दरसण पहस्यो दास गी
कीजे सब उतंग ॥ हरस ऊ सि ऊपजै ऐ माया का
रंग ॥१०१॥ सो माया रंग आ गै कहै गे ॥ इ हां
अकलि धारि कुलछीत जो ॥ आसै करो मिलाप ॥
माया रंग आ गे क ऊ ॥ जा की जग मे ताप ॥१०२॥
इति श्री राम रसा इण ग्रंथे बोध आनंद प्र मोध अ
कलि धारि कुलछीत सकार आसै मिलाप
निरूपण नाम सकल दास रहयाति तीया प

रकरण॥३॥माया[illegible]कहोसैंहै॥कुलखणो॥
मायाकेरग॥अनंतप्यारताकोपारकोहोकुणपाइ
हैजी॥छलछंदअनेकदिषाइमारेरसरगामेजीव
नुलाइहैजी॥कछूक्याइरहैंककीजाइरहैंमाधि
बीचिमैंकोहोतकुलाइहैजी॥जनरामचरणदे
बीचिमैंकोहोतकुलाइहैजी॥१॥कै
जनसहीमायादेषिनचितचलाइहैजी॥१॥कै
जनसहीमायादेषिनचितचलाइहैजी॥[illegible]॥कै
सम्या॥गिणनगिणतीहोइहैमायाचिरतअपा
राताकूदेषिनधीजीहोनजीयेसिरजणहारनजी
येसिरजणहारजितीसिरजीसोमाया॥हिसटिप्र
णन

निरंजण आइ तूं थणी निरंजण आइ अणी छु तुहं दरसावे काणी काणी कं देषि कांइ मनके जन्म ला वे रांमचरण सतगुर तणी षुणी न सीष तुलाइ जणी बणी माया सबै गिणी कं ण संजाइ १ अनंत कला उपजाइ कै आ भी फिर दै सोइ कहू ईसा कै तदेकहू जो रावर होइ कहू जो रावर होइ दोइ तन करि कै आवै कनक कामणी आगर गाना नाज दिषावे ताते कहू नमंद की ए रांमचरण नाजिजो इ अनंत कला उपजाइ कै आ भी फिर दै सोइ ४ आभी फिरै अनाग णी जाता दरिकै माथ रांमचर णा को इंडबरै जाकै माथै नाग जाकै माथै नाग र है बैराग करारै सतगुर रष्या कारे रामजी आपउ बारे औरन को इ आसरो कीया किरत नाग लाग

श्रामीफिरैत्र नागणीजातांहरिकैमाघ॥ ४॥हरिमय
चालैहरिजनांमनांमनोरथजीति॥जेनिरंजण
रामकूतजिमायाबिप्रीति॥तजिमायाबिप्रीतिरी॥
गतिमजोधारैग्यांनकरमपरहारिग्यानगुरको
जबिचार॥रामचरणतजिकामनाराषौसदासु
नीति॥हरिमयचालैहरिजनामनामनोरथजी।
बाजीगरकरतार॥

छि

जांहोइजौयार॥
रतार॥७॥माघ

जाण पण रहै न कोइ पीछै उ पीयाले होइ हरि
रूप जै जोइ ताते माया परहरै के सो राम
ना माया कैनहीं न देषी ये दृष्या होइ है ये नाउ
माया देष रही दरिद्र लिजावै माया को
रूप कला है जी अजई सई सादिक रिषी
जिष माणि किया काहा गाई है जी जप तप
ग्यादिक जोग करै मद मान अहंकार ब
जी जन राम चरण जननि नामाया
ब हकाइ है जी ए कोइ या
ली या कोई आग लिले जी
इ पड्या कोई जो इप
किसे न करे के तो बे न करे
है जी जन राम चरण बचे

गाइहैजी॥१०॥कोमनोऊपरिजोरमायाकाया
हैजी॥जेसैफसमेपावककफेलि
कसिहारलगारन
सारसषैबोहोत्ताति्त्रेसैकरिषाइहैजी जनरामच
रणनजनकरौत्रेसीरीतिमायाउषदाइहैजी॥११
कोइसीतसहैकोइघामिसहैकोपावसपछत्ताइ
हैजी॥कोइनीरतिरैबननाहिमरैकोइद्दरिदसतर
जाइहैजी॥कोइनषसहैकोइप्यासहैमायाआवे
मेरैयूगाइहैजी॥कोइबाटन्हालैकोइजडितालेको
इरोवतकोइहसाइहैजी॥१२॥कहत्या॥केरोवैके
हीहसैकेलडैजुडैमरिजाइ॥केहीकिसबकिरीयाक
रैमायातणीउपाइ॥मायातणीउपाउत्याइघरिमा
हीधरिहै॥धोकलिधाडित्रनेकराजतसकरसक

रिहे ॥ ऊड जिन्हू के अजकया नही सो अतिउकला१
के रो वे केहीहमैं केलनंडै जुडैम ॥ १ ॥ जाइ ॥ १४ ॥ अति
अजकायाजीवडाई मायाकेसंगि ॥ कूपरिसुषला
लीघणी रच्यातासकेरंग ॥ रच्यातासकेरंगसदा
लीत ॥ तृउषपूरावतलायां बिप्रीतिकैपडैचूरम
चूरा ॥ रामचरणअजिरामकूतूमतिल्यावेअग
अतिअजकायाजीवडाई मायाकेसंगि ॥ १५ ॥ मा
याकासंगिदोषसैमोषिनपावेजीव ॥ अजकञ्चा
पदाधधकरिबिसल्यासंमरणपाव ॥ बिसल्यासंम
रणपावसीवसरबगिघणनोमी ॥ पडिमायाकैकी
चनगतिमैपाडीषामी ॥ रामचरणमायाबुरीक
देमतीधीजीव ॥ मायाकासंगिदोषसैमोषिनपावै
जीव ॥ १७ ॥ जीवबुधिजाकीसहीसोमायासूमोही

त मायामोसामोनवीजंगमेफिरैफजीतमैंसी॥ते
कोईसगोनजाको॥मायामायाकरतमरंतलग
मायाताको॥रामचरणंतनिछावलीसुनमुधिह
रिआदीतो॥जीवबुधिजाकीसहीसोमायासूमो
हीत॥ण॥डला॥रूपदासकेरूपसो॥मोहेसबसंस
रा॥साधूजनमोहेनही॥मोफेलोहोइबुनार॥१५
॥टी॥काबचनका॥रूपदासरूपीयाज्यासूसां
रोसंसारमोहीतहोइ॥तोपटूटैनहीआइकना
रहैजद्यांसरबराजीहोइज्योइकैसो॥जाहांकोइराडि
झगडोमाचै॥आंम्हासांम्हाटलआवैतोबषांना
सरूहोइ॥तरवास्यांबाजेजठेरूपदासजीसोहि
रूपीयाआइपूगो॥जद्यायाकाबचनसुणिआर

न्या होइ रहै ॥ रूपदासजी की ऐसी आइ सरमप
डै और अनेक झगडा फोटा होइ तो मिटि जाइ
ऐसे सब संसार रूपीया कै आधीन है ॥ अर जी
का सू जाइ सो बो होत बेराजी होइ ॥ जी कै आवै
सो घणो राजी होइ ॥ ऐसे राजा रंक दरसण भेष
धारी सरब मोहे गए ॥ या कूं पदारथ मान्यो ती सू
॥ अर साधू जन मोहो बा मै आए नही सो कैसे
जगत अगत का दोही दल आके सा ॥ जगै जग
त कै ऊपरै ॥ ग्यान रूपी तो बषानो सरू होइ ॥ ग्या
न का गोला छूटै ॥ तत सबद रूपी लेग चालै ॥ ज
द्यां संसार भेट पूजा लेर सांम्हा मिलै ॥ जब आ
ए न चढावै ॥ तब काइ र संसार होइ अगति रण
मै मरबा की समरथा न होइ ॥ जद्यां पूजा चढा

दुखिसटालोकर्तिलिआपणेसंसारपणेउबा
रे॥ अरऐसाधुनावधराइरपूजासूमोहीतहोइ
रपूजाउगइलेरूपीयासूराजीहोइ॥तोरामजी
काचाकरनहीगैरचाकरचाकरीचोर॥संसार
सूमिल्याकहीवेतबवाकोसाधपणरूषवारलो
इ॥ अररामजीकीचाकरीसोजगतिनजनआ
पसूबणेनही॥रामजीकोजगतिराजजमायोन
ही॥तबवाकोस्यामधरमरस्योनही॥रामजीकी
दरघमेआदरहोइनही॥ अरस्यामधरमीरामज
काजनहैजो पूजाउबसमोहीतहोइनहीसंसा
रलुटपडीकरैतामानेनहीविसटालोकरैनई
गयानकीराडिपाडेबैरागरूपीफोजदारआगेस
बाजगतनेजीतरामजीमाऊलगा

कोअनगति राजजमावे॥ आपणा सुषस्वादा की सो कछु लेनही॥ स्वामरामजीसू स्वामधरमूपा ले॥ यूजगतजीवाकै रामजी की अनगति बधाइ रजगतपणू निवारै॥ जैसे कोइ बिन्नी के स्वाम धरमी चाकर होइ सो कोइ गैरचाकर होइ सो कोइ गैर चाकर के ऊपरै बिटा होइ सो वाको गैरबबेक मारिवाकै स्वाम धरमी करि धणी का पगां लगावे॥ वा को आछ्यो दिषावे॥ असे साधुज नजगत का जीवां को आपा नअहंकार मिटाइ रामजी को अजन करावे॥ असे आतमरूप करि प रमातमामै मिलावे॥ आनंद पद मै पऊचावे॥ जगतपणू निवारण करै॥ असे जन निति निरमा हीहै॥ कां कसू आसकति होइ नही॥ एक रामजी को

ही आसकतिपण॥ ज्यांके वेही रामजीका जनहै॥
ही आसकतिपण॥ ज्यांके वेही रामजीको जनहै॥
१९॥ कै॰ लेस्या॥ जनमायाके परहै मनिन उपावे
लोभ लोभ कपज्याजा लीण जनपद रहेन सोभ
जनपद रहेन सो भ बोभ ताकपजे जारी॥ धरम
ध्यान मिटि जाइ साध पद कारहे षुवारी॥ रामच
रण निरलोभ ता राम भजन से सो भा॥ जनमाया
कपरहै मनिन उपावे लोभ॥ २०॥ सो॰ लोभ कही
हे॥ साषी॥ लोभी ठिगे ठिगावे लोभी॥ आतिरिल
भउपाइ ताके उरि संतोष धन॥ सो निरलोभी
नहीं ठिगाइ॥ २१॥ लोभ लग निउर में सदा॥ ज्याके
दान समता होइ॥ वेना चोभ लिश्रवण सुणो॥ हि
रदे मिटे न सो॥ २२॥ कै॰ लस्या॥ हिरदे मिटे न सो
चसत जो लष्वार घसि॥ ष्वार घ मिटीया जाणं

रंगे राम कै रंग ॥ रंगे राम कै रंग जिनूं सुष साता

पाई ॥ बिपता मै बे का लेजाइ गाजपा नहि जाई ॥ राम

चरण जिराम कै समता राषी अंग्रि ॥ हरदे निर्दे

न साच बसत जो तूं स्वारथ संगि ॥ २३ ॥ स्वारथ संगि

स्वांमी पराई पडै पात लो होइ ॥ दिन दिन बधै जदीन

ता घटै परबता सोइ ॥ घटै परबता सोइ कांम ना कला

गुमावै ॥ लोग करै उपहास सिन्या सुणि मुष मुरझा

वै ॥ रामचरण लो नारसी नला न दीसे कोइ ॥ स्वारथ

संगि स्वांमी पडै पात लो होइ ॥ २४ ॥ कवित ॥ पडै पात

लो होइ लोन संगि सो नन पावै ॥ जाइ बकपण बीत

रीति रज मूं न रहावै ॥ मांन नंग मन नगर रंग रस रहै न

कोई ॥ उतिम चाल न्यू नूं पलो न त्रिसना संगि षोई ॥

तातै बकपण चाहीऐ तो नजीऐ राम बिचार ॥ रामच

रणासंतोषगहोतिसनेनागरिटारि॥धमत्रिसना॥
साधो॥नागरिमांहीनागरिनाचै॥नागरिनाचनचा
वै॥नरकोनासकीयोकरिनागरि॥नागरिनरनिच
जावै॥२६॥टीका॥बिचनका॥नागरिकहीएबलो
वणी॥सोहीकाया॥कायामेसुरतिसोहीबलोवणी
मे२ह्ी॥नागरिनाचनचावैसोहीअसतरी॥बलोव
णीमेरेइफेरेछै॥मोहोमदनकानेता॥द्वैतरूपीहा
थत्यासूऐकरसिश्रीम्हांसाम्हांषेचेछै॥सोत्रिसना
रूपीअसतरीसुरतिनेउमायाफेरेछै॥घरिछैव
बादेनही॥तोसूबबेकरूपीदहीकोनासहोइ॥
सोहीनरकोनासनारीकस्यौकहीए॥त्रिसनाकी
उमाइउमाइसुरतिफेरै॥सुरतिकानेवबासबब
बेकताहरैनहीदहीबिलोयांश्री १२॥

बबेकबीतिबुधिबिचलनगउपतलीपाडु
गई सोऐसेबिपताबधीतीबिपतिनारीदा
लीदूपुरसनिपजायोतीदालीदूकरिकेजीव
उषीभयो बिक्रमकरबालागो बिक्रमके
स्यायकाचोरासीकोअधिकारीऊबोएतोअ
रथयात्रातिकह्योअरइजोअरथनेपेमेक.
हीएहेकायारूपीबलोवणीकेमूढे बलोवणी
मेरईधरीसोहीमुषमेरसनारईकोफेरबोसोही
रसनासूरामरामउचारबोसोहीनागरीमेना
गरीनाचनचाबोकहीएसमतारूपीअसत
रीसीलसतोषकासाषसासउसासकानेता
सूरइफेरबोसोहीरसनासूरामरामकहबो
समताहोइतबरामकहणीआवेसोहीनागरी

नाचांनचाबोकहीं।।नरकोनासकीयोसोहीदही
रूपाअहंकारकोंनासकीयो।। निरअहंकारीऊवें
ममतपातलोपड्यो।सोहीछाछिकहीं।।सोहीछा
छित्रिपताईकाभोजनकीलारआरोगगया।।अ
रसुरतिनागरिबलोवणोसम्हालिरंभोषनगं
नरूपीनरनिपजायो।।सोमनसमेंठिरऐकजा
गानेलोकस्यो।।बिरागकोतावदेर।।बिगपनअ
णभोतगारकस्यो।।अपणासुषसरूपकेसम्हा
ल्यो।।सोकिरीयाजगतिरामजजनकरिको।।सो
हीनागरिनरनिपजायोकहीं।।ऊपदालीऽसब
हरिजयोआनंदसुषऊपज्यो।सोहीनरपुरस
कहीं।।रह्यांकिवतो।।जयोपुरषसंतोषपोषपय
गटसुषदाऽ।।सदासातिबरताऽ

नसाइ॥ न्हकरमी निरलोभ नता सोभ नता आनंदका
री॥ अजक आपदा मिटै लहै पद सद मुरारी कहै
नकाई लागि है ही ऐन उपजै दोष॥ रामचरण अ
जि राम कृपा इरहै संतोष॥२७॥ संतोषक ही वे है॥
सम ता॥ लोभ समता लीयां पुरस सो सति है नित
म नि निरमतै साति कारी॥ लोभ अर कामना
त्रिसन आसा तजी सजी सुष निति बिप्रीति
कारी॥ धीरज नीर अथाह दरीया व जु नार ते
नरमनां नाहि व्यापे॥ राम ही चरण बक पुरस
वरीयां महै राम ही राम ऐ नाम जापे॥२८॥ विदव नी
॥ जपै राम कौ नाम काम घटि कपजै नाही
दाम बाम सकृत रकलोभ न की सरक न माही॥ त्रि
सना आसन मक्रिहरि दालीदन साऐ॥ समता

सीलसुभाव बिचलतासबै तिगा ॥ निरबिकल
प निरबास नो निरमोही निरदोष ॥ रामचरण नजि
रामयां लषण संतोष ॥ २९ ॥ क रूल्या ॥ जाके धनसं
तोषहै जाहां नमुतलब मू शि ॥ संतोषी समता लीया मु
तलब बिपता पूरि ॥ मुतलब बिपता पूरि हरि सुख
साता जावै ॥ जाके धर मन ध्यान ऐक मुतलब मनि म
वै ॥ रामचरण नजी ऐसदा मुतलब मन साचु रि ॥
जाके धनसंतोष है जाहां नमुतलब मू रि ॥ ३० ॥ मु
तलब लसकार कहीऐ है ॥ रामचरण संसार में मु
तलब को अधिकार ॥ रागदोष मुतलब करै मैं मेरी
अहंकार ॥ मैं मेरी अहंकार मुतलब हि हसि हसि बो
लै ॥ जे मनि मान्यो नहीं सधै दोष धरि अैग्या फोलै ॥
सजि समता नजि रामकै.

सुधन पासा सागया राम चरण मन धीर ॥ राम न
जन परतापस्यु मुतलब बीताबीर ॥ ३६ ॥ जाके
मुतलब मनि नही सो करै सनापण साच ॥ कूड
कपट नही का मनाऐ करसि मनसा बाच ॥ ऐकर
सि मनसा बाच से कसा सै नही आवे ॥ न जे निरंज
ण राम ओर ई जी नही गावे ॥ वे हरिका वाह रिबसे
राम चरण ऐता ख ॥ जाके मुतलब मनि नही सो
करै सनापण साच ॥ ३७ ॥ मन के मुतलब रूप
ज्यो कडा जमी गा होइ ॥ करै लुड षडी दीनता अ
के बुधि के षोइ ॥ अक बुधि के षोइ जे जलड तानही
लागे ॥ मुतलब न न तो जाणि हेत सुषप तमे लागे
राम चरण नजि राम के ऐ मुतलब गति जोइ ॥
मन के मुतलब रूप ज्यो कडा जमी ठा होइ ॥ ३८ ॥

उहा॥जहरपलटिइम्रतनया॥नीजहरबसेंताम
हि॥ताहीतेंचतुरनरा॥दसनलगावतनाहि॥उप
टीका॥बचनका॥जहरकडेनीबजीकीनबोल
कडी॥सोपाकोघकामीठीहोइ॥फेरमहीजहरसो
नबोलीमैगुरलीकडीजहरहै॥तीसूबबेकीचतु
रमीगेरसतोऊपरासूचूसिले॥दांतलगावेन
ही॥ऐसेकोइकुबधीनर॥कपटीपाषंमीदगाद
र॥ज्याकोसूभावकडोजहरकहीए॥कोइरीतिमु
तलबच्या॥पडेजद्यानबोलीसूपाप्राणीमीठा
बोलेनरमहोइ॥घणदासभावकरै॥बीनतीकरै
सोहीनबोलीपाकीकहीए॥जहरपलटिइम्रतक
हीए॥परिजनकेमाहिगुरलीकडी॥त्यूहीवेकु
बधीजीवहै॥तिनकेमाहिकुबधिच्य

जेई सब मैं व्यापक राम जी ॥ जलांन मांनै कोइ ॥ ह
ति षावै परि प्रांण कूं स्वाद वण वै सोइ ॥ ४३ ॥ हं
स्या करता हरष वै दया न उपजै मांहि ॥ वै नर मोहे
बिरघडा स्वांन स्याल जिम न्यांहि ॥ स्वांन स्या
ल जिम न्यांहि मांनवै षाइ न याकूं ॥ षा पा धरम बि
नास न्यसु च्यिनि तिगिली येताकूं ॥ रांम चरण ताते
कहूं हिंस्या करी ऐनां हि ॥ हंस्या करता हरष वै दया
न ऊपजै मांहि ॥ ४४ ॥ हरी यांनी लाफूल फल जल ।
न्यण व्योपा मांहि ॥ स्वाद हेत हततां फिरै हंस्या सूं जे
नांहि ॥ हिंस्या सूं जे नांहि ह रस र स लागै मीग ॥ वै बि
कल बिकमी जांणि निरदई चौडै दीग ॥ तातै तजी
ते स्वाद रस जां दया ऊपजै न्यांहि ॥ हरी यांनी लाफू
ल फल जल न्यण व्यो पा मांहि ॥ ४५ ॥ हरसां सूं हस्या

॥परपीडा जासैं नहीं ताकूं धि
॥ताकूं धिरकार नहीं करतार पछांण॥ करम
कोम नां हेत करत अपराधन जांण॥ होसी जा हो ह
स्याबत बजब पडे अगिणती मार॥ हरसांसूं हस्या
बधे सधे न ग्यान बिचार॥ ४६॥ दया कहीए है॥ तातैं
दया बिचारीए सब जीवां निरदोष॥ आपनी तन ही
दीजीए दीजे सब कूं पोष॥ दीजे सब कूं पोष तोष उरि
नांही धारो॥ सुषिम थूल नर पूरि राम सरबंगि बिचा
रो॥ रामचरण जीए सदा तब ही पावे मोष॥ तातैं द
या बिचारीए सब जीवां निरदोष॥ ४७॥ जिन अपना
आरंभ तज्या जिन पाल्या सब जीव॥ षट काया चे
कषां निमें जांणा राम सदीव॥ जांणा राम सदीव
दया उपजी दिल मांही॥ सुगति पंथ सुषदाइ काइ

जमालगैनजमकीदाब॥ सतांसासाजातहैंजा
मैकछुनलाज॥पण॥ जागिन्नजैजगदीसकैजा
कोनरतनजोगि॥रजाकोगिणीएनहीजोबीतै
सांसैसोगि॥जोबीतैसांसैसोगिन्नोगबिषीयाज
बिगाडयो॥॥ कीयोनसाधसंगसुषन्त्रपनैन
बिचारयो॥रांमचरणतजबासनारामकरैन्त्रा
रोगि॥जागिन्नजैजगदीसकैजाकोनरतनजो
गि॥पण॥ जाग्पांसुषनोमिटतहै कटतकरम
काफंद॥रामचरणन्नजिरामकूपावैत्र्यानंद
कंद पावैत्र्यानंदकंदजिहसंजोरनजाको॥स
दसांतिसुषकारपंथकुगतीकोथाको॥सुरति
मिलैब्रंधणछुलैबिलसैसद सांनंद॥जाग्पासु
पनोमिटतहैकटतकरमकाफंद॥ ८८०॥

ता॥कटै करमका फंद जीवजब मुकता होवै॥जुग
ता ग्यांन बिचार नहीं जगत रदिस जोवै॥जगत
माहा उष कार सार इन मैं कछू नांही॥काहा लोक
परलोक सब्बै थोक न के मांही॥ए सबनी कै देषि
कै एक ब्रह्म अनंद कर॥राम चरण जन जीव सदा
गुर बाइक सुणि चेति कर॥६१॥सो चेतां न णीक
होत है॥चेति चेति नर चेति रांम ही रांम उचारे
सब ही अघरि बिनाण वदेह लग जाणि पसारे॥छि
नि उपजै सुष चैन होइ छिन मैं उष दाइ॥जासू छि
सो सनेह तेह तिण का परजाइ॥यू बिचारि करि
बावरे जाव जजन सू राषि॥नर तन अरथ लगा
इ॥राम चरण जन साषि॥६२॥साषि जना की द
षि देषि जग रचना काची॥जामैं रसो

दि रहै करतार॥ जाही को नर तन सुफल जाको सु
फल बिचार॥ ६७॥ देष्योई संसार मैं स्वारथ तणौं
सनेह जै कछु इक स्वारथ घनां सधै तौ ऊट कि
बतावे छै ह॥ तौ ऊट कि बतावे छै द बाप बे टो
स्त्री जाई॥ संगी सजन प्रिवार सुत लव ब्यां करै ल
डाइ॥ राम चरणन जि राम के सब स्वारथ हो स्त्रे सने
ह॥ देष्योई संसार मैं स्वारथ पतणौं सनेह॥ ६८॥ स्वा
रथी॥ ऊठी जगत सनेह ता॥ देषौ सब निरताइ॥ पू
त पिता देषत रहै जम ले तप कडि ले जाइ॥ ६९॥
ऐसो तन का चौरचो मञ्चो तासमद माहि॥ गुण
इ जीपोष तस दा हार जीति गम नाहि॥ ७०॥ स्वा
[illegible]॥ सो
सा बहण सहेलडी च्यार स्यु च्यार फिरंत तीन

तुरी ब्रह्माबदन॥ मारूं मार करंते॥ मारूं मार करंते
लडावे नर मिलि नारी॥ लडे पडे जो घडे सीस बिनि
सो वत जारी॥ हारि जीति सिरदार की नलो बुरा
दरसंत॥ सोलो बहण सहेलडी च्या संच च्यारि फि
रंता॥७१॥ टीका वचनिका॥ हारि जीति की री
ति चौपडि का ष्याल॥ द्रिसटांत करि कही ऐ है॥
सोला बहण सहेड्यां सो ही सोला सारि॥ जीका दोइ
नाम॥ आठि तो लछि आठि अलछि जीमें च्यारि
च्यारि का च्यारि जुथ॥ च्यारि चोपडि का च्यारि दरा
सो च्यारि तन की अवसता॥ बाल तरण जवान ब्रि
ध सो सोला ही सारि लछि अलछि च्यारि ही
ता में बरतै॥ जीमें लछि विकारण पूगे॥ सो तो
लछि को अधिकार होइ तो हारे॥ जीमें दोइ पुन्नाबे

मारामजीकाभजनप्रतापकरिपरमारथकौपासो
मारि सातिगगुणमुबिलाइ अलछिगुणहैतिन
कूंहराएचाहतहै अरअणलमकेनरपराजामोहो
है सोउतिमलछिगुणहै तिनकूं स्वारथपरथकोपा
सोमारि तामसिगुणमुबिलाइ हरायाचाहतहै अ
सेहारजीति सिरदारकीहै सोसिरदारआतमाकेअल
छिगुणजीते तोजीवब्रह्ममेंमिले अरअणआ
तमाअलछिगुणजीतेतोजीवचोरासीमेंरूलै ज
द्यांबुरोहोइउषपावे जीतेतोभलांहोइ माहापदनै
पहुचैसुषपावे तीसूंरामजीकोभजनकरि जीतबा
कोउपावकीजे आतमाधरमकोपष ग्यांनबैरागा
भगतीउतिमगुणांसहति सदीवपषिराषिजे अ
णआतमअनअसुभगुणउदैहोइ तोतिनकूंमारिध

कावेजे॥ ई बात को दोष नही॥ बेद पुराण सासतर सं
त साषि सब कहै छै॥ असुन्न आण आतम धरम की॥
हाणि करी॥ सुन्न आतम धरम को उदो करी॥ सो उ
दो रामजी का भजन सूं होइ सो भजन गुर क्रिपा सूं व
णे सो असै महाराज रामचरणजी चिंतावणी दे करि क
है छै॥ सो सावधान होइ राम भजन करि चेतो॥ ७२॥ क
ह्या॥ चेतो रे चेतो सही कही गुरां ऐ साषि॥ काल गज
ब आवै जदी कोई न सकै राषि कोई न सकै राषि
ता कसब त्रासही मांने॥ रोवै अपणो राज तनूं कौ पी
ई न जांनै॥ रामचरण ता कारणें संत कहत हैं साषि॥
चेतो रे तो सही कही गुरां ऐ साषि॥ ७३॥ साषि कहै गु
र देव जी बारू बार चिताइ॥ चेते सो ही ऊबारें गाफि
ल गोता षाइ॥ गाफिल गोता षाइ अध चौरासी मांहि

योहो धे धदि नरैं निस्पाति जीसा तानां ही रामचर
णलाते नजौत जौजगतकी नाइ साषि कहैं गुरदे
वजी बारूबार चिताइ ७४ याजग की यारीति
है प्रीतिकीयाउष होइ प्रीति मांहि बिप्रीतिहैं जीति
गया नहीं कोइ जीतिगया नहीं कोइ मिनषतनमू
घो हास्या मैं बंक मैं बकमानि कामक्र सवास्या बा
मदां मस बरूसी यात्र तकाल मैं जोइ याजगकीया
रीति है प्रीतिकीयाउषहोइ ७५ प्रीतिकीयासंसार
सुषपूरीपडै न कोइ कै सुष मायाबीति है कै आप
चलाऊ होइ कै आप चलाऊ होइ अवसि नैलपन
हीबनिहैं कहे कहे काहा होइ काहा लगाक हत ब
गिनहैं रामचरणजी ऐसदा जगति दिसामति
जोइ प्रीतिकीयासंसार सुषिपूरीपडै नकोइ ७६

जगत्अनादिसूंज्ञघरिहैं घरि घरिकरिहैको मासुण
सांमजारीसंचनोराजसाजधनधांमराजसाजधनधा
मबांमसुतत्वहैनिरोगाानहींऐकदोइकीबातऋसैं।
सबजानोंलोगा।।रांमचरणहदिजनबिनिऋंति
पडैजीमाम।।जगत्अनादिसूंज्ञघरिहैं घरिघरिहैको
म।।७७।।कामकरतघरधंधकारामनकरिहैयादि।।
रांमचरणवांप्राणीयानरतनषोयोबादि।।नरतन
षोयोबादिदादिकोहा पावैलाइ।।स्यादिनरैसबस
तसुरासिरबादिगुमाइ।।तातेंनजीएरामकरहीं।।
ऐसारैनादि।।कामकरितघरधंधकारामनकरिहै
यादि।।७८।।यादिकरौनितिरामकुंतोबादिनजावै
देह।।रामचरणसबजनकहैदैपदि·
दिपूगाजेहनेहकाऊनहीराषे।।टे

है जा सुं उदवै कोम । कामउ दै मन कलपना सुष सुं
कहै न राम । सुष सुं कहै न राम जो मन अरकुं बधि
कुमावै सुं बषिन साता सुं रिध्र साता अगिर ह्यै
वै इन बातां सुष नां मिलै उलटी पडि है मा म लो
कारंजन करत है जा सुं उद वै कोम ॥ ७४ ॥ सा
[illegible] गो कहै गो ॥ ३ हा ॥ माया मुत
लब ह सता लोचतो बउपदेस कही चितावं
णा अब कर्को काम कु चल परवेस ॥ ७५ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ए ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ काम न धारै कामीया चोषा जी म ण षा इ

रसिकसुतैसीषेरसिकरसिकलभावैगाइ॥रसिक
लभावैगाइमोटमनकेउपजावै॥कामीघरसांमा
निमिनषतनबादिगुमावै॥चोरामकीजगति
केसोनरतनदीयोबुहाइ॥कामबधारेकामीया
चौषाजीमणषाइ॥१॥चौषाजीम्याच्यावनकरिवो
षाकरमकुमाइ॥रामचरणवाक्याकीयामिनषा
तनधनपाइ॥मिनषातनधनपाइरामधननहीपि
छाण्यो॥षेरसूकरस्वरस्वानजसैबिषीयारूछिमा
ण्यो॥चोरासीसूआइकरिफिरिचोरासीमेंजाइ॥चौ
षाजीम्याच्यावकरिवोषाकरमकुमाइ॥२॥करम
कुमावैकामीयांकामणिसूमनलाइ॥जामणिकेउ
णहारथीपणिजुगतेजामणिगाइ॥लाइबलतीन
हीसूऊ॥पडैमांहिअग्यानअटकदेजासूऊजे॥रां

मचरण ऐसे अधम निति ही अस्तुचि रहाइ क
रम कुभावै कामीया काम णि स्रम न लाइ ३ का
मी नर रत काम णी सदा अस्तुचि अपान सुचिता
मैं समझै न ही निति ही काम णि ध्यान निति ही का
म णि ध्यान म्यान मैं मन नहीं राषै २ म्रत पावै नाहि
सदा बिषीयार सचाषै राम चरण वै बरनना का
हा करै सुष अपान कामी नर रत कामणी सदा अ
सुचि अपान ४ कामी नर का मारषी जाके सुचि
ता नाहि तन असुचि मन बिकलप न मैला चित
वनि माहि मैली चितव नि माहि दिसा ठुरमति अ
ति लीया काम दाम ल्यो लीन मुढ माया मद पीया स
द सुब समता पर हस्यो राम रहे बिसराहि कामी नर
का मारषी जाके सुचिता नाहि ५ कामी नर किरीया

करैन्हो ण धीण आचार ॥ तन उजलकर्यो मो दकरि पेहूं
ऐन बोध बिचार ॥ वे ही ऐन बोध बिचार कांमनां का दे
नरीया ॥ नषसष मेला पूरि उपली ऊगी किरीया ॥ रांम
चरण नजि रांमकूं मन कांम करौ तसकार ॥ कांमी नर
किरीया करैन्हो ण धीण आचार ॥ ६ ॥ कांमी कैं मनि कांम
नां नहीं आंमनां मूरि ॥ साधन करि जीवो कहीं नहीं मनोर
थ पूरि ॥ नहीं मनोरथ पूरि बिचल बे अरथां मो लै ॥ स
दा अषत्र धल्ष कदे तिरपति नहीं बोलै ॥ रामचरण
नजीयां बिनां रस्या रांमसूं हूरि ॥ कांमी कै मनि कांमनां
नहीं आंमनां मूरि ॥ ७ ॥ जो हो जाइ जो हो षो त्रितालो नकां
म की लाइ ॥ त्रिसनां तन में हू जलै सीतल कैसें थाइ ॥ सी
तल कैसें थाइ आगनि मैं इंडण पूरै ॥ नुलसैं नषसष अं
ग दुषी होइ निसदिन झूरै ॥ रामचर   ८८

नामरसपाइ जाहां जाइजाहांषो ब्रिलालोअकामकी
लाइ ॥ कामजांहां तांहांकुलषणी करैकुबधिकीबा
त सुबधिनसातांऊपजैसदारहैपरघात सदारहै
परघातहीऐहाथांमनिअोटा स्पाफनहीसतहीण
बबेरतमोलैकाटा अैसैकूपरहारीऐनिरबिरतात
बरात कामजांहांतांहांकुलषणीकरैकुबधिकीबा
त ॥ कुबधीकामीकूरकैमूढेनूरनहोइ सूकबदन
सोआरहतचलेमिनषतनषोइ चलेमिनषतनषोइ
रोइचौरासीजेहै जाकोउषअपारमारबोहोतेरीसे
है तातेतजीऐकामनारामचरणसुषजोइ कुबधी
कामीकूरकैमूढेनूरनहोइ ॥ नूरहीणकेरतबक
रैजाकामनमेकाम साधनसाधेअपरितानहीअरो
सोरांम नहीअरोसोरामकामनाअतिउषदाइ सदा

असाताअजकसजकसुपनैंनहीकोद्वि।रांमचरणवा
केहीएबसैंदांमअरबांम॥नरहीणकरतबकरैजाका
मनिमैंकांम॥१०॥कांममनोरथकांमीयांकांमणहीको
ध्यांन॥वाकेजांहांहीसंचरोवाकेहीएअग्यांन। वाकैंही
एअग्यांनकोनचितकरमांटेवे॥गुपतप्रगटमनरैंसि
रैहेकांमणिकेटैवे।वाकोकाहाऊजलेपणोजेनजेमु
बिरांम।स्वादबादसिंगारतनजतनजिन्हकेकांम॥११॥
जतनकरैजतहीणनरचहैबधैतरिकांम।इंड्यांम
नचंचलसदा।नजेनपूरणरांम॥नजेनपूरणरांमज
मअठकपटकुभावे॥साचसबूरीहरितोषसमतान
हीजावे॥ताकोफलजमराजकेद्वारिपडैगीमांम जत
नकरैजतहीणनरचहैबधैतरिकांम॥१२॥नहकां
मताकहीएहे॥ कांमकांमनांपरहैरैनजे

एदेव ॥ जे नह कांमी निरमला जाके रही ऐ देव ॥ जाके रही ऐ देव अेव अजनांनंद पावै ॥ जाकूं सातापूरि अ साता निकटि न आवै ॥ रांमचरण यारी तिसू प्रीति प रमपद लेव ॥ कांमकांमनां परहरै अ जे निरंजण देव ॥ १३ ॥ अ जे निरंजण रांम कूं समतासील बिचार ॥ अ सुचि कांमनां परहरी उ तिमता उरि धारि ॥ उ तिमता उरि धारि सारि निरतन की जीता ॥ जनमन थिरता पाइ मनोरथ सब ही बीता ॥ रांमचरण न्है कांमजन मन सूं बिषीया टारि ॥ अ जे निरंजण रांम कूं सील बिचारि ॥ १४ ॥ नह कांमी निरमल अया रांम अ जन से बीर ॥ औरां कूं उजल करै जेसे निरमल नीर ॥ जे से निरमल नीर तपति त्रिसना सब षोवै ॥ आनंद कार सदीव मिलै ताहि साता होवै ॥ रांमचरण चितऐकर

सिपीवेइम्रतसीर॥नहकामीनिरमलजनयारामजनसै
१६॥ उतिमजनकहीऐहै॥उतिमजनमनजीतिहै
बीताजिनकाकांम॥नहकामीनितिनिरमलानषस
षत्र्यागूजांम॥नषसषत्र्यागूजांमरामकोनांमउ
चारे॥नित्यानितित्र्यबंकैएकत्र्यहतिविचारे॥रांमचरण
वासेतकूकरीऐनितिपरणांम॥उतिमजनमनजी
तिहैबीताजिनकोकांम॥१७॥कांमकुलषणबीतीया
जेनहकामीजंन॥मनबचकाइकबासनांजाकेतनन
मन जाकेतनमनबनांग्रहैलषेसमांन॥हाणिव्रिध
हरषसोगरहतिनितिएकबषांना॥रामचरणजि
रांमकृपाकोकीयोजतेन॥कांमकुलषणबीतीयाजे
नृकांमीजंन॥१८॥नृकांमीजनउजलानषसषउज
लअंग॥त्र्यसुचेकामनांमिटिगइलग्योरांमकोरंग॥

लग्यो राम कौ रंग अंग जो होवै नाही ॥ दूजी नहीं षषा
इ उजली आसा माही ॥ ताते जन अपरस सदा स
प परस संग अंग नह कामी जन ऊजला न षस षऊ
जल अंग ॥ १९ ॥ मैली चाहि अनादि की उजल स
दा अचाहि ॥ ताते चाहि न कीजीऐ राम नाम ल्यौ ला
इ ॥ राम नाम ल्यौ लाइ पाइ इमृत रस धारा ॥ षारा बि
षीया जोग तज्यां तन मन सू न्यारो ॥ कोई पदारथ दू
षि के नाही ॥ मन लल चाइ ॥ मैली चाहि अनादि की ॥
उजल सदा अचाहि ॥ २० ॥ मन मनसा उजल सदा उ
जल नैन श्रवैन ॥ हाथ पाव क्रित ऊजला जे कदे न करि
है फेन ॥ जे कदे न करि है फेन अैन आतम ॥ सब जाने ॥
औरन अरस नां रदस द परमातम माने ॥ राम चरण
अैसे न कौ संग की यां सुष चैन ॥ मन मनसा उजल

सदा उजल नैन रवैना॥२१॥ उजल जजि उजल भया रामनिरंजण देव॥ राम चरण औसी जुगत गुरू बता यो भेद॥ गुरू बतायो भेव पवीत्र मनसा बाचा॥ उपजे नहीं गिलानि धरम जो धारण साचा॥ निति निर मल रूको मतो पाइ उजल भटेवा॥ उजल जजि उजल भया राम निरंजण देव॥२२॥ साषी॥ औसा उजल संत जन॥ मनसा बाचा सोइ॥ संगि बैठे मनस्त्रा रपि के॥ सो भी उजल होइ॥२३॥ कुंडल्या॥ उतम जन को पाइ बो उतिम जन के संगि॥ राम चरण निरतीत णै बैक देन रा चै रंग॥ बैकदेन रा चै रंग सुगति का जे अ धिकारी॥ जाके ही ऐ परषसर कस्वारथ की मारी॥ रा मचरण जजि राम कूं लागि रहे निज अंगि॥ उतिम जन को पाइबो उतिम जन के संगि॥२४॥ सो उतिम

रांमचरणजीऐसदासतसंगतिसुषपाइ॥जनममर
णसंजिबासनांबिनां भजननहींजाइ॥३०॥रांमजन
सतसंतबिनिमिटैनआवणजांण॥आवैबेदकतेब
पढिआवैपढैबषांण॥आवैपढैबषांणसुणेंनलिम
नचितलाई॥उपजेनहींबिचारजितेंकतकेंउकुमा
इ॥रांमचरणसमझाइमनसतसंगतिमेंआंणि॥रां
मजनसतसंगबिनिमिटैनआंवणजांण॥३१॥आ
वणजांणांनांमिटैजोलूंसंगतिकाच॥साचीसंगतिकी
जीऐरांमचरणमनबाच॥रांमचरणमनबाचराचीऐ
गुरकाबैंनां॥जाकीलछिपतवांणिदेषीऐअपनांनैनं
जबनिरबासीपदलहैआसिककीऐताछ॥आवणजां
णांनांमिटैजोलूंसंगतिकाच॥३२॥संगसुधादरीया
वकोथाहनपावैपार॥जाकूंचाकैसबकोइब्रह्माकर

त बिचार॥ब्रह्मा करति बिचार सार को आगर कही ए॥राम
क्रि पास पाइ जत निरू जे न ही लही ए॥राम चरण जी याथ
को मिटि जाइ मन को षार॥संग सु धा दरीया व कोया ह न
पावे पार॥३३॥सु धा सम द सत संग हैं साधू पावण हार॥
पीवे सो जीवे सही राम नाम तत सार॥राम नाम तत सा
र और जग छोइ जाण॥सुनो ज्ञानी के बाच मनो रथ उ
लटा आणो॥राम चरण तब अमर होइ समर करे तत सक
र सु धा सम द सत संग हैं साधू पावण हार॥३४॥साधू पाइ
राम रस सत संगति के घाट॥बिषीया रस जास मिटे नि
र बिष होइ निराट॥निर बिष होइ निराट॥
केरी चले बिचषण दास आस मेली ज्या जेरी॥
निर बासना जोहि राम संगति का घाट॥
स सतसंग

साध संत के जाके पति ब्रत एक ॥ ४१ ॥ जाके पति ब्रत
राम को एक अष मा कार ॥ जो जाके नास धै जे हो
र षुवार ॥ जे होइ षुवार मार जम ॥ ता दे वे पति न ही
राषे मा नञ्चा न के दे षाटे वे ता तै ऐसे मा नि के आ णि स्यां
मइ क तार ॥ जाके पति ब्रत राम को एक अष मा कार ॥
४३ ॥ एक अष फ त राम जी जाको पति ब्रत राषि ॥ राम
चरण सुमरण करो ॥ जो मुषा न जा षि ॥ जो मुषा ना
जा षि रा षी ऐसे र प रि सांई ॥ सांइ के परताप सदा आ
नंद कै मां ही ॥ मनसा बाचा करमना ऐसत गुर की साषि
एक अष फत राम जी जाको पति ब्रत राषि ॥ ४४ ॥ पति ब्र
ता पति राम बिनि ॥ जाकी नही आस ॥ जासे उ ब ध्या ब
धै धर म ध्यान को नास ॥ धर म ध्यान को नास सदा स पद र है
न कोइ ॥ बिगडे दो नु लोक सो क सो सो अ ति होइ ॥ राम च

रणतातैं कऊं ऐकै संगि निवास॥ पतिब्रता पति राम बिनि
दूजा की नहीं आस॥ ७५॥ आस एक अबिनासी पद बसे
जिनहूं के बासि॥ वै प्रतिपालै पोषदे वै ही स दासु षरासि॥ वै
ही सदा सुषरासि प्रासि औ कारण हारा॥ राम निरंजण दे
व आप सब का करतारा॥ जा की रही ऐ सरण निति मति
कोइ चूक कोरी ति॥ राम चरण जि राम कूं छाडि सकल
बिप्रीति॥ ७६॥ बिप्रीति बुधि दूजो करै सो ही सहैं सिर मा
र॥ राम चरण पतिब्रत बिनि बिभचारण निति गुवार
बिभचारण निति गुवार आदरै कोइ नांही॥ उभी लोक
परलोक सोक सांसो न भियाही॥ आतम पति परमातम
मा सब ही को करतार॥ बिप्रीति बुधि दूजो करै सो ही स
हैं सिर मार॥ ७७॥ इक गाकर अरदास बोहो या तो जा
ण जो जि॥ दास एक गाकर घणां याही बात अजोजि॥

याही बात अजोगि को हो कुण कुण ही मनावै ॥ नीबा
ग्रा पडि जाइ जीव स्याम के साच न आवै ॥ तौ ऐक राम
आराधीऐ यो सद साधन आरोगि ॥ इक गकर अर
दो बोहो या तो जाए ॥ जोगि ॥ ७८ ॥ ऐक धणी सिर ऊप
रै तब सूरा करि है गाज ॥ अपणे जन मसु धारि है अ
र बाना की लाज ॥ अर बाना की लाज स्याम कौ निम
ष उजेले ॥ स्याम धर मीदास माहि ॥ अधर मन नही चेले
राम चरण ॥ जि जो ति रै सुष सो नासा जा ऐक धणी
सिर ऊपरै तब सूरा करि है गाज ॥ ७९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ सूर के षास्यो नाष वै अधपतीया ओ
नाड जेस त्रु नि ज स्या पडै तो पकडि उपाडै जाड ॥ तो
पकडि उपाडै जाड धणी को राज जमावै ॥ सी सलीया
परता पि ओर हूजी न उपावै ॥ राम चरण जे राम का

जीते मोहे मन थाडि॥ सूरके षाध्यो नोषदे ऋधपती याऋोनाड ॥ ५०॥ ऋधपतीयाऋोनाड जेन वैन हीप ति बोश लषपती यान वताफिरे उरिली या कामना सोश ॥ उरिली या कामना सोइ ऋसुध ऋासे कामाध्या नहीसमता नहीसाच काछ कोनाच बिसाध्या ॥ राम चरण सूरातलीसिपति करैसबलोइ॥ ऋधपती या ऋोनाड जेन वैन हीपति षोइ॥ ५१॥ नवेकाइन्ह काम जन ज्यामनकी याजेर॥ तन सूनी लातात ज्यानामस मसेर॥ सज्यानामसमसेर घेर मे पाचूलीया॥ लीलो सूत करार च्यारि ऋपणे बसि कीया॥ राम चरण मनवास नामारि जन सूहे रानवेकाइन्ह काम जन ज्यामनकी याजेर॥ घर॥ देषता॥ मनकूं जेरिके घेरि घेरो दीयो ऋो धऋरकामकूं पाडिमारे॥८

त्नजेत्न जन पर ताप कं देखि हारे राम कौ त्नजन
समसेर सेरां करां त्नर मन्त्र ग्यान के सीस बाढै रां
मही चरण जन सूरस ग्राम मैं स्याम के हेति सुचेत
गाढै पड्या सूरस ग्राम के बीचि गाढा रहै रोपि गाढ
घुणां जंग मांही रंग ज्यां रावतां खिसणपेलाचडा
ऊडा ऊडि जाटक के जेज नाही यूंही सूर मन मा
न मरद न करै चित चौगांन कै बीचि पूरा सूरा निर
भै पणां घणां सुबि नल हलै पल हलै कामन्त्र रलो
न कूरा ता सकं मारि अंब मजल स्यां करत है फि
रत हैं चक राहौ इसा रै राम ही चरण नै राम जन स
रिवां सं कबै स्यां तणी नांहि धारै ५४ सेवक क्यूं सा
वतां सी सन्त्र र स्यां फिरै टरै नहीं बगल बल स्याम
केरो घालि कै साकडै साकडा पाडीया धाडीया जेरि

करिदीयोघेरो॥केसरी कअदभूत बांका बली काया
गुण गुढता हि गुमर जाने॥ सुमरि केरो मन हकां मजन
सूरिवा बिंद पेलां तण तुछ जाणो॥ जन की षाग सेला
गाकोई नारही दहीसब फोज अरि षोज षोयो॥ राम ही
चरण सब धड कधो का भिड्या॥ राम र मतीत मै चित पोयो॥
पय चित चोक सकीयां स्याम के अरपीयो घर पायो सर
नाराय नारी॥ वजे रणतूर जा हांस रसानंद मै हटावै
होकक रि कनक नारी॥ ओर सुष स्वाद समाद पेल्या फिरै
बार बांनै त कै गिणति नाही॥ राम ही चरण जन राम र
ज मोलीयां नि तिपर फूलि निज धरम मांही॥ पद्मा के रू
ल्या॥ धरमलीयां निज स्याम को सूरां कै आनंद का मका
ऽरी पर हस्यां पडै न पिसण फटा॥ पडै न ८९
जिंद लगियां री जीत्यां सदा साति ७

उरजनबीत्यो रांम चरणतकरार सूं निकटिन आवे धंध धरमलीयां निजस्यांमकौ सूरां के आंनंद ५७
सूरांकै आंनंदसदा कदा न उपजै सो ग सुरनर आसुर आदिदि कोपाकिन बोदोलोग कोपोकिन बोहोलोग
जोगसांई सूं जुडीयो काहा और का गिणतिमोहोमाया दल मुडीयो सूरां स्यांम सु आवतातोड्या जरमकातो
ग सूरां कै आंनंदसकदा न उपजै सो ग ५८ सोगन सोसोसूर कै नूरजिनू कै मुष स्यांमधरमनितिसाब
तौराषैनांही रूष राषैनांहीरूषसुषसो ना जसलीयां रांमधणीसूरजू कबजबेस्यां कूकीयां रांमचरणअ
ज नांनदीकदेन पावैउष सोग नसा सोसूर कैनूरजि नूकैमुष ५९ पांचपाबस्या पाधराकीयासूर सांवे
त पपांन अजन बैरागसैबकेबीर बलवंत बमेबीर

बलवंत संत सूरइ मजानो॥रामराइ परताप कीयो
बैस्यो कोहानो॥राम चरण सिर केसटै त्रै सोझाल्यो म
तः॥पांच पाषस्यो पाधराकीया सूरसांवंत॥६०॥रेषता
झालीया सूर रसमसेर निज नाम की काम कीफोज परि
लीयो बीडो॥स्वाद सिंगार रस पांच स निसांवता घे
रि घमसाण मैताहि लीडो॥१॥रस को सांषु सी हांसिहा
नो करै पासि बैराग की सीस मारो॥रामही चरण जन
तेज तकरार करि होइ नहकाम यूं काम मारो॥६१॥का
मक्रोध लोभ कूं मारि मद जीतीया सूर कैरीति यांक्रोध
मारै॥मोह मन मान मगरूरीया हरि करि सबल माया
तणां बांणटारै॥ग्यान का कवच बैराग की षाग करि टो
प गुरदेव सिरदसत मेल्है॥त्रसी सीरीति सूं जीति जं
ग सूरिवां रामही चरण सुष माहि षेलै   रां

तणं अगम अगाध है काइ रा सु ण तही धड कि धू जे। सिंघ ब घ रा व से अं निजा व न्हा सि है कं ण फि रि त ल टि अ र ता हि फ ऊ जै ॥ औसे ही काइ रा रे ति की अं ती तिज्न प व न ला गां घ का रे ति मि लि है राम ही चरण जन स्रू रह रि दा स है ता स कं दे ष ता आ ग च लि है ॥ ६ ॥ असा नर का इ रा कं म न्या धी न है हां ण नि ज धरम ने न र म ब धा क्रू र का चा स ही ऊ बि सा चा न हीं रि ज कर न मां बि ना ध ह अं धा ता स कं गा रि जे हा रि के बा का इ प्र म णी स बि मु षि ज न न हा न तो डै ॥ न ज ति नो ह र ण की नां मि नि ह न रा जा इ सं सा र सं प्री ति जो डै ॥ ज ग त सं प्री ति अ र न जा त सं ग्या न रै ता स के सी त षं ह का रि ना ड ॥ राम ही चरण दे अ ध म अं धो ग ती जु गि जु गि जी व धि र का र जा ई ॥ ६ ॥ ष ड ष ह का र अ धि का र पा वै ना ही का इ रा कं र नि ति नं

रहीनां॥ तउर बागाघ कौ तेज आपैनहीधडधडैप्राणमा
हाइचलीनां॥होइहै॥ ननअब कूण जातिहोइसीरोइसी
बापडीजैसपरणां॥ तिजकलैताघ कौबात साधी नहीं॥
अजकनहीजाइ कोइ रीतिबरणीं नाहीतैगां॥ ८३॥ या
नजाणें काहा जीडपडीयांघ कौ जागिजावें॥ रामहीच
रणनरकूं डफीटासहीजाहीजाइडीहां चिबकारषा
वांदपासां॥ जगफटकाराषाइहै॥ गुणइज्याकेपोषि
रामचरणजेकाइरा॥ मनकूसकेनरोकि॥ ८४॥ केम
त्या॥ मनसाबाचामनरूकेतीघकेमनोरघनेगा॥ सन्
नागतहैंसहीजोसूरगाहैकरितेगा॥ जोसूरगाहेकरितेग
आपमरणेपरिजावै॥ तबपेलाकितीइकबाततुरतही
मारिजगावैं॥ रामचरणजनसूरिवागरदमिलाइकोम
म॥ ८५॥ प्रसंग॥ ४

सूरापूरा संत कों निति मिलापद्यो राम ॥ हरि आपूरा
टालि ज्यो जे जन स्याकों मन नां कोम ॥ जे जन स्या कां मन
कां म राम की जग्रति न आवे ॥ आप मुत लन बा काजि
नेक पर पंच उपावे ॥ आ सब व्यापार मत फिरे अज
क्या आवूजां म ॥ सूरापूरा संत कों निति मिलापद्यो रा
म ॥ ६० ॥ कुंडल्या ॥ राम कि पासे पाइए कोइ रामसनेही
साध ॥ जिन सें हिलि मिलि कीजीए सारां सार समाद
सारां सार समाद सुबधि समता उपजावे ॥ कांम क्रोध
अहंकार तास की मार मिटावे ॥ निति प्रति उनके दरस
को मन निरन्योर है अहलाद ॥ राम कि पासे पाइए कोइ
रामसनेही साध ॥ ६१ ॥ संतोषी समताली याजपता
रमता राम ॥ जरम जुलाया नां फिरे निरउदीनह कां
म ॥ निरउदीनह कांम कांमणी कनक नीयारा निरमो

ही निरमान एकर सिंवुतम भारा॥रामचरण सतगुरस
रण त्र्यानंद भ्रागृंजाम॥संतोषी समताली या जपतारम
ता राम॥७०॥माया त्यागी संत की त्र्मधर पधर गुदरान
बिना ऊजति हा जरिषडी ली या संगि सुनमान॥ लीया सुन
सुनमान तो हीजन ऊलसै नाही॥ लेत्र्याङ परमाण स्वाद
सुष नो उपजा ही॥रामचजन परताप तें हिर दे दिढ ईमान
मायात्यागी संत की त्र्यधर पधर गुदरान॥७१॥रामचर
ण बैरागनेकनककामणीदाग॥ऐजनत्रुलावेरामके
त्रिसटकरै बैराग॥त्रिसटकरै बैरागपानगामरहणनपा
वे॥बरतेहीऐत्र्यपानसाचजाबेनसुहावे॥ग्रिहत्यागईन
सूतरकताहीकोबरुत्र्याग॥रामचरणबैरागनेकनक
कामणीदाग॥७२॥कनककामणीजगतमेंदोईउधाराष
गा॥जुगतानहीत्र्यतीतकेएकतलकरेबैराग॥ऐकतलक

रे बैराग ग्यान गमगिरद मिलावै ॥ रांम भजन न बिसराइ
कांमनी कांम बधावै ॥ ग्रिह त्याग बैराग ले जाके दीरघ
दाग ॥ कनक कांमणी जगत मैं दोइ दुधारा षाग ॥ ७३ ॥
काहा अपणी काहा पार की कनक कांमणी कांमा ॥ जोग्यां
चित चितवलि रहै निस दिन आठूं जांम ॥ निस दिन आठूं
जांम काहा गिरही बैरागी ॥ सुष लोक परलोक जिन तन
मन सै त्यागी ॥ रांम चरण जिन रांम कूं वे ही लहै सुष धांम
काहा अपणी काहा पार की कनक कांमणी कांम ॥ ७४ ॥
रांमचरण बैराग नै कनक कांमणी दूत ॥ ग्यान जगति
बैराग लछि रषै न ही साबूत ॥ रषै न ही साबूत कांम नाल
गनि बधावै ॥ साता सील संतोष साच को मूल गुमावै ॥
निस दिन अजकल गाड दे जांणि कलागे दूत ॥ रांम
चरण बैराग नै कनक कांमणी दूत ॥ ७५ ॥ साषी ॥ पाव

कने पाणी धको॥ अरु दीपक नैं मारुत॥ रामचरण बै
रागनैं॥ हर सधको बकुनत॥ ७६॥ रामचरण बैराग
नैं॥ कनक कामणी फंद॥ कोइ सुजाण उलजै नही
उलझि पड्या ते अंध॥ ७७॥ नक बेसरि सो नाणा सिक
अरकुंरुल सो नाकान॥ यूं बैराग सो नता त्याग सो
नीस मता सो नाग पान॥ ७८॥ नाकोइ साचे ना कोइ
जाचे॥ नी सुष सवाद नही वांछै॥ रामजन जे बैरागक
रारा॥ जे साची कछनी काछै॥ ७९॥ बिरकत ज्यालो
बांधे नहीं॥ नी कहे रिबे भावे नाहि॥ ब्यासो लेनि रबं
धरहे॥ कोइ सा प्रसरूपा माहि॥ ८०॥ ... दजुपाल॥ जे
बिषे बवन तजि हरि कुंनहे॥ तजि है अपनो जवना
सो जिष्या हे ति बिचरि है पुर मे॥ नूपर नवनन करि
हैं जुवनो॥ ८१॥ कंम ल्या॥ नाडो   टी

प्राणपालणजोणि॥ रोमन्चरणयांसेत्रभिकाली
यांअतीतीहाणि॥ लीयांअतीतीहाणिगयांनबैरागबि
गडिहै॥ धंधकरमबधिजाइअगतिमैंजाजीपडिहै॥
सुषसोजाबैरागसैयौलीज्योसब्दपिछाणि॥ जाडोरे
हीदोवटीतनप्राणपालणजोणि॥ ७२॥ क्रूसनहीह
रसांनहीकरैनस्वादसिंगार॥ जाडोत्रहरिन्यारारहैगुरि
बैरागकरार॥ उरबैरागकरारजाचनांचितरनिनांहि
हरिअग्रछ्याकोलेहज्ञापअग्रछ्यानउपांही॥ जेसुषीया
सानंदमैंज्यांकलपनिनहीलगार॥ क्रूसनहीहरसान
हीकरैनस्वादसिंगार॥ ७३॥ [illegible]॥ कालमैं
मसतजोदसतलीयांगरूजीकोफीकोलागैसुषजो
गजोगगतिपाइहै॥ सोगकोउगाइमूलसांसाकीनस्रू
लजागैजागैनाहीतापलनिमनसितलाईहै॥ मजानप्र

फूलिसदाफूलिकोनत्रासआवैदावैबंधैनांहिकाहं
सदासुषदाईहै।रांमहीचरणऔसेजोगीयांजुगतिलीं
यांरसपीयांरसनांमरांमकोमनांगुमाईहै।८३।कोमनां
रहतसोहीजांनीएअतीतपूराकूराकूराकोमकितसारा
हीनसांनांहै।सूरांहोइहूराकरैममतरूमायांफंदडंद
डरमतिदोषनरमकेमहांनांहै।नस्रमींनसंकजाकेरां
कसूपएकत्नएगएहदहरसबिचारबमादोनांहैं।रांम
हीचरणनजेरांमरमतीतनितिसतसोनावांनजाकेसी
सिनलावांनांहै।८४।वांनांकोबिचारनितिनिब्रतिनि
मांणरहैगहैनांहीमांनमायाकायासूंनयारीहै।निरां
जनकिंबिनांमनांमनौरथजीतिबीतिगएबदीसदीसुष
सोगटारीहै।समतासबूरीसतमतकोजगांढलीयांकी
रीहै॥रांमहीचरणवांकीकहीं

ऐसे का ई का हा रां म रां म ग्या ड़ जत जर णं स जारी है॥
७ पा॥ [illegible] जा कौ नां म न्न तीत जीत बै ठे जग बाजी
उ ति मल छि न्न धि कार न्न ग म कें सा ज ब सा जी ता
जी की ऐ त या र सु ध नर बे द क रा रौ॥ जा के सं ज म बा ग
न्न ज न क रि ष ड ग उ धा री॥ या बि धि ज न न्न स वा र हो इ
म न पा र ध का वा णे जे क रे॥ रा म च र ण वे रां म जे न ता
द्वि ध र म द्रा ड़ से क न्न रे॥ ८ हा सा धु ज न म न जीत
न्नी त न्ने न्न र म नि वा स्यौ॥ गु णां ती त प द ली न कीन
स ब रो ग ज टा स्यौ॥ न्न या नि रो गा ने त से त जग गऐ ज पा
रा॥ [illegible] र म धा र णं ध्यां न ग्यां न न्न ग ती इ क धा रा॥ उति म
[illegible] न्न गा ध म त त त न्न ज न इ क रां म॥ रां म च र ण ज न
रां म का॥ स दा सु ष म इ धां म॥ ८७॥ स दा सु ष म इ धां म रां
म के सं त उ न्ना ज र॥ ग्यां न न्न ग ति बै रा ग ध र म का कहे

ञ्गागार॥सातासीलसंतोषदयाधीरजमतपाकें॥संतिसु
धामईबेनचैनहोइसुणतांताके॥दरसणकरतांप्रेमभ्रगि
उपजैपेमनिधांन॥ रांमचरणवैसंतजनरांमनांमदेदांन
७०॥रांमनांमदातारसंतपरमारथकरिहैं॥सवारथसरक
नमरिकदेआसानहींधरिहैं॥निरदावैनिरदोषमोखिपद
माहिमिलावें॥करमकाचकरिहरिसांचचोडेदिषलावें॥
वैसाधपरमारथीपरमपदप्रातति करै॥रांमचरणरतरां
मसूकांमदांमसबपरहरै॥७१॥कांमकामणीत्यागिकनक
छीवैनकदाई॥जांणैजेजालिकालकीकहीजआई॥छू
टिलेइवैरागग्यांनकीगमनरहोवैं॥लगतिनजावैहरिन
रमनांउषफेलावैं॥तातेंजनत्यागनकरैफिरैआपणैंका
लि॥रांमचरणजनजिरांमकृत्रिसनांबेंगपालि॥७२॥
जेन्हकांमीजनमनबांणीकेपारा॥तनमैहैंतनवाहिर

है सो मलिपणि न्यारा ॥ ज्यूं जल मैं सि सबबबंब जल तै
क न होइ ॥ मो षन तकर सेमी पत कर घी जि दैन कोई ॥
यूं बिचारि करि देषीऐ जनन्ह कांमी अंग ॥ रांम चरण
यूं जिनि हैं आपै रूप अनंग ॥ ए१ ॥ आपै रूप अनंग रंग
पंचन सूं न्यारा ॥ सदा अरंगी रांम ए कर सि निति निरका
रा ॥ गुणं पार निरधार निरंतर व्यापक सारे ॥ जन नांनंदी
संत तंत निज नांव उचारे ॥ नांम अरूपा रूप है सब ताके
आधारि ॥ रांम चरण जजि मिलि रहो आपै आप मंझारि
ए४ ॥ छंद कुंडलीया ॥ आप मेटि आप में मिलीया आ
परूप होइ रहीया ॥ जनम मैं मरै न जुरा संतावै असा अगम
पद लहीया ॥ वा पद की तारीफ न आवै ॥ करी ऐ का हाव
षांणि ॥ गुणातीत पंचरंग न वाकै अंग सेग न ही जांनी ॥
अंगन संगा नेग नहीं जिन ता सरब गति पूरण स्वामी ॥

अविकार निरलेप निरंजन पर पूरण ब्रह्म नामी ॥ ठौर न
मेटन हांनो प्रगट ॥ घटि घटि अघटि समाया ॥ जे दरि वाही
कलते काँ ॥ जो है न व्यापै माया ॥ माया पार ब्रह्म व्यवसी ॥
दस्तु परत्ति द्विवार नतारूं ॥ धांन धंन न्यार ॥ रूल अरु कौ रे करि प
■ सो ग्रंवलोन सवातमाहे ॥ कव इनं परिहै कयां ॥ यं नन्
रहवलिहारी गुरकी ॥ जिन छेदवतीया ॥ ग्राया ने दवेद ॥
मक्ताजी ॥ जागी ग्रवसेनी ग्रेसी ॥ नै कृमगयारहथा ॥ थावे
हो ॥ कहहि सो गति कैसी ॥ ग्र कथ कोहालै सतगुर दाषी
कैन्ही महरिनि धांनी ॥ राम चरण निति चरण तर रहे ॥ दा
स्त्र ध्यात मरणानी ॥ ५ ॥ कोई ग्लोगा गुरा मिली यांस्तु जद
जै सानन्त्र ध्यात मसार ॥ राम चरण तै सरस कार हरिनवा
या सार ॥ हरिनवाया सार धार मैं बोवे णहारा ॥ राविलीय
म्र देव न्याप कोटे इस्या हारा ॥ एकै चाएपर ब्रह्म पदि

मनवाणीकैपार ॥ गुरमिलीयासूरूपजैग्यानअभ्या
नमसार ॥ ४५६ ॥ [illegible]
[illegible] हेक्रिपाक्रिपालजीआ
पकरीमाहाराजि ॥ कठलिजुबरतकरडीसमेकलिजु
गमांहीआजि ॥ कलिजुगमांहीआजिकाजिलपबज
जारी ॥ अघिअघिअघकेओहोविघनऊतेजोसन्यापा
नी ॥ कारनिरंजननिरमलकीयोरामचरणकूराजि ॥ हे
क्रिपाक्रिपालजीआपकरीमाहाराजि ॥ ४५७ ॥ क्रिपा
लबकेकिरपालजीसतगुरदीनदयाल ॥ रामचरण
परिकरि क्रिपासरणेकीयोनिहाल ॥ सरणेकीयोनिहाल
सालदोइदीरघकोया ॥ मेमनकेउरमांह ॥ आपकाचर
णांपोया ॥ तबनिरंजननिरंजनजोनरहैऊबारटीमायाजाल
क्रिपालबकेकिपालजीसतगुरदीनदयाल ॥ ४५८ ॥ [illegible]

रांइरागं॥हमतोहोते लुछि कुछिनहीजांनते॥कोहोगोपान
अध्यासअोनगतिमांनते॥अबहमबाजेसंततेतअधि
कारहै॥परिहांसतगुरमिलेक्रिपालकीऐजगपारहैं॥
९९॥कबित॥बरणबंधघरबंधसदाअजकोयारहता
चरमकरमकीधारकोमनोसंगिजबहता॥सुचिअसुचि
नभेदजोहोतोहोदीनंजहोता॥तोकेनसधलोकोमरैणिदि
नषालगोता॥अैसेहमहोतेषरेमरेकाजिअकाज॥गुर
मिलेक्रिपालजीज्योराखीसबलाज॥१००॥कल्या॥
लाजरषीक्रिपालजीदीयाफतेकासाज॥काइरसूंस
राकीयासतगरीबनवाज॥सतगरीबनवाजकाजक
रणकरिकीया॥आपकरीअपणतिरामकोनामजदी
या॥रांमचरणकहैसीसममसतगुरजीहोराजालाज
रषी क्रिपालजीदीयाफतेकासाज॥१०१॥माइ निगरी

कूंजडी पूत फतेषांबाज बापन मारी मीरकी बेटो
तेरू ह्वाज बेटो ते रूह्वाज स्याज स्रूरां संगि पाया का
इर कुटिलेजन मिस्रूर संगि स्रूर कुहाया स्रूघां स्रूम
या की या गुरू गारी बन बाज माइ मि गारी कूंजडी पूत
फतेषांबाज १०२ स्रूघां स्रूम या की यासतगुर पार
स आप बार स केती या आप मै मेटी सब हीताप
मेटी सब हीताप स्वांति सीतल सब अंगा न घ सघ
निरमल मन। मि लि रहो आनंगा आवै न आवैग
लटि कै सांम चर ण ज्यां लाय स्रूघां स्रूम या की यासत
गुर पार स आप १०३ ... पारस प्रेमी सतगु
र पूरा आप आ सिरै लीया हम तो जावकु ते लोहे रू
पा ता कूं पारस कीया जयां आ मीलन तोलन या नारी
आति आ घ कारब घाया हम का हाजा नैं त्रति म पद

की॥सो आपदी यो देस॥३॥माया मोहो क्रोह नही ब्यापे
काल जाल अे जाग॥गुरपदपाइ थकआस बगव नोघी
रू बाप्प रिला गा॥ ऐक क्षणउ ताया बिसरा नै॥ सो ग्गे
नौ छिपेन कोइ॥ राम राम धुनि रोम रोम मे॥ सदा अपंड त
होइ॥राम चरण यू पाइ मा॥हापदा॥गुरगम मे निति रही ऐ
ओर अनेक दे षि मन रचना॥ जाके संग न बही ऐ॥ सग
चा कोतो सत पुरसा को॥ कीजे दे बि बिचारी॥ लछि धा
स्या के निकटि जरही ऐ॥ जे जन जत मतधारी॥१०४॥
के करयौ॥ जतपूरा सतस्र रि वा नर मत ज्यो अजनी
का॥नरिसा ला बिपता बिगत स्वाल सना षणा ठीक॥
स्वाल सना षणा ठीक पीक पर बिति की नाही॥ग्यान दा
न दातार सदा आस ति बरताही॥ अैसे निज जन राम
का ज्यो रही ऐ सदा नजीक॥ जतपूरा सत सूरि वा नर म

तज्योंसजनीया १९५ रामचरणगुरदेवनि
जबाइकमुषिउचरै. रामरसांइतिनेवप्रतीतजज
नसेंपाइते १९६ जनप्रतापकहीरे
ग्रथ्या रामरसांइनाकी ग्रोररसांइतिकंपूर
मांही सोजांणीज्योंफीका फीकाफकतनहीरमजा
में तोकामैंमराते ग्राम माहारसांइणिसदसरजी
वण सवरोगपरमतिवासा सोतेसतगुर ग्रापवता
ई रांमरांमराहतेजे रामचरणपीरांमरसांइणि
रांमतिलेलिहलिजेजे १९७ ऐरांमरसांइणि
बरणांयां गुरुपरुषोमईमार माहाराजि ग्रमीबिरं
पाकरं जासेतेहावेच्चार १९८ रामचरणमाहाराजि
मुषि इम्रतबिरषाकीन पीपीजीवदासजी ग्रापउ
नूपदलीन १९९ ग्रारदासकीतेकरसि तोफसेनकी

तोतनी ज्यों सुधि किं यारी ॥ रामचरणजी सतगुर मेरा

सुष सरूप सदाई ॥ जे ऐ श्रवण नै सबद उचारे सबहि

न कूं सुषिदाई ॥ १११ ॥ चौपाई ॥ ऐ बाइक फुरमाइ प

धारे धांम कूं ॥ ररकार मैं लीन उचारे राम कूं अवैरा

सैंपचपन बुधि पांचै वरी ॥ परिहां बैसाष मास गुरबार

देह त्यागन करी ॥ ११२ ॥ कवित्त ॥ देह छतां देह रहत नि

त निरबृति मन धार्‍यो ॥ ररंकार जलीन राम हीं राम

उचार्‍यो ॥ ज्यूं तंज न जल मैं षिम धि बाहरि जल ऐ का रा

म रूप जन सदा राम सबदन मैं देषो ॥ यूं तरवर को खाद बी

ज रस फल मैं जांनो ॥ रामचरण माहाराजि सबद के बीचि

समांनो गया न आया राम जी राम सबन मैं गक राम उचा

रै राम जन जाके सदा नजीक ॥ ११३ ॥ चौपाई ॥ संवत अ

ष्ठदस पचावन जांनो ऐ श्रासो जं पंचमी बुधि मा

[illegible] मद [illegible]
हैं पहिले [illegible] के [illegible] है
[illegible] गुरु [illegible]
जिव [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] निरंजन [illegible]
[illegible] पावन [illegible]
[illegible] पूरन [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] निर्लेप निरंजन।

क ति नांव दाइं उधरं जन ॥ नमो संत मन अंत माहापद

जोन केअधिकारी ॥ तिरदा नेद ब्रह्मांनि बिपरोक बिचारी ॥

रांम जन तन मन सूं करै बंदनां सोइ ॥ आदि अंतिम

धिसाहिकी तुम बिनि नांही कोइ ॥१॥ [illegible]

[illegible] नमो नमो रांमर मतीत हो अजीत आप सत चि

दानंद रूप निति निराधार जू ॥ नमो निज नूर अर धू

र परमातम हो आतम प्रकास वल मन वांणी पार जू

अधल अमल आति गति उन लखै कोई ब्रह्मादिक

बेद साध नांम ही उचार जू ॥ रांम जन बंदन करत क

र भेटि मोर तोर पद तेज पुंज नमो निराकार जू ॥ २

नमो निराकार निरलेप सो अहो प आपतापतीनह

रन करन मुक्ति को सरूप जू ॥ नमो आदि अंतिम धिसि

[illegible]

नमोसुषदाईसोब्रह्मोइतुजिकूनन्नूनकरनांनिधांन
मेटिमाहाजगधूपज्यो॥करतप्रनामसोप्रनामगुरमा
हिभारिरांमजनबंदतसुरेसरांमअनूपज्यो॥७॥ॐ॥न
मोनमोगुरदेवपरमपदकेपरकासी॥नांवनिधिदाता
रहरनत्रगुनकीपांसी॥निति मुकतिनिरआसबिला
सिकब्रह्मसरूपा॥तनछबिसोजासंरसंदरसतेसुष
अनूपा॥अमरध्यानमननमैरहोरांमचरणमाहाराजिको
जिको॥रांमजनबंदनकरैधनिदिहाडोआजिको
धा॥अथ [illegible] ध्यान [illegible] गाचौ [illegible]॥ [illegible]ति॥स
तगुररांमदयालजन॥घनआनंदसुषकार॥ति
नकूंबंदनरांमजन॥करिकूंनितिनिरधार॥१॥
गुंण॥ [illegible]॥सतगुरदयाबषाणिकै॥ध्यानबेग
चौसार॥रांमजनरमीएजाहां॥जाहांसीतलसुष

अपार॥ १ ॥ राम नाम को ध्यान धरि॥ जे सीतल होइ
जीव॥ राम जंन तां ही लाइए॥ उतिम बात सदीव॥ २
॥ प्रथम ध्यान अलोकन कीजे॥ उतिम धर
नी का ठीली जे॥ माहा षेत॥ तांहां ऊसर नाहीं॥ सोही
बिचारो अंतर मांही॥ ३॥ अंतर जो मिमाहा सुष का
री॥ मत की दिढ तां ले रू बिचारी॥ करो हंकार बेगिया
धरनी गटी॥ अब सतगुर की कारनी॥ सबद बेलि कर मा
टी लीजे॥ व्यासूप्रणं चोकस कीजे॥ अहंत हकारण व्या
रिजा नो॥ कसर कोरस बहन की जानै॥ ५॥ टाबा और
उरसि करि ल्याइ॥ ऊचा नीचा होइ जिताई॥ बरण बम
६ मान निमांनो॥ मोहा मद॥ मछर ता जानो॥ ६॥ काम
क्रोध लोभ अहंकारा॥ दुरमति दुंद बाद जो सारा॥ राग
दोष रगति दे जेती॥ कुबधि कालम पाम ममता केती॥ ७

औधि वियांकि दरयारौ ॥ जैनि बासंतन दुजारौ
ऐसे मैं नहु विनव कीनि ॥ पीछे रसनः कथ दीनि ५
प्रकनारौं सतनाता ॥ लागी - रैवाकेथी उपरतब
लागी । सतगुरनो रदई प्रवाई ॥ रासंरानस्यो मार
मारि ॥ ७ ॥ चौपकसना त्यारियहस्थानां बस्तार
सतावे ह्रातवपानां ॥ वेसोल्यु रकतोपथ यानाई
ता सुपीवैं जागवदई ॥ १७ ॥ क्रवकुंडकोतु नवता
मैं ॥ चातिजलपतालपादस्या जं नोरकुदसोसतगु
रु सेन्यो ॥ सिषत्रापन्यवैकरेलो रहो ॥ १८ ॥ बालासा
सच सासबरणारौ ॥ होरस्कतबादरोकेसारो तसपान
ऐसोही पानणकोट ॥ कनेवक्ता मासीहरिउफाटे
१९ वेसोस्यूपक मरनतसिवक्लाई ता कुपरिकसंची
कैसिबाई नवबदरेनवसतगुरतारे ॥

सबद छूटे रै॥१३॥ ज्यं ज्यं जन करै मन अटके ग्यान जंबूरा सिलपैपट के॥ गुरपरताप सैं सद जे फूटी॥ तब दासी रनीर की छूटी॥१४॥ पेम स जल होइ निकस्या पाणी॥ लागे बाग तबे सर नाणी॥ निज मन षडो दूरो गो जावै॥ बाग ट दलनी कांक रिवावै॥१५॥ दूहा॥ बाग दरोगो रैणि दिना निज मन षडो सदीव॥ चेतन चोका म्हैलीयो॥ जाणि आये णै जीव॥१६॥ चोपई॥ करै जाब तो नी कोप दली॥ तसकर के नदी लाधे गेली॥ ध्यान धरम की बाडि कराई॥ जाते चूरो पडे न काई॥१७॥ अब बाग मे चेदा न्यारी॥ सतगुर रोपे निज बनवारी॥ परयम धीरज डर मतलगाया॥ रस तैं रस तैं ऐ छटराया॥१८॥ सील संतोष नारेल छ वारा॥ उतिम कला के

तबिसतारा॥ श्रांबानीबसांचरसमतां॥टा
षंबदामदीनतानमता॥ आमलबेदबजोरान
१॥सोदीग्पानबेरागसवाइ सबरिबिचारबं
बेकजोचीन्है॥ तलरसेवसुपारीतीन्हे॥२०
सीतापलसादीसतजानं॥ षरांगीषरीकसोटी
मानं॥ चंतारदतसरूतरजावे॥ अजाचीक
सोताइकुहावे॥२१॥ षबीषम्याजाइचमेली॥
दारिरंगरचेस्नतिमबेली॥ भगतिकेतकीसक
रदवसेषा॥ नारीकेवडोन्हचोषा॥२२॥ बोल
रिमोगरोमनसुधराइ॥ जोकेफलमाहाकस
बोइ॥ बिडागुलाबकोकरणीजाइ॥ तिगेफल
करीषा॥

फलरामअरपावे॥

धौ॥ पलादोड़ खटक ताकौं धौ॥३॥ पटौके ससौं
कीयौ॥ पटकौ कमरिक सिलीयौ॥ नातीमौ
चड़ी पहरे सादी और की चरनैं॥३॥ मिरै धुम
कि धरणीपाव बागा बावड़ा॥ अति चाव करै
बा घोटिकै पीवै॥ अमल बिलिय सकै नहीं जी
वै॥४॥ नारी पारकी ताकै नैण कसर की झांकै
॥ ऐसौ अंधवैई मान कीयौ काम नाहें सांन॥
॥५॥ छाया निरषतौ बासौ बा चाग रत की पावै
॥ नाग रिपांन सूं अति जोष बीडी सौ यापावै
पोष ई॥ मूंछां अधिक आणीया लीजू सपष्य
सो कृती कासी सुधा अतरस सूं नीन्हौ मींदी
जालपरि दीन्हीं॥७॥ दलावै कानमे मोती॥ गि॥

नहीं हूबलागोती करंकी आंग ल्यांबिंदी
गलामैमांदस्याकंगी ८ न्यारौबापसूंही
ई त्रीयापुरषपरहैदोई मायासबहै मेरी
हवेली बासिसूंतेरी ९ संनेही मासरला
मावै करटबीटै बिडुषपावै मातापिताकुं
देगारि बोलैनहीं सबद बिचारि १० तिस
नांलोनकी आतिलाइ धनकुं फिरै चकुं
दिसध्याइ कांमी कुटलमुतिकौहीण मू
रिषबिषैमैपरबीण ११ हरिकोनांवसुम
रैनांहि इसबिधिजनम अंहलौजांहि बा
चाग्रनकीचूल्यौ सुषसंसारकै फूल्यौ १२
करैनहीं नारिकैन्यारी हिरदैबसिरहीप्यां

२॥ कोई जगति की नाषे तासूं बैर करि राषे
॥२३॥ दूहा ॥ सांम जगति जांणें नहीं ॥ करम्यांसूं
कुसीयार ॥ हेत सर्णा तन अबसतां ॥ बोवे का
लीधार ॥१॥ बरस पचीसां परिनयो ॥ आब जुवा
नी का जोर ॥ सुत कें न्यासूं हित कीयो ॥ निज रि
न आवें ओर ॥२॥ चांमर छंद ॥ पचीसा कुपरे
कू वो ॥ कमा दे तिप चिम्म वो ॥ आपणां ग्रिह
को सांसो न जांणो जगति को आसो ॥१॥ धन की
चातुरी जांणी ॥ निंद्या नाद की गांणी ॥ रांम जग
त को नातो तोड्यो नाव को तांतो ॥२॥ जुवांनी
जम की दासी ॥ लीयां कर बिषे की पासी ॥ कीया
बसि जीव घेरे ईसू के जवांनी
पालि आमू रिष

तातो हरि की बात नहीं जावै साधु धिपिड
लि जावै ५ आपणां सुवार थां रूडौ हरिको
भगति सं रूडौ करै नहीं साधको संगा अंत
रिगति जगत कौ रंगा ॥ पाप मेरै किवौ षोनारी मो
बिन दीइ सब बुवारी ॥ मैं तौ सबन कौ प्रितपा
ल न्यासे नहीं सिर परि काल ६ करतां क्रम
सब दिन जाइ सुपनै सुष नांहीं पाइ लीयें
सब आपणौं सिर भार कबीलौ चलै नांहीं
लार ७ हरि मेरो हो बांधे काइ तेरै देषतां
सब जांहि तेरो बाप कांहां नाइ इस वि
धि कोई मिल जाई ८ साचौ सार है एक राम
ता बिन जगत सब बेकाम ॥ जोबन
पांजणौं जाइ दिन दिस देषतां जाइ ए

काचा करी का सारंग॥ जोबन नगतिया
है नग॥ बूढापो सी सपरि आयो॥ जोबन दे
षि थर रायो॥ २४॥ सब ही छूट ले सी माल
कर सी बुढापो बे हाल॥ क हूँ बी कारन दी
माने त्रीया संकन दी आगे॥ २५॥ डुस्या चाल
सा कै ऊपरे॥ बिध आेसता हो इ॥ वि ना वि
त कू ग्रासि है॥ निसदि न बाहै सोइ॥ २॥ अम
र बेलि जूं बिरच को॥ चू सि ली यो सब तंत
॥ राम चरण यूं जगत कौ॥ ली यो कबी लै
अंत॥ २॥ चाकर छंद॥ अब लो चे लि रे अंध
॥ घर का फ री या कं धा॥ नारी करे ना दी नेह
सुत का वारण नित लेह॥ १॥ तन को घट गयो

जोरौ दुनीयांसबकहै जोरौ बेराबोलै
मांनैनांहि ऊ रैकलपनामनमांहि रतन
कीतुचासलपडीया नैणनीरत्रतिकरी
या पलयास्यामसबहीकेस सोतोसुक
लक्षवानेस ३ माथौहालणैलागो करा
कोजोरसबनागो पगांमैपडतहै त्रांटी
होइगइदेहकीघाटी ४ श्रवणसुणैनां
हीबैण सूझेफांतलौसौनैण बाचागीक
नहीबोलै मनसापाडिगइजोरलै ५ सुषमै
दांतनांहीमाह देहीवडपडैसबहाम जग
रात्रगतिनीनागी बकाकोसुध्यानहीजा
गी ६ नोजिनस्वादनहीलागो मूरषरोइ

रोइ त्यागे॥घरमैं ऊकम चाहै नांहि॥तुग
लीपाइ यै चामांहि॥७॥बैसें कर कड़ी की
न्हौ॥घरोलीयो लिमैं लीन्हौ॥मरिन्नी जाइ
नहीं फाकी॥नजांणां कितादिन बाकी॥८॥
प्यासां जलनदीपावै॥बैठ लिटि गिनहीं आ
वे॥करिकैकरलपनानारी॥सब देहदेते दे
गारी॥९॥छोरा हांसि करिनलागे॥जिनको
मोकरीलागे॥नहीं कोईसादि को करता
॥ईदिबिधिआपदानरता॥१०॥फाटो गूद
डोदीयो॥तुगतेआपणुकीयो॥धणी की
चूकहैनारी॥जासूं नहेहै घुवारी॥११॥जा
चा चूकीयो आज्ञांन॥की . । ।   :का

ध्यांन ॥ बोल्यौ प्रजमांही बोल ॥ नीसरि न्नू
लीयौ सब कोल ॥ १२ ॥ कटू बी आपणा की
या ॥ बुढापै हरि करि दीया ॥ काढे घाट मैं जा
वै ॥ असा उपन्न जन न बिनि पावै ॥ १३ ॥ अ
बतौ नइ पूरण आव ॥ जम कै हत्त घाल्यो
घाव ॥ आयौ सांव गै साथ्या ॥ न ही दोइ च्या
र की बातां ॥ १४ ॥ आवत दे षि बिललायौ
न यौ जम हत्त कौ नायौ ॥ बुलावै आप
णी नारी ॥ षरी ह्नै नां बतीम्हारी ॥ १५ ॥ बुल
वै सैन सं पूता ॥ लीयौ मोहि पकडि जम
हता ॥ करौ कोइ सा हि अ बस्ता की करी
छौबे गि मैं या की ॥ १६ ॥ उपमैं नि कटि नहीं

आवै [illegible] हरि [illegible] जावै [illegible]

सबदास [illegible] रहो वो [illegible]

जैवन के [illegible] मरपोइ [illegible]

बोर पाई [illegible] गल कैर [illegible]

हो छामन [illegible] जमकी [illegible]

पकड्यो [illegible] के दरबार [illegible]

यो आयो [illegible] नाव [illegible]

उ पकड़ [illegible] जम [illegible]

हीको [illegible] राम [illegible]

सासब राइ [illegible]

गयो पाच [illegible] राम [illegible]

यो नारी [illegible] तीया [illegible]

कपटसूंसोवै। हिरदैत्र्यधिकसुषहोवै। मि
ध्योहैत्र्याजउषनारी। निसदिनकाटतो
जारी।२। साषीसोकत्र्याधीपोलि। उजलक
रोलीपरधोलि। हमारैत्र्याजित्र्यतिहीसु
ष। ब्रूटैलेगत्र्योसवदुष।३। याकेबालू
त्र्यावोवीर। लागीछोतित्र्यधिकसरीर।
पीछैनीरमैंन्हाया। दिवालेहोडूकरित्र्या
या।४।१८। जीवतऐतोउषलह्या। बिना
जन्पालगवंत। त्र्यबचौरासीजूणिमे
जातैकसटत्र्यनंत।१। काहाकह्या
जगतसू मांनैनहीलगार। सबहीदेष
तजातहै। जैनलेरजगादार।२। सुष

फेरै हरि जगति सूं॥ सुन मुनि रहै सेसा
रा राम चरण वै मांन ही॥ ऊलै नरकि मं
झारि॥३॥ चौपई छंद॥ के कि अब नरक
का वज नेहा॥ ता मैं जीव घा वै भेद॥ अस
टा बीस कुंभ नारी॥ ऊलै अधम जन्न
री॥ यो थां ना सार का ताता॥ तिन सूं जरा
वै बाथा॥ रत्यो तू नारि सूं लिपटाइ॥ सो
अब थंभ नै येम आइ॥ सिंहला सूं नैं को
बोहो धार॥ ता मैं बहै जीव अपार॥ को
टा सार का सूला॥ ता परि चालै रे भूला॥
३॥ हरि कीरतन हीं चाल्यो॥ गुरु को सब
द कूं पाल्यो॥ ता सूं चलो कांटां मांहि॥ यो

हीधरणिअरन्मा कास जासीमेरमंक
कबलास २ नहीरहैसिलतसागरसा
त नहीयरस्वरसिसकुसलात नहीर
है पवन पांणी नीर ऐसब व्ययरेनांही
थीर ३ नहीरहैमेघमाला इंद्र आसीका
लकरिवरिकंद नहीरहैधरमअधरमका
इंत जासीमाइमाकापूत ४ उपज्या
जोहिसबहीबीति केताक हूकरिके
रिचीत समझैसैनमैस्याणा निजांणेआ
पनिजपानां ५ कादासआसिब्रह्माछ
लन कीधोमछहो इनिरदलन कोहा
तिरमेरकेरमजुम्मो आसोपीविसाइ

रम्यो ॥ ६॥ कोहांहरनों छि धरणीहरी
जाहिति देर बारारह धरी ॥ मासौ न्ने सु
र कीन्हों नास ॥ मेटी धरनरी की त्रास ॥
७॥ कोहा हरनाकिरहरिस हा कीयो पुन
सुन्नति बार जा बद्री प्रसौ नर हरय ॥ प॥
राष्यौ जगत मासौ न्रुप बसिकै प्रसौ व
वनरूप ॥ जिगमै आपुज्या चौन्रूप ॥ सौ पा
ता सिमैस्यौ जाइ न्रूपरि निकरि आनेना
हि ॥ ८॥ जो धापेस सरबाही ॥ निति ही वैरे
छेत्र छांरा जाको अधिककरी ले जोर ॥
वासमिहसरानरी आर ॥ १०॥ धरी यो लिप
रको औतार ॥ ताके मारि कीयो पुवार को

हि हिरदै धारि चेतन रहो ई २० रसनां राम
कै रटी हो सतगुर सरणिं ही गही हो संसा
जीव का सब जाइ रहसी ब्रह्म पद समाइ
२१ ऐहि चिंतावणि गुरबहुणि हरिसू
कै सनेह राम चरण साची कहै फिरि धरै
न देह जी दैह १ राम चरण जिन रामकूं छे
डि देहादि कथि रचो रुगत जिन विसाव
सूं तो छूटै जमभार २ राम चरण जिन रां
मकूं संत कहै समझाइ सब सागर कै छी
डि कै नति छीलर डुब जाइ ३ २ ४
रीया दुक ककहि जाइ सबद ब्रह्म नांदी कहै
राम चरण रटि ताहि चौरासी का मेटसी ४

चौरासी की मारा भजन बिना छूटै नहीं ता
तै होइ इसी यारा ॥ दसी [illegible] ॥
इती ग्रंथ चिंतावणी संपूरण ॥ दुहा ॥ [illegible]
नरकुंद ॥१००॥ सोरठा ॥२॥ सरवा ॥१२७॥ ग्र
था ॥३॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] रमतीतरांमगुरदे
वजी ॥ कुनितिहुकालकेसंत ॥ जिन
केरांमचरणकी ॥ बंदनबारम्बारं
[illegible] स्वांमीश्रीसंतदास ॥
जिनके कृपा रांम ॥ रांमचरणताकी
सरणि ॥ सस्यामनोरथकांम ॥१॥ कृ
पारांम कदा करी ॥ हमकेकीयानिहा
ल ॥ परउपगारी रांमरत ॥ मिलीयापर
मदयाल ॥२॥ दतनारदसप्रदेवसे ॥ श्री

दनवारू वार ॥२॥ को हाबूरसांत विसतार क
रे ॥ सतगुर गुण न पार ॥ रांम चरण दे रांम
धन ॥ अनंत को पाउपगार ॥३॥ रांम चरण
सतगुर मिल्या ॥ कीया बोहोत उपगार
सिर सूं डारिन षाईया ॥ फूंदा जग का मार
प न्यारली याते वू नीया ॥ जौ सागर की धा
रा ॥ रांम सुन रल कान या ॥ सो नर उतरया
पार ॥४॥ रांम चरण सतगुर बिना ॥ कूंण को
रै उपगार ॥ जे वे सागर की धार सो ॥ दूर तल
घाव षण दार ॥५॥ नौ को नाव वूण डूबो सु
त करै नापार ॥ रांम चरण जग नाचवै ॥ ता तै
बूनै धार ॥६॥ अैसी कोई नवारि

त गुरसं होइ ॥ रांम चरण गुरगारड ॥ सबबि
घमारै श्रोइ ॥ ९ ॥ जौ सचा सतगुर मिलै ॥ तौ
सिष भी सचा होइ ॥ रांम चरण सचा बिनां
नखि मति कृमो कोइ ॥ १० ॥ रांम चरण साचा
गरू ॥ सिष कंदे वैसा ॥ च रीफ करै सत सब
दकी ॥ हरि करै भूम काच ॥ ११ ॥ भरम करम
म सब ततडा ॥ सत गुर देह उमाइ ॥ रांम
नांम निज करण सबद ॥ सिष कंदे पिछाण
इ ॥ १२ ॥ सत गुर की पुजा करै ॥ तन मन श्रा
पा देह ॥ तौ रांम चरण ते संत जन ॥ श्राप
जसा करलेह ॥ १३ ॥ सत गुर चरण्या इछा ॥ उ
ब श्रारषी न कोइ ॥ जैसी साषा नी पजै ॥ तसी

नो म कादोइ ॥१४॥ घम किघम किघ नबरस ।
यो ॥ रतिबनि मालीषेत ॥ यूं राम चरण गुरस्युं
करे ॥ जो सिषदोइ अचेत ॥१५॥ सत गुरबरसे
मेघ ज्युं ॥ सिष जे प्यासीहोइ ॥ राम चरण त
ब नीपजे ॥ निरफल जाइ नकोइ ॥१६॥ राम
चरण करसण न गति ॥ सुध हिरदो सुषेत ॥
नाव बीज गुर मह रिजल ॥ तब बहुत गपान
फलदेत ॥१७॥ रामचरण षेती फल्या ॥ त्रिस्न
गइ बिलाइ ॥ निरधनी या धनवत भया ॥
अब धन षरचे षाइ ॥१८॥ राम चरण सतगु
रसार ॥ पूंजी बकसण हार ॥ करे कुमाइ रेति
दिनातो सिषहोइ साहूकार ॥१९॥ सत गुरका

त गुरसं लोइ ॥ रांम चरण गुरगारडु ॥ सबवि
ष मारे श्रोइ ॥ ९ ॥ जो सचा सतगुरां मिलै ॥ तौ
सिष नी सचा लोइ ॥ रांम चरण सचा बिनां
नां थिमति बूझो कोइ ॥ १० ॥ रांम चरण सा चा
गरू ॥ सिष कं दे वैसा च ॥ रीझ करे सत सब
द की ॥ हरि करे जूम काच ॥ ११ ॥ भरम कर
म सब तत डा ॥ सतगुर देहु डाइ ॥ रांम
नांम निज करण सबद ॥ सिष कं दे पिछाण
इ ॥ १२ ॥ सतगुर की पूजा करे ॥ तन मन आ
पा देइ ॥ तो रांम चरण कहे संत जन ॥ आप
जसा कर लेइ ॥ १३ ॥ सतगुर बरण्या हद ॥ उ
बआर पीन कोइ ॥ जैसी साषा नी पजे ॥ तसी

नो मकाहोइ॥१४॥ घम किंघम किंघन बरसे
यो॥ रतिबनिमाली षेत॥ यूं राम चरण गुर क्या
करै॥ जो सिष होइ अचेत॥१५॥ सत गुर बरसे
मेघ ज्यूं॥ सिष ज्यासी होइ॥ राम चरण त
बनी पजै॥ निरफल जाइ न कोइ॥१६॥ राम
चरण करसण ज्यं गति॥ सुधहि रिदो सुषेत॥
नाव बीज गुर महरि जल॥ तब ब्रह्म ग्यान
फल देत॥१७॥ रामचरण षेती फल्या।
गइ बिलाइ॥ निरधनी या धन वत भया॥
अब धन षर चे षाइ॥१८॥ रामचरण
रसाद॥ पूंजी बकसण हार॥ करै कुमा
दिनां तो सिष होइ सा त

परतापको । कैसो करूं बषांण । रांमचर
ण अब परिचिया । मिटि गया आवण जा
ण ॥ २० ॥ रांमचरण बीजक बेंन । जोधर
मैथुन होइ । दूसर गुरदेव बिनि । तत नहीं
पावे कोइ ॥ २१ ॥ रांमचरण जरा मिट्या । दो
न्यू तत अर तेज । जनम मरण का मिट्या
सांसा । रस्यान कारे ॥ २२ ॥ रांमचरण सतगु
र मिल्या । सब जग लख्या जाइ ॥ रांमचर
ण कौ गम नहीं । सतगुर पैड़ै जाइ ॥ २३ ॥
रांम नाम गुरु नर मं ग्रहे । रमईया कहतां है
रू ॥ रांमचरण सतगुर मिल्या । जनम गा
ल्या मैं कां ॥ २४ ॥ रांम मिलो सतगुर मिल्या

मिल्यान्तजन का भेव॥सबद भाइ गाफलर
है॥ तो कादा करे गुरदेव॥२५॥सन गुलसमुथ
बैसे बली॥ले काटे गई बाड॥सासासम सबे नि
वारके॥ रामचरण कदलकी छाड॥२६॥
अथ सुमरण को अंग॥ लिष्यते॥ रमती
त राम गुरदेव जी॥ फुनि तिस काल के संत॥
जिन कू रामचरण की॥ बंदन बार अनंत
अंग॥ रामचरण कासी सपरि॥ एक निर
जण राम॥ राति दिवस रटबो करे॥ नहीं और
न सू काम॥१॥ रामचरण इस जीव का॥ वा
रस ऐको हीराम॥ ताहि सुमरसुष लीजीये॥ ह
जात जिवे काम॥२॥ रामचरण जो जिराम कू

ऐसो सबका सिरताज है । रामचरण कहि म
तिवहै आन देव की लार ॥ ३ ॥ आन देव
आदर नहीं रामचरण सुण राम । राति दि
वस रट बो करे ऐक ररंकार सुकाम ॥ ४ ॥
राति दिवस रट बो करे आठो मन इकता
र । रामचरण मति बीसरे ररंकार आधार
॥ ५ ॥ राम भजन बिन गत नहीं समझि मन
बारंबार रामभजन सुं भेट है जामें फे
र न सार ॥ ६ ॥ रामचरण चितराम सुं मांडि
र यो निज नांव । इण बिध कोई ॥ जागसी
जे न कार जं कां लीन ॥ ७ ॥ नैन मन तो रूव
ल करे भजन आ सगा साधि ॥ स ऊदरघे

मैंसुरतिरहै॥क्रोमिसकलबकवाद॥८॥
रांमरांमरटबोकरै॥रातिदिवसइकधार॥
औरा गैरी सुषहोइगा॥रामतणै दरबार॥९॥
सुमरण कीजे राम का॥सब संसै होइ निसं क
समदिष्टी होइ देषीयै॥काहा शबद का रस को
१०॥सुमरण सा चा सार है॥फूणा जगत बिस्का
र॥फूवा तजि सा चा गहै॥तब जी वां होइ उ
धार॥११॥जन जन बिना छूटै नहीं॥राम चरण
न वपास॥जै चाकै दीदार को॥तौ रटौ सा
स उसास॥१२॥निसदिन नजीरि राम कै॥
तजी रेन ही लगार॥राम चरण आठुपहर॥
पलपल बारू बार॥१

रहै लीनहै रामरसस्वाद प्याला महैरमी
चखे जनमगुमावैयाद १४ उग्नैसहंस
रसनारटै सोनीयाकैनाहि जावैसो
लेवकु भी है जीवमुखमाहि १५
सुमरणकरौ रामका तजिकैमानअभमा
न रामसुमरणतब्ही सुनैघटमैकेवनम्रा
न १६ रामरामरस नारटै उरमत गुरको
ग्यान रामचरणनबपाईये सोकादरि
नास १७ रामचरणहरिनामकी मेवलहा
रीनाहि सुमरयावी वपचेनम्पा कायान
गरीमांहि १८ निजसमरणनिरमैनहीजब
लगरामपुकार रामचरणभरमकुमेलहै जौ

पंथ मैं बै रै हार ॥१९॥ काचा सब गल जा ह्या
साचा राम अखंड ॥ राम चरण सो सुमरो रात
जि पड अचपाखंड ॥२०॥ अनंत कोट जन उध
र्या ॥ जिजि कै केवल राम ॥ वो होत पतित पाव
न त्रण ॥ राम चरण लै नाम ॥२१॥ राम चरण नि
ज नाव की ॥ सब संत बोले साखि ॥ तो तूं अर
थ विचार कै ॥ दिढ कौरि हिरदै राखि ॥२२॥
निस दिन रटो रे राम कूं ॥ पल पल बारंबार
राम चरण तजो रे नही ॥ अैसा सुमरण सार ॥
२३॥ सुमरण कीजै राम का ॥ मन को लै न मिटा
इ ॥ राम चरण गुर रया न गहै ॥ तो जम का ढका
न खाइ ॥२४॥ स्वा स्या सुमरै राम कूं ॥ न्यांन नारि

त्याग। करैविकारांणं ब्रह्ममै जगसेमरै
नलाग २४ घटघटब्यापकरांमहै। जन्म
लनीमेनीर रांमचरणकरणीबिनां। प्रग
टैनाहीसी। २५ कारणिसुकारणयानिकर
नलहीरसुरण होइ। रांमचरण बातांसुणो
पीवनपावेकोइ। २६ रांमचरणरांमेनज्यो
नांगै नहींकोई। नैनमांहीमैतैमनी। को
[illegible] २७ पांचतत्त गुणतीन
का रचीनमेगोजोर रांमचरणरांमेनज्यो
[illegible] २८ [illegible] नलागेजागती
[illegible] २९ रांमचरण कहै रामके [illegible]
[illegible] ३० रांमचरण आपैनहीं। गुण

ऱ्ह्या काजोर ॥ राम चरण जागे धणी ॥ तो पड़ा
रहे नहीं चोर ॥ ३१ ॥ राम चरण त्रिह बंध मे ॥
नजे निरंजण राम ॥ निस बा सुर करण करे
तौ पावे सुष धाम ॥ ३२ ॥ राम चरण हम कहत
है ॥ कह्या कबीरे नाम ॥ सकल सासतर सोधी
या ॥ कलि जुग केवल राम ॥ ३३ ॥ राम नजन
आनंद पद ॥ दुष दीरघ संसार ॥ राम चरण
दुष परहरो ॥ सुष पद करो संचार ॥ ३४
विपति निवारण सुष करण ॥ उदे गांन पर
कास ॥ राम चरण नजि राम कूं ॥ सरणि हर
णि जम त्रास ॥ ३५ ॥ सुष को सागर राम है ॥ दुष
। नजी रोव
नंज

रुखार ३६ कांम धरम अरथमोषफल
रांम चरणदेरांम न्हचामांहिनजीकहै को
ई नजोकांमन्हकांम ३७ तीनप्रकारयज
गतसुष चतुरथसंतबिलास रांमचरण
रांमजनमांहि जैसीमेरगअकास ३८ रांम
चरण संसारकी मरियमांनेसंक सरासु
मरेरांम कूं सबसरहैनसंक ३९ रांमर
टसरांमेंमिल्या रांमचरणनरनारि रांम
जन आनगतनहीं तीनलोकमझार
४० रांम चरणजांमैनहीं सुमरणसाची
टेक नजनबिनांनिरमैनहीं कोईबातां
करोअनेक ४१ रांम नजेविभीयातजै

ऐसी वस्तग न्यांन॥रांमचरणसुन रण बिनां॥
तासब गुदरांन॥४२॥रूपरुराण सु हस्त है।
पैरनहीं अस थूल॥रांमचरण सो सुमरी सें
सकल स ष्ट को मूल॥४३॥रांनचरण स्वा
रांमविनि॥जाटी सब धंध॥ना वकी यांमुक
ताक है।औरसबै ही बंध॥४४॥ अथ बीन
ती को अंग॥ स्तुति॥र मतीतरांन गुरदेव
जी॥कुनितिकाल के संत॥जिनका रांमचर
णकी॥वंदनवार अनंत॥१॥अंग॥रांमच
रणकी बीनती॥सुणीक अरदास॥सरणां
की प्रतपालकर॥का टो जमकी पास॥२॥रांम
चरण औगण घणां ॥ तुमबौहो गुण दीन

नि ॥ औगण सबही बकसीयो रांम तुम्हारो
जांनि ॥ २ ॥ जे तुम औगण चित धरो ॥ तो मेरी
जीव न नांहि ॥ रांम चरण की सुरति कूं राखो
चरणां मांहि ॥ ३ ॥ रांम चरण की बीनती सु
ण ज्यो दीन दयाल ॥ अब गत गति माता रहै
कदे न झपै काल ॥ ४ ॥ जे तुम त्यारो जगत कूं
तो मेरी जीव नि नांहि ॥ रांम उधारो पतित कूं
तो हम धुसी मन मांहि ॥ ५ ॥ पतित निवाजण
रामजी ॥ मै जांण्यां उर मांहि ॥ रांम चरण
पतितां पतित ॥ पाछा फेरयां नांहि ॥ ६ ॥ मै अप
राधी जीव की ॥ मीच करी प्रतपाल ॥ रांमचर
ण सतो षदे ॥ कांगा कीया निराल ॥ ७ ॥ अपरा

धीसाधीनहीं॥हरिहरिजनसंप्रीति॥अघ
मउधारण रामजी॥ तजीनअपणी रीति॥
ण॥मैं निरबल बुधि बलनहीं॥ कांमी कुट
ल नकाम॥सरणैलेनिबाहैज्यो॥रामचर
ण करांम।।ए॥ आपकरतारामजी॥कुन
बणकतेकबात॥ बमैबैनैअैश्वपत कं॥
तुमराबैदोजिगजात॥१०॥मैंकितघणौ
कितबीसस्यो॥गुणतजिऔगणलीन
ल्यो रामदयालकं॥ इनी या आगैदीन॥
११॥गुनहगारबौदोजननमको॥पूनीबंदी
वांन॥ बेदैऊपरमहरकर॥कांटौबंधदि
वांन१२॥हमसबणौनबंदगी॥बध्याईसं

गुन्हाअपार ॥ रामचरण कहे रामजी तुम
चूकनिवार ॥ हार १४ तुमतौरामदया
लहो मै अनाथनर धार ॥ रामचरण कहे
रामजी बेगिलगावो लार ॥ १५ ॥ रामचरण
कहे रामजी ॥ मेरा गुन्हा बिसार ॥ पितापे
रहेरे पूतकू ॥ तौ जीवकूण आधार ॥ १६ ॥
॥ जगत अंधेरी बाग है ॥ बिबधिफू
लफलरंग ॥ रामचरण मन अवरहो ह जांहा
कीया वरसंग ॥ १७ मोटो बिधक जाली जग
त ॥ मे चिपपड्यो ता मांहि ॥ फंदकाटण कूंरां

मजी॥तुम बिनि दुजा नांहि॥१८॥ अथ बि
रह को अंग॥स्ल लि॥रमतीत राम गुरदेव जी
फुनि ति हूं काल के संत॥जिन कूं राम चरण
की॥बंदन बार अनंत॥१॥अंग॥गिरवर
कू मोरा जपे॥साइर जपे मुराल॥राम चरण
रामे जपे॥तुम र का करण निराल॥१॥ज्यू
चात्रग घन कू जपे॥ससि कूं जपे चकोर॥
राम चरण रामे जपे॥जे से पंछी मोर॥२॥सीप
जपे रति स्वात कूं॥आरति वंती पीव॥राम
चरण रामे जपे तुम बिनि तल फे जीव॥३॥
राति दिवस तल फत रहै॥राम बैद तुम आ
व॥राम चरण बाधी बिरह॥कीयो कलेज घाव

६ रांमचरण ब्रिहा अंग मस्यो कलेजौ
आइ ॥ रांमगारड बिषहरै जे कोई देत मिल
इ ५ बध्या सिंघ कवांज रै परबत चा कै
निति ॥ कदली बन रैवा नदी रांमचरण ग
ज चित ५ कोइल चावै बिबधि बन मोरा
पावस रति ॥ रांमचरण ह्वै ब्रिहनी चवै र
मोया मित ६ ॥ समम करे तन त्रापणा स
ती बिछै की प्रीति ॥ ब्रिह आगनि मै नित ज
लै सो ब्रिहन की रीति ७ ब्रिह आगनि अ
पटी अधिक दपटी रहती नांहि ॥ रोम रोम
पर जल रही रांमचरण तन मांहि ८ ब्रि
ह बधी बिसतार कर फैली सब घट मांहि

रामचरण क्यूं टीकीयां॥ वुकती दीसेनां दि
वा॥ ब्रिह आगे निसवतन दस्यो॥ लोही रह्यो
न मास॥ रामपी यारेदरस बिनि॥ न्हाल न बे
वै सास॥१०॥ रामचरण ब्रिह रोग की॥ पीड
न जांणै कोइ॥ के ब्रिहनिकाग्राति मा॥ के जा
घट बीती होइ॥११॥ सुषी या सब संसार है॥
ब्रिही चित उदास॥ जो नव से निति पीव मैं॥
कद हरि पूरवै आस॥१२॥ ह्म जाउ षस वही
सह्या॥ पीव दुषसह्या न जाइ॥ रामचरण
ब्रिहन कहै॥ वेगा मिलो हरि आइ॥१३॥ दुष
तुमारे दरस बिना॥ तुम क्यूं रहे लुकाइ॥ के
दरसो के तन तजूं॥ तुम बिनि रह्यो न जाइ॥१४

तुम तो राम दयालु हो ॥ कछु चेको समभ्ंदि
रांम चरण मन ऐक हो ॥ तुम सु लागत नांदि
१५ ॥ नीडा सु तराव्न या ॥ जब लग हजी आस
रांम चरण हरि क्यु मिले ॥ नांही मन बिस
वास १६ ॥ रांम निरंजण निकट है ॥ मायाप
डदै नारि ॥ बिदन का पड दा मिटै ॥ तो दर
सै पीव द्धार ॥ १७ ॥ राम चरण ईविदके
सह के कल सरीर ॥ पहली लस हरि लगाई कै
पीछे बंधाई धीर १८ ॥ आप दयाल हरि
को कीरां ॥ समभ्या केरा कमहै ॥ जैसा चो
गमैस ॥ बुस अगति बिनि परजल्या ॥ पु
लैन संभ्रत बैस ॥ १९ ॥ बुस अगनि जबपरे

जलौ।।करक्कहोइगयाछार।।जसकौजौं डाज
लगया।।रह्यासारहीसारा।।१९।।बिरहजला घा
कारमवन।।ज्युं दिसजोयाउजासा।।सब अ
धीयारा मिटगया।।सांभल सबद परकासा।।२०
बिरह आगनिलोत पतिसो।।जलगया बिषे बि
कारा।।रामचरणसीतलभया।।मिलिया राम
भरतार।।२१।।बिरह बिकार तिरहुं भया बु
लती बुझी न आगि।।पावदया सहजमे
मोहि सुंदर कैलागि।।२२।।सूरस तीनी र
रा।।बिरहादई जगाइ।।निसदिन पीड सुकावती
पीवस स्वाली आह।।२३।।बिरह निरन्तर उ
छावकरि।।मिलीपीवसु जाह।।२४।।

सुष सेज पर सूती अंग लगाइ २४ दोहो
तदि ना काबी छड्या मिल्या सनेही राम
राम चरण पीव परसता सरी वासक्लीका
म २५ राम चरण इ विद की मदमा क
ही नजाइ चरम करम से बहगये करि
दी या पीव पिछण इ २६ राम चरणइ
विदकी देषी रीह उपाइ पद लीतन कू
सोपिके पोषे प्रेम पिलाइ २७ अथ
श्री द्रसी पदम लैरस नालगे रामचर
ण निसबास रसनाम हिरदै गई वोफ
ही परकास १ हिरदै लागी रहै सोही अ
जापा जाप राम चरण तव नार है पुनिपाप

कीताप रा है लागी धोकामिट्या गत अंतर
पड़ीपिछांण पलपल मैं ज्यु मंडल तो ॥
गईषोकली बोमिया ॥ राम चरण ज्यु मंडल
तो ॥ बादरि मिलसी राम ज्यु ईषोकली बांण
एह दरसी ल्यौ की धाम ॥६॥ हिरदै लै लागी
नहीं जब लग ज्यु मन जाइ राम चरण लै कै
लग्या आनंद प्रगटे आइ ॥५॥ लै लागी तब जा
णी ऐ निसदिन छूटै नाहि राम चरण रहो
करसि सोवत जागत मांहि ॥६॥ सोवत जाग
त रोकरसि लोमार सकै न ही काल राम
चरण लै कैलग्या कटी काल की जाल ॥७॥
मन का मै सब मिटि गया सासा गया बिल

१ रांमचरण निरमै भया रह्या रांम त्यो
लाइ ॥ ९ ॥ ...
संतां बांण चलाइया धरि करि सधी कं
॥ ॥ प्रेम सहत सिष ऊपरि लीया गया कले
जा फूट ॥ १ ॥ प्रेम बाण भीतर धुवां बा
हरि दीसे नांहि ॥ रांम चरण कसकत रहे
निस बासुर घट मांहि ॥ २ ॥ बिरहन्नी रग
निसीत लगि ई ज बन ले यां पे म परकास
रांमचरण अबमाइयां मन वे प्रेम
निवास ॥ ३ ॥ प्रेम लहरि औसी बहे जैसे
सिंध तरंग ॥ रांमचरण ता डोल सू जी
जत है सब अंग ॥ ४ ॥ रांम दया तें स्याक

री॥बरस [illegible]

या॥पीया प्रेम [illegible]

धी देह॥ सी ची [illegible]

सीतल नया॥ [illegible]

म मै है [illegible]

तब जाणी [illegible]

भुल्यो तब जाणी॥ [illegible]

काम क्रोध [illegible]

ण॥ प्रेम चु ल्यो [illegible]

गुण दोष॥ लोक [illegible]

॥प्यारो प्रेम [illegible]

ब्रह्म लिखाई लिखाने राम चरण उरमां
सख्या नेसद्धिलरहत पुरुषां न १०॥ पु
म प्रेम सब कै दन है पेम लषे न होको
इ पेम जोर्हे न ज्यान ही नज्या प्रेमन
होइ ११ आपण सांई परस तो लाज
करै मति कोइ सकक रै ससारवी तो
सांई मिलण न होइ १२ रामचरण सा
चीकहै प्रेम बिना सुषनांहि सांई मि
लै तो सुष लहै नातर लष चौरासीमां
है १३ संत जगावै प्रेम कं रामसबद कं
आइ रामचरण संता बिना कोइ सकै न

काया नगरी मांहि ॥ रांम चरण गाजा ग
या ॥ बाहर नर मैं नांहि ॥ ३ पीव पिछा
नता है स भी ॥ आदि अंत का सैण ॥ स
या ॥ जु मन का भावता ॥ कासूं कहीं
बैंण ॥ ४ ॥ ना तो गल पांणी न्है यो ॥ आ
न्है होमे गई ॥ जांणि ॥ रांम चरण तब जा
णीं है ॥ पीव सूं नहीं पै छांणि ॥ ५ ॥ काया
रमती तरांम
गुरदेव जी ॥ फुनि तिन को ॥ केवल संत
जिन के राम चरण की बंदन बार अ
नंत ॥ चौकी भजन प्रताप की

संतकहगरी च्यार रामचरणयासत
है।। न्ज्ञा नरम असार।। पारसना कव
रसपीहुके। हिरदेसु षबिलास।। नाल
कवलसु ऊलटिके सुरति गई आका
स।।र सुरति गई ब्रह्म मंड कूं परसत्रि
कुटी धाम रामचरणवादेसमें सत
कीया मुकाम ।।७ रामचरण वादेसकं
कोइ पहुंचे बिरला जन।। जपतपजो
गन ज्यासके जेकोटक करे जतन।।
७।। अनेकजनमजपतपकरेजो

गीजोग समाधि ग्यांनमगति बैरा
गि बिरले लहैननतआगाधि दसुरति
सबद के पद वाडि करि जाइ चढीआ
काम रांम चरण सुनि सिषर परि निस
दिन करत बिलास ७ अगम गैर अ
सथान है जां हां लिय नन आपै कोइ
रांम चरण बांहां रमर हया धुनि मैं धां
न लगाइ ८ चंद सूर की गम नहीं माया
सकै न जाइ रांम चरण वां हां रमर ह्या
गे गगने मै झलमळाइ ९ जां मार ग
सुरति का बिय लेग यां ने को इ रांम चर

ण वादेसमैं॥सबसंतपरगट होइ॥१०॥ओ
सा अगम अगाधि है॥तोहा कोइ बिरला
जाइ॥रामचरण वादेसमें॥सब संतरह्या
समाइ॥११॥गिगनिमहल मैं रमरह्या॥रह
ता पुरस अलेष॥रूपरेषजाकैनहीं॥नहीं
कोइ स्यामसेत॥१२॥माया रूप अनेक
है॥वाकैरूपनएक॥लांबाचौडा है नहीं॥हैते
सारीदेष॥१३॥रामचरण चषबाल कै॥निर
षेपाणीमांहि॥जलबंब सूं न्यारह्या॥दूजा
दरसैनांहि॥१४॥ऐसे देषेगिगनिमधि॥षो
ट सुरतिका नैण॥सूलाबोलचरपूरहै॥ऋब
कहतनआवै बैण॥१५॥रूपबरण गुणतत

नहीं के सैंक स्रुब जांण। राम चरण या पद
कूं परस संत सुजांण ॥ १६ ॥ गिगनि गरज
उमगी घटा। सुषमण नीरझरंत। राम चर
ण सा हर न्हाया। जांदां हंसा केल करंत ॥ १॥
हंस मिल्या ब्रमहंस से। अंतर रहो न रेष। क्षो
त पोत न्याय एक रस। लषी सो त्या छलेष ॥
१८ ॥ दादस ऊपर गिगनि गढ। जांहां ब्रह्म
का बास। राम चरण वा तेज का। रोम रोम पर
कास ॥ १९ ॥ रोम रोम परकासीया। अैसा तत
अनूप। राम चरण हम पाईया। काया ग
ढ का भूप ॥ २० ॥ आठ मम ज्या मु सक लव
रग। संता मुसकल नांहिं। राम चरण रहि राम

के॥ मिलै रांमकूं मांहि॥२१॥ निरंतर नाम नर ह्वा
ने या॥ जन रांम सरजण हार॥ रांम चरण कहै रे
काह॥ यो अद सुन सुष अपार॥२२॥ रोम रोम
मैं होइ रही॥ ररकार झुणकार॥ निसवासुर आठ
पहर॥ रांम चरण ततसार॥२३॥ ऊठत बैठत
जागतां॥ सुतां सुपनां मांहि॥ रांम चरण ररकार
धुनि॥ बासरि रैन कोइ॥२४॥ रांम रटत से
फाषुल्या॥ रांम चरण सुनि मांहि॥ बाडी पांच
रेणि दिन॥ से कांटे नांहि॥२५॥ गगन मंडल
से फाषुल्या॥ प्रगट्या सुष मणि नीर॥ रांम चर
ण ताकी लहरि॥ सीतल सकल सरीर॥२६॥ का
प गगन मैं उरध मुष॥ निसदिन अमीं झरंत

रांम चरण नजि रांम के पीवै बिरला संत॥२७
सुरति सबद दोऊ करहत है गिगनि गुफा के
मांहि। रांम चरण उस धांम मैं काल पलै
नांहि॥२८ सुषबरसै रस सुरति निसदि
न आठु जांम। रांमचरण वे धांम में न हीं का
लका कांम॥२९ मिलवै सबद अ कालसं
जैया जीव सं सीव सुरति सुहागण होइ रही
परस अमरवर पीव॥३० पीवै अमीरस सं
तजन कौंया बोलै बैन। रांमचरण वा देस
का कहै साषि मैं वैन॥३१ वैन न छिपाया
नां छिपै एमत वाला की रीति। रांमचरण आ
वै न ही सो प्यां का परतीति॥३२ रांमचरण

रचाबिनो नहींवाणीमेंस्वाद॥वाणीतोबी
मतहैदरस्यात तत्र गाथा॥२२॥
बुताकी ... ॥ रमतीत
नी॥फुनिति ... कालके सब॥
रणकी ... वार अनंत॥
स्तापतिबितकी॥ समकि ...
करण ... नहीं॥ ओ ... चार
का॥१॥र्पत करता का वामहै
मा ... वाक ता ... तपति बसे
नोहत्रारथवार ... करावाता
सूपेस्पमक ... तारा ... करवार
केगारको पतिकर ...

रे कौन ही ॥ ताका जीव बसै पीव माहि ॥४॥ पति
ब्रता पति सूं कहै ॥ सुणि हो कंत सुजाण ॥ मी
न नीर सम होइ रही ॥ बिछडे तजूं पराण ॥५॥
पतिब्रता अपणे कंत सूं ॥ निसदिन रहै सु
चेत ॥ राम चरण गा फल ल्है ॥ ब्रत रसा त
ल देत ॥६॥ पतिब्रता ॥ ना पति की गति ॥ नि
सदिन करि है सोइ ॥ सेद्र कंसू पै और कूं ॥ तौ
क ब्र संख्या होइ ॥७॥ तन मन कौ स्वारथ
तजै ॥ सेवै सतगुरु राम ॥ राम चरण सौं दीन
गति ॥ आपौ अरपै स्याम ॥८॥ जिन आपा
अरपनि कीया ॥ हरि प्रीतम कूं सोइ ॥ राम चर
ण ताको सुजस ॥ तीन लोक में होइ ॥९॥ आपौ

एकरी प्रीत मां॥ताद अरप्यां सुष हो ह॥रामच
रण बोहो प्रीतिमां॥बोड्या सुषांन कोह॥१०॥
पतिबरतासो री जांणी रे॥लोपे नही बचन॥आप
ण तन बिसर्‍या फिरे॥पति कूं अरपे मन॥११॥आ
ने पुरष जाणे नही॥पतिबरता पति एक॥रामचरण
ह जात जे॥योही ब मा ब बेक॥१२॥सब का साहिब
राम है॥जिन र च्या सकल ब्रह्मंड॥रामचरण
ता हि छांडि कै॥कूंण नरै जम डंड॥१३॥अधिक
मार जम लोक मे॥जो पति कूं दे छेह॥ राम
चरण या जगत मे॥जनम हार गया ऊह॥१४॥पति
बरता कूं गाल है॥नगर नाइ का संग॥रामचरण
यूं जगत सूं गा हो इ पति ब्रत भंग॥१५॥

बिभचारणि जानिभागामे होइसुजाण पतिब
रतापितसूमिलै बिलसे सुष अपार १६ प
तिबरता कापीव को जादाता स अधिकार
रामचरण बिभचारणी जाकापतिकैगार
१७ पतिबरताको पोखणी बिभचारणके
सीस वा परपुरषारति भई वासुमरैजगदी
स १८ साईमेराएक है दूजा सबही बीर
रामचरण दूजा ना करू जोगगा उलटैनीर
१९ गंगजमन उलटी बहै मेरे सीसमु
माण दूजा साईनां करू जोपिछमऊगै भा
ण २० साईएको राम है सबै सहेली संत राम
चरणसुषसोलहै जोपालै पतिब्रत २१ पतिब

रताकापीवकै॥निसदिन आदरमोनिराम चरणबिनचारणी॥परपुरषासे नेह॥२२॥का ली काणी कवडी॥ दुषकुळ जनम लीयो॥प तिसुमरणनिसदिन करे॥तोजी तबसुफळज योः॥२३॥पतिब्रता बिनचारणी॥रेता अंतर याः॥ वाजगततापमेनितिजले॥ वापतिसग सुषफळवाः॥२४॥चुडोदोवडोसहलदेस हलकराबोनारि॥कवणचालयपतिब्रतको कवणमिलाबोसार॥२५॥ अथ बिसवा सको अंग॥स्तति॥रमतीतराम गुरदेवजी फुनितिहुकालकेसंत॥जिनकेरामचरण की बंदनबार अनंत॥१॥ अंग॥ अनपाए

कासोच क्या ॥ सब कूं दे करतार ॥ रांमचर
ण बिसवास बिन ॥ दुष पावै संसार ॥ १ ॥ रांम
चरण अकाषीए ॥ रांमतण कूं करतार ॥ वे
स चराचर कूं देत है ॥ तो नर का कैसा भार
र ॥ सचराचर निरस सै ॥ एक रांम की आ
स ॥ निति सांसो संसार कूं ॥ बिना रांम बिस
वास ॥ ३ ॥ रांम सकल कूं देत है ॥ वो च सवा
ए चैन ॥ काहे कूं केल पति फिरै ॥ भेटए दा
रा कर ॥ ४ ॥ सिष्टि बाग त्रिछ जीव सब ॥
बांगवान करतार ॥ जिरो प्या सोसी च सी ॥ ब
दा कै लैन्पार ॥ ५ ॥ रांम चरण बिसवास बिन
नर दुषी या जग मांहि ॥ पसू पषी करताव

सूं॥ आपो बांधे नांहि॥६॥ राम चरण केरै
कतू॥ नहीं दूसरी आस॥ निरास ब्रित निरभै
रहै॥ राम तणों बिसवास॥७॥ राम चरण बिस
वास गहे॥ छांडि जगत भ्रम जाल॥ राम नाम रट
तार है॥ तो ग्रास सके नहीं काल॥८॥ राम चर
ण जिरामकूं॥ धर हिर्दै बिसवास॥ राम नेन
न प्रताप सूं॥ अनेक उधर्‍या दास॥९॥ जे कोई
दू आगे उधर्‍या॥ तो तूं जीरष दूक तरसा ई
के उबध्या नहीं॥ न्ज्यो उतारै पार॥१०॥ राम
चरण की राम जी॥ आछी कीन्ही साहि॥ जो स
गर बिचित्र मता॥ लीधी बांहो समाय॥११॥ जो
सागर की धार मैं तेव्रमासब संसार॥ रामनां

वकीनांवचढि ॥ संतउतरगएपार १२ ॥ सारेसि
रजणहार कै नर कै सारै नांहि ॥ रामचरणता
तेरहै ॥ रामरजाकेमांहि १३ ॥ रामकरै सोक
रणहै ॥ आपणीं छांडि उपाइ ॥ रामचरण नर
संमरहै ॥ रामनाम ल्यौ लाइ १४ ॥ कीयादेष
करतारका ॥ तें मति करताहोइ ॥ रामचरण
करताहुवा ॥ सुषी न देष्या कोइ १५ ॥ करता
करेहकसबदमे ॥ अनंत कोटि ब्रह्मंड ॥
रामचरणऐंजीवसब ॥ सदाउषी त्रिहुंषंड
१६ ॥ यिहकोउ सब्यापे नहीं ॥ जोराषेदरिवि
सवास ॥ रामचरण ले आपसिर ॥ ताते जुगते
त्रास १७ ॥ रामधणीं कोराष नहींसो ॥ सक्यास

बकीतोड़े॥ राम चरण वे सरण सब्लकी॥ फिर
न जग से जोड़े॥१९॥ रामधणी के देषतां॥ घणी
बात आसानि॥ च्यारि पदारथ अष्ट सिधि
और कुंग मजानि॥ श्यासि वगरामदयाल है॥
पोषे आदिर अति॥ राम चरण दूजा सती॥ दि
नां च्यारि का मित॥२०॥ पाले पोषे यतन मे॥ फु
नि रद जां हां लग देस॥ राम चरण ताहि छांडि॥
के॥ आनन की जे ने स॥२१॥ अथ साध संग
ति को अंग॥ स्तुति॥ रमतीत राम गुरदेव
जी॥ फुनि तिहुं काल के संत॥ जिन कूं राम चर
ण की बंद नवार अनंत॥१॥ अैसा॥ संगति
कीजे साध की॥ सब ही छांडि जंजाल॥ राम चर

णतबपाइरे ॥ निरभै गौर अकाल ॥१॥ संगति
कीजै साध की ॥ मन की दुबध्या खोइ ॥ रामच
रण एक पल कमे ॥ लोहा कंचन होइ ॥२॥
लोहा सूं कंचन करै ॥ सो पारस परमाण ॥
कसणी दे मन निरमल करै ॥ सोही संत सु
जाण ॥३॥ पारस मिलि कंचन भया ॥ अं
तर रह्यो सनेह ॥ रामचरण ऐ संतजन ॥ सं
त रूप कर लेह ॥४॥ पारस की संगति करै
लोहा बरस हजार ॥ रामचरण अंतर रह्यो
पलटै नांही सार ॥५॥ ऐसे संगति साध की
जे मन देवै नांहि ॥ रामचरण वा जीव का
करम किसी बिधि जाइ ॥६॥ रामचरण चंद

ण संगति।पिलट्यानीबिपलासी।कंचन
ध्यापलट्यानंही॥अंतरपोलीबांस।१।सा
धसबदमानेनंही॥अपणमन कीटेक॥
रामचरणकेसेलहे।संगतितणबिबेक।७
संगतिजाकीजाणीये।तनमन अरपैदोइ
रामचरणसाधसबद।राषेहिरदेपोइ॥८॥
संतसंगतिसीतल करै।तीनताप हरलेस।
रामचरणतेसंतजन।इम्रतबरसेमेह।१०।
इम्रतबरसेसंतजन।सुगरापीवैअघाइ॥
रामचरणगुरग्यानबिन।नुगरा रहै तिसा
जाइ।११।संतसंगति सबसूं भली।नितिहीक
जेजाइ।रामचरणऐसंतजन।दैवैब्रह्म मिला

साधसंगति गुरसांगदे॥ जो मन निरमल होइ॥
करम काट न्यारा करै॥ गुरसकलीगर सोइ॥
१२ कहणी हैरहणी नही॥ जाका काचा सं
गा॥ रांम चरण रहणी बिना॥ जैसै रंग पतंग
१३ कहणी रहणी ऐकहै॥ सोही संत सुजा
ण॥ रांमचरण वा की संगति॥ पावै पद निर
बांण॥ १४॥ जा संगति कसणी घणी॥ संगति
कीजै सोइ॥ रांमचरण रहणी बिना॥ संग कि
या का होइ॥ १५॥ सोही संगति सार है॥ जा का म
न निरमल होइ॥ रांम चरण मन मल गहै॥
सो संग करो मति कोइ॥ १६॥ लोहा जल सें धो
इये॥ लोह ण लागे काट॥ रांम चरण पावक

दीयां॥निरमलहोइनिराट॥१७॥ऐसैसत
गुरतापहे॥तोसिषकानिकसेषोट॥करैशु
साभदजीवकी॥तोरहैगौठकाठोच॥१८
नातागठटुटैनही॥बालाकेमनजाह॥राम
चरणसाचीकहे॥गोलाग्यानदगाह॥१९
रामचरणसतसंगकी॥सपतिकरैशुभदेव॥
रजतमदोइछूटैनही॥तातेंलहनवेवार॥
ग्यानभगतिबैरागहे॥अरजगसूंकरैउदा
स॥रामचरणवासाधकौ॥कहैनतजोरपा
स॥२१॥रामचरणसतसंगमें॥ऐसीकरीहे
जोष॥रमतारामपिछांणीये॥दयासीलसंतो
ष॥२२॥सतसंगसरवरशमजल॥कोईसाधव

धैघाट॥ क्रम के चौड़ आतमा॥ बसतीरीकै बाट॥२३॥ रामचरण पारस परसतां॥ पे च गुण पलट्या जो इ॥ बरण मोल मल के गेरता लोहा कहन को इ॥२४॥ अथ कुसंगतिको अंग॥ स्लतीता॥ रमतीत रामगुरदेवजी कुनितिकाल के संत॥ जिन कू राम चरण की बंदन बार अनंत॥१॥ अंग॥ रामचरण कुसंग का देषो फल निरता इ॥ जीव ब्रह्म कौ अंस है देही संग ऊबपाइ॥१॥ देही उष को मूल है नरीया बोहोत बिकार॥ इके मीता की संगति करमा को अधिकार॥२॥ सत संगति जो ऐ नहीं॥ मिलै जगत सें जाइ

रांम चरण वै मांनवी ॥ ज्यां द्रस्ला सल षा ॥३॥ २
जा के सतसंगति मिलै ॥ सोत जे कु संगति मेल
रांम चरण गाफल रह्या ॥ होइ जाइ छ लटा बेल ॥
४॥ जांह वे फेजी वसब ॥ करे कु संग ॥ संग ॥ रांमच
रण रचि मोह सू ॥ पाडि जगति मै नेग ॥ ५॥ तांबा
की संगति कीया ॥ जाइ कनक को मोल ॥ दिन
च्यार सर सोरहै ॥ पीछै मोल न तोल्ला ॥ ६॥ रांम
चरण यूं जगत माया संग षु स्याल ॥ जोग
जोग वै च्यारि दिन ॥ अंति षराब हाल ॥ ७॥
कुसंगति के ताजया ॥ जा की ठीक न रांम रां
म चरण सतसंग का ॥ कहि अजराव स्नांम
ठात्तां न जती सब को कहै ॥ बेद कतेवां मांहि

रांम चरण काती कुसंग॥ मारग लगां मैं षाइ॥१०॥
करै कुसंग रति उपज्यां॥ सो दीखै बेहाल॥
रांम चरण निति ही कुसंग॥ जा का कूंण रूखाल॥११॥ इसा कवा नांव एं॥ नां केदोइ बिचार॥ इसा मुकतांहल चुगै॥ बैन्ह्रिष्ण नो गणहार॥१॥ फूटा की संगति करै॥ तो सारी षावै चोट॥ रांम चरण नमति रहै॥ कुसंगति की चोट॥१२॥ कुसंगति कै वचबिछ॥ जो मन बंदर जाइ॥ रांम च्चरण सुष नां लहै॥ बान करम फल षाइ॥१४॥ उषीयां मिल उषउपजै॥ सुषी जपा वै रांम॥ सिकै काज सीझै नहीं॥ सांएं सुधरै कांम॥१५॥ उजलल्लयातो

क्या भया॥ मांषी जग कू पूत॥ रामचरण सो ही कुसंग॥ बिसरै हरि को नरा॥१६॥ धोया देषन धीज री॥ जे मन न धोया नांहि॥ मन मै लो तन उजला॥ ताके संग न जाइ॥१७॥ अ
थ चारु को अंग॥ स्तुति॥ रमतीत रामगुरदेव जी॥ कुनितिकृ काल के संत॥ जिनके
रामचरण की॥ बंदन बार अनंत॥१॥ अ
॥ रामचरण तं चेतरे॥ का दासो वे अ सरा
लो॥ पकड सबद समसेर कू॥ षडो सिराणै
काल॥१॥ काल तणा जे मिटि गया॥ छूटी
जुम जंजाल॥ रामचरण निरभै भया॥ पाया
सबद अकाल॥२॥ पाव कयासे तेल कू॥

दीवा बाती हिंगि काल ग्रासै आवनिति स्वारथ करमां संग । २ । काल चवैतो छुटै नहीं अैं रलागा लाइ । रांम चरण सरिनै बिना बिनि काल गिरासै षाइ । ३ । नेल छुतां कौइ चेत जो पीछे होइ अधार रांम चरण पैला दिनां कीजै जुगति बिचार । पाव की चालै काल की निस दिन आठु जाम सुर नर सब ही पासीया रांम चरण बिनि नांम । ६ । दोइ पुड जमी आकास है फुनि दोइ लोचन मांह पीसै जग का जीव कूं सासो सोग अदोइ । ७ । बौछा जल की माछली जैसे थौरा सा रांम चरण बुध काल

ह॥ निसदिन लागो लार॥७॥ मायां वो छोनी
रहे॥ जीव माछली जांण॥ रांम चरण ने का
ल दे॥ नी डी रांम पिछांण॥ ए॥ रामचरण
६ कालकी ती न लोक में घात॥ रांम भजे सो
उ बरे॥ ग्रा चुण चुण षात॥१०॥ रांमचरण
लागे नहीं॥ रांम भजत जम चोट॥ भजन
बिना उबरे नहीं॥ ओर हरी ओट॥११॥ रा
मचरण ता भवन को॥ म्रतलोक है नाम॥ जा
मे बसे सो म्रत बो त बेग समाले राम॥१२॥
रांम चरण ओ तार से॥ सुर नर असुर अनेक
देहधारी सब म्रत बस॥ कोई न उबरे एक॥१३
भला बुरा सुषी दुषी॥ त्रिधा तिरण किसोर॥

रांमचरण द्रिमृत सूं नहीं किसी का जोर १४
काल मारा बलवंत मुख उपज्या सबे पड
त ॥ रांम चरण अवगत रता उबरै सरिको
सत १५ रांम चरण सेतांत सौ काल न लागे
लार मांणी पकडे तास को जाको सिर प
रन्नार १६ और अरम सब ल्यारि कारि रांम
ही रांम पुकार रांम चरण रे बाल सूं काल
गयो है हार १७ रांम तेज न प्रताप सें
काल न था तै ध्यान धरी देह सो बिणास
सी अंतर वरपा को पात १८ का चा
टूटे काल बसि सो फिर जुग ते मार रांम
चरण पाका पड़े तो पड़े न दूजी बार १९

सकलसुरां की आदि है॥ कहीये परजाप
ति॥ दि षो काल मा ह्यो वंछी॥ बृह्मा उपर चि
त॥ २७१॥ बुह्मा कूर ये काल सा॥ तो नर की कि
ती ऐक आव॥ रामचरण नृजि राम कूं जू
नम काल जो न खाव॥ २८१॥ रामचरण बु
सा कहें॥ काल बजावे गाल॥ सदा काल का
गाल में॥ सो क्यूं फिरे षुस्याल॥ २८२॥ रामच
रण ईद हद का॥ नतन करे संसार॥ काल तु
के आनुपड़ा॥ प्रेम से तके मजार॥ २८३॥
काल जाल जोया फिरे बचण न पावे एक
केना थाया मारि के॥ वाइल की यात्र्र नेक
२८४ रावण॥ सा जोधा गल्या॥ तसा नदी अब

कोइ दषे गाफलत राम सूं रह्या न चीतासो
इ ॥ ५ ॥ मैतारी सेदिष्ट मैं सब कूं षासी को
ले ॥ राम न जैसी उबेर ॥ न जब होइ रछपाल
२६ ॥ राम चरण काचै किले बैठ कैरै अ
भिमान ॥ काल पकड ले जावसी ॥ जम ज
तो ले जाइ स्वान ॥ २७ ॥ जथा किलो चूण
इ कै बैठा होइ निसंक ॥ काल पिछोडै
नरक मे ॥ राजा गिले नरक ॥ २८ ॥ क्यारी
ला क्या राजवी ॥ क्या पति सा क्या रंक रा
म चरण हरि न जेन बिन ॥ जम ले जाइ नि
संक ॥ २९ ॥ जो छिल बाटै बाग को ॥ तो मा
ली सुणे पुकार ॥ राम चरण कूं गरत पा पडा

संदेसिर मार॥२०॥अंधक प गिरि मे पड्यो॥
बंध्यो माया जाल॥अरदा करबिस हरि गिले
ऐसै यासे काल॥२१॥रामचरण अरु कै
पमे॥प्राणी अति बेकाल॥सुपनै सुष स
मै नहीं॥हरसासा कौ साल॥२२॥सासो षा
वै जीव को॥काया सोषै नारि॥रामचरण
आगे काल॥जब ही नर कम फार॥२३॥
पीछे पीछे काल है॥आगे आगे जीव॥
औसागर बेहाल है॥पतियाद करै नही
पीव॥२४॥अथ चितावणी को अंग॥
स्तुति॥रमतीत राम गुरुदेवजी॥कुनिति

लोकाल के संत जिनकं रामचरण की
बेदन बार अनंत ॥ ९ ॥ अगम ॥ छत्रप
ती घर सो इती ॥ के जर धुणे सीस ॥ मिन
ष जनम कू दिया इसा ॥ कदच जिसा ज
गदीस ॥ १ ॥ अमकम सू लाग करि ॥ रूलि
रह्या संसार ॥ राम जन सत संग बिनि
गया जमारो हार ॥ २ ॥ राम सुमरता सी
या रहोइ ॥ सो वैका हाग बार ॥ रामचर
ण मोसर ऐ ॥ मिलै न बारूं बार ॥ ३ ॥ ऐ
मोसर ऐसी सबी ॥ मिलै न दूजी बार
चौक पलटि फिर पाइहै ॥ मिनष जनम

औतार॥४॥जे पाया तो क्या भया जो न मि
ल्या संतसंग॥परसू कर अरस्वांन ज्यूं
कीया बिषे संग ने ग॥५॥ बासुदेव कोनिस
बिषे॥स केचो नरां मसं नार॥रामचरण
राजन मांग यो ज अंहृदार॥६॥रामकहै
रे बावरे॥जनम अमोल कजा॥१॥मति
भूलो धन धाममें॥जास्यो सब छिटका
य॥१॥रामकहै तैमानवी॥ राम बिना स
बरीस॥रामचरण जो कादान यो॥३॥घ
ड्यो नर को बाज॥ण॥चोरासी के औसरे
सब पावे नर देह॥पा दूजिन की सुफल

है ज्यौ रांम भजन न करलेह ॥९॥ रांम भज
न परताप सूं जम दर घेनहीं जाइ राम
चरण सतगुर कहै कहै बेद समझाइ॥
१० रांमचरण ऐक रांम है सब जीवां आ
धार याकूं कोई मांनै नहीं जा कै मुंडै छा
र ११ रांमचरण ऐक रांम बिन नजीक
है न बात याकूं कोई मांनै नहीं जाका सि
र परलात ॥१२॥ भजन छांडि नरमत फिरै
रांमचरण संसार संगति करि षाली रह्या
जा कूं वार न पार ॥१३॥ रांमचरण संसार
सूं रांम कह्या नहीं जाइ फूग फांम रफो

नमो॥ फिर फिर गोता षाइ॥१४॥ सो हिंदू सु
नि सुष र है॥ करमो कूं दे पूठि॥ राम चरण
न देहका॥ वैलेसी लाकाल्ह ढि॥१५॥ सु
षस रामरट्या करै॥ करस कुछ ग्यान दे
हा॥ राम चरण॥ देह कारि॥ ग्यान बिन रहस
देह॥१६॥ लष चौरासी जुगत ता॥ दत बस
दुष नाहि॥ राम भजन प्रताप स॥ निर भैप
द के माहि॥१७॥ राम भजत सब उति मद॥
तीन लोक के माहि॥ राम चरण सोही सुध
म॥ राम भजन रूच नाहि॥१८॥ राम चरण
चेतै नही॥ काहा कहु बारंबार॥ राम भज

नजावैनही ॥ अंधधुंध संसार ॥१९॥ स
तगुरु का सारा नही ॥ जीव पडे फंद मा
हि ॥ रामचरण चेतन कीया ॥ तो जी चेते
नाहि ॥२०॥ रामचरण चेते नहीं ॥ सतगु
रु कहत पुकार ॥ राम भजन बिनि जात
है ॥ जगत जमारो हार ॥२१॥ तब जनम ते
बा मागसी ॥ भुगते पीड सरीर ॥ अपण
कीया पुनि पाप मे ॥ नहीं कुटंब को सी
र ॥२२॥ रामचरण कडो जगत ॥ मोंगी दे
देषा ॥ भीड पडा जम दूत की ॥ सब ह्र
रा हो ह्रजा ॥२३॥ अब बीतगई बातां क

जा ३।३ रत कै उदर नरत सुष सोइ।
रामचजनन बिनि मूरिषा॥दायो जमारै
बोइ॥२४॥केहोरनत्रैसोपावसी॥भि
नषजनम औतार॥रामचरण इक
राम बिनि॥हास्योरतनगिवार॥२५॥नि
सबीतीसुषसोवता॥दिनषोयौ उष
धधा॥रामचरण हरिजन बिनि॥नर
तनहास्यो अध॥२६॥रामचरणहरिभ
जनबिनि॥औसरहारीनारि॥नर इसि

कारण कुकरी ॥ फिरे ॥ लदड़ी मार २७
राम चरण संसार का ॥ दुष कौ वारन
न पार ॥ ता मे झूलै मुग धनर ॥ लेसि
रजण सार ॥ २८ ॥ राम चरण बिर धात
या ॥ प्री तिन राषै कोइ ॥ परै सु हेलो ना
रि ॥ सो न्नी बैर णि होइ ॥ २९ ॥ राम छो मि
नर मति फिरै ॥ भूल रह्या संसार ॥ सत
गुर की मानै नही ॥ सिर पर भार अपा
र ॥ ३० ॥ नान्हा जण तूं फिरयो ॥ कुल की
मिट्यौ न बंध ॥ जनै मत्र जाती पाइ कै
भव बंध न कै आंध ॥ ३१ ॥ बेगा बेगस

सम्हाली रे अमफल रही रे जोरि क्यों
क्या हो २ गा॥ पाव पलक के
मोहि ३२॥ अथ चरण गुरदेव
को अंग॥ स्तति॥ रमतीत राम गुर
वजी। फुनि तिन का लके संत॥
जिन कू राम चरण की बंदन बारम्बा
ने ता॥१॥ अंग॥ सतगुर सरणै आइ
क न करली जाति। काम क्रोध मद लोभ
मोहा ता जिदी जाति॥ गुर चरै मुष बैन
हिरदे धर राषी रे॥ पर हरि राम चरण मुष
रैणि दिन भाषी रे॥१॥ सतगुर सिरजण

सरजिनूं सिरनांछे ऐ चरण मत चि
त लाइ सीतनित पाइए ज्या
नद होइ काम सब ठाइए। परि हेराम
चरण करजोड कालमिट जाइए ॥२
३ थीजीव वे हाल जगत की जाल रे
रोत सरणैं की चरण करी प्रतिपाल रे
सीतल की या सुभाव भया करमास
रे परे हेराम चरण निज नीवहीं वा
क कसी सरे ॥२ ज्याहाजरूप गुरदे
व ले नौ नौसे थपै रामचरण सिर

पारकैरेए कै पल कमैं॥नो व कांमिसे
सार वहग या धारै॥परिहां जिन पाया
गुरग्यान पहूची या पारे॥८॥ अथ सु
मरण को अंग॥ रांमनांम को ध्यांन स
दा उरिधारै॥ कांम क्रोध मद लोभ अ
रि पमारै॥ पकडि सील संतोष दोष
सब त्यागी॥ परिहां रांम चरण पचै सा
धि अजन सूं लागी॥१॥ अजन की पांत्रे
जाइ अरस नांनां रहै॥ नहै अगम का अे
व सबद साचौ कहै॥ नहीं आवै परतीत
सुरति कूं जो है॥ परिहां रांमचरण सतरां
म हिरदा बिच पोइ॥२॥ रांमनां रटण ल

गाइ अंान हिरदै धरो । जीवां सब निरबै
र उब आप रहै रै । गहो सा च बिसवास
कुब धक्क मारो रे । पहि र्यां राम चरण नर
देह श्रेसी विध बिस्यारो रे ॥ ३ ॥ मिनषा देह सो
पाइ न जत है राम कूं । अचल पद में आइ
लहै सुष धाम कूं । श्रैसा नर जन षुनाप उ
ष कहना हिरे । परि राम चरण कहै सा च स
दा सुष मांहिरे ॥ ४ ॥
निरधारां आधार सकल
सिरताज है । अनाथ के नाथ गरीब
निवाज है । अंत काल की बार छोडावै
काल सूं । परि राम चरण नाज रांम बोहो

तप्रुस्पाल सं ॥१॥ ग्रैनाथ कानाथ निरं
जण रांमजी ॥ निस बासुर रहि ताहि ग्रोर
तजि कांमजी ॥ तब ही होइ जम पार धार तजि
गंदगी ॥ परिहां रांमचरण करै है साच सार है
बंदगी ॥२॥ जुग जुग ही मैं नेहि जगत मैं नीड
र ॥ साहि करी ततकाल पुग धौ नीड रै स
हिब सदा सुचेत दास कै साच रै ॥ परिहां
रांमचरण होइ बेर जाए घर का चवे ॥३॥
रांम करै न ही साहिब जगति की नीड रै ॥ तोल
जति जग होइ जाइ बधेन की धीर ॥ जगति
बिठल ता बिडद जगति पाछि ला हरि परि
हां रांमचरण रेला ब्रि नेरे सब को इहै ॥४

रामलो स परताप सुरात कार जो इरे ॥ याकि
नेत तरग नांहि दुसरो कोइरे ॥ जटत नर जल
मांहि लख्योरखवारे ॥ नरिह्या पांहण तारे
पार जो हु बसा लारे ॥ [illegible]
[illegible] सरण का प्रति पाल राम अब
को जो र ॥ जो चूकत गह बांह काढि मोह
जो रे ॥ तुम हो दीनदयाल दयो कर न्हालो
यो ॥ पारि रांम [illegible] हेरो ॥ [illegible] बटालो
यो ॥ १ ॥ [illegible] रामजी
मे [illegible] तुम
[illegible]
[illegible] रांमन [illegible]

रांमऐक अरदासदमारी मांनी यो॥कांमी
कपटीकूड आपरलो जांणी यो॥ जेछोमोतु
महाप्य औरनदी वोटजी॥ परिहांरांम चरण
रषसरण बकससबषोटजी॥३॥कांहा क
रू अरदाससकलबिधिजांणि हो॥ अंतर
गतिकीपीड पीवपहचांणि हो॥ मीनीच
नभगवांनदीलननदीकीजी हो॥४॥ आप
[illegible]॥सतसंगसुगमउ
पाइ ध्याइकेकीजीऐ॥ उनैउषमिटि जाइ अ
सोपदलीजीऐ॥ग्यांनगरीबीपाइ नजैनिति
रांमेरो॥ परिहारांमचरणउरिकोधन आपे
कांमेरो॥१॥ अबउषमिटिजाइकीयां सत्संग

गहै॥ अस नांव रंकारन आयै अ मरे
जीया कौ कर त्याग गहै नदी दांम कै॥ परिहां
रांम चरण ई धारज्जै निति रांम कै॥ २॥ सब
द कर रहै संत सम झि लै आदरै॥ क्रम कोट
करि हरि न आपै तापरै॥ जन का कै द मांजे
गलै तहै सौ तरै॥ परिहां रांम चरण कह सा
च रहै नेदी मीत रै॥ ३॥ मीत अएस बहरि
भ्रम भैरै नासरै॥ रांम सबद की सीर भ्रम पु
जासरै॥ अलां की गद बोहोत बताया पैयरै
परिहां रांम चरण कलि मांहि अमार है संत
[illegible] सोप्र
लो जठ कमपदीयो पाणां णरै॥ जासांके सोमं

मांदलगैनहीं ग्यांनरे ३ने षलराचै और द्र
सरे रंग।परिहारामचरण हौ आदि त्र्य
सोही अंगरे १ षोटा स्यामांत्र्यादिघड्या
टकसालरे जाकीबांधै आपकांहालगया
लरे कालीउनकलंकनजावे कोइरे परि
हांरामचरणजठरूपनको मलहोइरे ।१
कालरमो मिपिलाइ बीजकांहाबाईया।
बांफनहोवे प्रत पुरसके पाइसो ज्रलमेज्र
दलनांदिरस पावेसरे । परिहांरामचरणर्ज
जठकिसोउपटेसरे ३ कांहाल्रवांदिस्यांन
सुरसुरीबी चिरे सूकरसपीलैपजिसोही
कीचरे षरकैभाइ

परिहां राम चरण सूं मुढ कि सो तु पगां रे ॥ ४ ॥
मै मेरी मोह्यो मांन अहंमै ली नरे ॥ जगत चा
री मांहि व मो पर बी णरे ॥ नर देही कूं पाइ बि
सरि गयो दी नकूं ॥ परिहां कोंसा करै उपदेस
अ से मुति हीण कूं ॥ ५ ॥ अकलि पसू की पू
रिन कल नर की बणी ॥ बहे पराए काज बी
सर्यो हरि धणी ॥ साध संग कौ रंग बेस कै
नालगै ॥ परिहां सुणि कै हरि की गाज भड़ कै
पाछौ लगै ॥ ६ ॥ सुरिष मा रैकाहि अंतिल जाहि
उष लुगते दिन रैणि क सां सौ पाहरे ॥ बैठ क
बीलामांहि बोलकै फूली यो ॥ परिहां राम च
रण अरु धार राम कू भूली यो ॥ ७ ॥ अथ

चिंतां [illegible] ढौ को गा [illegible] तहे [illegible]
रकौत हु के सो अरे नाचे के चरण [illegible]
त श्रांसी से [illegible] हैं कालि [illegible]
रत है। परिहरि [illegible] चरण [illegible]
रत है। [illegible] चेतन नहीं श्र [illegible] होइ
रख्यो। त्रि जै नहीं [illegible]
सुत दारा धन धाम कीया सब [illegible] प
रिहरि [illegible] चरण [illegible]
ए। [illegible] सुत दारा धन धाम [illegible] नहीं [illegible]
श्रेन श्र वाली [illegible] या [illegible]
कीया करत [illegible] परिहरि [illegible]
चरण दे नह कत न [illegible] फिर [illegible]

सरकसी यारां मरत तीजी रे। संमझि नां सब
आक सकलत तिदी जीए। सुतदारा मन मो
गन आवे कां मेरे। परिहां राम कराए तहां बा
र सगो ति संमेरे ॥४॥ अंत काल की बार स
गो कु करां मई। सुत दारा मरवार सबै बेका
म है। काल आय पर्दे रूपद्यांड़े जीव कू
परिहां तहां ओसर दि कया लख्ख जला पीव
बेल्यो हरि नाहि केहति नया नर अंधरे
कन सादन आखु जोम करे घर घरे। जाती
दे मरत बल सिलाहे लाम्परी॥ परिहां राम
धनाराने सोज तुजछ मन ना मपरी॥६॥ मोह
जाल की पासि जगत सिर देत है। आपण कर

बिसतार आपपसमरतहै॥ अंध धुधसंसा
र जे नहीं रांमरे॥ परिहां राम चरण नरदेह
गई वे कांमरे॥७॥ मिन षा देही पाइ जे नहीं
रांमरे॥ कंमांस कतसी यारा आनकी कांमरे
जनम मरण दुष दोइ सोहीन हीं छूटसी॥ परि
हां रांम चरण कह साच अंत जम कूटसी
॥८॥ सास उसासा ध्याइ सम कि तवी
ररे॥ आव घटै दिन रैण ज्यूं सरती ररे॥ त
व सकै गा नीर हंस उठि जाइगा॥ परिहां राम
चरण त जि रांम क निजघर पाइगा॥९॥ क
चावास अवास गिरवरांसी सरे॥ आण फि
रै चक्रवौर अवनकाई सरे सरवी र गंजवा

जओ डि अरमोड़ते ॥ परिहां राम चरण बि
न राम गरो सिर फोड़ते ॥ ९ ॥ कुंचा कोट अवा
स कंगुर जब णांवते ॥ अपणी परकी सोम
धो सि अपण वते ॥ हे वर गेवर तोक जोड़ते
लषरे ॥ परिहा राम चरण बिन राम उसे नए
ष मरे ॥ १० ॥ राजपाट धन धाम जगत सुष मा
मरे ॥ वौ सब्द सिर घास अथयूं बा मरे ॥
सब सुष को सुष सार सुनाय न राम है ॥ परि
हां राम चरण भजि ताहि अमर पद धाम है ॥
११ ॥ अथ सवईया ॥ लिष्यते ॥ सर्व
रमतीत राम गुर देवजी ॥ पुनि तिंकाल के संत
जिनके राम चरण की बंदन बार अनंत ॥ १ ॥

चरण ऐसे गुरपारे ॥ २ ॥ गुरदेव दया निज नं
व लव थौ चूमक्स उनाड्दी यो फट कै ॥ म
नताही कसा थि सुनाय नयो छि कछाक
र स्लोर सकै गट कै ॥ निस बासुरसी पल
पाव घड़ी घरत्याग पर घर नां नट कै ॥ क
है राम चरण ऐसो सुष सागर छांक कै छी
लर क्यू नट कै ॥ ३ ॥ जिन को धन जीत ब
है जग मै धन पा र संतोष सुनाय नटे
निज नाव सेती सुरति नां हिटरै तिस नां सं
ग कम बिलाइगए ॥ तजि स्वाद बि बाद नि
स्वा दनऐ गुर ग्यान गद्यां घट मां हिरो

कहे राम चरण संतोषद लाल है सुरति सम
बद मिलाइदे ॥७॥ अथ सुमरण को
अंग ॥ सील संतोष दया करि सु अरु ग्यान
प्रकास तजास जयो यो है॥ मान चढ्यो सुति
मान बढ्यो सुष हरि कढ्यो सुष पूर रह्यो है
हंस नयो अमर सगयो सुष सागर बास बि
चार लह्यो है॥ राम चरण तामे एतना गुण
जान र राम ही राम कह्यो है॥१॥ राम कहूं गाइ
लैराम कहूं ध्याइ ले राम लिरजण नाइ लगो रे
राम मनाइ ले राम रिझाइ ले राम बिना तेरो
कूण सगो रे॥ राम कहूं बकुड़ले राम कहू पूजले
राम बिना सब औरद-॥ २८

राम सदासिर राम ही राम सम्हालजगौरे ॥ २ ॥ राम ही राम पुकारतर हो मन राम बिना कोई आसन पूरै ॥ राम ही राम चितारतर हो मन चेतन राम सबै भ्रम चूरै ॥ राम ही राम सम्हालतर हो सब राम सम्हालन हूं दुष दूरै ॥ राम चरण कै राम सदासिर राम ही राम पिछांणिर सूरै ॥ ३ ॥ राम ही राम रटो निस बासुर का है कन दूसरो थाट थटौरे ॥ बस्त का अंस कै बस उपासना माया उपासत सो हा लटौरे ॥ भ्रम का जाल मैं ब्रसैगुर ग्यान करै दसै फंद कटौरे ॥ राम चरण कै राम सदासिर ता हि सम्हालि कै स्वाद सटौरे ॥

काल ॥

अथ बोहर ... नमे बौ ...ग॥ जोनिश्र
जोनि परे पग पाव के सोस त मा नजरे ही जे
गो॥ जोनि श्र जोनि छुरी छिवे पारस मेल बि
कार दरै ली हरे गो॥ जोनि श्र जोनि पावे को
ई इम्रत जास के सोग टरै ही टरैगो॥ जोनि
श्र जोनि रटै नित राम चरण तरै ही तरैगे
१॥ गज ग्राह गयो तब राम कह्यो न ढील
न करी तहि काल उबारे॥ राम ही राम पढा
वत कीर कहे बार मुषी के से क्रम निवार
राम नरा इण नाव लीयो सुत हेत श्र जा मेल
श्रघ प्रजारे॥ राम चरण दसा सिध राम जी
धो रेही मे श्रैसे पावर त्यारे॥ ...हरनाङुस

पूत प्रह्लाद जु यो जिन राकस के सभे राम
उच्चास्यो ताद पिता बो दो जु ासदर सिर
सारी सही नही ने क बिसास्यो सेरी की
फेरी सूरी मिली यो सिव को बिरद न बि
सदर जास्यो रांम चरण सिंधरांमजी ना
वलीया ज्ञ सुरा कुल त्या स्यो ॥ २ ॥ माता
से ग्यान लह्यो ध्रू बालक होइ निरास
गयो बन मांही ॥ नारद रांम सुणा इ दी
यो गुर सीस धर्यो उरि ध्यान करांही
ताहि बिघन ज यो सुरराइ को पंज त्रम
गम ज्यो कछू नांही ॥ रांम चरण ओसे प्र

अनौ हरिजासके नाऽन्नि नै घरजोरीहै॥ गोत
मरष सुनी सुत इणवंत बनचर को अवतार
लयोहै॥ नाव प्रताप गयो लंघ साइर सीत
क जाइ सदेस दीयोहै॥ नाव प्रताप धयोक
र परबत नाव प्रताप पताल गयोहै॥ राम च
रण असो बल राम को निबल ही बलवंत
नयोहै॥५॥ कासी मैत क कबीर नयो जिु
वाघ रुपाइ प्रवेस कीयोहै॥ कलिंदी यो स
बरी कुल को धूम राम निरजण साधि लीयो
है॥ स्पारास केदर तापदद्रै तब पूरण ब्रह्म
मे प्राण दीयोहै॥ राम चरण सतन सुजैत
तानर को धिकार जीयोहै॥६॥ अथ सा

कारिरे मन संगति साधन
की जो सो बुध निरमल राम कू गावै। जो नर
मोह किरोध मिटे सब सील संतोष दया तप
जावै। धीरज को रस पाइ कै काइ कै काम कु
बुध की लहरन आवै। राम चरणन रातन पा
इ कै लाग बके सत संगत पावै १। जिनको
जिन बातन सो फल है मिलि साधकी संगति
रामका है। जिस बासुर धार अमी अचवे
किसी यार स धारक बरन बहे। हरि आन
द कंद सदा नर वै उम जाल जगत की नांह
रहे। कहै राम चरण ऐसो पद न्हवा लै रांमद
या बिनिधारण लहै २। और मिलो पामले नि

तिहीनिति उलजमेल्हदरीजनकोगीतिनापनि
टैजनकेदरस्यो नमलधोइकेहरकरेननकोग॥
जीवनिरमलहोइकेगमग्रटकोई कनकेना
हिरदेकनकोग॥ कदेगमचरणदे [illegible]
संतसथानन्हावबकोग३॥ [illegible]
कोग॥ नानरनैपसवाकेसे [illegible]
टग्पाननदेनदरसचे॥सीलसंतोष [illegible]
यधवकानकेकान [illegible]
खानसेजसुख आसन [illegible]
होवे [illegible]
कीक [illegible] ॥ [illegible]
वेके [illegible]

साके रे सूकर गंदगी की चमें नाइरहे है गो ॥
ऑख व शुद्धि के कपर समारत के कारतो सुष
हां न गहे है गो । रोम खराण जैसी जाके सावट
सावट माफिक ग्यान लहे है गो ॥ २ ॥ रांमनाम संने
हू नहीं सब सूकर स्वान की स्वाद करे है जग
में तिनको कुम जीवन है तिते । चेति में (व
सको ज्ञानि धरे । समता को मारयो समता न
गहे पर स्पेरति यो समता नो फिरे । करजोड़
चल्यो न गग्यान बिना जैसे जो स्पाजवार
कौ दे अनुहरे ॥ ३ ॥ सुचि स्यान नहीं समके जैसे श्र
ये के आरत में की सैं सासे । अंदर के कारदीर
चढ्यो सुष मांहि धरयो कोन्हा नीति प्रकासे ॥

नारहमेलधल्योगालि नैसकै कदत फादत
तोडि बिनासे राम चरण ही ऐ बि बिनेतर
कण लषे अैसे साधकी आसे ॥२॥ लोद
चितावणी को अंग ॥ चमका भोडमे
कतहो दिनराम निरजण कूनरटो
रा॥ नाम न वाया सप्रीति करी सब साध
की सगतैकाद्रफटोरे ॥३॥ दिन कूनस
म्हालत मरि गकाल पिछाडै सबद्रा
चटोरे ॥ राम चरण कैरांम सदा सिरता लीक
छाकि न आन अटोरे ॥४॥ गाद्ररे गाद्र रांम
कगाद्र लेहोद्र सुचेत सम्हाल धनी काजा
द्रैजाद्र चल्या दिन जात है साहि गरीबी उम

इमनीके नाइरेनाइ बुझाइकिरी धकीको
मकनीति सुमाइगनीके रामचरण कैराम
सदा सिरता हि पिछांणीके क्योंकि इनीके
४ सो बनहीं जेम जातेम कौ धन सी धन
के हाइहाइ करै गरब तन गोविंदनौं
बलो योनाक्रिताहि कुब धी कंनारध
रेहीहै सार असार को प्रत्यक्षिनो क्योंकि
कधन कालनेनार मरै पाहै राम चरण
नयो सठ गा कलहाय चटै धन नपम
रैनु इक रांम धणी बिनि नांद रसै तजेता
ही के मठ न चीत नयो धन को दिन रैणि

उपाद्र करै पड़ि फंद में आव गुमाइ दीयौ
सुत नारी सनेह निराट कीयो जिन कै हित
क्रमा कौ भार लयौ कहै रामचरण बिना
हरि वा रस पूज्याव छौ जम मारगयो ।७।
भजरे मन राम निरंजण कं काहो सोच म
डूंा धन हीं धन कौ तजु जीवन हेति उपाय
करै निति आव घटै छिनहीं छिन कौ तट
तुरत तालन हा दस मच्छ केलि करै मिल
हीमिल कै कहै रामचरण नयो सठगा
फल धवल ज्यो घर ही घर को पधर वार
परे नाम कामि गयो   करी घरकी फि

हकै सुतनारीकैनार ऋथ्यौ। अतिमंत्रिसैक
म क्रमाइगयौमरकै तनराइखुलाइकै
स्नात्र कीयौ पुनिपापहनोयौसबहीनर
के। कहहिंसिव[illegible] सर्वकेणि मारि सुका
रनहे। पहै[illegible] क्रमक्रमाइनी
त। अवणा[illegible] सुहि मच्यौरव्यौ। सुख्य
हा तैसुतनारि[illegible] जेनजारदी
है। तैसैफलसबकौ देही। राखिडमाइथरयौध
रपस्वर्द। विविचारकहौकणतेराबांम
चलणसगौ इक्कराम है तोसबिनासत्र
का। है। कौपैही ७। रंमकै नाइलगै[illegible]

गाफल कामही काम करै दिन षोवै।को
लपगो गयो बालन के संग तरन भया
तरनी दिस जोवै॥ तरन गया बिरधापन
आनत पोरपस्यो दुषही दुषरोवै। राम
चरसा चिंता इकै देन रनी रब है कर कु
नहीं ओवै॥ ॥ कामही काम करै निस
बासुर राम का नाम स्व पूगि इहै। दा
मही दाम कू दोड मरै सिरपाप की पो
ग तूला हुं दै॥ नामही नाम कूं धामचु
णे अैसे कहा ही आवबिसाइ गई हैं॥
राम चरण अैसे मुढ अधकी न्याइ छुटा

पैकजातीनइंहै॥ ऐ॥ कान्हाछत्रपतीपि
रथीपतिमांतनजैगटमंमन्ठराजकी
थी॥गजथांनकान्हारथपालैपीक्षय
नसीपिपदमलजोडनीवी॥ कान्हको
ड॥बरपजीआवनइंसुतनारिकटुव
कोतुपथीथि॥ कहैरामचरण॥ ऐसौन
कोअरथिरामबिनौविरकारगायौ॥ १०
फटकेनरमुरविरामनजोमजकाम
कैकाजसकोमसीदेही॥ नारीसबारार
आनेसबासुरमदम आदि॥ ऐजग
तसनैही॥ हाबमनत्यसलागेरसोधन

धोमसधमसधंधकरेहीं॥ रामचरण
गयादिनबादहीयादकीयोनहीबस
बंदेही॥११॥ अथकुलणांगुरदेवको
अंग॥ स्तति॥ रमतीतरामगुरदेवजी
फुनितिहुंकालकेसंत। जनकूंरामच
रणकी बंदनबारअनंत॥१॥ आग
गुरपीरक्रिपाकरि नारकरीतबकाल
कीचोटनषावताहे॥संसारकाफंद
सोकाटसबैनिज अपणीआसिबचा
वताहे॥अघराजकेत्रासिरेजाइछपे
तबजंबककाहाकरावताहे॥जनराम

चरण सरणि सदा सुष आनंद मांहि
स-गाव ताहै ॥१॥ गुरपीर क्रिपा सुषसी
रषुली जगदीरय डुषबिलावताहै ॥ नि
ज संत प्रसाद नया मन त्रपति त्रपति
चितन आवताहै ॥ कासीराज मही सु
रसाज मही ब्रह्म लोक का सुष न आ
वताहै ॥ जनेराम चरण सरणि सदा सु
षरांम ही राम कू गावताहै ॥२॥ सतगुर
सबद की हद मही सुष उपन जीवान
आवतावहै ॥ धूम ध्यान धजा परका
स धरै निज ग्यान की सिंध कू पावताहै

जगजीवसो आइकैयाइलगे ताको
ब्रह्मसरूपमिलावताहै ॥मुरजादर्को
रामचरणकहीसोहीबेदपुरांनमेंगा
वताहै ३१ ॥ अथसुमरणको अंग
आनउपाधिसोबादकरोऐकरा
मनिरंजणध्याइएजी॥ याहीध्यान
मेंग्यान अपारप्रुलेखिनघरकोव
बहीपाइएजी॥उसघरमेंनरनदी
जमराइको आत्माब्रह्मसमिलाइए
जी॥ नन रामचरणनजनकरोज

ललद स्पष्ठललट समाइहीजी॥१॥
मनपट कैनो वसावण्दीयातब
मैलबिकारबिलारताहै जलग्या
नबिचारसतोष सिलागुरसरको
तापतपावतािहै ग्यानी ग्यानबि
वारिनिहार दैषो विनिवोयासु
पैद्यान आवताहै जनराम चरण
मगन भयारामध्याइकैब्रसण
वताहै २ राहा वालताल हरमथ
नपाया वनसे कपी ढेरहै जावताहै

घरपाइकै ध्यांन लगाइ रह्या तब गां
वका नांव न गावत है॥ ग्यानी ग्यांन
बिचार निहार देषो कहू राह हा बिना
घर आवता है॥ जन रामचरण मग
न भया राम ध्याइकै ब्रह्म सम्हावत
है॥२॥ पारसके डुंग उतगा बणे निसमा
हि तुषार गरावतो है॥ तब सूरको तेज
प्रकास भयो गल आदि सो अंतर
हावता है॥ दोइ जीवरसी व अग्यान
लेहि निजनी वली पामिलि जावता है।
जन रामचरण मगन भयो राम ध्याइ

वैकुंठ समावता है ॥४॥ अथ कि
बार का अंग ॥ वट बीज का पेड़ को
है न पावै बिसतार संसार भुलावता
है कोई पान सेती कोई फूल सेती कोई
फल ही जड़ फुलावता है ग्यानी ग्यान
बिचार निहार देखे के फेरि नाता गि ए पा प
रम पावता है जन रोम चरण नगन में आ
निज बीज रस में राम गावता है १ दरी
या व तरंग अनंत उठै है कोई लहर मैं सा
गर पावता है वल चेक फेल लहर पवन
सेती घरि नीर नया निले जावता है ज्यों

नी ग्यान बिचार निहार देषो कमलस
रा गिरला सु पै आवता है॥ जनराम चरण
मगन ल्या सु बसि धरा मैं राम गावता है
२॥ इक माटी का घाट अनेक कीया घट
रूप नाना नाव गावता है॥ घट लेग नया
नाव ना हिरदै करम ल का अतन आ
वता है॥ ग्यानी ग्यान बिचार निहार देषो
कोई काल बस न रहावता है॥ जनराम
चरण मगन ल्या प्रथी पारस में राम
ध्यावता है॥ ३॥ सो नाका लषण बोहो तघ
डा घट घट का नांव रहरावता है॥ सब
नो नामिल इक ऐक की या जब घाट रू

नांइतपावताहै ग्यांनी ग्यांन बिचार नि
हारदे षो ऐसे भ्रम का भेद बिलावताहै
जन रांम चरणां मगन भया निज हे मरो
मो रांम ध्यावताहै ॥ ४ ॥ नगर मैं घर अनेक
बसे घर घर का नांव कुहावताहै ॥ एक
जाट का हार बटाइली या क्यां गांव का सु
सल आवताहै ॥ ग्यांनी ग्यांन बिचार सदु
र पाया के ॠऊफडी न्यारी रहावताहै ॥
जन रांम चरण मगन भया गांव नांव रां
मो रांम ध्यावताहै ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ सार असार का भेद यारो
सत संग बिनां नहीं पाइईजी ॥ माया रूप

अकार अ सार सबै ऐ कनि गुण सार लि
षाई ऐ जी जैसे नीर में षीर मिलाइ रख्या
गुरदेस मिल्या पिछाणाई ऐ जी जन राम
चरण ऐ सारनुगल का रामदी राम सो ध्या
ईऐ जी १ रामदी राम जि का रे करे यारो
ई ऐ जी निज ग्यान के
ओ र अिकर विचार ऐ जी निज ग्यान के
जाण अ ग्यान दरो गुरमत का पाख निरार
ऐ जी मनी मान मकर का दरत जो दिल दा
सगरी बी बिचारी ऐ जी जन राम चरण न
रातन पाइसो नाहि बिगारी ऐ जी २ नर
तन न काम न षोइ ऐ जी नारा नि की जोडि
काहा वताइ त्री ऐ लोक बिलोक बिचार

ए ऐसो औरन कोई ह्हि पावता है ॥ कांमदा
म बिसारकै रांमनन जे जावसा वकोसिंघ
सिलावता है ॥ कहै रांम चरण बेवेकोवि
नोयसु कीटप्रु जेतमैजावता है॥२॥ दांमको
आसगुलांम जगत केजाही कु ग्यानतन्त्रा
वता है ॥ मलिसा धस मान मरोड कैर सस
रमिल्यारि धजा वता है ॥ गुरसतकी सक
तिसकापरे ढ्रक कोमी की कोण रपावता
है॥ कहै रांम चरण ऐसा सुत मेरिष संग
ति प्राण लजावता है ॥ ॥ ॥
सुनिसुनिके सजनवा
तकेलतेरानामकी आज बिचारी एजी

काल बूत कौ कोटरी तन बन्यो अब ताम
के कादास वारी रेजी॥ सत संग के सो धि
सुजान प्यारे रसना से राम उचारी रेजी॥ ज
न राम चरण मरण मिटै गुर ग्यान हिरदा म
धि धारी रेजी॥१॥ नर पूर अकल सकल हर
गुरपीर बिना नदी पावता हो॥ ही ह हो रहे रा
न तीरथ फिरे मीयां मान मके चलि जावता
हे॥ कोई देवल बासम सीति महीं कोई बेद के
तेव मे गावता हो॥ कहे राम चरण नरम प रस
बना वनां मांहि झुलावता हो॥२॥ अथ कि
त गुरदेव को अंग लिष्यते॥ स्तुति॥ रमतीत
राम गुरदेव जी॥ कुबितिकृ काल के संत॥ जिन कं

रामचरण की बंदन बार अनंत ॥२२॥ अरु
॥ अपे धरम एक राम सही सब से
तीरा ॥ कलि मे धरि औतार संत जी भेद
बताये ॥ सिष साषा उर धार ॥ मिलै सतगुर
पद मांही ॥ भरमी थि ते ॥ अ सबास मे मुक्त
पलक छै नांही ॥ राम चरण गुर इसट की कों
ई सुमरण राम रटै कां ॥ जाप भयो बिन वारणी
तन पद लाग्यो समाज अवै क ॥ राम नाम सम
तत और कहु दीसे नांही ॥ गुर तिस मृत के
जोड पोजी या संतन मांही ॥ सब ग्रंथन का सा
र सोधि सतगुर मो दिदी न्हा ॥ दलह हरि निवा
रंके धन बेत कर लीन्हो ॥ बहु दीनी कीया

ल की सुषमहमा का हो ऋाषी रे॥ रामचर
ण मन ऋरपके सतगुर सरण राषी रे॥२॥
ब्रम्ह संतबरीया मसाच समता के सागर दी
नबिछल दुष हरन सरन सुषरासी ऋागर
ग्यान भगति बैराग ध्यान धुन भेंद ऋारा॥
माहा पुरसम न जीति नीति संतप्रमउदारा॥
ऋसेचरन चोक सली या स्वामी क्रिपाराम
जू॥राम चरण ता सरण को पानां जाद गुलां
मजूं॥३॥ कीया का गसदंस बेसक्र महिर निव
स्या रस्या त्राप ऋलपति जी व सरणे निसता
स्या॥पा१ परम संतोष पोष संचेम जशाया॥
।म

नवेध्या निजमन सूं गया मनोरथ कांम ॥ जि
नरांम चरण सूं रे कारी सो छुपे सिर नांम ॥ ४ ॥
सो सतगुर निज रूप नांव निरबांण बतावे
जत मंत संतोष पोष देसि षतिपावे ॥ च्रमक्र
म भ्रम रोग सोग संसार निवारे ॥ तीन ताप
की जल न दरन भव पार उतारे ॥ करण धा
र करुणा सुषी दया धरम को मूल ॥ रांमच
रण ताकी सरणि मिटजाइ सो सै सूल ॥ ५ ॥
सतगुर पषि सुष रांम गुल गहे ॥ ॥ रज को
जे ॥ निस दिन पषि ति बधा दूर सन रटि इमृत
पीजे ॥ जै जग सूं भगा जागति मे गवन जक
रही कलम अंट के चीर अेक पुसत गबिस

तगि बसतरही। हो व मेल सुगक्षा चबिब
धिवाणी सउ चारै व्की पुड मिलि चनस
कलकी ऋषनि वारे ।। बुसत ऐक अंगद्दा २
है संयाजि दे षिम नमा हि। राम चरण रो ल्ति
लि नया कारज सीझे नाहि ।। सतगुर संमृ
थ नाणि वाणि रू गीस बषावे ।। के करह
रिनषा २ सुरति मेदा राषी बे ।। ऐसा नाही को
इसगा सतगुर सा प्यारा ।। जम सू ली या व
चाइपाइ इसत की धारा। राम चरण गुरदे
व बिनि मेरे। औरन को इ वे कर राखे सीस
परमे हिरदे रा अपोइ। सतगुर संम्रथ स्वा

स्वा

व सो हीतत काल बताया ॥ आप सरीखा
कीया हत नै रहीन काही ॥ मिलै ब्रह्म प
द मोहि काल कल्प दो सै नाही ॥ रामचर
ण गुरदेव धन मिलते मिटा इ मार ॥ मैंउ
न के सिरपरि धरया तजि झूठा संसार
॥ सतगुर मलि कीन्ह पद हत बि सहरमु
ख मोहीं ॥ ऐसे रहै जग माहि संत जन लि
पैनतोही ॥ मिलै जगत का जीव नरमस
व हरि गुन गावै देखै औ ही सेतोष मुकति
है मारिग नावै ॥ कुं नाज्यूं जिपा करे पो
षै न्यू जगदास राम चरण सिषनी पजे
जो सतगुर धारे सीस ते कलिया बिहगु

रदेव कलपनो दूरि निवारे॥ नी चिंतामणि
नाऽ छितवनी रंक उदारे॥ मे गति मुकति दा
तार सेक कुछि नाही ताके॥ अ सट सिध नौ
निधरहै चरण निति जाके॥ काम धेन दूरे
कामना करे कुमेर निहाल॥ य राम चरण
गुरदेव मे सुरति रगो मणि चाल॥१०॥ सब
गिरो सिरे सुमेर तासपरि तरके तरही मली
यागर गुण एह सकल मली या गिर करही
यसिए ब्रह्म आधार ब्रह्म से ब्रह्म नही
है॥ ब्रह्म प्रकासी संत संत करि लेवे सोई॥
हरि गुर एता आंतरा हरि रचो गुण ब्रिस
1

अथ सुमरण कौ अंग ॥ रांमरत्या मरपू
रनर का है के फेरी ए ॥ अपणे घट के बी
जरे निदिन सुमरण करीए ॥ आगारा कीक
लण नार का सीर न दरसे ॥ करमां के आ
वरण रांम नी डों नही परसे ॥ ज्यु चकमक
मैं आगि पथर लग प्रगट होइ ॥ धीरज सं
करि ध्यान सबद गुर कौ ले सोइ ॥ रांम च
रण करणी ॥ वि. नांजगे न पेम प्रकास भी
न रहै सुष मीन के तो जल मै मरै पीयास
॥१॥ अथ नीव बसभ्या ह्वै कौ अंग ॥ रांम
जन मन की मौट ब्रोट जमकी नही लागे
सिघ गज सुपीनां स रत बन का जी व

होवनजाहै अनल नांव ऐसे कमपो
वे उदेसयां आदीतरें लितमहोवेनो
सा चरम करम उठि जाइ नांव तत
करै प्रकास बेदसाध सबही कहैसु
मरण सुखमय होइ रामचरण सतगुर
सबदर सौ हिरदै धोइ ३ करम बन
परहार नांव रिपव कौ कुठारा साध
सेसुखदेव सनक सब कहत पुकार
मन सासकरउठ जाइ नांव बिन
है जी नाही उपजै नहीं बिकार नांव
आदेमन नांहीं बाहरिको साधन
कोसा हुणौ ब बैठपा.४ रामचरण

[illegible]

सुलन [illegible]

नो [illegible]

सो [illegible]

न श्राचार [illegible]

क्र [illegible]

ल [illegible]

स श्राव [illegible]

जवृत [illegible]

चरणा [illegible]

पापसातव [illegible]

पाप श्रानन्द [illegible]

पत्रेम के पुत्र नांव के हरिमलगजे पा
प चावने नवग नांव मोरा को नजे अ
थ आरण उलकाड नांव पावक परसा
र । अथ पाला के पुत्र नांव मरजतप
जाले । रांम चरण सोसे सुरंग गढ उद्धि
आ पर जाइ । ऐसो अपरबल रांमह
नजनां सु कहा यां ॥ ६ ॥ मरे गारड सम
रयमरे स सोम जारी । मरे तीरस कागम
रे थाह धनधारी । मरे सादा सचोर मरे
अन्यां कुग आया । मरे अगरा नारराग
कानी के गोया । पतिबुता पीव संमरे नि
स दिन आतु जाम रांम चरण अथ वरे

जौमुषडुचेरैरामराम॥७॥रामभजनप्रतापतापतीनतनत्यागे॥कामक्रोधमनक्षेभलोभकोजोरनलागे॥रागदोषमदमोनुओनआराधबिलावे॥विदबिपतिनोयिहविघनकोइनिकटिनआवे॥सदसुषआनंदउपजेअजेअगमपदपाइ॥रामचरणपरतीतिसूंजेमनसाचाचागाइ॥८॥राममजौलिवारभजनसौषसुत्तिरेमनमेरा॥सदसुषसमतापाइजा९उपदालदतेरा॥बिषेवासनानासआसकीत्रासबिलावे॥अचवासकोवासासनाफेरनआवे ८

आदरसे तो मांहि राम चरण राहि रे ताणि
न पलकैं तजी ऐमांहि ॥१॥ अजामेल अ
घवंत अंतसुति नांव उचार्यो ॥ गनका
कीर पढावत जो गजराज उबार्यो ॥ न
हीं जगति है राग नहीं कुल ग्यांन बिचा
रा नहैं ॥ जो गजि गजापन ही न पंखे मञ्
वारा ॥ पतित निवाजण नांव लेत दुष
सासन साथौ ॥ ऐसो संम्रथ जाणि सरणि
मैं पावर आयौ ॥ [illegible] उधारण राम
जी सरणि सुधारण काज ॥ मेरे औगण
मति गनौ ह निज बिड़द की लाज ॥१०॥
[illegible] संत संगतिकै

कीयो नरमन नेरहैन को ६॥मरू विकार मि
टि जा आत्मा निरमल होइ॥ ज्यू पारस कुप
रस लोह कंचन होइ जावे॥ नाव रूप गुण
मोल फेर के आघ व धावे॥ पारस तो कंच
न करै संत संत कर लेह राम चरण दाम्नी
बसे आनै अमर पद देह॥७॥ संता को संत
संग मत कि पारस पावे॥ जब के परसत च
रण नेम नै हरि बिलावे॥ काम क्रोध मत बो
ध सोग संसो सब डमरे॥ आनै पद निआ
मराम निस बासु मुरे किलदेव नाग
त मे मह मां कही बणी ५राम चरण सो सं
ईहम कु प्रापति आइ॥८॥ सत संग को परव

हजिसोइम्रत कोसागर। जाकेजलकीलह
रहारहोइडुषकेआगार। जेसेसं मंद अपा
हयाहबाकोनहीआवै। असंतग्यांनस
म्पर बोहोतजीवनकेपावै। प्यासापी
वेध्याइकेआणप्यासारहोहरि। रामच
रणसतसंगकनोदेजासुषधर। संतो
कोपरसादआदकणआणदकारी।
सोगरोगनैहरैस्थितिकूकरैसुषारी। सुर
सुरपतिकेआसनागजोनरतनपावै
वेदकेरवोषाणिजासगुणजोणतनआ
वे। ताप्रसादनारदनयोहरिकोनिज
हितिजाणे। रामचरणनागीतमेकह्योकि

स्वदीपांण ॥७॥ काल को अंग ॥ काल
आजिकी आस काल की कण चलावै ॥ का
हा सास बिसवास ग्रास करमां हिर दावै ॥ क
ळ माहा बलवंत जंत सबमारि पिछाडै ॥ नर
नरपति सुर इंद जाइ ब्रह्मा कू पाडै ॥ रामचरण
नै छिरांम कूं तजि पल पाव इलाज ॥ बारबार
धिकार फिट जे करै परस्ट का साज ॥१॥ काल
बडो बलवंत म मतकी जोल्य सारी ॥ सुरनर
असुर और जीव सब दिन पर मारी ॥ काल बि
रध अरतरण बाल को काल न आवै ॥ हरदेव
के षाइ छप्या कहूं बचण न पावै ॥ रामचरण
काल जाइ ऐती न ली कमै घात ॥ तातै भजी रा

कै परापरै कुसलात ॥२॥ मांक बोहोत मंफाए
औरांम्रिंग त्रिणां तन जारो ॥ अकरण कर
ण विसार कीतै घण मन मत गारो ॥ सतैसा
सतर पुरांन ग्यांन हिरदै नहीं लाखै ॥ से सलाष
अर कोडि मही पतिकै अलख लाखै ॥ धंवे बो
यो आरबल सुत वित विषी आनंद ॥ राम चरण
ला ग्रांणीयां फेट पाई नरदेह ॥३॥ रे मनरिषमु
त नहीं णखी णबध करै जमारो ॥ सब्रु थरांम स
म्हाल्हि जनर मेराषण हारो ॥ टनां व्यारिकी
सारि हार मति चाली आई ॥ सगो नही पिरवा
रनारि सुत पिता र माई ॥ दाम न आवे काम औ
न सब कफ़ रहसा हाराः ॥ अंतकाल की वार नहीं

कोइ करै संसार॥ आद अंत मधरांम है सब जीवां रिछपाल॥ रांम चरण सुमरयां सुषी बिसरयां बुरा हवाल॥ भावार्थ मनुष्य को दुःख मिटता है और भक्ति का विचार करे तो दुःख दूर होता है। इसलिए जीव के शुभ कर्म करने में सहायता नहीं है। ऐसे राम नाम की महिमा है। जो कोई राम का स्मरण करता है उसका रक्षा होता है। आप ही नर्क में बैठे पड़े हैं।

साध्याइसुरतिगहै हंसतपी जैाराम चरण
ऐसी छिबी बोहीरन मिले है आइ मन
साबाचानांव सूप्रेमप्रीति ल्योलाइ ॥८॥
राम भजन की बेर टेर के संत जगावै गा
फलफिरफिर सोइ सुपन सग जनम गुमा
वै ॥ पितामात कुल भ्रात नारिसुत सगा स
नेही ॥ पस धाम अरदाम लार नही लागे दे
ही ॥ राम चरण ॥ ६ ॥ पडा रहे सब केल सिर को
डि ॥ घण परिवारा ऐकलो चल्यो तै राज तो
डि ॥ ९ ॥ ॥ अथ चौमासी कौ अंग ॥ ॥ इष्ट राम रमती
त आन कूं पूठि दे रहै ॥ पग नंगे गुरदरस द
या की मक्ति गही दे ॥ बिषे त्याग बिषबचन रहै

ख

सिषि बतन ही जातें॥ हांणि व्रिध की बात न रै सोद रि को आणै॥ जे वा चोरी घर लु ब ध कुग कपटा न ही रा षे॥ नांगत माफ अमल अेष जमद पा नन चाषे॥ पांणी बरते छांणि के नि र षया व घरणां धरै॥ वेरा म स बेरी जांणी ऐसो कारिज अपणा करै॥ पा गा मी वारवार सांग बन फल पर सा रै॥ सर धा से ती त्याग स म रथ्या मन मे धरी रै॥ तन पर निरगुण साज मा सबारा स म मा नै॥ बारति कार उछा व अम मन को सब जानै॥ मेला होली की रवन कदे न देषे जाइ॥ राम चरण तन पाड के दस्या तजे ग पा इ॥ रै॥ त्या ग॰ ५८ २१ ९ धाम

काइरसं वाले नंदीरांम जगतिका आर सी
सधारा फर ना पतां सरि पद्दोइ गुवार सरि
सद्दोइ पवार लोक परलोक विगाडै इसे ज
गत काजी व वासांज सहृत पिछाडै रांमव
रण औसी करै जाकै मूठै ठार कारस
वाले नंदी रांम जगति का आर १ पडै सु
जाणा पा इमे तो लोग इसे सुष मोडै रांम
चरण आधा पडै तो काटै सबही दोड
तो काटै सबही दोडि हेतदे करणी कारली
सुजाणा सुष इर उलटि अबज्या विसत
रही रांम चरण परणा जन घटो वटो लुटो ध
न कोडि पडै सुजाणापा इमे तो लोग इसे सु

षमोड॥१॥मायाकोटोटोनफोसुतबंधले
बाटाटोटोहरिगुरधरमकोपडेआपराटा
टिपडेआपणीटाटसाटिऔस्यानहीकी
जैनिजघरहाणिआवैरसामेपरघरकं
दीजैरामचरणकरडीब्रजतसबहीजाणे
जाटिमायाकोटोटोनफोसुतबंधलेबा
टा॥३॥रामसमधीपषपातजोताहीकूंधिकार
सतसभामेआदरनहीसतकरैतसकारसे
तकरैतसकारमारिमोटीजाणिजणजण
आगेदीनलिषबुधिपडेतिसाएंरामच
रणसुषनालहै५षदालीदअपाररामस

मधीपणातजे तांहीके विकार ४ ऐसे
अनागीजीव के कदेनदीजे ग्यान चौ
डे सुष अथा करे मोड पड्या है रांन नी
डु पड्या है रान गांठि कासतर षोले जग
फिट कारा पाइ मांभि गो मोदे रो दे हंमव
रण कइल जांहां तांही अथमान ऐ
से अनागीजीव के कदेनदी जे ग्यान प
नी लाय गका लौ व दन ऐ काढ़ रवं गार
लोगा की नावट व धी गयो नगति सुदा
र गयो नमनि सहार क्रुवधी दो न्य पाई
धर्स्यो तिरपा के हेति नाके वीचमको ई
नाथ

सो पुरषां की न्रानि कै जले नरक मजा
रा नीला पग का लोबद नर कारर कै गा
राद्दा रामचरण कारतण मुष देषी जे
नांहि राम जगति सु म्राजि कै धस्या जग
त के मांहि धस्या जगत के मांहि त्र्रम
की पोट उगहीं साध संगति सुष खानि
पड़्या सांसा की बाई ग्यान नहीं ण बुधि नि
ष्टे हीर करमा के मद्य जा हि राम चरण का
रतण मुष देषी जे नांहि ग्रस रमबि
ना संसार में फिरे स नकटा जांण सुणे स
सो त्र्रा सरवण जा के च्या मानि जाण

कें चामें निसूंक जौ कें सलनवूकै रांम
चरणावै स्रें धम्रापणी हासिन संकै ॥
वेलूजबोलै नगन सोता कें पसं पछा
नि॥ सरसु बिनासंसार मेंफिरै सन कटाजो
नि॥८॥ [illegible]
ल्स्स्त उजा है स्यांम कोसूरा नाजेनाहि
पांचपची संजाहिकै पुडारहै रणमाहि
पडारहैरणमांहिराग मीधू कीनावैसु
णासुणिवा कैतेगक्रमसबमारिउमा
वै रांम चरण न्यारजीतिकै रामदरबेजो
हि ल्स्पणउजाहै स्यांम कोसूरानाजेना

दो॥१॥राम क्रिपा स पाइये सूरा का दीदा
र॥राम चरण जाकी संगति कायर होइ क्रू
सीयार॥कायर होइ क्रू सीयार सूर की
छाया बरते॥पकडि उठै सम सूर कछू
सरते ज्ञण सरते॥कायर क्रूर रण खेत में सं
र लंघावे पार॥राम क्रिपा स पाइये सूरा
का दीदार॥२॥रामचरण ऐक सूर पर
कायर वार किरोर॥क्रम काट काने की
या तन मन सेती तोडि॥तन मन सेती तो
डि ज्ञ जन स ज्ञाव बधास्या॥पांच पची
सं जी तिगका

माया मुकति का सिधि मंडी कर जोड
राम चरण इक संरपर का इर बार
करो हि: ३ सरां की सेवा करै-चव
दाती न्लोक ३ रि आनंद सुष ३ ज
हैं का देन व्यापे सोक कदेन व्यापे
लोक फिरै कायासं तोड्या असट
तीव नौनि. ५ रहेवाटी कर जौड्या
राम चरण संत सुरंके मो भर संबली
षोक. संरां की सेवा करै-ववदाती
न्लोका ४

अंग॥जा को उतिम आग है सो पावै
साधू संग॥सो धू सदा निरस्वारथी॥
देवै परम अनंग॥टदै परम अनंग
संगता कौन ही जाइ॥मेटै सोक अने
क लोक अपणे ले जाई॥राम नाम स
ब के सरै ए निज धरम उतंग॥जा को उ
तिम आग है सो पावै साधू संग॥१॥सो
सुष है सतसंग मे सो न ही न्रसरी गंम
हरि चरचा श्रवण॥सुणे रस ना उचरै
राम॥रसना उचरै राम न ही को इ धो व
धंधा॥साध कृपा के जगत काटि आस

कापंदा रांम चरण आनंद अतिनि
रखै आतुजांम सो सुष है संत संगमै
सो नहीं इसरा ठांम ॥ २ ॥ साध दरसण
का कह कीया इता गुण होइ ॥ माहा
राजसी तांमसी त्रया सातिगी सोइ ॥
त्रया सातिगी सोइ काल प्या मन की
लागी कांम क्रोध कं जीति प्रीतिह
रि सूं अनैरागी ॥ रांम चरण संसार का
दीया त्रम सब पोइ ॥ साध दरसण
नाव सू कीया इता गुण होइ ॥ ३ ॥ रांम
चरण संतां तणै दरसणै गाजि गहोइ

तामें संसे कोनदी सति मो नंस ब को १
सति मांनंस ब को ऽ सा धजोस चाप १
ऐ ।। अप रएसा चो आव आव ते साफ
ल ल ई रे ।। सति मा व अ स मे द प गि कु
पटि ला न दे बो ३ ।। राम चरण संता तणी
टरम पे क निगहो ३ ।। ७ ।। राम चरण सतो
तणी जे को इ दरसण जा ३ ।। रांम नांम सूंम
न मिले तो अम क म मिटि जा ३ ।। तो अम
क म मिटि जाइ जगत का बंधण टूटे ।। सा
ध संगति में बेठ नजन काला फालू टे ।। त
न मन इंद्री बसि करे काल कदे न हो बा
रांमचरण संता ... को ।।

अथ श्री सता गुरदेव को अंग लिख्यते

सत गुर सारसा और दीसे नहीं ता नहीं
लोक फिर देष जोइ । भ्रम कपाट उघा
डदी पग धरया मन की मलनता हरि षो
इ ॥ बेद कतेब सुणि समझि आइ नहीं
सुत्र अरसुत्र की झलि मारी ॥ मिलत गु
रदेव जगाइ चेतन कीया झलि पर ग्या
न की थाप मारी ॥ राम की धाम हम हर
कछु जाणता पंछि छूट मंद का भेद पाया
राम हा चरण गुरदेव दयाल के चरणा कुं
परसता साच आया ॥१॥ सत गुर ग्यान दे
बुधि निरमल करी भ्रम अरु क्रम सब

रि कीया॥ कालबेताल की जाल सब का
ट करि काढि कै आपणी सरणि लीया॥
सील संतोष आरदि छिमा पोष दे सी सब
विदस्त हरि नांव दीया॥ राम सही चरण गुर
देव दयाल के चरण परसतां मरत जीया
र तत सो तिलक भाति कुल की छाप दे स
त गुरदसत काटी पराजी॥ राम गुण आवण
जो सरवणा सरवण मुकट माला जन
दामा विराजे॥ मेषलां सील संतोष सब मात
रा म्हरि के मुक्ति दिषा इस सारा॥ राम सही चरण
रणे षद्म कं दीया सो दीनि जं संत है मित
म्हारा॥३॥ सत गुर ग्यान से आव

षुल्या बेद कतेब की नाहि बाचा ॥ ऋम अर के मकी ह्याकि पगकेमी यांगे मदीप थ्यदरीया वला धा ॥ ता समय चाल तो षे द उपजे नहीं चाहि कोई के सट नहीं नि कट आवे ॥ पाप सबही क व्यास हजसुष प्रगच्या रा मबिनि नाहि ऋब आन जावे रपता लोक का सुष तए अर नया बुलै का पद मे बास लीया ॥ रामही चरण वेद सनिर ने नया सत गुर सबद ऋमर कीया रा ॥ सत गुर ता पसे पाप पर है नया मन बि चि ना वे छाप लागी ॥ कमरए छोमि रका रपद परसीया ज्योति की ऋम ना हरि लागी

दिलसोडुवारकागोमतीगुरमतोगोम
काचादणतिलकलीयाबामसीचरण
जोसूजिऐसीबर्णोतोडुवारकादेसमे
वासकीया॥६॥ अथसुमरणकोअंग
रामकानामकेजपरेबावरेरामकानाम
बिनिमुकतिनाही॥सिवसनकादिकास
मीरटतहैनावकेरटतहैगवरआई॥
नवजोगसरानावकेरटतहैसुपदणकत
अरबेदगाही॥नारदासारदारटतमुनी
जनानावतनसारतिहलोकमाही॥नाव
केरटिकैसतसबतिरगएनावकीनावच
ढिपारजाही॥रामहीचरणरटिरामसैमिलि

कर

रोहो सुरति के पकडि ध्यान लोइ ॥१॥ ध्यान धरि ध्यान धरि राम का ध्यान ॥ आन को ध्यान से कौन काजा ॥ आन के ध्यान है रान दोइ लोक मे राम के ध्यान सुष आव साजा ॥ राम के ध्यान कु व ला स सिव पा इया राम के ध्यान ध्रु अ चल बैग ॥ राम के ध्यान सनकादि सद एक रस राम के ध्या न प्रहलाद सैग ॥ राम के ध्यान सुष सार दा नारदा ग्यान गलतान सब संत स्यरा राम ही चरण गहे राम का ध्यान के आ न का चम दुष जारि हरा ॥२॥ राम कौ नजन तिहु लोक मे सार है से स सिव से न कआर

सुषध्यावै ॥ भजन सो भगति अरु और
सब भ्रम है नाव बिनि भ्रम करि भ्रमपा
वै। रति बिना साष को है क्रण बिधिनी
पजे सुरति सब संत कलि नाव गावे। नाव
जुग च्यारि मे पतित पावन कीया नांव
सिपति सुण सरण आवै॥ नाव निरबांण
जोरा बिघन ब्यापे नहीं नाव बिनि भ्रम
सब काल षावै॥ राम ही चरण नं नाव
की वोट गहे नाव से बिमुष जम दास ना वै
॥ राम के भजन से भ्रम सब भागीया राम के
भजन से क्रम छुटा॥ राम के भजन से मन
निरमल भया राम के भजन से मेल छूटा

राम के जन मै सुरति न चल नई राम
के जन सुष सा जागी राम के ज
न से नगर बसती नई रोम रोम रुण
कार लागी ॥ राम के जन से प्रम सुष
पाईया राम के जन से अगम पेष्या
राम ही चरण अब राम के जन से
राम ही राम नर पूर देष्या ॥ ६ ॥ रसरातरा
सी अग ॥ भ्रम करम कू ग्यान सि षन
नीया लोभ कू दौड मे तो षमास्या काम
कू कतल कर साल से गया बाण बैराग के मोह टारया ॥ गरब गुमान बिचार दी
ह्या रिया क्रोध कू बोदि षि न्या ढ माया

सूरवा जो धपर बोध मांनैन दी ऋमलक र आपणा व अरहगया॥ आनवका व तारामकू गावता स्यो मगन नाचताब्र गलागा। रामदी चरण अ बनगरत्री काबस्या सिरका चोर आगा॥१॥ सूरका बदनपर नूर फले के सदा स्या अ दाका म कू धसत आया॥ तासकी दृष्ट में निष्ट आवे नदी जोर जगबाजता दोरि लागा॥ कुर जनोगा फिता सा वता मावता चा यडे षेत दरिदत सूरा रामदी चरण वे स्याफला ला लदे रिजक अजेर जप्त पूरा॥२॥ चिंता बणी को आग॥ रामका भजन बिनिका

न छोडै नहीं रांमका भजन बिनि मुक
तिनांही रांमका भजन बिनि सुषपरमे
नहीं रांम बिनि बिनि तिरे उपमांहीं रांम
बिनै आन सब धूम बेकांम है करतहै ष
टनर जनम पायो वै पर पबिनि आंधको
गोविंसोट ग्रस आनकौ बिरउ उपआंध
कहौ है रांमको नामति हैलोक मेसार
है जोग जिगजप नहीं काजसीजे रांम
हीं बिन सब सत साची कहै आनकी
लगात नहीं रांमरजै १ रांमकाभजन
सनाहि सुषकर केगात आनगीलिकेहर
षगा है ताम फलनीमरी हो दुनी मेंकरै

राम बे मुषया जण पावै॥ कै षिकै वासते
आन जपती फिरै॥ पूत की बास नां होइ
सूरी॥ जणत बीही चे बंध्या लाइ लागा जि
रानि एरही नषतरहै डष पूरी॥ बूत अरव
इ ल्या करतरी वद गई आम आर कम संगु
राम भूलै॥ राम ही चरण कहै हो वसी वा
लौ सी सकै धो की यारू षकूलै॥२॥ राम दी
राम तूं सुमर रे बावरे राम का जनविदि
काल पासी॥ मोही माया महा यू क कंदे
दुरलौ यू न की तपति तो दि नाहि न्रासी॥
जो राम रस ना रटै कम सद जे कटै भ्रम का
जाल की तोड़ि पासी॥ राम ही चरण भ्रव जा

गि जगदीस जप नाव ऐसो नंदी बोहोर
पासी ३ गाइरे गाइ त्तं राम कूं गाइ ले बोहो
रि नंद्ही पाइगा जनम ऐसो कूवस्तूल
गवैसा चक्रू परद स्ये लार नंदी चालसी
एक पैसा साइ ही हाइ कर ध्याइ धनकूं
यारे चाहि की लाइ कै मोह पैगा नात ऐ
र मात सुत नारि के वासते लोग कीव
पट का क्रम सेगा धूम के दूत सिर फोड
ले जाइगे जाइ गा एक तें सांगि नांही राम
ही चरण कदे चेत मन नम्रे रिषा कर चढ्यो
हो रमतिसार जांही ४ गाइ रे गाइ त्तं राम
कूं गाइ ले दे विसे सार मे कूंण तेरा काल

करिल पंट तो दिज पट सा ।। दिनां प्रतपि
रवारन सी रहत नेरा ।। काट घर मांदि लेजा
इगै जंगल में ।। काठ के बी चिष्ठ हि जालि
देही ।। फूं कुछ सा च सो रो ज रो इ दो इ
दिनो बेवसी जल नदी नांव केसी पडे गो
जाइ कं जो ए चौरासी पा जर गो ।। उपदेस
कसट जारी ।। रांमदी चरण कर चेत नगि
रांम हिस काल की जाल का फंद टारी ।।५।।
चेत रे चेत अचे तन क्यू दोह रो सापाम कर
कं च सपेद आया ।। नाड जग मसवारे हा
थ पग थर हरे जह तां वे बतां मगत काया ।।
नैन रां नीर स्मर ना करे स्मा

ल गिरपरत छाती कट कूटा बूचनकि
लकार कांम लि करे कांलिनती मांन
ता ग्रबनाती मालसवबोस अपलं
इवैटा लीया पा पका बो फासरतीरदोल्ह
रोम वा चर्ण धरकाढिन्यारा कीयां
पोलकी चेतन्यां बासकी न्ह ६ सैति
रे चेत अ चेत क्यं ही धर यो आजिको
दिन सो कालनाहीं आगलोवेरमो
पाछली नारहै देम ले ग्रुठ फिरजाइ को
गी बात सो तिरत अंतर ता सैवरअको
इ बरव कैन पा बोही डुमला गैजोरस
चतीरचिर बारमे ना च ले नारि सुतगार

देनह त्यागे॥ज्ञलसूं सुत अपणां इत्र
पणा कीया कामकी बारनहीं प्रीतिपाले
रामसी चरण रिभाइलै रामके चरणां की
सरणं जमचोट टालै॥७॥कालकालं ई मे
सकल जगफंदरच्यो रामके सुमरिन सीं
होइन्यारे॥तात अरमात कुटंबधिरे
बारसब सुत अरनारि ऐहलगत प्यारे
संतसाची कहै सगमानै नहीं दषिजन
मोहि कोइ नाहि तेरे॥अंतकी बेरसब
हूरिहोइजाइगे घालिहै कालजबतोहि
घेरै॥कोइ कुसलपूछै नहीं सगो सूकैन
सी ध्याइ चरणां बोरजबरोइदीन्हा॥रामसीं

चरणतबरामसमुखधरणीनाहिनजिमं
ढश्रकाजकीन्हा॥८॥ श्रीगुरु [illegible]
[illegible] ॥ पुष्पमाला [illegible] ॥ पुष्
चजिहैमनरामानेरजनकं॥ जनमसर
ण दुषनेजनकं॥ [illegible] ॥ अरधनाव
सिलसाहरयाधौ॥ रामचंद्रदलत्याव
ला॥१॥ जलक्षतगजकेफंदकाट
अनामेलअधजारणकं॥२॥ रामक
हतगिनकाविसतारी॥ नुगेनुषि श्र
धमउधारणकं॥३॥ कंचनीचकोनं
तिनमग्र॥ सरणकोप्रतपालनकं॥४
रामचरणहारेश्रेसेदीरच॥ श्रीगुरुगु

न्हानि वारण के आप जुदा ॥१॥ भ्रमित
उ धारण बिहूटन न्हारो ॥ क्रम कर्म [illegible]
पितिन के न्यारो ॥ टेक ॥ जगति बिलहरल
कू लेग तिनी यारी ॥ हमतो पतिन पावन की
क्यारी ॥१॥ आज्ञा मेल गिल कासी त्या
री ॥ उनसू मेली आनि हमारी ॥ गुरू कांमी
कपटी मे पण हारी ॥ लोल्ही लपटी ॥ बि
कल बिकारी ॥२॥ तन मन अरु बचन दी
आ चारी ॥ परपची अरपर धन हारी ॥
४॥ गुण करता स औगुण कारी ॥ अपण
औगुण गुण बिसतारी ॥ परमानद शरण
मन एही बिचारी ॥ गुण सागर में चरण

तुम्हारी ६ [illegible] ॥ राग [illegible] ॥
मेरे [illegible] नाथ नाथ स्याहि हाथि मेरौ
कीजिये हु नाथ नात आपसाथ तेरौ
टेक जगत कौ जंजाल जाल भ्रमकै
मझेरौ ध्यान हरन मरन व्याधि जनम
मरन फेरौ १ काम दाम कपटरू
पट नहीं साच नेग [illegible] जाइ करत
जाइ भ्रम वाधि कौ निवेरौ २ तात मात
सुतन [illegible] स कल स्वाद करौ लाभ
धाम स्वरथ चित [illegible] सनेरौ ३
मोह [illegible] नाद परत करत कोल हेरौ
रम चरण राम सन [illegible] ति साध संग नेरौ

पद ॥१॥ मेरा तो सुरति निरति राम नाम स्यौं
ही अरसपरस मिलि रहा सो निमिष होइ
नांही ॥टेक॥ धरम करम भेद बेद संत आइस्या
गी ॥ राम नाम सुगम काम जास स्यौं लागी
॥१॥ एक मै अनेक दृष अलप आकलि-
आगी ॥ बट क बीज करस हज सुर सुमत
जागी ॥२॥ राम चरण चरण सरणागत
ध्यान रागी ॥ बष मुकति जुगति जानि
आंन सें बैरागी ॥३॥ पद ॥२॥ अथ
राग बिलावल ॥ राम गरीबनवाज को
सुमरण करि जाइ ॥ जीउ पड्या जीउ पडै
साहिक सुषदाइ ॥टेक॥ अन बासर ख्या करी

करण वेद स्वामी । नर तन देज सब बाटी
सो हरि अंतर जामी ॥४॥ जाके कोई इन ज
गत में जो वदीन अनाथा । तो हि दई स
सुष करे दे वे सिर हाथा ॥२॥ राषि नरो
सो राम को । करता क्या करि है । आर
पदारथ नाम सब स । सब ही डुष हरि है ।
३ । राम चरण चरणारबिंद उरि अंतर
धारो । आंन आस सब दूरि कारि सुष राम
उचारो ॥४॥ । पद ॥१५॥ नरतन बाद न सो
इसे सु मरण सुष लीजे । बिषीयारस सब
त्याग के इमृत रस पीजे । के । पांन पांन
रस भोग से । बओ संसारा । इन से छुरता

चु काइके॥मजी एक रतां रा ९॥ मांन बम
ड क करी दीजे दुरकारा॥ आ जा काग
ठ तोडके॥ निरपष रहो न्यारा॥२॥ रज
ध्यान संतो अमे दीसे सुषसारा॥ रतादि
टि कर राषी ए॥ दूजा छाड पसारा॥३॥
राम चरण वे साधवा॥ जिनकी ऐधारा॥ जो
सागर कूप टिदे॥ उतरे जन पारा॥४॥ पद
॥ राग सोवती॥ आजि को आ
नंद मेरे आगदीन माइरे॥ उमगि उमगि
मेरो हरि दीसराइ हैटेक॥ आसको बिना
सत्तयो॥ कामना चलेसगयो॥ बिषनाव

बेपलेपममताबिलाइहै १ समतासंतोष
धनपायौ है नृपतिमन अचल है जे
गनृपो कलनचलाइहै २ फकतफ
कीरी पाई असलि इजारी आई स
फाई सबूरी मांनै बिनिपरवाइहै ३
मांनव जनमध [illegible] सगति कर
रामचंरणरामगाइ जुगजीतिजाइहै
आजिमेरै जैजैकार जैजै
वेली गाइहै पंचसषी मिली आइहर
षबधाइहै पीपाकौ समाजन
यौ अमअतिनाजिगयौ मनसीमद

गतीयो॥आनंद बजाइ है॥१॥छाति कंप
ट षुले पेम के प्रवाह चले॥रूम रूमर
सजरे॥अछकछकाइ है॥२॥सुदर सुम
गपायो॥सफ को अरथ आयो॥एकटी
रकतलायो॥जोनसुकाइ है॥३॥रामचर
ण रामगायो॥नेमसेनिकट ध्यायो॥सतगु
रसेनबेन अनेघर पाइ है॥४॥पद॥२॥
राग आसा॥अब मेसतगुरसबद पिछा
ण्या जागा॥कूलि जया मन चेतनाघर
ही गोबिंद जाण्या॥टेक॥दसू दिसासू
उलटि अफूटी सुरति निरंतर लागी॥

रामरामरटि नावव धाया ॥ रजीना
वट लागी १ ॥ कोई ध्यावै पारये केमर
कोई दस औतारा ॥ हम तो सकल ऐक
करि देख्या ॥ अबिर दो हम जारा ॥ २
सारी सिष्टिर ची करता की ॥ करता स
बके मांही ॥ ऐह म ग्यान लै सो गुरगम
सै ॥ घट बिध दीसे नांही ॥ ३ ॥ ऐसी दि
ष्टिर है मन न हचल ल ॥ कबे ना नरमे
नांही ॥ रामचरण तरप तिचरपासा
आप आपकै मांही ॥ ४ ॥ पद ॥ १ ॥ स

तौ सतगुर सत प कडाया॥ तातै रूग
भ्रम बिलाया है के॥ गहौ सा परू पो
कर मांन्यौ॥ २॥ जे ज्ञ व ग न्नै पाया॥ दिब
नैंन सतगुर परका स्या॥ ज्यौं कान्यौं प
छाण्या॥१॥ राग दोष अहंकार ईरषा
गरब गुमांन उमाया॥ २॥ भ्रम ति
मर अंधारा मेट्या॥ दिल दर पण दिख
लाया॥ सुरति बल बी रांम नांम सूं॥ लो
हे पारस पाया॥ ३॥ रांम चरण की उरम
लागी॥ ते के घर मन आया॥ मुस कल
सूं आसांनि नई है॥ तातैं समाया॥४॥
तत

...मेरे सम्पावरे ... मेरमम
करम अधिकारी रे मेरी बुधि निर
मल कर मारी रे १ मै फेयो इसंसारा
रे मेरा बंध काटि कीया न्यारा रे २
सबद दीया ततसारा मैरै अंदरला
या उजीयारा रे ३ संत संगा ताति का
री मेरी बिदन हरि निबारी रे ४
ऐसा हम ब सुमदा ई रे जाकी सं
मन तरम सरणा ई रे ५ ...
... मन नो ब निरं

जरा ध्याइये॥ नाति अंजरा बिसतारज्वा॥
केरा॥ २ गुरग्यान सम्हाइये॥ टेक अज
ण रूप धरै सब माया॥ उपजै जो इबि
लाइये॥ सब्द अं षभा अं चेल अं बिन
सी॥ जासू प्रीति लगाइये॥ १॥ जे यतन
जोग नेम ब्रत सनमा॥ मति न लेइ वम
हरै॥ सब जाण वासू को पाणी तिरषा
जाजै नाहि रा॥ २॥ जैसे सिलता नाव
णी॥ बीज बिना रूष तरा॥ नाव बिना
ऐसे सब साधन॥ कहौ को रा फल दे

तेरे ३ या तन सेती नेह न करीये ॥ लो
भ मोह तजि काम रे ॥ रांम चरण भज
रांम सुमरीये ॥ जिस दिन आवु जामरे
४ ॥ पद ॥ १ ॥ मन तूं रांम ही रांम सु का
हे रे ॥ ना हिना इक औतार पाइके ॥ बिष
या संग न हारे रे ॥ टेक ॥ पांस्यूं कर आर
स्यांन स्यालु गति ह्यूं जाए अपार रे ॥
डू औ सर मिल घातन पायो सोन सौंबा
ल बार रे ॥ १ ॥ लोभ मोह मद स्वाद बि
सरत ॥ हे सब पसं बिकार रे ॥ जनम
जनम ए ही सूत साधी ॥ अब तो सुगध

बिसारि॥२॥ मात पिता सुत नारि बंधवा ओर सबै परिवारि॥ इन सबै हनि बारि बावरे। साध सबद उरिधरि॥ ३॥ सील सतोष दया सत गहीये हरि की भगति बिचारि रे॥ रामचरण तजि जगत सबै ही॥ आप णे आप त्यारि रे॥ ॥ गउ महला ५॥ आसा राग तितालं॥ मेरे सत गुरब कस्या रांम नाम मोह पारा लागे सकल कामा॥ टेक॥ जगत जाल का काट फंदा। मिटा ह्रर

कीयासत्र उपजेद। मोनेसदिनहु
नहें, नुसट गोम मेरेसुषहिदेद
हेतेनरोन। १ मेजननन्नरएको
ने स्रेनपार। नरौ जनम सुफलन
यो सब कोलार। मैगुरसोजराया
आगमैदे। देषी रोमसबदमेसं
लेतेहु। २ सेमघट आपकरोम
रो २। सुमनघलजवारेकनाद।
कोकेन जलजकोनाहीनामेवोस
रीतेसबदमैनहेंलोनाजुजमतय

करणी करै कोइ॥ ऐक रांम बिनां
नही मुकति होइ॥ रांम चरण हम
कही नराइणा की अनंत कोट
जन संत साखि॥ ५॥ धमालि॥ १
मेरै मन वैकी यो गुर सबद बास
मोटफी को लागे जगत बिलास॥
टेक॥ जैसे बंस बास की यौ बिरद
वांन॥ जा साद सदिसा है जल सुध
ना॥ निज रतन आवै आंन धांन॥ तब
समझि समझि रहे ऐक रांम॥ १॥ ऐसै
सै नारसी न मिलि कीयो प

अहरै तब प्रांन नेग [illegible] कूसुरतीस
अदमै [illegible] सी है जाइ [illegible] अबरोत पोत
नई है [illegible] ना इ र [illegible] बंधे ए करै
ह गोइ पाइ मेरी सुरति ल सो निज
नगरजाइ राम बरण जो ही निति
आनंद [illegible] अनूपर से पूरण परमो
[illegible] इ [illegible] अपूरवसो
[illegible] मे [illegible] नांहि जाके आनंद
[illegible] जन [illegible] है [illegible] जाही
सिव सनकादिक सेस नाथ मुनी
नारद सारद प्रहलाद कबलाज

मौंह नैनो मां नै॥जो हो नेल नैत गि
म ध्यान॥१॥जो हो रिष वटे वज
ठ मथ्थ मांहि॥तो हो नो जो सुरजन
करा इक पल दैव स्मर नाह मांस
जो हो ध्यान धरे सुष अमृत [illegible]
जो हो रामानंद नीमा व ट का मा ना टे
मध वाचार जबिस न स्याम [illegible]
बालीया संग सा थ्यि उ त्व आर [illegible]
कस्यो सब को हो थ्या॥जो हो गोर
ष सरथ्थर गोपी [illegible] ता हो नां नग [illegible]

दा ओर अलीह मह्मद दा हकैर नेरा
स॥ जेहे सहिते एकादस दरीदास म
[illegible] एकालिगया॥ तीन आद
स्वाप कुं की मह मा कहीं न जाइ॥ अग
[illegible] र थाम जो होय घर घर
आनंद सु मिले [illegible] जो हो सब
संत का [illegible] ति चरणं जल रज सं
ग मतुहि सं॥ ति [illegible] नदास कौप नहीं आस
[illegible] मचरण के चरण पास पास
[illegible] राग [illegible] मो

दा और आजाद महम्मद दा इक बेरा
त जो हो सहति एकादस होहास ४
वलप अंकालिंगन तोन आइ
याय दकी मह मा कही न जाइ ग
न हु नर दूर खास जो ही घर घर
आनंद सुख बिलास ५ जो हो सत
संत को वाइ सात चरणं जल रज सं
पमा हइ नौ ति सै संतदास कौ प नहीं हास
को रा मचरण कू चरण पास पार

द्रोपद दुखा कर दूर से घोहे गाइ मन्द्यो। सो मेरा म कीजे दौ प्रोस्ट के दुरस्ते दयालु दया के सागर॥ निरधारां आधा र॥ जग जीवन जगदीस तुं साईं सब बि धि जांनन हार॥१॥ तुमरी जौ मैं हूं नन्द दी साख्यौ॥ जड़ इब रागए नारि उ धार पतित के पावन [illegible] सम्हाल॥२॥ और सबी इन की [illegible] [illegible]॥ मेरी आ लूणी बाट [illegible] नि॥ जर जर स्वांमी॥ तजी [illegible] ३ ऋपति नारि को है को हाला

रनसम्हाइ॥बांहपकड़ छाडो मति
सांईयां॥अपणी करि मेंगल्या॥३॥
मेरी बड्कुल्याइसो थिमुरसेप्रेम न लू
धार॥बड्नके ब्या कुल नहो कीजै॥
केथ तुमारे भार॥४॥तुमरे हमसी नारि
घणेरी॥तुम सेहम सारि एक॥राम सूरए
केकरो शबर्द॥बकसी जैगुन्हो अनेक
६॥धमालि॥१॥ मेरे म्हल ले पधारयो
तिमांइ॥सबदी साहिब सुणी है पुका
रा॥टेक॥पहा कारिपरसन न्हा करकायो

चन्द्रे करम जलाइ॥ सां च सुपारी सा॥
कि करि बिड लो॥ मो दिसत गुरदी बोक
लाइ॥ १॥ पिम कादी पत नो इ क्षिंदर मे॥
प्रीति का पिलंग बिछाइ॥ सील सगार
साजपी व परस॥ अंग संग लगा
इ॥ २॥ उरि आनंद उछाव भयो अति
लग्यो हैन वलो ने हा॥ तन मन धन न्य
वर करि हा सा हिब कै आपा दे हा॥ १॥
बो हो तदिना सु प्रीतम पाया सख्या है
मनोरथ को मा॥ पाव म लक टी ला मदी
छाको॥ घर आया के वल

तो मे ॰ रा न्यान्ना रता दरी या सव
दी संत स्यो सन कादिक से सरटते दे
सोदी मे पाया है केत ॥ पा सासे सोग
हाग उ डो स व सुदर लस्यो जी सुद
ग ॥ राम चरण शरण पद पाया ॥ पीया
सो गि ना ज्यो है लाग ॥ ६ ॥ पूना दिवा रा
मे रै मन मतर मता राम को सो ॥ हा हो सा
सो ओन नरम न दी ना ६ टेक ॥ राम ना
म सब संत बता वे ॥ ध्यावे से स मद्देस
सुष सन का दिक नारद सारद ॥ निगम क
रत उपदेस ॥ १ ॥ दमतन पावन नेनन दी स

खन॥गुंजनो सान स रूप॥सब व्या
पी क सकल सं न्यारो॥ निरमल नूर
अनंत पा॥१॥सब की सुन सदिए सब
ऊपर॥सब पर स्यो है समादि॥जी
उ पड्या द्वारै अति ने रे॥ तिनि नर
बिलम्ब न लाइ॥२॥उ जि सुद लाद क
री की करणा॥संकट भयो है साहि
ब सो नइया ना दिसे कोई जो न रही आ
वै दो २॥३॥साहिब के ना इव में रत
गुणा जिन सो हिंदी थोड़े लपा १ राग वर

एइरि ओहार कैम्योसो । मेरसैनंहो को
नौके हाड़ [illegible]
[illegible] ॥ रामसन पूरुलादन चावे होरा
जरनई छाताहो जैजैकारनेहोहरि
[illegible] कारहोदेव
सुरुसभागमजो है ओने ओंदि
[illegible] ॥ ट्रसणक्रस
[illegible]
[illegible] नित्राहोरोकंहेरो ।
कोरि वाम मैकारादे ॥ आरनरोजगा

रामोही॥किटफिट करन पुकारा हो॥ अगति अयापदास को डोहो॥ रैचवदी गन छूटे हो॥रामचरण जुग च्यारि बंदी तै॥तो भी मार न छूटे हो॥ ७॥ ध्रु मालि १॥ रामराम प्रहलाद पुकारे॥ असुरन कं नदी माने हो॥ हरणाकुस की ताकन माने॥ प्रेम अगन जुनगा वैठे॥ सहत सनासब ही मिलि॥ निस बासर समझावे हो॥ रामरसा प्रीति का मति वाला॥ कोप र के दाइ न आवे हो॥ २॥ सांभ सुरमा कर त बीनती॥ रामनाम छ मि बाला हो॥ मेरो

॰ सो मतिकरिमोनै । खोपकीयों न्ह
नाखोहो । र । कोतुमयो अपालु कव
नहे बादकरोवकवा दहो । रोमस
नेही जीवन मेरी । इसटह मारो स्वा
दहो । १ । काठियडगहरणकुसको
खो । इसट कोस्रो अवतेरोहो । मोने
लोसे पड गर्यनसें मकल आपीने
छोडो । ७ । रोन वरएनरहोरि लोइव
जटे । न लेको कारज लाग्यो हो । राम
विमुखन गीतनको दोहो । राके समार
केना स्यो दो । मथुमाल कोरा । स्वारी

सरिजा इमना ऊं॥ जिस बासुर गुणगा
ऊंसो॥ नटवाजू नाटक कीसो॥ लि
सीधूराग सुणके होटका सीलसतो
षदया॥ आनूषणा॥ ब्रह्मा भवधा
सो॥ सुरति निरति सोई मेरा सूं॥ आन
दिसा नही जाऊंसो॥ १॥ गब गुमान
पावस्त पेलूं॥ आवो सोन ऊंजा ऊंहो॥
साहिब की सणी इन से कब हारा गादे
बन ही ल्याऊं हो॥ पांच पकड़ पची
स चकसूं॥ त्रिगुणा के बिसरा ऊं हो॥ चौथे

दाव चेतकै मेल्है मोजमु कतिकोपा
के हो ॥ इस बिधि करि के रामरिझाऊ
प्रेमप्रीति उपजाऊं हो ॥ अनंतजन
मको अंतर लागो राम चरण हरि
नाऊं हो ॥ ५॥ अमावस्या ॥ रुलोर प
ति सुरति सुंदरी ॥ अरस परस मेहे
री हो ॥ वर अवगति नहचल अ
बिनासी ॥ सुंदर नवलकिसोरी हो ॥ लव
लव रंग पीसगुलाल जुमई ॥ त्रिगुण
केसर गारी हो ॥ अरथ अबीर साव

करि सुधौ॥ अरत प्रेम प चकोरी हो
॥ सीस सिंगार नेह अति नीतम पे
लतपी या पीयारी हो॥ अन हद नाद बै
न धुनि ऊठै॥ गरजत गगन मे झारी
हो॥२॥ फाग एम फाग रमत अयो आ
अबर बरसे भारी हो॥ जीजत सुरति
गरक अई सुख मै॥ निरपत रूप मुरारी
हो॥३॥ जीवन सुफल भयो नागर को
नो गोरंग करारी हो॥ रामचरण भीव
फगवा बकस्या दरी आस हमारी हो
॥४॥ समाप्ति॥६४॥ अथ राग कानडो॥

निसबासुरहरि आगे नांचू चरण
कमलकी सेवाजो पे देहु सुरग
लोककासुषनहीं चांहु जनमपाइ
हरिदासकुहाउं ॥१॥ च्यारिपदारथ
मनोबिसारू भगतिबिनां हुंजोनां
हीधारू ॥ रिधि सिधलछमीकांम
नमेरै सेऊ चरणसरणहूं तेरै ॥२
सिवसनकादिकनारद गावै सोस
हिबमेरैमनभावै ॥३॥ रांमराइ इक
अरज हमारी रांमचरण कृष्णौन
भातितुमारी ॥४॥ पद ॥५६॥ निसबासु

रज्जिरामसनेहीनांवलीयांनिरमल
नरदेहीटेक॥चौरासीतजिनरतनपा
यो॥अबचूमकोसिरभारउगयो॥१॥अ
हसबकोसांकादेव॥फिरीरोसुरतिस
मेटनांवमेधरीतो॥घटिघटरमतारा
मनसूकै॥सतगुरबिनबाहरिफिरिबू
कै॥२॥निकटनीरकीपबरनजांणी॥
मृघत्रस्नामेबोजेपांणी॥भजिनपाया
जिनघटहीपाया॥बाहरिफिरिफिरिजं
नमगुमाया॥४॥रामचरणमोहिअचर
जआवै॥पूरबसुसतपिछमकंधावै॥५

रे मन नां
निरजण नंपरे सकल सरोमण
नांव परम निधसां सो सोग न लपरे १
रांम नांव भौसागर तारण पाप कुमजा
द बपरे २ अजामेल गज गिन कान्ला
री जम कृतन कौरिपरे ३ जोग जिगता
केतुल नांही पक वैस केन होत परे ४
रांम चरणत आंन उपास क चरणसर
णा रो हो तु परे रे मन रांम
स नेही कररे बिनै कर सेती नेह नक
रीऐ अब नासी वरवरै १ हरी मसो तवा

उरिधरि कै॥ औसागर कैतलरै॥सारा म
नाम धन धुरनिर बाऊ॥ काया कोंग
जररै॥३॥आग निराजजल कोजे नां
हीं। तस करस कै न हरिरै॥४॥ काल स
मै तेरो काज सुधारै। तावरूहटि तनैक
रैरै॥५॥ रांम चरण धरीयो न हीं धी
जै॥ध्यांन आधर को धरैरै॥६॥पद॥२॥
अथ राग बहंगलिख्यते॥ रामरस प्या
ल कैन की जे प्यारो॥ औसी सो जबो हो
रनहीं पावे॥ नर तन को अवतारो टेक
लष चौरासी भ्रम भ्रम आयो॥ जुग सो

८
कस अपारो॥त्याग कह्यौ मिलभातन
पायौ॥तजिले सिरजरा हारो॥१॥ऐसो
रस औरनही कोई॥पावत जगैपीसु
सो।ई औसरमे पाहेरे प्राणी॥हो रह्यौ
रहू सी यारो॥२॥सिद्धासन कादिक
से सपी वत है॥अनंत कोटि जन भाख्यौ
रासस बद निरवाण प्रकासो॥जिलसि
रजारउ तारयौ॥३॥माया मोह जारिसु
तेवधु॥त्यागे सकल पसारो॥राम चरण
ताकी बलहारी॥जाके यारस को आधि
कारो॥४॥पद॥५१॥

८

कस अपारो॥आगच्यौ मिनखातन

पायौ॥अजितै सिरजणहारौ॥

रस ओरनहीं कोई॥पीवत

रो ई औसरमे पीलेरे प्राणी

रस सीयारो॥२॥सिव

सेसपीवतहे॥अनंतको

रामसबद निरबाणपु

र आरंड तास्यो॥३॥माय

तेबधु॥त्यागेसक

ताकीबलहारी॥जाव

कारो॥६॥पद॥रांम

रौ ॥ ऊंचनी च कोई ओतिनजांनें ॥
न ओउतारे पारे ॥ जे ॥ जेन लगावेबे
द पुरांनं ॥ उनांमां चोम पसारी ॥ हू
रिमारिगकी मकरनमाइ ॥ न्हदीन
कसंसारे ॥ १ ॥ संत मिल्यां सबही बि
धि पावे ॥ न जनमेद अधिकारी ॥
रांमनांम निरपरव तावे ॥ नहीं को
ई न्हारी न्यारी ॥ २ ॥ षटदरसणि
म का रांम कहांजे ॥ उतिम मधम बिचा
रौ ॥ जो ब्रह्मई सोही पद पावे ॥ जांम फेर
न सारी ॥ ३ ॥ तन मन जीति रांमरस पावे

जो है इ आधारो॥ राम चरन तांहि कबीर
नला है॥ सबरस लागे प्यारो॥ ६॥ प
द॥ ३॥ अथ राग मंगल॥ सतगुरु दे
इ दया लखया मोह की जी रे॥ जीव प
लट होइ इंस सोई बुधि दीजी ए॥ १॥
मै फंद्यो माया जाल काल पाछे लगे
ओ सागर के जाल फिरत लागो पाको
म क्रोध मद लोभ मोह ममता तजो॥
परहरि बिषे बिकार रामरमता भजो
॥ राग दोष अहंकार के इ बधि आत्या
गी ए॥ साच सील सं

रे ॥७॥ आसात्रिस नांजीति बासनां
जाली रे ॥ हे सतगुरकी सी षटंसब्द
तपाली रे ॥५॥ रांमरांम सुष गाइसु
रति नईं चलकारी रांम चरण हो
इ हंस जी बुधि परहरी ६ ॥टेक॥
सतगुर दया करै चारि कै मोह जग
इ यां भ्रम अंधारा मेट कै पंच बला
इ यां ॥१॥ सतगुर सब्दां बे बार समझि
हेर दे भरम्या ॥ सोझि मारिग कीया
ग बन कै मन परम ॥२॥ रसनां

रोमद्दा रोमरे त्ति दिन गाईया ॥ विसरघा
वेसवि क्वार हंसपदपाईया ॥३॥ खंक
नाल के घाट अमीरस आदिरा ॥ उजि
बेगआकास जो दासु षंसागरा ॥४॥
मुकति अंबी धाया इडीभनदी न्याद
रे ॥ रांम चरण सुष सिंधदं स केला व
रे ॥ पद ॥ २ ॥ अथ राग गौड़ ॥ संईया
अरजइ म्हारी दो बिदलि उपर का
जीरे ढूं कमसरतु म्हारी दु ... णाम
पीडा नरक व्यापै ...
कागले से अस्त वांपे

आइ ... नंदसुवनसुकदेखा मेरे
बदनगयामुरझाइ आसकीदादार
की होइ नैनरहे जडलोइर डुबी
तुम्हारदरसाऊनि तुमकबरमलोगे
आइ सोह्यद्यहाडोनासरे सोलोएक
बरसकेनाइ दू रोमचरण कौखान
ती पीयामातनोइह बासरजाइ छद
ने के लिसखा... दीने लौसकोवल
आइ ... रमइआमेरी पल
कनलागहा... दरसनमहाराकारण

निसबासुर जागे हो॥ टेक॥ दस दि
सा आतर काल। तिने पंथ निहारे हे
राम रोग की ऐड़। इन रे लिए पुकारे
हो॥१॥ नैन उदासी दरस बिना रसना
रस आसे॥ हिरदे कमल से हेत को। ह
रि कब परकासे हो॥२॥ स्वाति बूंद चा
त्रग रटे। जल और न पीवे हो। घन आ
सा प्रेम नदी॥ तो कैसे जीवे हो॥३॥ दास
की अरदास सुण पीया दरसण दीजे हो
राम चरण बिन करे अब बिलम न कीजे

वांण कोइ रे रस ना हे मि कै वलो
धारसत हुआण हरदिसत रमते

रसत ज्र लागुर तोल्या रे सुरत
हुणाधार आण ज्यांन स्वपसं सोहदे

रांमचरण इ बिणजसं जम कै रे न पे
चांतांण ॥३॥ पद ॥११॥ रांमरांमरांम

अथ साधा श्री मुरली रामजी महाराजि
कोसबद लिख्यते।। प्रथम स्तुति का छि
वता।। नमो राम ईश्वरा राम।। नमो सतगुरु हरि रूपा
नमो संत परबी।। रामरटि ग्यो अनूपा।। न
मो सिध जोगेस नमो जन [illegible] के जन व
नमो नाथ [illegible] जी त्रियामरति मिलसदै
बालक।। मुरली साध राम गुरु कारण ती
एक।।। ताके पद बंदन करत पुनि त्याइ बि
घन [illegible] नेक।।१।। साध सबद गुरदेव सा
[illegible] कोपि [illegible]।। साधसबद पारि ले
पाक राम ही राम उचारे।। ते समि दिसट
सुधि सदा एक रूप बि चारे।। राम रमै सब

मांहि निति निरधार अजिन मां ॥ निगम
कहत गम नां हि बरणि आवै नहीं मन मां ॥
सतगुर सिरजणहार ऐक मुरली मन बिचि
मांन लै ॥ साध राम गुरदेव जी कारणै क पिछा
णलै ॥ २ ॥ नमो राम निरधार निमो निरंजण नि
रकारा ॥ नमो अनेणी नाथ सकल तैं आधारा ॥
नमो त्रिऐगुणा पार हत नमो मन बुधि चित पार
नमो अरंगा अनंग गनां वसु मरत न अवतार ॥ अ
कह अगह अ देह नेह कि सस नही जोता ॥ न
मो अबोल अतोल तोलता का नही होता ॥ मु
रली राम बंद न करै किस बिधि जांणो जाइ ॥
राम कहत रांमैं मिलै हजी नही उपाइ ॥ ३ ॥

नमोब्रह्म निजदेव अ ब गति अबिनासी पून
मोनरंजण राइसदा संतन सुखरासी ॥ नमो
गरीबनवाजपतितपावनबिड दतेरो ॥ अखिल
छलछेहरनमरनमेत्रोसबमेरो ॥ नमोतार म
धिपारबरणबे आवेनाही ॥ नमोचिदानंदरू
रूपमेलिपोनकाही ॥ नमोदिष्ट नहीमुसट नाव
रेकाहादीजे ॥ तातेंएहबिचाररामरसरस नापी
जे ॥ ५ ॥ सिवनारदसे ससेरटे अबंरूल पार ॥ सुर
लीअबिरदोरबिधिपायासब आचार ॥ ७ ॥
नमोपरमदयालनमो आनंदसुखरासी ॥ नमो
आनंदनंदसदासोइअपरकासी ॥ नमोगपानका
रूपनमोबैरागसरूपा ॥ नमोसीलकेपुंजनमो
अगतनकेरूपा ॥ नमोत्री जगसरहतनमो

निरंजण निरकारा॥ नमो अजूंणी नाथ नमो तु मरहत बिकारा॥ नमो ग्यांन के पार नमो बि ग्यांन आतम॥ नमो दया के मूल सकल में जांणि प्रमातम॥ जन मुरली बंदन करै वार पार दीसै नहीं गुरु रांम चरण पद रांम के बरतर है सब घट मांही॥ ५॥ इती कवित स्तुति का स्परण॥ अथ ग्रंथ चितांमणसार बोध लि ष्यते॥ प्रथम स्तुति गुररांम कूं॥ जासू सब परकास॥ भूत भविष्य ब्रतमान संत॥ ति न को मुरली दास॥ १॥ अथ दोहा॥ नरतन कूं तरसै सदा॥ ब्रह्मादिक सब देव॥ ता करि सु मरण कीजीऐ॥ पावै हरि का भेव॥ १॥ जब दीप पर नरतन भ॥ एह मांह बैकुंठ पिछांन

ग
गुरमगहै कहैरांम मुषि॥ तो मिटि जाइ आवन जा
न ॥२॥ तेन रतन तो कूं मिल्यौ॥ दीसागर की षान॥
सो धन बृथा न षोइ रे॥ मिलै न बेग निधान
॥३॥ तो क सासत्र रो लोक कै॥ मोल न बराबर मांन॥
ताकूं गेर लगाइ रे॥ कारि रांम पिव षमुष पान॥४॥ चौप॥
चौरासी मैं रुलत फिरानो॥ मिनष जनम कू लंतर
सानो॥ सो मिनषा तन लसो गिवारा॥ जुग च्या
रचु लगि करत पुकारा॥५॥ मिनष जनम दरिब
सा मो कूं॥ जाकरि आषं नजसै तो कूं॥ साधी
न फे काज सुधारू॥ अब आत्म औ जल नदी मा
रू॥६॥ पराधीन पन्न मेटे॥ मेरा बिषरी सुरति म
मे
रपि लायो॥

निरंजण निरकारा॥ नमो अजूणी नाथ नमो
तुम रहत बिकारा॥ नमो ग्यांन के पार नमो बि
ग्यांन अ आतम॥ नमो द्या के मूल सकल में
जांणि प्रमातम॥ जन मुरली बंदन करै वार पा
र दीसै नहीं गुरु रामचरण पद रांम के बरतर
है सब घट मांही॥ ५॥ इती कवित स्तुति का
म्पूरण॥ अथ ग्रंथ चितामण सार बोध लि
ख्यते॥ स्तुति॥ प्रथम स्तुति गुर रामकू॥ जासू
सब परकास॥ भूत भविष बृत मांन संत॥ ति
न को मुरली दास॥ १॥ गुर्यांदुहा॥ नरत कू
तर सैं सदा॥ ब्रह्मादिक सब देव॥ ताकरि मु
मरण की जीऐ॥ पावै हरि का भेव॥ १॥ जब
दीपर जरत षंभ॥ ऐह माहा बैकुंट पिछांन

ग
गरम्मगर्है करेरांम मुषि॥ तौमिटिजाइ आवनजा
न॥२॥रोनरतनतो कं भित्यौ॥ हैसागर कीषानि॥
सोधनविर्थानषोइरो॥मनन बेगाविधान
॥३॥एक सास त्रैलोक को॥मोल न बराबर आन
ताकं गरलगाइरो॥कारिरांमपिदष मुषपान॥४॥चौपई
चौरासी मैरुलतफिरानो॥मिनष जनम कं तंतर
सानो॥सो मिनषानन वरसो गिवारा॥जुग च्या
रलगिकरत पुकारा॥५॥मिनष जनम हरिबिन
सो मोकं॥जाकरि आंषंम नजैसे तो कं॥साधी
न
रूं॥६॥पराधानप...॥
मे

मो कं स्नं ज द्यो दा रियती ॥ ज्यादे कुतुव ज्तनके दे
ष्पूं ॥ जीव नू जनन मं सुफ लक रि लेष्पूं ॥ ८ ॥ च्चरण
बकसि ज्यं ध्यां कू दरसण ॥ बुधिबि सालस्नु
व्कू कं फ्नूपरसण ॥ दू सत देकू ज्यंनू से वा कूत ॥ स
र वं नदे तुव गुन उरि धरूं ॥ ९ ॥ नासा द्यो सबसु
ष को ज्यूषन ॥ ध्यां नन रति के बरूं नहीं चूक
न सुष सुदर सू सुम रूं रांमं ॥ जाते सुफ लक
रूं स ब कां मां ॥ १० ॥ इत नी सूं ज स बै हरि दां ज्यो
रा ॥ कृपा मोपे प्रज्यू कीज्यो ॥ रैण दिव सज्यरू
श्र सट री जांमां ॥ ता के श्र ष मत सुमरू रांमं
॥ ११ ॥ सासस उसासस न पल षमत ॥ रांम रां मक
हता क श्रष मत ॥ श्रैसा कौल बोल तै कीया
तब हरि तो हि मि न षतन दीया ॥ १२ ॥ श्र ज्यवा

सकंध्रैमुषक्रूल्यो॥ निकसतल्वैरतुरत्नतनि
क्रूल्यो॥ ध्रिगध्रिगतेरा ऋवताश॥जननीबे
क्रमरीतुजजाये॥१३॥जननीनोक्रस्यारिका
हाकीयो॥ रांमपिवषरसनानहीपीयो॥ साध
संगतिकबक्रूं नहीबैगे॥परदारातकपरघ
रपैगे॥ १४॥ ध्रिगतेरीजननीजिनजायो॥
गुरलागेलजहरकिनपायो॥ ध्रिगदाईजि
न नालोमोस्यो॥पाकिरिपाछनोपेटनफो
स्यो॥१५॥ ध्रिगब्रालतननालजूका
ढ्यो॥षोटानिषतरकूहकिनबाढ्यो॥ध्रिगउ
नगुरजीबेव्यापदाई॥कलमगेरकिनकरद
गेहाई॥१६॥ध्रिगत्रीयाजिनफेरापाया ऋवि
लासकृतसकलगु॥मापा॥तोरए

णासिरवैगा। बेदतलंगिदोजंगमैपेठ
१७ व्याकतवैरतिलिजिसमजायो बि
नांसमऊसोजनमचंकायो छ्रिगकनकके
कउजदीली कोनांमांहिकररकिनकी
न्ही छ्रिगकवाजिनमगतगाया कुलके
दहणतुदंगलत्रायाञगलेपिनजेसुरगस
धाया सोपापीनेनरकपगाया १९ हतलेवो
जोड़तनकषोलत नाकगायास्नोकाबोलन
धूकदेषतजवांपेलत जतीधोकिप्रत्रूपद
पेलत २० गात्यागावैसासरयाली फिटिफिट
नांफिनांफिटगाली नांनांनांनीमांमांमांमीस
तीदिहडीदेवलजांनी २१ तीरथत्रकनग
रीकोनाइक तिनकनांफिनांफिकहैबाइक

आगलें पिछलें सकल [illegible] या तें कृष्ण रिषसुत
गण न आयौ ॥ २३ ॥ उहां फिर न करन [illegible]
को ॥ हस्तं चर [illegible] न ष बात ॥ मुरली जल की
दर्मे हरि के सेर षे सम्हार ॥ २४ ॥ हरि को [illegible]
नहीं न ष [illegible] चत स्यो गत ॥ मुरली [illegible]
लें सबै तब काहे की कुसलात ॥ [illegible] ॥ जब र अ
ग निकी जु बाल सैं ॥ हरि मिलायौ हार ॥ निकल
[illegible] लागौ आन सौं ॥ अब जाइ [illegible] को ॥ बार ॥ २५ ॥
क मन चाबासी [illegible] न को ॥ [illegible] चौरासी जन [illegible] ता
[illegible] स हरि को ढिंको न रतन दीयो अजन [illegible] २६
[illegible] रतन है माहा मोछि को ॥ जन मुरली निज हार
ताते कहि संत संग आवा ॥ तजि न वन [illegible] सार
[illegible] आन बतन निज रतन की जं [illegible]

न । तासू काढि उजाल मन ॥ नजिनै मौंचवनन
गवांन ॥ सील दयासंतोष सत ॥ सुन्कृत परउप
गार । छिम्यागरीबीरतनवेह । रसनारांमउ
च्चार । २५ ॥ चौपई ॥ उनैहोट मुषसोकतकीया
षातामूछबदनकरिलीया । बालन्धाफैतांहा
बालबणाया ॥ नहीसोफैतांहाहरिकराया । ३
प । दांतमाटकैसैकरिथापे । जिहांचालवनो
जनसबकापे । चालिकाढिबालनपेलई । स्रु
वस्रोतनमैसुरगडकगई । ३१ नाकनोषकै
सोकरिलई नैननमैफुतरीकोरही ॥ चुवारजि
गनीपारकैसेकीन्हे ॥ श्रबनपरिष्याजेकरिल
न्हे । ३२ हाथनपावकरीनिजरेषा ॥ जुदीजु
दीसोकैतन्त्रनेका ॥ नषकीगेरनषबनवाया

त्रौंबूंदमैंप्यालरचाया॥२३॥जीवऊवाच॥
परालबदतैपायामुष॥नाकश्रवनिपरलबद
तैचष॥हाथपावलबदतैंकीया॥लेघीऊदापर
लबदहीदीया॥२४॥स्वादसकलषाणककीया
छाजनतनपहरनकूंदीया॥त्रीयासोभोगण
कूकरी॥ऐमायाकीन्हीसबहरी॥२५॥हरीऊवाच
मुषदीयापाणीकताही॥जीभकरीसाषीमुषमाहि
दांतकाढषाणककीया॥ऐसबपरालबदतैदी
या॥२६॥करडीबुसतफोडकरिमारे॥हणकौपडेपे
सरीगारे॥दांतकाढऊठेऊणकाई॥सोसाषीहेर
स्रौलुकाई॥२७॥नारीकूंनैभोगरलही॥मेरो
तेजगमायौकदी॥मेरोतैजमागमैनैक्या॥
तबतुमकौहोकांहानेदरसा॥२८॥

नरामहीकहै॥ तजास्वादसबदहै॥स्वाददेइ तौहरि
रसपावै॥बादबिबादानिकटिनजावै॥३९॥त्रसु
न्नकरेमौनकीसुनिलेक॥ मुषसूंबातबणांवोकेत
षाटामीगस्वादकरावै॥ गालिगीतबोलतदिनजा
वै॥ ४०॥जन्यारससूंमीनमराइ॥ ऐदिष्टांतदेषीए
न्याइ॥ सुन्नबोल्यासबकैमनन्यावै॥त्रसुन्नबकां
मा घ्यामैषावै॥ ४१॥गिनकानरीरांमरसचाष्यां॥
बिषीयादिकसबदूरिबिनाष्यां॥कोइलबचन
सबनकूंप्यारा॥बाइसबैनलगैत्रतिषारा॥४२॥
तातैपरालबदकरेमौन॥संन्चतकरमलगातहैं
न्यौंन॥ ऐन्नाषीइकमुषकीकथा॥नहीतौगूंगाहो
इरहौजथा॥४३॥ स्वादबादबिषबैनतजि
रांमहीरांमकहंत॥तौमुरलीसंचतकरमतजि॥जी

वसीव पावत॥४४॥स्वाद बाद मुष अरु विकार मन
कहै तिल मात॥ तो मुरली न बिछिवड मेला जीव र
सि तिरजा त॥४५॥चोपई॥ नासा परालन बदले वाड
लोपीन सु नाराज बरत्ताई॥ बास कुबासन दीचित
देवे नासा निरति सुरति करि लेवे॥४६॥ ऐसु न कोवे
मान सो कहीए॥ फूल फल बाद बास न लहीए॥
अन र फुलेल पुसप गंध नावे॥ सो अरसुन न करे मान
कहावे॥४७॥ दुहा॥ सुगंध दुगंद तजि व्यारज॥ राम
रटे निरति प्यास॥ तो मुरली पावे अगम घरि॥ सच
तकर महो इनास॥४८॥ सुगंद सुजस ले संत जन॥
अमल सि दुगंद निवारि॥ नासा निरति लगाइके॥
तए अनंत जो पार॥४९॥ सोरठा॥ सुगंद बास ना
लेह॥ मन मे धरे जमोद अति॥ कवल अलि के नें

सुनसुनेसंतनकेबैंन कपाकीरतननिरगु
णऐंन सुरगुणमेंचितनेकनदेवे बिषसब
दसुणिमननहीलेवे ६२ ऐसुनकरेमाननि
जधरम सद्रजेमुचेपरालदकेकरम असु
नसुन्पादोइकुरंगतमासा जावैनरकबिषे
कीआसा ६४ बिषेसबदसुणिआनंदमाने
घटबधसुनैदेकांने सोवेअ सुनजांनिकर
मांन नरकुजांनकोइ चदनांन ६५
कुरंगमूवोबिषसबदसुनि बिधकतस्योसु
निराम सुरतीदेबोगध्यानकरि सुन असुनक
रणधांम ६६ बिषेसबदसुनिकांन
मनमैंरूचैनसंतजन धरैरामकोध्यांन तौसं
चतकरमामिटमुकतिहोइ ६८ मनमांहीअ

तिप्यास॥ बिषै सबद सुनजे सदा॥ तेजाइन रकहि
इनास॥ त्रिबिधि करम कै लारलै॥६७॥ ग्रह बंधु
नेजू बात॥ तोपकडि बुलावैरावदे॥ कथा सुनैय
रत्रातं॥ तोपाइ पडै पूजा करै॥६८॥ चौपई॥ पाव
मिल्यापरालबदसूतोही॥ ऋांषरहै देषणकं जोइ
निरषनिरष धरणीपरि फोलै॥ तो निज सुन्न ऋसु
न न बोलै॥७०॥ सुन्न संत नके ध्यावै दरसण॥ सुन्न
करै मान होइ हरि परसण॥ हरि के हेत प्रमारथ माँही
धरणी परि ऋसे बिचरांही॥७१॥ सो सुन्न करै मानक
रि जानो॥ ऋ सुन्न संचत कोफोहै हालो॥ पनी पाव
डीपाइ निपहरावै॥ सो कर मान ऋ सुन्न कहा
वै॥७२॥ दुहा॥ दिषि चलै बसु धापरै दया ग्रहटालै
जीव॥ तो मुरली त्रिबिधि करम तजि॥ परसै पूरण

पीव ७३ पनीपावडीतापड्यौ त्यागच्छजैमृषिरा
म तौसंचतकरमचूरण ऊवे पावैमोषिमुकाम ७
४ पनीपावडीपहरिकार पटकैपावसजोर तौ
त्रिविधकरमलेसीसपरि जावैनरकअघोर ७५
नजेपाइछैजपेजे कांटैअालेदिषाइ पनीपाव
डीपहरिकरि अाधाईकोजाइ ७६
पनीपहरिकोईसूर लडेजरणसंग्रांममे तौसदगति
जाइनमूर नगोपाइदेषतबरे ७७ संतनकेदादा
र ध्यायासूसलीटली देषीसब्बसंसार तीनचौ
रसलीदीया ७८ करसंकरमकरैनहीं
कोइ अपथ्वासुनअसुनजेदोई परालनबधरे
कहीएनाई संचतकरमननेकमिटाई ७९ क
रमकरैनिसबासुरकरसू अैसोअ्रमकरै

नहीहरिस॥परालबदसेचलकरेमोन॥त्रिबिधिकर
मलेजाइनरकोन॥७०॥संतनकूदेषरकरजोरे॥
टहलकरैचितनेकनमोरे॥सोकरेमोनसुन्निज
कहीए॥त्रिबिधिकरमतजिहरिपदलहीऐ॥७१॥
सोरठा॥करजोरेक्षेदीन॥रामरामसुषसूंकरे
टहलमांहिलेलीन॥सोत्रिबिधिकरमतजिरु
पाकहोइ॥७२॥सुन्नकरेमोनएिकांत॥संतच
रणसेवाकरे॥करेदानसुनमोन॥रामसुमरि
जोसिधतिरे॥७३॥हस्याकरेत्रपार॥काटणा
बाटणत्रसुन्नगति॥जेत्रिबिधिकरमलेसी
र॥बोहोतचल्यानरकोनमे॥७४॥मीणेसंको
देषि॥करजोडत करि
नेष॥करसूंसीतापाकडी॥७५॥

बार सबकोइ गावै जगतमैं ॥ गहीपराईनारि
सोतांवनबस्योनत्रैपष्परि ॥८६॥ नेतरसंतदी
दारकै ॥ श्रवनसुननकै जसमुरलीमुषदीयो
नजनकै ॥ नहींतोचंदवाबिलैदाडरस ॥८७॥
हस्तजोडिसेवा ॥ करण चरणसंतदीदार ॥
नहींतोतरकरपालजुर ॥ सरपाचलैदवार
॥८८॥ लुचाइडीपशलबदतैलीन्ही
तामैकाहाकमाईकीन्ही ॥ देषनसूतैधरती
सूपरि ॥ स्वालेसकैगिणेनततपरि ॥८९॥ सो
तैटैनफोनताकैहोई ॥ लषचोरासीमिटैन
तोतीसुनकरैमानन्नतारैत्रमरी ॥ निरहंसा
संकीन्हपरी ॥९०॥ सुनकरैमानसंजमजल
पीवै ॥ तोमंचतकरमरहैनहीदीवै ॥ सपस

जावे॥ त्रिया उदप्रवेस करावे॥ ९१ ॥
सो वो त्रस सुत्र गिलो करमान॥ नह क जान के देहसु
द नो नृ॥ संत सासत्र कहे ऐतो स॥ सुणि कर बुरा
न मानो मोस॥ ९२॥ राज के देखो सब कोइ ने ना
पडे पाक मे बिष की सेनो॥ नहीं तो सो ह्वेत फोज
न माही॥ प्रात क्र ठि त्रस्त्र तिकरो ही॥ ९३॥ उ
ह॥ बिष कर तरूर पे नहीं॥ द या ही ए गति धां
न॥ जे नर त्रिबिधि कर मले॥ जावे नरक संघान॥
९४॥ सोरठा॥ चांम चोरी को रूह ले देवे राजा म
रदे हो इ ज मारो नर॥ सुत सुत नी परणा वतां
९५॥ सील वत सिरमाै॥ इह
म॥ पूजे सबु
उ ह॥ दया सील पाले सदा॥
वे

आर सबकोइ गावै जगतमैं गाहीपराइनारि
सोगांवन बच्चोन चेषभरि ८६ नेतर सेतदी
दारकैं श्रवनमूननकूं जस मुरली मुषदीयो
न जनकैं नहीं तौ चंदवा बिलदाउरम ८७
हस्त जोडि सेवा करण चरणसंतदीदार
नहीं तौ तरकर पातजुर सरपाचलैदरार
८८ ॥ ... त्नुचाइडी परालबदतैलीनी
ता मैं काहा कमाइकीनी देषनमूतैधरती
कूपरि ॥ ज्यालै सकै मिलैनततपरि ८९ ॥ सो
टेसैन फोनता केलोइ लष चौरासी मिटैन
तेती सुनकै ... नउतारे ज्ञमरी निरहेस्या
... [illegible] ... रेमानसंजमजल
८ ... नहींठीवै सप्रस ...

तबिरजसो जावै॥ त्रिया उद प्रवेस करावै॥ ९१
सोवै अत्र सुजन गिनै करै मांन॥ नरक जान के हेहस
हनै न॥ संत मा सत्र कहे तो स॥ सुणि करि बुरा
न मानै मोस॥९२॥ राज के देखै सब कोइ नैनो
पडे षाक मे विषकी सेना॥ नही तो सो कैत फोज
न माही॥ प्रातक्रम उरि श्रस्तुति कराही॥ ९३॥ जे
हा॥ बिषै करत करषै नही॥ दया हीण गति ध्यां
ना॥ जे नर त्रिबिधि कर मलो॥ जावे नरक संथान
९४॥ सोरठा॥ चांम चौसी को कंकलै बेराजा मा
सुत सुत नी परणा वतौ

सील बत सिर कंठ॥

हा दया सील पालै

तेनर होवै पसू समान ॥ १०७ ॥ तातै पडै नरक के
मांही ॥ मुकति जुगति बकरू स्यूं नहीं पांही ब्रसु
कानि तिपर लातां ही ॥ आवन जावन मिटै नवं
ही ॥ १०८ ॥ ब्रसा की रैनी के मांही ॥ अधर सात ल
मांहि रहांही ॥ मेंस चौक लग रहे रसातलि ॥ सु
ष नहीं मिलै एक कू बिन पल ॥ १०९ ॥ बकूरि पर
जापति जा जो सोई ॥ तब ही आंनां जा न होई ॥ बि
न जन मे बिन मरि उब पावे ॥ माहा परलालमि
यूं नर मावे ॥ ११० ॥ बोहो स्यूं सिसट रचै कोई मो
सर ॥ तौ ही जनम मरन कूं कू मिटै तौ सिर हरि
सूं कोल कीयो सो न भूल्यो ॥ बारूबार उरध मुष
भूल्यो ॥ १११ ॥ पवन रस कतां हां सके न आई ॥ उ
रध मुष सो रह्यो लु काई ॥ काटै क्रिम जल नितां

मांही॥ ये दुष जे ना मिटै नहीं कोंही॥१२॥ जो जो
सुरक ही जन कसु॥ एकादस मैं तो डितन क
सू॥ ए ही सब संत न मुष न्हाषी॥ गीता अरु जाग
वत साषी॥१३॥ ता ते अब दुःषे तु सयां नो॥ स
त चिंता दूर है गया नो॥ संत जग नहि रदै धरि
ली जो॥ ए क राम रस ना रसपी जो॥१४॥ तनकी
गुजर करै निरदो षा॥ पाछे करै संत संगति जोष
संत दया करि उपा नसिषा वो॥ सार असार भेद
मम झावै॥१५॥ पाख कल सिर्फ को अघ अनमा
राम सुमरि॥ ना डो
॥ सो साध धरमी होइ हरि
कपडो पर सिर लत्याठ

दिरगुमावै ११७ रामस्ता सिर ऊपर राषे बिप
तिसंपति दीर्द सुपा के हरि बिन और कं नहै सा
ही ताते हरि की रजा रहाही ११८ हरि के संत
कहे सो करै सो अपणा कुल ले और सिंधतै क
सो उत्तर गया गिर नदी मे जाहा जावै जाहा ही उतम
पा से ११९ संत सो ही कहै राम सम भी तन ध
न सू ममता नही बंधी तिन संतन की कल्याण लो
पै ताकी मिन ष जनम तन बौपै १२० करता
क राम सबदन की पाल न पावन सब तिनि
तिनकौ ताकं लागि हि न जे नर आंना सो पावै
दो ति गत्र सथाना १२१ ताते चेत न राम रस पी
वै मरत न ताकौ सत सगदा जे मदन सो हीर
है ना वह वकी ना परहरि जरम करम चेना ना १२

सारपकडि के कासतजिरेवै॥ तनमनसुरतिप
मरस ञेवे॥ पेमली यां मुष रांम ञुचारें॥ पेम
ली यां गुरसेवा धारे॥१२३॥ पेमली यां श्रव
नि सुनकथा॥ पेमली यां रसिसंतनसथा॥ पे
मली यां कीजे सुञ करमां॥ बिनां पेम सुञ ध
रमञ्र धरमां॥१२४॥ तातें पेम सहति बिधि की
जे॥ सील दया संतोष गहीजे॥ छिमां सहणता
सञुरि धरीए॥ सुकृत ग्यांन ध्यांन ञ्रनकरीए॥
१२५॥ संत चरण सिर परि दीजे॥ चरणांमति
पणं सू नितिलीजे॥ सीतप्रसाद संत मुषके
रो॥ प्रीति सहति लीजे नितिवेरो॥१२६॥ सेवन
नितिसंतन को कीजे॥
नदीजे॥ ञ्रसन बसन धनसू

स्नेहरिब्रिनित्र्योरनकहजा १२७ ततस्नेतं
मरांमकहरसनां ध्यांननरतिराखेनितिन
सनां स्नैसैचेमनेमस्नेसेवं हजी गौरनदी
चितहवै १२८ ऐहतिरबिकं जगति
जो सत गुरदेई बताइ तातैंसजा ऐ तांमके
परहरत्रांनतुमाइ १२९ प्रजवानहैकब
घेसुत बितत्रांनतमाइ ताहागसोतनसु
मरि जूंसवजलनरलछाइ १३० तेतीऐ
संकधनाऐ तमै जहीकमलनहीं हैं
मुरलीवैनसुनैसुजान [illegible]
१३१ [illegible] सत [illegible]
ऐतौलस्रहैरम [illegible]
जोगा [illegible]

रूधांममहलकूवसाल्या॥तै तौबोहोतकर
मकेजाल्या॥याया महलसांपूकेघणा एक
ग्गेसर सुतसो जणा॥१३३॥बयावणावे
महलऊरोका॥ऊंचेऊंचेकादेगोखा॥बिरख
नकेपरवारघणरो॥मारेजगतलजेनहीं
करो॥१३४॥बिनिस्मायाकोइनिकटनजावे
फूल्याफल्यासबकोइसतावे॥पोहणलक
डीबाकेस्माइ॥बिनिबायाकोइनिकटनजा
वे॥१३५॥एहीत्रासमकलमन धारो॥अनके
कोलबोलसंभारो॥होइचुपचापनजोस्रा
बिनासी॥ज्यूंद्रूंटेनरकन ॥
इता॥मुरलीसुषतणनरनही.
जोहामार॥तातेकरिसत

सूहरि बिनि औरन हू जा १२७ तनसूं तं
मरोमकहरसनो ध्यानन्नरतिराषेनितिन
सनो ऐसे पेमनेमसूं सेवै हूजी और नही
चितदेवै १२८ ऐहतिरबेकी जुगति
जू मत गुरदेइ बताइ ताते जो ऐ रामके
परहरआंन उपाइ १२९ ग्रन्नवासमेकब
पेसूत बितआंन उपाइ ताहांरापोताकूसु
मरि जूंनवजलपारलेघाइ १३० जतीऐ
संकथलागोतमें कहीकपल मुनितोडि·
मुरलीवैकूलेबचन नरनहीजगतसूंजोरि
१३१ सूतबितदारासजनसगाई
ऐतोलषचौरासीआई षानपांनरससोग
जोगा ऐनरीयाचौरासीरोगा १३२ ष

रूधामहलकठमाल्या॥ ते तोबीहोतकर
मके जाल्या॥मायामहल सांपूकेघणा ऐक
आगेसर सुतसो जंण॥१३३॥ बयाबणवे
महलऊरोका॥ ऊंचे ऊंचे काढे गोषा॥ बिरष
नकेपरवारघणरो॥ मारे जगातलजेनही
करो॥१३४॥ बिनिआयाकोइनिकटिनजावे
फल्यो फल्यो सब कोइ संतावे॥ पोहणलक
डीबाकेआइ॥ बिनिब्यायाकोइनिकटिनजा
वे॥१३५॥ ऐहीत्रास सकलमन धारो॥ ग्रनका
कोलबोलसंभारो॥ होइचुप चापजनोआ
बिनासी॥ ज्यूछूटेनरकनकीत्रासी॥१३६॥
ऊहा॥ मुरलीसुषतणनरनही॥ जोहाजाइए
जोहामार॥ तातेकरिसतसंगआवार सनी

रामउचार ॥१३७॥ ऐसौ औसर ऐसौ समो बे
गि मिलै नही तोइ ॥ तातै चेत संम्हालिकै
सुरति राम रस जोइ ॥१३८॥ अबकै चूकै जा
ति नही चेत कहू समझाइ सुरती नजले
राम कू औसर बीतो जाइ ॥१३९॥ सोरठा
बो हौर मिलै नही मेल ॥ नर तन सु मरण सं
त जन तातै तजी ऐ जेल ॥ सुत बित दारा
कुटब की ॥१४०॥ ऐ जो ही तो ही नरै अपार
सुर आम्रित जल मही ॥ नर तन सु मरण सार
मिलै न ती जा संत जन ॥१४१॥ तातै चेत अ
चेत गाफल कू बांगा तिन ही देषो अपनै
नैत काल कही माथै बहै ॥१४२॥ माया सुत
बित बांम मात पिता भाई सगा रहै ठाम

रांमधन ॥ आतमपरैपिछांण ॥२॥
रांमरूप निज होइ रहे ॥ रांम चरण गुर
देव ॥ मुरली रांम जन चरण की ॥ कीजै
निति प्रतिसेव ॥३॥ सु कै पिलाया रांम
रस ॥ सत गुर तु कि वारी ॥ जलत बु
झाइ आत्मा ॥ गहै स्मरन रस की
झारी ॥४॥ इंमृत झारी हाथि ले ॥ आ
तम छरकी आंन ॥ मुरली सीतलक
रली या ॥ सतगुर क्रिपा निधांन ॥५॥

॥ उल्ला आदि वृष्टी ॥ कोट
॥ कुल्ल प्रथम ग्रंथ ॥ श्रद
पुरुषत गुरदेव को ग्रंथ ॥ द
प्रथम स्तुति गुररांम के जा
प्रकास ॥ कृत नवष ब्रत मान
नि कौ मुरली दास ॥ १ ॥ श्रंग
सत गुर पाइया ॥ हम ब्रह्म स्त
सोहं ऐक रांम रत होइ रहे सबद स
रूप होइ ॥ १ ॥ मुरली सत गुर पाइया
परमातम परमाण ॥ हम केवक सा

रांमधन ॥ आतमपरेपिछांण ॥२॥
रांमरूपनिजसोइरहे ॥ रांम चरणगुर
देव ॥ मुरली रांमजन चरण की ॥ कीजै
निति प्रतिसेव ॥३॥ मुझे पिलाया रांम
रस ॥ सतगुरतुकिवारी ॥ जन्तबु
झाइ आत्मा ॥ गहे इमरतरस की
झारी ॥४॥ इम्रत झारी हाथिले ॥ आ
तमछरकी आंन ॥ मुरली सीतलकर
लीया ॥ सतगुरक्रिपानिधांन ॥५॥

सतगुर क्रिपानिधान है॥ नायक दाया बक सीस॥ मुरली पूजा का सेवक रूं॥ ६ सत धरयो मुक्ति सीस॥ ६॥ जल तबु जाई झ्या त्मा॥ सत गुर आप नां जांनि॥ मुरली पुजा क्या करूं॥ पर मगरु की आंनि॥ ७॥ सत गुरकी पूजा करो॥ मुरली तनमन सीस॥ हा थ बांधि पावां परो॥ सब संसै इन्नी स॥ ८॥ सत गुर मा न्या बांण नर

मुरलीमोउरिएक॥लागतदी सबकु
डुपड्या॥ जरमरू करम अनेक॥ ए
सुराण को अंग॥ मुरली न जीए रामक
रसनाप्रीति उपाव॥सुमरण सी जो
षांनदी॥त्रिलोकी फिर आव॥१
नांव सर जर नांव है॥ औरन दी से को
ह॥ मुरली तनमन अरपके॥रहे राम
रत होइ॥२॥मुरली न जीए रामकं॥
आपनी रसनां लागि॥ज्यूं इम्रत सर वे
मुष मही॥बुझे मदन की आगि॥३

सुरती सुमरण सार है॥ तू तन देवे कर
जांनि ॥ अरधनां इगज उधस्यो॥ जिन
का-चूटी बि वांण॥ ६॥ सुरती सुमरण
सार है॥ सब धरम्म सिर ताज॥ नांव लि
ब्या या दे पा तस्या॥ जल सिर बंधी पाज
५॥ सुरती सुमरण सार है॥ सैस करे
बांषाण॥ ३ सैस हंसरस नांर टै॥ ऐक
रांम निरबांण॥ ६॥ सुरती सुमरण सा
रहै॥ सिव की जी वजडी॥ रांमरांमर
स नांरटैं॥ तजे न ऐ क घडी॥ ७॥ सुरती

सुरमरण सार दे ॥ सबकी जीवन प्रा
न ॥ सो ऊमा कै ब के सी ये ॥ सुप न्नी
ली पे पि छो पिया ॥ ६ ॥ सनकादिक इ
श्रासरे ॥ जन मुरली जीवे ॥ सुमरैरस
ना राम कं ॥ इमृत रस पीवे ॥ ७ ॥ मुर
ली सुमरण सार दे ॥ दूजो साध संगति
ती जो सार जू नाहि कलि ॥ श्राछे निज
चागवंत ॥ १० ॥ बिरह को श्रंग ॥ मुरली
चंद चकोर ज्यू ॥ तलफे दिवस राति
कब हरि दरस दिषाबसी ॥ यो तन चा
त्यो जात ॥ १ ॥ मुरली तलफै रैणि दिन ॥

जैसै चंद चकोर ॥ क॥ बहरि दरसदि
षावसी ॥ सो दिन आवै मोर ॥ ३ ॥ मुर
ली चंद चकोर ज्यू ॥ तन कै मेरा जीव
सा मन वै वै ना म बिचि ॥ कबमुषरु
रूपीव ॥ ४ ॥ बिरह जलावै रैण दिन
मुरली या तन मादि ॥ राम दिषाई दिन
ती ॥ जीव उडाय सी जांहि ॥ ५ ॥ मेरा मन
की बात डी ॥ कासु कदी एजाइ ॥ कैसा
दि बकी सुंदरी ॥ कै पीव पास कुदाइ ॥ ६ ॥
सादि बजी की सेज परि ॥ दम कै सा बि

धिजादि ॥ काम क्रोध मद लोभ स्यूँ ॥
मुरली न स्यो अघाइ ॥७॥ साहिबजी
की सफका ॥ मुरली सुष अपार ॥ सोह
म पेस बेन नैं क न र ॥ केसै होइ दीदार ॥
८॥ साहिबजी रीझै सदा ॥ सोहम पैं नहीं
होइ ॥ मुरली प्रभू कैसे मिलें ॥ कैसें परसे
सोइ ॥९॥ चित चकोर कमोद के ॥ दरदे
सिस की प्यास ॥ यूं मुरली बिरहनि के स
दा राम तुमारी आस ॥१०॥ चकवी दिन
कर कूं रटै ॥ चात्रग स्वाति हुलास ॥ यूं मु
रली बिरहनि के सदा ॥ राम तुमारी प्यास

बालककै मनमातकी रहै सदादरकार
श्री मुरली ब्रिदी दास हरि पलपल रामचि
तार ११ पंषी तरवर कीरषै मुरलीप्या
सदमेस यं ब्रिदी जन रांम की रहैस
दासरकेस १२ मुरली तलफैरैणदि
न ज्युं घनमोरां भुक रांम मिलणकी
लगरही यं ब्रिदनि अंदर षुष १३ मुर
ली तलफैरैणदिन जैसै बाढ्स नीर
कबतरदे षनेतरां यं ब्रिदानिकै नदी
धीर १४ मुरली तलफण जीवमे रामाम
लणकी कोड जैसै कुरलै कुरज न्याति आ

तरई का मोट॥१५॥ मुरली बिरहनि आति
दुषी॥ हरिदरसण के काज॥ जैसे सिधक
गजरे॥ कुबबन जावे भाजि॥१६॥ बिरह
जलावे रातिदिन॥ मुरली अंतरभेसि
जी अैसा हरिदरस वे॥ सोदी बणा कै
अैस॥१७॥ मरण आया
बिरहनी॥ जीण गया बिलाइ॥ मु
रली तरली लाइ कै॥ रह्यो राम ल्यो लाइ॥
१८॥ ... बिरह को ... ॥ बिरह न
किमसमी कर्यो॥ मुरली पापसरीर॥
... बिरह जब परगटी॥ सो धि जलाया

पाप ॥ सुरतीया या रांमजी ॥ ऐसा कीया
निसाप ॥ २ ॥ ग्यांन ब्रिदकरि गमलदी ॥
आगम ब्रह्म की गंम ॥ रगरग मे सुष ऊ
ज्या रोमरोम कहै रांम ॥ ३ ॥ ग्यान ब्रिहग्या
लेतान करि ॥ ज्याति मिलाए रांम
सुरती हजी कांम नां
जालि कीया न्ह कांम ॥ ४ ॥ नह कांमी नि
रमल भया ॥ ग्यांन ब्रिह रामदास ॥ सुर
ती सुष सेजा बस्या ॥ रोमरोम परकास
५ ॥ रोमरोम परकासीया ॥ मिटि गया कांम
कलेस ॥ सुरती हरि ब्रिह जगी सतगुर

काउपदेससूं॥ ग्यान ब्रिद परकास॥ मुर
लीतिमर अग्यानको॥ नयोपल कर्मेना
स॥७॥ नयाउ जाला ग्यानका दिष्या
नैनतादि॥ रोमरोमसीतलनइ॥ मिटी
ब्रिरउ रिदाद॥८॥ बल तानैनसीतल
कीया॥ न्हाइएकरदलूर॥ ग्यान क्षोल नि
उनपेमकी॥ मुरलीसाहिबनूर॥९॥ सा
हिबजीका नूर की॥ मुरलीपाईजा रि॥
रोमरद्या प्रगटी ब्रिद॥ करमजलाया ग्या
न॥१०॥ ग्यानध्यान नेला भया॥ ग्यान ब्रि
दकदे संत॥ मुलीलेलागी तबे॥ पायान

र

हे चले कंत ॥११॥ अथ पैतीसी अंग ॥ प्रथम है रसनां ले गो ॥ आठ जांम दिनराति ॥ कांम क्रोध मोह लोभ कूं ॥ मुरली दी बफात ॥१॥ लै लागा सब बीसरै ॥ नैक नर है संभाल ॥ मत बाला जन होइ कें ॥ पा वै रांम रसाल ॥२॥ लै लागा सब बीसरै ॥ तन मन सुरली रांम ॥ लहरि लगा रहै नांव की ॥ निसबासुर आठ जांम ॥३॥ लै लागा तब क्यां रही ॥ मुरली हरजी लाग ॥ रांम रांम कहै सुरति सूं ॥ सास रसन बिचि ॥४॥ जाग जपै जगदीस कूं ॥ मुरली लगनि

३पाइ॥३ वतबे गतटगटगी॥रहे राम ह्या
लाइ॥५॥लै लागा ग्यागी सबै॥हजी लग
नि अपार॥राम अके लारमर ह्या॥मुरली
मनामकारि॥६॥सुरति निरति मन पवन
को॥जे कब होइ ठ व्याव॥तो मुरलीरस
नारस करे॥ले का हाइ३गाव॥७॥३गाव
होइ अदर बिषे॥रह्या तल ब स राम॥
मुरली ले लागे तबै॥हजा करै न काम॥
८॥ले लागा बिस स्चौसबै॥मुरली तन
बिस्तार॥साहिब जी की सेरुपरि॥स्च
ल कीया संवार॥९॥ले लागा लागी सबै

मुरली तन की प्यास ॥ परदेसां सूं आ
इ करि ॥ प्रेम कीया प्रकास ॥ १० ॥ लेला
गा जागा सबे ॥ मुरली मन का षोट
जो गए कै बरसी आद वै ॥ पेम पिव ष की
पोट ॥ ११ ॥ मुरली लै कै लागए ॥ पेम च
ले भरपूर ॥ बिद धुक ती सी तल नइ
चे मक्या निरमल नूर ॥ १२ ॥ लै लागी
तब जाणिए ॥ छूटै नहीं लगार ॥ मुरली
पेम पषारीया ॥ इम्रत रस की धार ॥ १३
इम्रत की धारा चलै ॥ मुरली लिव कै ला
गि ॥ तब नां दनि मष आवै नहीं ॥ बिस

बासुररहै जागि ॥ १४ ॥ ऊगापाणी सम
दका ॥ जांहामीनरहै लैलीन ॥ जेजनर
सीयाराम का ॥ सोकै सेतजिदीन ॥ १५
मुरली लैलागी नबै ॥ पीवकीपडापि
छाणि ॥ परदेसाकीबारता ॥ कणसुणि
वैश्रांणि ॥ १६ ॥ मुरली लैकै लागवै ॥
ऋतरिनयानजास ॥ पीवपतिनी मेल
नेया ॥ सुरतिसबदकै पास ॥ १७ ॥ लै
लागांनागासबै ॥ उरिका श्रानजंजा
ल ॥ मुरली दरस्यारामजी ॥ पतनीली
यासमाल ॥ १८ ॥ लैलागांनागीसबै ॥
[illegible]मनविन्रचार ॥ मुरलीपावपि

डांगी या ‖ अपणा ही या मझार १९
पावद मारैरामजी ‖ पतिना सुरति
सेमारे ‖ लैला गाम्रागा सबै ‖ हजा
जरम अपार ‖ २० ‖ मुरली लै कै लाग
बै ‖ सुषम धुनि बाजै ‖ उपजै आनंद
उरिमही ‖ कुकमसबनाजै ‖ २१ ‖ मु
रली रा माकिपाकरै ‖ तबही लैलागै
रहै घुमारी प्रेमकी ‖ निसबासुरजागै
२२ ‖ लैलागा म्रागा सबै ‖ हजातनमन
नेम ‖ जोगपासा वणलु बजन्द ‖ रामध
णीकापेम ‖ २३ ‖ प्रेम प्रकास को ‖
मुरली पेमपरकास की ‖ बातबोल्हे

तमिगास॥रांमरांमकरतांभ्रये॥अति
मेंत्र्याइडजास॥१॥मुरलीदिलदरीया
मे॥भरीयाइमतहोद॥रांमरतनताबी
चिहै॥सोलेमरजीवासोधि॥२॥मुरली
दिलदरीयावमे॥निपजेपेमरतन॥वु
बकीसासउसासस्त॥कोइलेमरजीवा
जन॥३॥मुरलीदिलदरीयावमें॥इम्रत
कीधारा॥पीवतसीजीमछजन॥कोइगुर
मुषमतवारा॥४॥मुरलीदिलदरीयाउ
वमे॥भांतिभांतिकानंग॥सीलदयासंतो
षसत॥रामपीवकैसंग॥५॥मुरलीदिल
दरीयावमें॥भरीयोप्रेमअघाइ॥चव

की सासउसासकी ॥ लेमरजी वा आइ॥ ६
मरजी कासंसारमे ॥ पेमपीयारादास ॥
सुरत्नी पीवपिछांणीया ॥ सुमरणसा स
उसास ॥ ७ ॥ सुरत्नी पेमअंनाक्ल ॥ करण
करै अनंत ॥ ताका जल कोइ गुर मुषी
अद निसजि आपीवंत ॥ ८ ॥ सुरति ठवे
निज निरति पटि ॥ सुरती सास उसास ॥
रोम रोम रस नां रटै ॥ तो होइ अवस पर
कास ॥ ९ ॥ प्र का सी अंग ॥ पृथमगुर
मुषि सरवणं ॥ सुणि करि कीयो अध्या
स ॥ रसना सास उसास सं ॥ धंव लिव ल
गी निसबास ॥ १ ॥ रसना संकं वं होइ कै

द्रिदै गया सबद॥दावै दां दाँ गो जुगति की रि चल्या नाम के मधि ॥२॥नाम कवल मे सबद की॥उठै घोर अघम॥चलै फ वारा पेम का॥जांदां दांद अस्या परचै म त्र॥पिछम दिसा दोऽ तुरक टी॥सुरति ग ईऽक सास॥मुरली सुषमणि घाट नाद् फूलि करै केलास॥४॥पिछम दिसा दोऽ तुरकटी॥सुरति गई ऽक दोर॥त्रिबेणी त टि न्हाइ कारि॥परसी निरभै ठोर॥५॥आ वपहर चोसट घडी॥वरसे सुषमणि अ म॥जन मुरली वा सुषमे॥सुरति अ ऽगम गाप॥६॥मुरली पर चापी वसै सुरति पा

ई औन ॥ सब्द उ ष मिट्या सरीर का ॥ आ
तम उरिज्या चैन ॥ ७ ॥ सुरती परचा
राम सू ॥ बिरच्या जग सू जो ८ ॥ आतम
मिली परमातमा ॥ अब मारि न सके
को ८ ॥ ८ ॥ सुरती परचा राम सू ॥ बिरच
रच्या संसार ॥ सुरति सबद मेला भया
चौथे द सबै उवार ॥ ९ ॥ सुरती परचा
पीव सू ॥ ता के देद सद नाए ॥ सुरति स
बद मे ला भया ॥ मिरट जद बे वाताए ॥
१० ॥ पतिब्रता कौ अंग ॥ पतिबरता
पीव सू मिली ॥ धारि पतीबरत अंग ॥
सुर त्यागे सुष चव जर दूजा आन कुसंग

पतिबरताकै पीवपण॥ ऐकै चितइकह
तार॥ दूजा त्यागै सुपचज्यूं॥ पतिबरतगा
टबिचार॥२॥ राम करै पतिबरत सूं॥ ना
म उसास निसंक॥ तो मुरली लिष्या
ल लाटका॥ सहजै पलटै अंक॥३॥ प
तिबरता जाहा तांहाग वे॥ बेद पुराण
मांहि॥ संतसबै जै जै करै॥ उनी या निति
जस गांहि॥४॥ मैलो तन फाटा लता॥
ता के पतिबरत राम॥ वा कूं निति उठि
बंदजे॥ बिचारण कुण काम॥५
पतिबरता मीरां जन हीं॥ ऐक राम की दो

मुरलीताकोनावसुणि ॥ सांसेनेव
सबकोइ ॥ ६ ॥ धूप हासादर नामदे
दासकबीर बिचार ॥ अनंतकोट
जननावको ॥ पतिबरतगयोकरा
र ॥ ७ ॥ पतिबरती जनको बुझे ॥ जो
हाताहा जसनीसोण ॥ जन मुरली
बिन चारणी ॥ जोहा ताहापडे ॥ बि
सांण ॥ ८ ॥ मुरली नगति जरामकी
पतिबरतसहत परमाण ॥ बिनिप
तिबरतसबरी बरी ॥ पैदाह उखमि
टै न जोनि ॥ ९ ॥ एक जनम नजोमर

ए॥ मिटै न आंन उपाइ॥ सो मुरली स
द्र जे मिटै॥ जेरीक पती बरत सादि॥
१०॥ पति बरत राषै रांम को ॥ दूजो दे
छिटका इ॥ मुरली सतगुर रांम बि
नि॥ द्रिष्ट मुष सब काइ॥ ११॥ मे
तो चाकर रांम का॥ मेरे षाव द रांम
जे दूजा को नांव ल्यूं॥ तो ल्सस लरावो
चांम॥१२॥ चाकर कै बिसरांम दे॥
कै चाकर कै साष॥ जैसा जाके ना
व नो॥ ते सी ताकै पाक॥१३॥ मुरली
पति बरत रांम को॥ पाले संत सुजांण

जा कै कनक र कांमणी ॥ और न रूची नांहि ॥ १४ ॥ कुबोणी सब मिटै ॥ गऱ्यो ऐक बिस न्यारि ॥ सुरती थिर हो इ जिनि ॥ सब अंग मायान स ॥ १५ ॥ सुरली पतिबरत रांम को ॥ पकडै को इ मन सुध ॥ तो रांम मिलण होइ सहज में ॥ छूटै और कुबधि ॥ १६ ॥ जे जन सुमरै रांम कों ॥ जा कै बसि है रांम ॥ रांम न जन बिनि रांमजी ॥ दूत न दी बिसरांम ॥ १७ ॥ मेरा दांणा कांइ करि ॥ मेराली

जे नाम॥सुरली राम बिसारि के॥ मति
बकौ बेकाम॥१८॥सोरठा परमेसर बि
निआन॥के सेपजे हाति करि॥पति
बृतलीया पिछान॥सो ध का षाइन
री आनसर॥१९॥ अपनो पति सर
मोर॥नजाना ईबी रसम॥परदरि जा
मरफ़ोल॥फ़ दूर दैइक राम की॥२०
ने लोक दै सबकोइ॥पतिबरताके
जगत मैं॥बदैदो न्यू लोइ॥सुरली या
बालोक मैं॥२१॥पतिबरता पति हैक
न्जान्याग सुपेच न्यू॥यौ री बको ब

बेकासोपलोनमेले च्यांन ॥२२॥ चौपई
कुवारीनातैबोहोबरहेस्या पायाए
क और सबकेस्या ॥ जबमुषरोकक
धोजिनराम ॥ तबजपतपधरमकोहे
कूण काम ॥ २३॥ साषी ॥ रामबिना
साधनसब उलटाबेरीहोइ मुरली
भ्रषएापीवबिनि सकललजाऊ
जोइ २४ कन्यासबसाधनसब्या
मुरलीसिरभरतार ताकूपीहरसा
सरै आदर अनंत अपार २५ सा
सीलसंतोषसत ऐसाधुसिएागार

मुरली षाव दराम सर॥ तो दोऊ लो
कसु षसार॥१६॥ बिधवा बंबे का यो
अग॥ बिधवा कु सो वे न दी॥ तेल फुले
ल सिंगार॥ मुरली आपो गार के॥ सु
मरे सिरजण हार॥१॥ बिधवा कु सो
के नदी॥ स्वाद बाद रस बाट॥ मुर
ली सुमरे राम कु॥ आपो मेटि निरा
ट॥२॥ पीछे मेरा धरण पर॥ तो पर
ती करणा जोग॥ मुरली नै जीण राम
कु तजि आट सि ल्यो रोग॥३॥ बिध
वा कु सो के नदी॥ बिषी पागी तरगा

लि॥ तनमन आपौ गालि कै॥ बोले स
बदरसाल॥४॥ मुरली विधवा नार
वै॥ हासि बिलासा ष्याल॥ सुमेरे सिर
जाद्दारकै॥ अपनौ बिड़द संम्हाल
५॥ छपन कोट जादूपै॥ च्यारि घड़ी
कै मांहि॥ बिलबति संतां मसगौ
तां मसषाष मिलाइ॥६॥ बिलबति मा
सौ नारि पै॥ साध बिधवा अंग॥ मुर
ली जादू कौ चिरत॥ करै धरम कौ भंग
७॥ मेला होली की रतन॥ सिरयुति ति
क्या रसिंगार जन मुरली देषैनरां॥ म्ह

लिरबिधवानारि॥८॥किरकोट्या न्यूंना
करै॥मुरली बिधवा रंग॥कागमोटा
पहरके॥सुकच्यारा बे ग्रंग॥९॥बि
धवा देह न बिदका॥अरु सार मोर तो
मोल॥तनके कबनिरषे नहीं॥परहर
मन की बोल॥१०॥कसरी देत न ग्रा
पसौ॥बधण न देह लगार॥मुरली सुम
रेराम को॥सदा सील वतनारि॥११॥स्वा
द बाद षट रस तजे॥मेंदी निकटि न
जाइ॥केस बेस निरगुण सदा॥तब बि
धवा सोभ दिषाइ॥१२॥त्रैलोक मैं

आंण मन झूरदै बिधवा नारि जनमु
रली कलि कालसे तब नेलि रोद्द
बार १३ ॥ बाटा मीगखिरपरा बिध
वा लेइन स्वाद ॥ मुरली सुमरै रामकं
तब नेलि पावै दाद १४ ॥ बिषेसबदन
दी सांझलै ॥ नैननदेषे जाइ ॥ मुरली
बिधवा असतरी रहै रांमल्योलाइ
१५ ॥ निरगुण की संगति करै ॥ निरगुण
गहै उपास ॥ मुरली बिधवा नारिकी
कीतब सिरकी टलै त्रास १६ ॥ नि
रगुण असतर पहरकै ॥ निरगुण ना

ड़ेदह॥मुरली बिधवा असतरी॥क रैनसरगुणनेह॥१७॥स्वाद जि ऐसम सेरसे॥बिषीयाबिषसमांन॥मुरली बिधवानारि कै॥ऐ आचरण परमांण १८॥रामरसमनारटे॥स्वादरबाद निवार॥सीलसदाहिरदै रषै॥मुरली बिधवानारि॥१९॥बिधवासाधुजन नकी॥ऐकमजल परमांण॥तेदरह णीमेरहसदा॥सुमरैपद निरबांण २०॥साधु बिधवा असतरी॥चषेन धातसरीर॥मुरली सुमरै रांम कूं॥त बजलि उबरणबीर॥२१॥गालिगीतबि

ओगुण मन सूं दे बिधवा नारि जन मु
रली कलिकाल से॥ तब नेति सो हुउ
बार १३॥ षाटा मीठा चिरपरा बिध
वा लेह न स्वाद॥ मुरली सुमरै राम कूं
तब नेति पावै दाद॥१४॥ बिषै सबद न
हीं सांभलै॥ नैनन देषे जाय॥ मुरली
बिधवा असतरी॥ रहे राम ल्यौ लाइ
१५॥ निरगुण की संगति करे॥ निरगुण
गहै उपास॥ मुरली बिधवा नारि की
ती न बसिर की टलै आस॥१६॥ नि
रगुण बसतर पहरके॥ निरगुण ना

हैगारीबी हरिजन जे॥ मन्नी न लावे ऋंग
जन मुरली रातेरहे॥ हरि जन हरि के रंग
२९॥ बिधवा के सो के न दी॥ मुरली दे ए
असीस॥ आप न निरफल होइ के पुन
करे बकसीस॥२८॥ राम राम सुख उ
चरबो॥ बिधवा के सो कूत॥ औरा के
आसीस दे॥ तो लाजे आप णो मंत॥२९
रा तिजगा वे राम की॥ करे मास सत
संग॥ मुरली बिधवा आस तरी॥ लागे
और क संग॥३०॥ लो न्ही कामी लाल
ची॥ करे न वा को संग॥ मुरली बिध

वा अमतरी रती रहै हरि संग ३१ह
रिसमातीनि तिरहै रषेन बिषकी
लहरि मुरली बिषई पुरसकू गिणे
सरपसिघजदर ३२ बिधवानारी
पीवबिनि जेकबकरे सिंगार जे
न मुरली सा कै नही तांहीबा
सैगार ३३ तीज तमासो म सकरी
तजै गोत अरु गालि मास उमासी
रामकू रटै सील बतनारि ३४ मुरली
बिधवा अमतरी मजैरैणिदिनराम
मनसाबाचा ... दहै कामकी

धांम॥२६॥बिधवा बधनी है नदी।प
लो पुरख सजा इ॥जन सुरली सुकवी
रहे॥हरषिद रषि जस गाइ॥२७॥रंगा
चंगा नार है॥जि बेन दी चितरांम।जो
मल मलकानी देव॥रहे रैणि दिन रांम
२७॥८॥धरउ धरदे बेनदी॥चालेनां ची
जोइ॥सुरली बिधवा नारि को।तबन
ल उबरण होइ॥२८॥बिधवा तन मोडै
नही॥रहै मरजावी होइ॥ञजण मेज
ण सबत जे॥तो गजन सकै को इ॥८०
साधा निरगुण उपासना को अंग॥

वा अ सतरी ॥ रती रहै दरि रंगा ॥ ३१ ॥ द
रिरस मातीनि ॥ तिरहै ॥ रषे न विषकी
लहरि ॥ मुरली विषई पुरसकं ॥ जिणे
सरप सिंघ जनदर ॥ ३२ ॥ विधवा नारी
पी वकिनि ॥ जे करकरे सिंगार ॥ ज
न मुरली सा ते नहीं ॥ नाहा तांदोषा
सिंगार ॥ ३३ ॥ तीज तमासो मसकरी
तेजैगीत अरु गालि ॥ मास मउसासी
रामकं ॥ रहै सील व्रत नारि ॥ ३४ ॥ मुरली
विधवा अ सतरी ॥ जरैणि दिन राम
मन सावाचा [illegible] ॥ रहै रामकी

धामा॥२८॥ बिधवा बधु जो है नहीं॥ प
लो पुरष संजा॥२॥ जन मुरली सुकवी
रहै॥ हरषि हरषि जस गाइ॥७९॥ रंगा
चंगा ना रहै॥ लिखै नहीं चितराम॥ जो
मल मलका ना दवै॥ रहै रैण दिन राम
॥२५०॥ धरउ धरदे बैनहीं॥ चालै नो ची
जो॥२॥ मुरली बिधवा नारि को॥ तब अ
ल उबरण होइ॥८१॥ बिधवा तन मोडै
नहीं॥ रहै मरजावी होइ॥ अजण अंज
ण सब तजे॥ नो गजन सकै को॥२॥८०
साखी निरगुण उपासना को अंग॥

निरगुणकी दिठ लागै ॥ सरगुणकौ करित्याग ॥ मुरली ष्यासी नांवका सोही है बडभाग ॥ १ ॥ निरगुण इष्ट लीयां रहै तजि सरगुण कौ पास सोही ष्यासी नांवका ॥ सोही सांचादास ॥ २ ॥ निरगुण गहै उपासनै ॥ सरगुण नि कटि न जांहि ॥ मुरली ष्यासी नांवका ॥ निरगुण मांहि समांहि ॥ ३ ॥ ध्यान ध्यान निरगुण सबै ॥ निरगुण इष्ट उपास ॥ जन मुरली रहै ज्यो सदा उन संतन के पास ॥ ४ ॥ निरगुण साधु

निरमला॥निरगुण माडौदेत॥निरगुण
कोसुमरणकारे॥सरगुण नांव नलेह
५निरगुण गुण सरद तहे॥मेजे अब
मतराम॥मेतेमनी निवारके॥त्यागेन
नेमनकांम॥६॥सुरगुण निरगुणके च
जे॥तो सीझे सब काज॥मुरली चाकर
पेटको॥बकासे इलेराज॥७॥पण दोड
३मेदगार से॥मही नो को छे नांहि॥तो मु
रली बका निवाज है॥करिले आप स
मांहि॥८॥सरगुन कु छिपावै नहीं॥पात
रपिके सिंगार॥मुरली निरगुण सत जन

निरगुण करै संचार ॥ १९ ॥ सरगुण मे न सके तजे ॥ दिष्ट मुष्ट आकार ॥ निरगुण छिपियो वन को संग विचार ॥ १४ ॥ [illegible] ॥ ऐ दव ता वै परम सुर ॥ सुकृत तणो ज स्रैन ॥ भ भंजन दा जीरी ॥ [illegible] मन फैन ॥ १ ॥ मुरली ब्रह्म जाल मैं जतन जी वकारी हो ॥ राम राम क दौत लवस ॥ आतुर के अन देह ॥ र ॥ आतर पातर जगत मै ॥ मुरली नाव निमान ॥ आतुर त्यारे जगत से पातर पा जिहान ॥ २ ॥ मुरली सुविपष

ल ले बदतै पांणी बीर ॥ सु मरण सु कोत
कीजीए॥ ए मण माणक की सीर ॥ ७ ॥ रा
म निमत बरताइ ए॥ मुरली अनजल
चीर॥ थापामास्यो अति चलै नदीयां
बेरी नीर॥ ५॥ राम निमत रिध बांटता सं
की ए नासी बीर॥ मुरली बेरी कोटि तो॥
हांणी आवे सीर॥६॥ मुरली रिध जल क
जला॥ छाया बाया जाण॥ पड्यारह्या सं
बिगडे॥ निजस्वाद बिधि छाणि॥७॥ गुप
चुपरिध बांट्या करे॥ मानव का हुमे ल
भैकमनी आं णि मना तो होइ जाइ ब
लदा भेल॥८॥ मनी मना त्यावै नहीं॥

बारे होइ नहि कांम ॥ सुरली सुमरै रांम
कै तो आइ मलै घट रांम ॥ ए ॥ रांम
नि मत नदी यां फरए ॥ सुरली सति करि
जांणि ॥ आनंद देत सब कापरा ॥ रिध जल
की होइ हाए ॥ १० ॥ रांम निमति नदी यां
फरए ॥ सुरली सति करि जांणि ॥ उसर आ
न उपासनां ॥ रिधि जल की होइ हांणि ॥ ११ ॥
सुरली कण मण पाइरे ॥ सति सत जुग
करि जांण ॥ सीपां मोती नीपजे ॥ कौस्त्व
मत रूप तपरमांण ॥ १२ ॥ रांम निमता बि
नि बांट बो ॥ जिसो ऊट को बाव सुर

सीदी जै राम हित ॥ करि कारि हरोग माल ॥ १३
राम नि मत बिनि बाट है ॥ छायर का बेरी
रषि जल नैक न सांग लै ॥ सो हका दाकी
हेरी ॥ १४ ॥ राम नाम नर तब त ए ॥ मुरली
मास धरम ॥ राम बिना सुम श्रम सुलस
ब ॥ मन बिचि जानि श्रम ॥ १५ ॥ मुरली जो
कुछ की नी ए ॥ राम हित रख्य जानि ॥ राम
बिना को बाट बै ॥ मूल ब्याज की हाणि
१६ ॥ हरि जी सासा छोडि कै ॥ बिण जे त्रा
न बचोर ॥ जैसे उसर षेती या ॥ बीज गु
मावे ओर ॥ १७ ॥ मुरली जो कुछि की जीए
राम नि मति बिनि बीर ॥ परबत आनत

पासमे ॥ चटैटोन कर बीर १८ ॥ रामनि
मतसेकेसमद ॥ कै सैष्य कै बीर ॥ परब
त आंन उपास मै ॥ कोसैकक चमकेसी
र ॥ १९ ॥ रांमानि मतको ... टबो ॥ जैसे आ
बे मूल ॥ मुरली है वे आंन दिति ॥ सोसी
चे पातिबकूल ॥ २० ॥ रांम निमतकोबाट
बो ॥ तरपतितीन लोक ॥ आंन पांनकेसी
च तो ॥ रेकनपावे पोष ॥ २१ ॥ तरपो ब्यां
सबत्रिपतिसो ६ पान फूल सूनो ॥ हि ॥ पा
तफूलसू तरनहीं ॥ पात फूल तर मांहि
२२ ॥ फूलग स्यांफल जात है ॥ सबदेषोनि
रता ऽ ॥ मुरली फल आवै तवे ॥ आंन फूल

३मजाइ॥२३॥ ग्यान धरम सब पुसपन
ता॥ फल निज नांव पिछाणि॥ ग्यान पुस
पटुटा बिना॥ हरिफल मिलै न जाणि॥२४
नांव बीज फल संत जन॥ ग्यान देव स
ब पात॥ फल संग पावै बीज सहि॥ फूल
गया फल जात॥२१॥ संत बांटै सरधा
लीयां॥ ज्यूं बादी बिरंजीव॥ मुरली वे निज
ग्रिहसती॥ तास परसण पाव॥२२॥
मोसर बीता जात है॥ चेति अभागी जी
व॥ सतसंग सुकृत जे जन को॥ मुरली
लाफा ली ब॥२४॥ पडयार है गामाल सब
देह जाइगी छूट॥ तातै लूट्या जाइ तो॥

मुरली का काल कूट ॥ २४ ॥ तन करि ता का
भजन का ॥ धन करि डर बल पोष ॥ बुधि
करि संगति साध ॥ मुरली करी ऐ जोष ॥ २५
सुमरण पर उपगार की ॥ चौरासी मे से
ण ॥ ता ते नर तन पाइ के ॥ लीजै ए ट पि छ
ण ॥ २६ राम भजन सतगुर मिलण ॥ ता
जौ पर उपगार ॥ ए चौरासी मे नास थै ॥ यो
नर तन त णौ बिचार ॥ २७ ॥ जित ने सास
सरीर मे ॥ जित मै काज बिचार मुरली
भजी ऐ राम कूं ॥ कर सू पर उपगा ॥ २८
सत बांटै सर धा ली या ॥ बित अपणै उनमान
मुरली कु सत जांण लै ॥ वै गुह सती परमांण ॥ २

ग्रुप गाबा का पद लिष्यंते॥ प्रथम राग भैरव॥ जागि सयां नींबार बिलावै॥ सा सगया पाछा नहीं आवै॥ टेक॥ नदीयां नीरगयां रसोरे लो॥ आवै ना रि दरब कित पेलो॥१॥ तूं रास धे सो दषि धरेलो॥ जागि जागि तजि नींद नरेलो॥२॥ पजी पाइ सोइ मति गहलो॥ सतगुर सबदां मरमेलो॥३॥ सतगुर मेरटेर देरेलो॥ राम सुमर न्यारा सोइ बेलो॥ ४॥ तजि तन धन मन पंच बषेलो॥ तब तें सोइ सतगुरको चेलो॥५॥ मुरली राम सबद कहै छेलो॥ ए मोसर ए माव डहेलो॥६॥ पद

काहेरे नरसो इगुमावै ॥ यो नरतन रतन
बौहोरि नहीं पावै ॥ पद ॥ ऐसो सर ऐबा
रन आवै ॥ रामकह्यां रांमै पद पावै ॥ १॥
तातें जागि राम किन गावै ॥ मातपीयो ध
रि जब नहीं पावै ॥ २॥ मातपिताको रंग अ
गलावै ॥ जिगे नांम तबै ही पावै ॥ ३॥ मुर
ली रांम रांम किन गावै ॥ बिनि सुमरणपा
छै पिछतावै ॥ ४॥ पद ॥ ९॥ अथ राग
बिलावल ॥ नरतन पाया जब चला रस
नां रसपी जे ॥ रांम रांम कहली जीते ॥ दू
जा तजि दीजे ॥ टेक ॥ सतगुर की कर बंदगी
सत मन साबाचा ॥ रांम मिंत्र जब ही कु

रै।परदरिसबका चा॥१॥रामनामनि
रबांणहै॥लै बाणि बुलावो॥अनंत
जुगकारूठडा॥जाकै बोलमनावो॥प
रामनाम मुष भाषाणे॥तजिदी जै आं
टा॥अंतरपम जगाईयाहरि आवेन्हा
गा॥३॥साच सील सतोष सत॥हिरदा
मैंजाजे॥सुरली उनकै रामरस॥आंति
मीगलागो॥४॥पद॥१॥तालबबदा
नांव॥निरमलजसगावे॥आगमपी
याला भरपी वे॥विषीयाबिसरावै टेक
रामनजैगहै सुरतिकै पवनाथरि
षे।मायापासी काटिकै।रसनारसचा

षे ॥१॥ समदिष्टी सब जीव सम जो हो तो
बल्लि मारे ॥ सील सदा उरि धारि के ॥ आ
पा गर्ंजारे ॥२॥ पांचूं करि भेषक डिके
त्रिगुण बंधि राषे ॥ मन बुधि चिंत अहं
कार के ॥ अंतर सूं नां षे ॥३॥ यो मौसर मि
लसी न सी ॥ कलिजुग नर देही ॥ सुरली
ना त्दा होइ के ॥ तजि रांम सनेही ॥४॥
पद ॥ अथ राग गोडि ॥ संत सोदागर
आया रे ॥ वै रांम जि न सि धन लाया रे
टेक ज्यो मांगे ता दि तो लै रे ॥ सुष सबद
अमोलक बोलै रे ॥१॥ साच सील सी जि
न सारे ॥ वे तो ल तन ल्या वे सन सारे ॥२॥

धन देवैरे ॥वैसाईदामन
मुरली सतसत जावैरे ॥३
रावैरे॥४॥ पद॥१॥
मे की जैदो॥जांदारस
जैहो॥टेका तनमन द
काहा एक रामकर
जावैहो॥
मिलावैसो॥२॥
काराहो॥जांराभजन
रामऐर
बूतजावैहो॥४॥



वा अगम देस जाके गावै सं करसा
धसेस या पंथ मैं नाही राडि धा
डि नाही सुरति सबद की बाधि बा इ
अगम बूझ गम ता ह सहज जाही
सतगुर हरषै परष है ज ॥ १ ॥ सतगुर स
बद बिचार गैर ॥ या राम नाम सम ना
ही और ॥ सुष प्रीबतको अस्थ देत
जौं हीं नांव मा सातम कह्यौ चेत ॥ २
नांव मा दातम अति अगाधि ॥ न
या जानत सुष आगो तसाध ॥ धर
म नेम तप जोग जिग ॥ जाही ग्यांन आ
दि नहीं तुलै तिग इ ॥ सुरति सुमरथ

ञागौतकहत ॥ त्र्यारामसुमरम
नहो१२सुचेत ॥ एदसिषावनदेततो
दिा७सतगुरसबदासुरतिगो१२॥
७ रामनामसेसबकोध्यान ॥ जोहा
ग्यान भगति बेराग जानि ॥ सो सुरती
कमिल्योहै आइ ॥ एसतगुराकृपा
सहजञाइ ॥ ५ ॥ छमालि ॥ १ ॥ मा धो
साधसगतिमोहि दीज्योनिति ॥ ते
रे चरण कवलताजे जाऊन आंत
रैक ॥ साधसगतिमरहमा अपार ॥ त्र्
या सुर नर मुनी नही पावे पार ॥ अन
त मुकति जाके तुले न लार ॥ जा

ट चेतन कौ पावै सार ॥१॥ साधसंग
ति बैठै सनक ॥ त्रपा नौ जोगेसर स्व
र जनक ॥ नारद सुष अंमरीक त्याइ
त्यार सब क पतल देखै तीमाइ ॥२॥
सिव बिसन ब्रह्मा दिसे [illegible] ॥ त्या वै क
ला सार द ऊ मो पेष ॥ और अनंत क
छु कस्थान जाइ ॥ त्या साधसंगति
बैकुंटी जाइ ॥३॥ नौ नाथ चौरासी सि
ध त्या साधसंगति जाही माही प्रस
ध ॥ त्र र धार गोपी ब्रंद जोग त्या साध
संगति करित त्या जोग ॥५॥ साधसंगति
सुष अगम अपार ॥ त्या त्रजन कीयां सु

षम्रलकै न्नरा इम्रत पीवे छाकि छक
ल्पो तन के चन करिमास्या षंब ॥५॥
जोहां च्यारि पदारथ ऋष्ट सिधा त्रि
भवन सुष जाणों ऋति ने बेद ऐ करा
मको जाके रंग ॥ जन सुरली मांगे उन
कौ संग ॥६॥ धमाल ॥१॥ ऋथ राग का
फी ॥ मोहि सतगुर ऋगम लषाइया
हो ॥ हां हो जैसे रजनी मे ऋरक उजा
स ॥ टेक ॥ नांव दिढायो राम को हो ॥ सुम
रण सास उसास ॥ रसना रस इम्रत फ
रे हो ॥ पावत लगे न मिरास ॥१॥ सतगुर
मेरा बम उपगारी ॥ कीयो हो पर उव

गार॥नांव बता यौ राम कौसे॥ जा स
छूटा से जरम बिकार॥ ७॥ गयां न ज्ञ
ज्ञाति बैराग का हो भलो जी बताय
षोज॥ जाणे सो माणे सत्य सो॥ वे चो
थ्या पद की जा हा मोज॥ ८॥ नांव न फो
जाणे सो मांणे॥ पकड़ि पती ब्रत राम
सुरली तरली लो ६ नांव सू पायो दे
मो षि सु कांम॥ ६॥ माहि॥ १॥ सब
संतस हे ला राम का सो॥ दास सा धो
पती ब्रत सू सुष सो ६॥ टेक॥ पति ब्रत प
कड्यो नांव को हो जे जे भाजी निस्वल

रांमप्री वृषप्याला पीवेहो १मतस
बदरसाल ॥१॥ कांम क्रोध जा होरह
न न पावै॥ लालच लोभ न कोइ कै
साई कै साध वा॥ जो हो बस बिलासी
होइ॥ रासी ल दस सरपाव बाप्यो है
ऋषण सब संतोष॥ प्रेमप्रीति पाव
स मिलि षेलै॥ चौथा हो पद की मो
ष॥२॥ ररंकार पद परसीया हो सतगुर
मेल मिलाइ॥ मैं तै पड दा दूर भि माया
हिरदै हो दरस दिषाइ॥४॥ मैं मद जा
गी कछु नहीं समझ॥ जा रांम को
नांम सुरली क सरणंगति ली जै॥ बि

उदंतु म्हारो रांम ॥ ४ ॥ ७ ॥ अथ राग स्यांम कल्यांण ॥ मेरे मनां रे र
हत निरंतर ॥ कब हरि देषूं नैनां सो
ं दीनांनाथ करौ क्रिपा करि ॥ बोलै
हसि हसि बैनां हो ॥ टेक ॥ सतगुर सेन
ल [redacted] ई हम कूं ॥ रांम रसन सूं कहनां
हो ॥ सास उसास निरत नासा परि ॥
सुरति सबद के चैंनां हो ॥ १ ॥ इस
बिधि रांम रटत सुष पाया ॥ सुधा झरे
मुष बैंनां हो ॥ २ ॥ सब ग्यांन सुरति
रस पीवै ॥ प्याला भरि भरि लैनां हो ॥
हिरदै मैं हरि कीं परमातम ॥ सुरति थि

साहो९पैनाहो॥ईधरउधरहो९ गई ना
त्रकू॥रोमरोम धुनिगैनाहो॥नू॥बंकना
लहो९चढ्यातुरकटी॥सुनिमंक लसु
ष श्रैनाहो॥वासुषकी गति मतगुरुश्रो
तो॥हाक बाकनहीकहनाहो॥४॥सुर
तीराम सरणसतगुरुकी॥गावेसुनकी
सैनाहो॥रामसुमरजनरामसमाया
जनममरन डुषदहनाहो॥५॥९सालि
९॥साहिबमेरा आपरमईया॥मैचरण
की चेरीहो॥सुरतिनिरतिनिरषनिज
मूरति सुंदरीहेरीहो॥ तनमन धनन
वछावर करिके॥वारितारू केरी हो॥

१ रमैं गुलाल लाल मिलि प्यारी पे
म फुवारा नेरी हो । केसरबे सर न
जन न लके बदन सदन भरपेरी
हो २ उति मगु णगाद पेणै सजि मृद
र मो हि पति जत लैहरी हो । भ्रौरन चि
तवै दिष्ट मुष्ट जन सोहरदी हरिकेरी
हो ३ पील्हि बि निजरी कामना मूजी
सूकी सतगुर सेरी हो । राम नाम धुनि
जिन सूपाया अबिनासी पति मेरी हो
४ न जन कारत सब नरमन सानो
रामरस न सूटेरा हो । सुरति सुहाग पि
नई सबद मिलि मैरि मदन जग फेरी

दो॥५॥सुरत्ती रांमरांमपी वपायो॥सुनि
सिषर चढि दरा दादो॥सुरति न्नई मुसत्त
कपीया मिलि॥तोडि नरम की बेरी सो
द॥ अथ राग बसंत॥ मन श्रब रामई
रांमरटीजे मनसा बाचा श्रोरकरमना
श्र नेदान नितिदीजे टेक सो इक कंतन
जो त्र्प्रबनासी॥साधसंगति करिलीजे
ताप मिनष जनम काएं दी॥रांमरसा
ण पीजे॥१॥पांचपचीसंजीत्या चा के
तो सुमरण करिलीजे जैसी बातरांम
कूं भावे तैसा कारजि कीजे॥२॥ दादू
वपचाव काल मेरदी ए॥जबजाइका

रजसी जै ॥ मुरली राँम राँम नाजि नाई
जूं जनम मरण डप ज्ञी जै ॥ ३ ॥ पदा ॥ १ ॥
बैठे जैत राँम समंधी ॥ तो तू करि दे ऐको
चंदी ॥ टेक ॥ ॥ ऐक पहरि फजर सो फिर कप
डरा ॥ नू करि चंदी उतारो ॥ काम करत ही
करो ऐक माहि ॥ रसना राँम उचारो ॥ १ ॥ प
रउपगार ब्याज मैं दे वो ॥ ७, उत्पा गसत
बोलो ॥ ते ले दे ऐर सो ऐकरास ॥ पूरा सबके
तोलो ॥ २ ॥ घत आगे चौरासी केरो राम दु
याल नि वाजे ॥ मुरली राँम राँम नजि जा
इं ज्यूं पार होइ सिंध ज्यारा जै ॥ ३ ॥ पदा ॥
राग ॥ पूरवी ॥ गउडी ॥ सतगुर उपगारी उपगारी

बूरु तदेषजी व म्रो म्रीतर फूलसिर म्र
जाप सारी टेक॥ म्रतू करउपगारउपा वे
देषि जगत दुषहारी॥ ग्यान भगति बैरा
ग अगमगम॥ ताघटि कै सं चारी॥१॥
अगम निगम का भेद बताया॥ काटी क
रम किवारी॥ भरम भान भो सिध लघा
या॥ मेल्यासो हरि मुरारी॥२॥ अधसदर
अगम घर दृष्या॥ पगे दोर करारी॥ गुगे
ग्यानबि ग्यानउचार्या॥ सतगुर मद हरि
बिचारी॥३॥ च चले चपल चलरा अर
बकले॥ ताका मूल उषारी॥ गुरुगा कीपा
जगतसं पगा॥ दे रम तर सफारी॥४॥ तीन

लोकसुषतुक्त दिषाया ॥ चौथे ब धाया
री ऐ उपगार तु मारा सतगुर ॥ मैं तो जा
व बिकारी ॥ ४ ॥ मुस कल सुं ले सुगम
दिषाया ॥ बकसिर का भरम का ॥ मुरली
राम राम गुरपासा ॥ राम चरण अवता
री ॥ ५ ॥ पद ॥ १ ॥ सतगुर अवतारी अ
वतारी ॥ निज रानि हार निहाल करै जी
व रोग पाने मे घर सारी ॥ टेक ॥ सुरत सब
द का मेल मिला वै पंच रगरग बिसारी
त्रिगुण पासा का टिअ फूटा ॥ अैसा अ
त बिचारी ॥ १ ॥ चौपड जीति अगम
घर पाया ॥ सतरज जाइ संभारी ॥ बाजी

जीति प्रीति बल सुमरण॥ दस वै जाइम
कारी॥२॥ पांच पचीस च्यारि षट त्रिगु
ण॥ जीते ष्याल मझारी॥ राम सुमर जन
राम समाया॥ बहुरि न रोपै सारी॥३॥
रस नांद रिदै नाभ कवल सोई॥ गरजै
गिगनि मझारी॥ बंक नाल त्रिकुटी के का
जे॥ बैठे स्याम मुरारी॥४॥ चौथा पद ती
न गुण आगे॥ काया कूण बिचारी॥
माया थाक रही आ नीसे॥ पहु च्या ए क
रकारी॥५॥ ऐसा ष्याल षिलावै सतगुर
जे को इहो इ षिलारी॥ मुरली राम राम प

तिपरसे ॥ तुज्यां जगतकी यारी ॥
॥ ऐकदिन उठिजांणं उठिजांणं ॥ पाप
पुंनि दोनूं संगले के ॥ बसणं जाइ मसां
णं ॥ माता पिता मेहरी सुत जाया
गजरजतुरी बांदांणं ॥ धरे रहै जांसा के
जां सायूंरी ॥ जब जाइ इसउकांणं ॥ १ ॥
राजा रंक पातिसा जाइगा जाइगा राव
रांणं ॥ आछा बूरी जाइ अकेला
जब जम करे पयांणं ॥ २ ॥ देवत जाइग
लेवत जाइगा ॥ जाइगा राकूसदांणं ॥
आंण जांणोघट आइद बावे थांणनंद

वेषांणं॥२॥पांचतततौ नै गुण जांहां
लग॥करसी कालबिलांणं॥ नाष्ट बष्ट
कांजी मट सुलो॥स बके उसपथ जो
णं॥ ७॥सूर बीरसावत सिध साधिक॥
सबजम बूकबूकांणं॥३ बूस्या राम
रंगी लासरिजन॥गुरमुष चोट चुकां
णं॥५॥पहली चेत बेतरष वा ल्या॥
ज्यों गामा मर आंणया॥गाफिलरला
जे के पिछताया॥जमके हाथ बिकांणं
६॥मुरली रांमरांम भजि जाई॥ओस
र बोहोरन आंणं॥ ६ ओसरहो भावब
णया है॥ करिलै आग

॥ अभागी रामनगा
यौरे झूठे जो कट जगत को पडि जनम
गुमायौरे जो ए धूकि बिषबाढ़ियो
सिर करम चढायौरे १ सुकृत सौदा
नां कीया ऊर मति बिष बायौरे साष
लुण सो रीत्रयो जम हारि पगयौरे २
सुतबित बंधू त्र्य सत री कोई साथि न
आयौरे रीता सायां ऐक लो मरिमर
ऊषपायौरे ३ सतगुर साधूरामजी
ता सूं प्रीति न लायौरे मगासंगतीक्षा
जिके जमहाथि बिकायौरे ४ रामके
हांसूं रामजी ते हाथ संम्हायौरे जन

मुरली सुमरण बिना॥ जो मै छिट कोय।
॥५॥ पद॥१॥ मुसाफर जाग जे जो योरे
नरतन बाजी हारि के जुगजुग मे रोयो रे॥
टेक। मुसाफरी दिन च्यारि की॥ होई भ्रम
रग भोयो॥ करमकी या संसार का॥ सिर
सा मोटो योरे॥१॥ सुपनेरा तो जगत के॥
विषीया रस मो ह्यो॥ रागदोषमें ते मदी
पडि जनम बिजो यो रे॥२॥ कुगसुबसा
चा की या॥ ता में मन गोयो रे॥ आतमसु
ष प्रमातमा॥ तादिसन सी जो यो रे॥३॥ काम
क्रोध का कीच मे॥ बुधि बसतर धोयो रे॥
ग्यान नीर में न्हाइ कै॥ नदी पंकन

रे ॥ ८ ॥ अबतो चेत अभागीया मोपो
सोषो योरे ॥ मुरली तरली नावकी ले
सुष संजोयोरे ॥ ५ ॥

रे परदेसी पावणा ॥ पासा क्यू
रखो लुभाइ ॥ बिषरी सुरति समेटिके
रे रामनाम सूं लगाइ ॥ टेक ॥ तनमन
इंद्री सबकू त्यारे इन हित सू जनमोइ ॥
समतासीलु से म्हाइकैरे ॥ सुरतिसबद
मै गोइ ॥ १ ॥ बेर बेर पावै नहीरे ॥ मिनष
जनमसी सूज ॥ तातै चेतसम्हालिकैरे
पद सतगुरका पूज ॥ २ ॥ बोहोरि न औसी
पावसी रे ॥ नरनाइक सीरे मोज ताकर

नजि जग वानके गह संतनका षोज
३॥ बागबाव डूाजिमरमेरे ओगडे
तीनि वार साधसंगति करि प्रीति स
रसनाराम उचारा॥४॥ मात पिता सुत
ओव नारी जासा नाता मिलसी आंणि
राम संतगुरदेव जी रे॥ एनदी मिले नि
धानाप॥ तातें मन अब समझि केरे॥
करि सुकृत नजि राम॥ जनमुरली सु
मरण बिना॥ जात जिवे कांम॥६॥ पद
१॥ सब जग चाल्यो जात है रे देषर
करो विचार जाकरि भजी ऐ

परहरि भरम बिकार देख्या बोहोत इ
लम नरतन मिल्यौरे ॥ आगा मिल्यो
सत संग ॥ जाकूं ब्रिध्यान षोईरे ॥ लोग
कु संगा संगा ॥ १ ॥ ब्रह्मा सेस मटे सरे
नर सै बारू बार ॥ नरतन दीयो राम
जी दे ॥ जासूं होइ उधार ॥ २ ॥ ऐसो
धन ते पाईयौरे ॥ मा हा मुकति को द्वा
र ॥ जाकूं चोर लगाई ऐरे ॥ आजि त्रिभ
वन पति सार ॥ ३ ॥ राम कहै समता
गहौरे ॥ सत गुर चरण लागि ॥ जन मु
रली तबही मिटै रे जनम मरण को दा

गा॥६॥पद॥२॥ राग केदारो॥ मोस्म
क कोरे संसार॥राम जन की सम
के॥ते बो इ बिषी पालार है मि॥ चौरासी
लष जुगत तारे॥ दारन दुष सम्रसार॥
बिनषिन मे जन न मैमरे॥ मरिष सो
की धार॥१॥च्यारि जुग काल षतया
ली॥ ऊपरि बासर जार॥ मानां जांना
गत दांना॥सहना जम की मार॥२॥
पराधीन परबास पड्यो रे॥ नारी सुषत
मार॥ मिनष जनम स्वाधीन सोररे
जयो न सिरजण हार॥३॥ सत गुरसर
णां बो सो रिन मरण॥

सार ॥ रांम मुरली कांम पूरण ॥ सास उसा
सस म्हालि ॥ ७ ॥ पद ॥ ५ ॥ नरलूजी तो
रे सै सार ॥ कांम तजि अजि रांम रस नां
चयो औ जल पार ॥ टेक ॥ सील धास्यौ कां
म मास्यौ ॥ संपति बिपति बिसार ॥ ममत
माया त्याग काया ॥ पायो सो करार
१ ॥ अंगांन त्यागो ध्यांन लागो ॥ दुबध्या
टरि निवार ॥ तिसनां तरक बिकार छुटा
बुगा पेम अपार ॥ २ ॥ आस कांटी कुबध
म्हाटी ॥ लाल च लौ न ॥ अधार सुपन
सांसो न्हा जिया सो ॥ जागि जप्यो करतार
३ ॥ मांन मूवा मोटो जुवा ॥ क्रोध बूका वार

सबद पासासाच आया॥ एकएकारस
कार॥४॥ पांच मरीया तीन षरीया॥ ज्या
रि टरी यासार॥ पंचीसो कासी सकाया
लाया अबकी बार॥५॥ नांव ने जा पेम
सेजा॥ शे पिरजमां धार॥ मुरली मरदा
रिगरदां॥ आपो अपनो त्यार॥ ६॥ पद॥
२॥ अथ ग्रंथ अबगसार को सबद
लिष्यते॥ प्रथम गुर मिलाप कालीएसे
लेपु॥ प्रथम गुर मिलाप मैं गो ऊं
जा ते भेद बुसत को पाऊं॥ गुर प्रसाद
ते अगम प्रकासे॥ गुर प्रसाद ते भ्रम बि
नासे॥ गुर प्रसाद ते परमपद पावे॥ गुर

प्रसाद तै बे धन सावै ॥ गुर प्रसाद तै अम
र गति होई ॥ गुर प्रसाद तै गजै न कोई ॥ २
ता की साषि कहै सब लोई ॥ बेद पुरान
अरु सुम्रिति जोई ॥ पर सो गुर आति दुल
भ आई ॥ जा की दुलभ ता कह समझाई
२ ॥ साषि साषी ॥ संतदास जी कही ॥ ३
लष इस सार मैं सत गुर का दीदार ॥ लै पहुं
चावै मुकति कूं ॥ इन का ऐ उपगार ॥ ४
॥ साषी नामदेव जी की ॥ साषी
नामदेव पढै लोक ॥ नामदेव सुप
जन ॥ नाम तीर्थ लिष्य कष्ट मुकति
नासता गुरू बिना ५ ॥ साषी कबीर

गरूजीदयालजासूपाईहीजमोषपद सद सदा रामनाम भजन कराइदें ॥ग रू बिनासासतरपढीहीजनानावत नानावततीरथसनानबिधिलाइदें ओरऊ अनेकदेवपुजतजोभली भातिसाति नारी गरू बिना मुकति नपाइदें ॥ तातेगुरदेव के चरणार बिंद धारिचितरत करेरामजीसभगति नपाइदें ॥६॥ सबदसावयी ॥ स्लोक ॥ उलचात्रिषुलोकेषु ततप्टएषवद्य म्पदगरूब्रह्मविनानाम्यूत ॥सत्यस मकदाम्पद ॥१॥ टीका ॥ वह मत्यां ॥

उत्तम तीन्‌ लोक मैं सतगुरु का दी
दार ॥ पर सत ना से आनंत उष सुषप
वै निरधार ॥ सुषपा वै निरधार पार स्‌
व सागर होई ॥ गुर बिनि ग्यान उपाइ
म जल पत्र ज्यौं न रही कोई ॥ ई सुर करै सु
णाई सरी सत मान्‌ सो बार ॥ उत्तम ती
न्‌ लोक मैं सतगुरु का दीदार ॥ ० ॥ साषी
सतगुरु का दीदार मैं सत ॥ सफल ऐह
राम मिलण की जुगति कू ते सब बताय ॥
देष ० ॥ मिलै न इस औ ॥ तंदास सत
गुर जदा सेण फूग भ्रम कूं मार कर
पकडावत सत बैण ॥ ० ॥ रामचरण बी

ज कबिना॥ जौधरमें धन होइ॥ यूं पूरा गुर देवबिनि॥ ततनहीं पावै कोइ॥१०॥ रामचर ण पूरा मिल्या॥ दीन्हा ततबताइ॥ जनमम रण का भै मिट्या॥ सांसार ग्यान काइ॥११॥ कबीर ग्यांन प्रकासी गुर मिल्या॥ सो जन बीसरजाइ॥ जब गोबिंद क्रिपा करी॥ तब गुर मिलीया आइ॥१२॥ कबीर सतगुर का उपदेस का॥ सुणि तूं ऐक बिचार॥ जो सत गुर मिलता नहीं॥ तो जाता जम के द्वार॥१३ कबीर जम द्वारा में दूत सब॥ करते खैंच्या तानि॥ उनतैं कबहूं न छूटता॥ फिरता च्या

रूषां नि ॥ १४ ॥ कबीर च्यारि षांनि मैं नर
मता कहि ले नवेर पार ॥ सौ तौ फेरा मि
ट गया ॥ सतगुर कै उपगार ॥ १५ ॥ कबीर
गुर पारस कै बिचा अंतरा जानि ॥ वे लो
हा कंचन करै वे करि ले आप समान ॥
१६ ॥ सोरठा ॥ गुर बिनि नांही ग्यांन ना
वै मीला हरि मिलौ ॥ ए भाषै बेद पुरांन
सु म्रत अर संकर कहै ॥ १७ ॥ दूहा ॥ गु
र मिलाप महमा कही ॥ फुनि सिष प्रसन
उ चार ॥ गुर लषण अर नगति अंग ॥
आगे नवल बिचार ॥ १८ ॥ अध्याय ॥ ४९ ॥

...दासी है ॥ गुरबचन ॥ चौपई ॥
हे सिष तू तौ बमौ बिचषण ॥ सो तें पूछे
गुर के लषण ॥ प्रथम तौ या कौ गुर ऐसा
या मैं तौ कछू नांहि संदेहा ॥१॥ अब तौ
कू गुर लषण समझाऊं ॥ तेरे सब संदेह
माऊं ॥ ऐसे लषण सो गुर पीरा ॥ ख्याति
मति ता अति मुति धीरा ॥२॥ गुण इंद्री म
नता के नाही ॥ तू सरूप देषे सब मांही
करुणानिधि कृपाल सदा ही ॥ साषि सु
रातम कू समझाई ॥३॥ साषि ॥ कबीर
सो संत गुरनि ज

ण बतावै ॥ जतमत संतोष बोषदे सिष
निपावै ॥ नरम करम अरु जोग सोग
संसार नि वारै ॥ ती नताप की जरु ए
ह सण भव पार उतारै ॥ कर प धार कर
ण सुणै दया धरम को मूल ॥ रांम चरण
ता की सरण मिटि जा इ संसै सूल
॥ ४ ॥ मन को ग्रा दार यंग नाम बनी ॥ चौपइ ॥
सति असति कौ त्रि निकारी जैवा नि
ज कल्यान न करइ तजौ ए वा ॥ सो इ सत
गुरु प्रगट तुम जांनौ ॥ मन बच का इ
त लौ करि मांनौ ॥ ५ ॥ साषी ॥ कबीर

नरबैरीनहकामना॥सांईसेतीनेह
बिषीयासंन्यारारहै॥संतनका ओ
गऐसाकाजनहरीदाससोहीजन
नेला॥जे अबकतरांमाहागदो
षमेतेंनहीं॥जोगमतसकाम॥७॥क
मओधतिसनातजी॥त्रिबधिता
पकानासनांमनांमदिरदेसदाजन
हरीदासपुरदास॥८॥गुणंतीनईन्द्रा
जती॥निसदिनसुमरैरांम॥रांमचरण
ऐसा गरु॥सोरैसबही कांम॥९॥ओ
गलबगलकासंतदासदेवैसबम्

मोर पकड़ा वैद्य के राम नाम कहा है
सतगुर सोइ ॥१०॥ दादू सतगुर ऐसा
कीजीऐ राम रस माता पार उतारै प
लक मैं दरसण का दाता ॥११॥ तुरसी
दास गुर बिना मन की भ्रांति न जाइ
जावै कोट की रति सुणै कथा सुणै
बहु भाइ ॥१२॥ राम रत्त नर बंध मत स्वा
द बाद पर त्याग राम चरण ऐसा गम
तो सिष को पूरण भाग ॥१३॥ चौपई
ग्यान अध्यातम के दातार कुनि दिषला
वै आत्म सार तुरसी तेही गुर पर वांन

औरगुरकहबे मातरजांन॥१७॥क
हबेमातर क्यु॥उतर॥साषी॥कबीर
नांगुर मिल्या नासिष हु वा॥रहीअध
रीसीष॥ममि मुकाइमुकति को॥चा
लनसक्याएक जीष॥१५॥जीपरेक
नहीचलसक्या॥ष्ट क्यांवोरकां गोइ
सतगुरसोहीजांणीये॥जाकेरामरत
न उरिमांहि॥१६॥कवत॥सोकहीये
गुरपीरतत बिणजेदारहीरा॥हरिबि
नि बिणजे औरसोहीदोजिगकाकी
डाजांणे सबसंसारनाव बिनिकोइ

नसीच्या बिनां अगति अगावं तम
वपरिक्षवी दीरीच्या करीए उसका
त्यागबाट जोपरगट मारे हरिमार
ग संू फेरजा ह दोजिग मैमारे जनरव
बक्ह गरू तिनकोकाह अधिकार
अगति बतावे आनकी बो रे कालीध
नाना दृष्ट बताइदे
र
चेतन अैसागुर
बिषे भोग ने नाहि
कीया बुझजाइ औ मांहि १ ८ गुरु ह
मांझे बुध ज्यू ध्यान
धीके सुषवहि
झगगुरकी मेकमा ह

बिषीयाबिलसै नगु आदेस हि॥साखी

लैरसुणि वैनांम॥गोरषकहै नैगकुर

राम॥२०॥तांकीकेलंगकी किसकाम

का॥तास लेलांनहोइ॥स्वारथकी

बातांकरै॥परमारथनहीं कोइ॥२१

लैनी बिषदै सुरकरै॥आंधै कोई चाइ

जेगनांयतेलमपूरी॥न्याइयकाबिक

षाइ॥२२॥सुर आपेंग पुरुपवलिवि॥

सिषसाषा कालि बहवेलटन्याव

बिन॥क्यूउतरै पार॥२३॥तांकीसा

जीक्का॥सिवसाधकाना लोढिन्यत

चारी पड़ी होइ गाके ॥ एह बात ॥ १७
सिष्यालेते बावरे दूते भेरेनि लज मैसा
बिलि मा वैनहीं पूछ बाधैछून रूप
आपण सिषन साबी या की ते सिषह
जार सुष्या रासूका कै सड़ा दोम्ह के
सिरजा ड़ि रूप सोधी नहीं सरीर की आ
रा कै उपदेस दास आ चर नदेषी ए
जाहिंगे किस देस ॥ २६ ॥ दस अेस की गम
नहीं गारू कहावै नाम रामप्रताप मेगु
रनहीं जो सिषपावै चा कै दाम २७ जेट्ट का
चाकै सूत कै मा आपो वै सो ए कै ईव

बीरवा गरू स॥ करे न ज्ञा सो ह र॥ ए
जाले गुर सो इ के॥ सब निर ब्रतन हो व
न॥ करै चेतन वै गुर न हीं॥ बट पाडा प
रबीन॥ २७॥॥ बट पाडो क॥ रामस
तका॥ डु हा॥ सुमर सुमारत राम रे क
सो गुर साध प्रमांन॥ आंन द सा नरमा
इदे॥ ते बटपाडे जांनि॥ ३०॥ साखी॥
झूठे आ धे गुर घ ऐ॥ नट के घर घर बार
कारज कोई सी जे न ही॥ दादू साथै मार
३१॥ कबीर अब का गुर॥ घर घर फिरै॥
दि षा इ मारी ल्यो स॥ को ई बुको को ई तरी

नहीं सबूरसत
टको धीवता घौह ॥ ३४ ॥ ऐसे गुरजन
ता असतता बरताहि ॥ ॥ ३५ ॥
बोसोत है तुरसी याजुग माहि ॥
कला मेपर ॥ ॥ सांग धार माया सूल
गादीनउनी दोन्या सू आगा ॥ विषइ
गरूर विषइ चेला ॥ अध धुंधमें ठेलमरे
ला ॥ ग्रथा स्वामी ॥ ॥ इक गुरा नहि विवे
कला बुधि बरबुतावै ओर ॥ तुरसी तिन
को संगकीए छूटै नरक अघोर ॥ ३५ ॥
कनक कामनी गरूके ॥ सिषरूके कान
सोइ तुरसी तकै तव जलमही लोहिलो

दिमलिदा८॥३६॥किरता।रे के धीका
ब्याबृए ककानाता करणंगे कचला
वण जोगरे ककासोतगच्छर नां।फेल
पड्या।परिवारषांण कक डुबा नेडिान्या
पणां चढतीत केपार की चढती फोडे॥श्री
सी बिधि का गरू श्रकलि बिनि श्राधेकी
न्हा म्रदि मुगद की श्रांव माल घर कामु
मिली न्हा॥रजब बोदय सार की मादीमा
दोसार॥ग्रदा को ग्रदा गरू स्रब मोस
सार॥३१॥नारद गीता को॥स्लोक॥न
ग्रानवाच॥ पाषांणस्य क्रते नौका॥

सार आर न धारयंत ॥ ग्रहा ग्रहन नाक्वे
सार आर न धारयंत ॥ इति साषी ॥ कबीर
तरंते न तारयंत ॥ इति साषी ॥ कबीर
ना गुर मिल्या न सिष मिल्या षेल्या ला
ल चमाव ॥ दोन्यू बूडा बापडा ॥ चढ पा
हण की नाव ॥ ५९ ॥ गुर षट रस बासि दो
हरा ॥ सिष बिचि पानी लून ॥ तुरसी
दो कै अंधेरे पंथ बतावे कून ॥ ६० ॥ कबीर
जा का गुर है अंधरा ॥ चेला षरा निरंध
अंधे अंधा ठेलीया ॥ दोन्यू कूप पडंत ॥ ६१
कबीर जाण ता बूझ्या नहीं बूझ न कीया
जौन चेला कू चेला मिल्या पंथ बतावे

केन॥८२॥ हैसी दास की कसी ॥ बात करे आकासकी ॥ आयर सातल जाइ वा पानी गुरसं मुरिष मला सके न औ र तुला ६॥८३॥ जो जल तरयो बिचारी रे॥ तो सारी नाव सजो ॥ तुरसी फूटी नाव में चढ़ि मति बूमो को इ॥८८॥ जो कब औ रे बेगी ॥ फूटे भेरे मांहि ॥ तुरसी जब की मति परे ॥ तब जो सारदी रे ना हि॥८५॥ अस तता आप पदर ॥ सत ना सुपने नांहि ॥ सो गुर फूटी ना व है ॥ चढ़ स बूमे मांहि ॥८६॥ कबीर बुमो मति रे बावरे ॥ फूवे गुर की सं ग ॥ राम बिमुष दुजा निपट मुकति करन

कारको ध्यान सूं॥ मुडै न मोडी जाइ॥१॥
राम वर पाजी कांही॥ सुमरण साचा सा
रहै॥ जुग जगत बिहार॥ जुगात जिस्या
चाग है॥ तब जी बांहे ट्राधार॥ शरणां
राजस तप ॥ करणां आपा होइ रहै
सब सूं निरमला॥ सुमरण लागा सो दास
दास कूं पापट तरदाजी रे॥ दूजा नांहीं को
इ॥ रांम सरीषा रांम है॥ सुमचा दीं सुषसे
इ॥४॥ कबीर नांव करी चाकरी नांव
धणी सूं बात॥ नांव जाण वे ध्यान कुं॥
नांव करै क्रम मात॥ कबीर निज सुष
नांव है दूजा दुष अपार॥ मनसा वाचा

कमनां न्है सुमरणसार ६
कमनां न्है सुमरणसार ६ रामजनन सबजन
सुमरण सब सिरताज रामसुमर
करै जगतसिधकैं जिहाज सुमरणरतसनका
बोहोततिरे ७ अरूपान बि
दिकच्यारी नगन मगन अरूपान बि
दिकच्यारी सुमरणतैसंकरनिज ध्यांनी
चारी सुमरण नांनी ८ सुमरण
राजासकलअमना जानी ८ सुमरण
तै ऊमायरिरदी बिनसुमरण परलै
गई सुमरणदी तैसुपाबियोगी गरत बा
गई सुमरणदी तैसुपाबियोगी ९ सेसनिरंतरसुमरण
सतैलयोजजोगी ९ सेसनिरंतरसुमरण
करै ३ अैसदं समर नांनसांटरै रपबन
करै ३ अैसदं समर नांनसांटरै बोहोस्यूंनांदिजग
१४ सुमरणहैपी भा

तमैंबीधा॥१०॥सुमरण तैं नौ जोगी जथा।
कही जनक सं साची कथा॥ट तकथ
त देखत ती मात सुमरण ही तै मोबिम्बा
त॥११॥सुमरण तै नारद मुनि न धो ऽन्रु
चल सुमरण ध्रुव क दयो सुमरण ते प्रग
ट प्रह्लाद उदास्यो पिता कास्यो बोले
बाद॥१२॥अजामेल गनिका नामा
नौ सुमरण ही ते प्रगट जा नौ वाल्म
मी क सुरण सव पाई ३ लेलो क मे होत व
डाई॥१३॥रांमचंद्र तब प्रसन भयाप्र
रथमात कू सुमरण दया सुमरण सार

सीयासु बलद्यौ सोसी न दलिभ म
कै दयौ १७ दनै मांन सु मरण बल न
यौ ईइ जीति सब कारज कीयौ बसु
देवघर कारन औतार पे सुमरण बि
निपायौ नरसी सार १५ न बनारदकी
कीयां नई बसुदेव की डरमति गई
सुमरण बिधि दकीयौ उपगार जग
न सेत तै न पोजु पार १६ ऊधौ बिद
असदा मा सुमरण तै पायौ बिसरी
मा बेद सुम्रति सब संत पुकारै सुम
एा बिना और नदी त्यारै १७ आदि

अंतिमघिकिते जनअरे ॥सुमरण तेस
बसद गति जारे ॥सुमरण ग्यान ध्यान
कोकारण ॥सुमरण कामक्रोधरिपजा
रण ॥१८॥सुमरण बिना सिधन ही को
इ॥ आदि अंतिमघिट सो जोइ॥जगसु
मरण कोटो तबिधि करे॥ अपरो अ
परो आसे फुरे॥१९॥संत कहे सो सुम
रण सा चौ॥ दूजो सुमरण सबही का
चौ॥ ताते अबसुमरण कूं कीजे॥मन
कूं पकड साकड दीजे॥२०॥मनसा व्वी
चा दोहू न्द्र कां म एक अ थ म त जजी

बलयो सोहीत्र दल परमा
सीयासु बलयो सोहीत्र सुमरणकृत्न
केदये १७ दनै मान सुमरणकृत्न
ये ई जीति सबकारज कीयौ बसु
देवघर किरत औतार पे सुमरण बि
निपायो नरही सार १८ नव नारदकी
क्रिपा नईं बसुदेव का डरमति गई
सुमरण बिधि दकीयौ उपगार जग
न सेत तै न पौ जु पार १९ ऊधौ बद
अरु सदा मा सुमरण तै पायौ बिसरी
मा बेदसु मृति सब संत पुकारै सुमर
ण बिना और नहीं त्यारै १७ आदि

अंतिमघिकिते जनअरो।सुमरण तैस
बसट् गति गरे।।सुमरण ग्यान ध्यान
कोकारण।।सुमरण कामक्रोधरियजा
रण।१०।।सुमरण बिना सिधनहीको
ई।।आदि अंतिमघिटेधो जोई।जगसु
मरण बोहोत बिधि कहे।।अपणे अ
पणे आसे फुरे।।१०।।संत कहे सोसुम
रण साचो।।दूजो सुमरण सबदी का
चो।।ताते अबसुमरण यूंकी जे।।मन
कूपकडसांकड दीजे।।२१।।मनसा त्यां
चादोहन्द कामएक अ

तेराम ॥ पदम आस राले आम गाव
मांवे ॥ साल संतो पद्याम न खावे २०
धारज धार धारणा करे ॥ रामरा मरस
नाउ चवे ॥ रम्म नाता ली अनंद लगावे
रामकह तनिस द्योस बिसरावे २२ पी
वेहो प्रेम प्रकासा ॥ अगल बगल
की छूटे आसा ॥ आनंद मांही जा इस
मावे ॥ नाते सुमरण नी को गावे २३
सुमरण भेद मास निज गुपता ॥ सुमर
ण करत भये जन मुकता ॥ राम जन जे
सुमरण करे ते संसार समुदर तरे २४

३८॥ सुमरण सम कोऊ नहीं संतनके आधार॥ जे जन सुमरण सुर है गए जगत कै पार॥२५॥ सुमरण कीजै रामजन॥ तजि साधन सब आन॥ ऐहीं गीता मे कही॥ अरजन सु भगवान॥ २६॥ रेषता॥ राम को नाम गुरदेव सू पाइयो प्राण सुणत संतो बताया॥ तीन ही लोक मै सार यो नाम है सेस अरु महेस सुषदेव गायो॥ ऐर जिन नांव सू समद सिला तिरी देषतां जाइ गढ लंक टूटी॥ राम रघुनाथ को का

जमदग्न सस्यौ सुरते तीस की बेघछु
टी दास प्रह्लाद के त्रास ऋषि की
बधी ऐह निज नाव सैरा बिलीये बा
हेरी मी कयूसं भरस नारर्टी तास
कोजसति कुलौ ककीयो राम काना
मसै पतित बोहो तिरगया तास को पार
कोई नाहि पावे दास चेतन कहै ऐसो
निज नाम है सुणतही चेत के माहि मा
वै १७ ... गो डाति दान तुरा गज
दान कासदि दान सुमेर समौके को
ट तलाव कासी जु तलाव माघ कोटक

बापीक तोलै॥ कोटक कूप अनंत अनू
प करे जो सो सुमत नीर कको तोलै॥ सुम
त बेद मुरार कहे सब ऐकौ हूं नां हरिनां
म कै तोलै॥ रण झुरष गअनेन झुजा मन
बकत बाधसदा ब्रत की धज ओलै॥ जू
जत ओमि सुसील सुमी तल ग्री छम थै
थमें पावत तोलै॥ पुनि अनेक अनेक
करै पृथी तारथ का जे अनंत टटोलै॥
सुमत बेद मुरार कहे सब ऐक नां
हरि नांव के तोलै॥ १७॥ कंचन धाम ध
रे जा हां नौ निधि अंन अंमार भरे अंगे

तौलै नांनवरंग जोदा सुष नांनव
नांनव बास सुबास की फौलै दे
जिराज के त्यागि मास प्रबंद पति
दासकी रीति के बौलै सुमत बेद सु
रार कहै सब कर्म नांहि हरि नांव कै तौ
लै २० ॥ दान यहण प्रकासी मकै
गौ कोटि दान यहण यहां पत मै
प्रयाग अत कल्प बासी ॥ यहां पत मै
रू सुवर्ण दांन गोबिंद नांम सांमा
न तुल्यं ॥ २१ ॥ उहण गंगा तट कासी
ग्री कोट गज दांन ग्रहण क्रांति दे

प्रीतिसे। नांदी नांव समांन ॥२॥ नांदी
वेएां। अरप्राग जाहां ॥म कमासतां
दोजांनि॥ तप बुल्ल केदसकहाय
नांदी नांव समांन ॥२३॥ करे निराद
समेस जो॥ कनक मेर तुल्य दांन॥ बि
दसाध सुमत कहे। नांही नांव बुल्ल
न ॥२४॥ रेखत नांवही ग्यांन अरध्या
नकुनि नांवही नांवही मुगति नेरा
गताहि। नांवही नूर अरतेज पुनि नां
वही नांही जोग की जुगति याहि॥सील
अरसांच संतोष कुनि नांवही नांवही

जप अरतपकी या क नाकाकी कछु
ऊंत बाकी नहीं रोम ही रोम जिननाव
पाया रप (छंदमें नहीं) तीरथसनो
न दान करत निवां न प्यान मिदरब
नाद मांहि सूरति बैगाई रे जोगकीजु
गति जपतपकी सकति गुन गुनभैर
कत आपकहन न उमाई रे धरमअ
नेक रोक एक तैबसे क देषमेटी जगरे
षाविद्या बेदतपराई रे कोमिकैकप
ट छलछोड़ कैस करतमल इत नी कीया
कौफाल राम नाम गाई रे २६ कोमतन

न्नवगबसेजाकेएरु नागदवनिक्रोध ज्वलरूपताके सीतल करनीरहेलो नेकेघटाइबेके अमररहैजनीनानाव मोहोमिघमारबेके मासानीषतीरहे जगतकोचुलानएरु च्यारिमुकति षानिएरु जगतिकीपिआनिएरुझ्म तसुषसीरहे॥ कालसेबचाइलेत ब्रह्मसेमिलाइदेत सऋमनसिधार बेकेनावसरबीरहैा॥२७॥ चूमरूप बादरानुमाइबेके पवनएरु ऋमका रषोइबेके मुसकाला अनूपहे॥कि

ऐ॥ बिन स घन जा के जारवे कं अन
लेरे तीन गुण ध्योय के चिह्नोर बेकं
रूप है॥ जनम अरमरन ताके कात
बेकं कीती ऐसंतरूप सद्दतन कं सुष
कोसरूप है॥ अभ्यासी के दूर बेकं दा
ता भावतीन लोक धूमनमै धूमराम
नाम बमो रूप है॥ २० ॥ पद ॥ जब तें
रसना राम कयो ॥ मा न धूमसाध
सब बैठे ॥ आतपट बे धकोरारखे
ढेका ॥ रदे प्रकासज्यान गुरगम से
द धम श्यि घूत लेत ज्योम स्ये ॥ सार

कोसारसकलसुषकौसुषारुनूसे
ससुषजानिगयो॥१॥सिवकोधन
संतनकोसरबस ब्रह्मा बेदबिचार
कर्यो॥यारीसुमुकतिभएसनका
दिकहरिचरननचितरनागिरयो:
नौवप्रतीतिनईताजनकै॥लेऔ
नदडुषहरिदयो॥सूरकहैधनध
नवेभगताहरिकोब्रतलेनबर्यो
२५॥पूर्ना॥६६॥कौनभातिब्र
तधाराऐ सोरीकरोसभकाहमेंपु
छतहूदासहोहःकेसैपारनित्रार

॥२१॥ उतर ॥ साखी ॥ हरि बिन औ
न उपास नाम रतन सब जाणी है ता
तैं धरै जु दास राम भगति पतिब्रत
से ॥ पतिब्रत का ॥ उतर ॥ साषी ॥
राम बिना तिंहु लोक मैं ॥ औरन कर
ता कोइ संत दास उस पीव का पति
ब्रत धरी ऐसो होइ ॥७१॥ राम चरण कासी
स परिहरि कै निरंजण राम ॥ राति दिवस
रटबो करै ॥ नहीं आन सूं काम ॥७२॥
॥ दूहा ॥ राम जु सारन और जु दासु ॥ जी
व न जाइ जनम कित दासू ॥ दोहा ॥

आनदेव संदी नन नाहुराम रसा
निरसना चाहू॥१॥पति बरता पतिको
गुण गावै॥आन पुरुष अंतर नहीं ना
वै॥२॥अनत नामदेव जी कहैं ओ॥और
देव फोकट बेकामो॥३॥साखी॥तु
रसी के क वारी के न्यारहु॥के बरबहु
राम मनसा बाचा करमना॥नहीं और
रस कामि॥२४॥जोग जिगती रथा बरत॥
जपतपदान अनेक॥तुरसी सब ही ज्प
रे उतिम नांव की टेक॥२५॥[illegible]
धर अंबर बिचि संतदास

तीरै करराममाकीटेकसूं ॥ चढिगया
संत अनेक ॥ २६ ॥ चिंत्वांता ॥ सिघनषावै
घासका न्है आदरनदी आवै ॥ मोतीबि
नांमुरालमाछली चाच न बाफै ॥ नवै
ननी चैनीर मतै चाजगको नारी ॥ अ
नलपष आकास धरणि बैगै नदी लारी
रांमचरण रहैऐ करस इन को आदि
सुभाव ॥ यूं सुगरात जैन गुरमतो प्राण छू
टकनजाव ॥ २७ ॥ साषी ॥ कोईक बदलैनां
वकै जैलै सिर इरकरत ॥ तोहीरांमनांम
कीसंतदास ॥ पेक नदी छोकै संत ॥ २० ॥

हरिजनसंतम सारसा॥ सत वीरको ई ते
क जगजीवन माधोदी यो॥ रणी नाक
की टेक॥ इति॥ डसा॥ रामनाम मद
मा अगम॥ कहै ओ कैन पै बाशान वल
कहु ऐ कैरे स अन॥ मा जे कहै समफ ह
४०॥ अथ ... माहातम कही गाटे
॥ गुर वचन॥ डसा॥ अजा मे लभ्भर
बिधिकज्ज॥ गिन का गज प्रमोद॥ और
अधम को हे ते तिरे ... यो नो वनि
रबांए॥ १॥ साखि॥ साखी॥ राम तु म्हा
रे नांव की महमा अगम ...

वलित गज उधरयौ ॥ सरणसुण न हाय्रा
हरि ॥ नहीं मकार रज पलै चौपै ॥ तीनो
ऐक रकार ॥ पासि कटी गज उधरयौ ॥
साषि बदत संसार ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ अंतकाल
की बार ॥ पार भयौ छिनि ऐक मे ॥ सुवा सु
षरा म उचार ॥ बिधिक सुन्यौ निज श्र
वनां ॥ ४ ॥ सवईया ॥ सब पाप पुराल को
पुंज भयौ हरि नांव कृसा न कौ कन
का छिन पर जा सर पार करे न सी नैंक
करो मर है तन को हरि नांव सदा परताप
असो नजि पुजि मनौ रथ लै मन का

राघोदास घुरातम साखि सु मैं अजामेल
है षोपुनि वा गिनका॥५॥ सुकि राक अज
मेल अंत समै जम के जठ हतन आइ गहै
ऐसो तमासा अति आतुर होइ सुत हेत
नराइए नो वल स्यो। जब संतन आइ के
सा हि करी गए वे तन संत दे हद्यो॥ मा
धोदास कहै प्रभ प्रसण है यरि सुमरण से
अघ मां दियो॥ जम हत नगे जम लोक ग
ए जमराइ सं जाइ पुकार करी॥ सब अंग
के भंग दिखाइ दए उन त्रास की पासि उता
र धरी। करता हम औरन जानत है हम पै
अब सो तन री क धरी॥ माधोदास

मिमेटत है सोही संत उधारण दीनदस १ करे धूमेराइ उठे उकलाइ रहै जुकि सांइ कैसा बिनि आइ॥ हरिनाम उचार भयौ तहि बारसही ॥ ... गएक्छु न धाइ॥ सुनो जमदूतकु जोन कफूत भनी भइ सुत बचेहम आइ॥ जासोंकाल प्रचंड कौ कंड मिटौ। तुमरी हमरी कौ है कण चलाइ जमराइ करे जम दूत न संस्क बात भली सुनिल्यो सबही ॥ जादो भगति की टेकको रेषसु मोतहि मारन जा वो मतो कबही॥ हरि के जन से कोइ कोपकरे हरिदंत सिज्या तिन कू तबही॥ माधोदास कहै बिसवास

गहो निज अगति की पैज सदा निबही॥ (?)
जमनतकरै जमराज सुनो तुम काहे कै वा
दकरावत दासी॥ इतते चढ सौ उनवै नहीं मा
नतहरि के जनकी विदी भारत छासी॥ पुस
प बिमिनष की व... ...ली जांहा कीट पं
तंगसबै जुमे वासी॥ म... ... न रा... ... नो
मप्रताप ते पाप जरै सो सै कुस की रासी॥
१०॥ डरा॥ नांव ली... ... स... की या॥
जोग जिग आचार॥ जपतपतीरथ परस
रंभ॥ सबै नांव को... ॥१॥ अथ सतसं
ग महमा कहीये॥ डरा॥ गुरबचन
सतसंगात कै नादि स... ...

सोसुषनहीरजध्यांनी॥१॥ कोरकरएाकु
पदेसबतावै॥ कमत सुजानसोसाध
संगतिकीऐसीबमाई॥ जोतेकजतनकर
त्यारे॥२॥सदा आनंदरहैहिरदामौंहरिआ
नदमैफूलै॥तिनकीसंगतिसौफिरपाल
राखिनि नररामनहूलै॥३॥कामक्रोधन
ही३रजनके॥रामरामसुषगावै॥रूरदा
सकीएहावीनती साधसंगतिसुषपावै
४॥पद॥ ३३॥ जेजनसंगीरामकालो
केसंगसुषहोइ॥ औरजु मिलितलोककै
सुषनहीपावैकोइ॥१॥ तानसुरग ल्प

तातै सिष अब सम नजि कै। संगि मा-त्त मजो
ने १ ॥४॥ दोहा॥ सो सुष है सत संग
मैं सो नहीं द्रसरी गंम। हरि चरचा अव
एणं सु एण रस नोउ चै रैराम। रस नोउ चरै
रोम न नहीं कोई धोका धंधा। साध कमावै
जगत का हि आसा का फंदा। रोम चरण
आनंद अति निरन्तै आउजाम। सो सुष
है सत संग मै सो नहीं द्रसरी गंम ॥२॥ पद॥
रोम जी साध संगति सो हि दीज्यो। बेर बेर
मै कहूं वी नती। कृपा मो परि कीज्यो॥टेक॥
साध संगति ब्रह्मादिक बंछै। सनकादि
क मुनी ग्यांनी। सो सुष पावै साध संगति मै

सोसुषनहीरजधयांनी॥१॥ करकरणांउ
पदेसबतावै॥ जनकत सुनाइ स्यारो॥साध
संगतिकी ऐसी बनाइ॥ अनेक जतन कर
त्यारे॥२॥सदा आनंद रहै हिरदा मैं॥ हरि आं
नदमैं फूलै॥ तिनकी संगति सो किरपाल
राषि नि नरराम न जू लै॥३॥ राम सो धन
ही उरजनकै॥ राम राम सुण गावै॥ सूरदा
सकी ऐदी बीनती॥ सत संगति सुण पावै
॥४॥पद॥ ३८॥ जेजन संगी राम नामतें
केसंग सुष होइ॥ और न संगति लोक में
सुषनही पावै कोइ॥ ॥१॥ तात सुरग—

बेद ॥ सांषि ॥ नांजी श्री कीश्री उपन्नारीसहज ॥ करिबिचार तिसलोक मैं ॥ औरन कोई गांम ॥ बेद सुम्रत सबके हत है ॥ ऐ संत बिराजै रांम ॥ २०६ नरसम त्रं तरनांहि कुछ ॥ सतकरत सुनि तेहि सा धसुषी तो मै सुषी ॥ साध दुषी दुष मोहि ॥ मुक्तिचि निजु वानजानी ऐ ॥ मो तै मे रादास ॥ मन बच क्रम म्रवब स्यंरष्य ज्यूं फूलन मै बास ॥ ८ ॥ आपसरीसा करली या ॥ धरमसतग परगाप्ति से गाबिराजत साधकै ॥ कबकैनक्काम्रसाथ

साधजमेरौसरीरहै॥मैसासुनकोनी
॥सेवगस्रोमीसु मिल्या॥ज्यु स्धनमे
प्रीव॥६॥साधलछकरीरहे॥निरम
ल नैन बैन मरे निरमल॥निरमल चि
त उदार॥रांम चरण वे संत सिरोमणि
निरमल नाव अधार॥७॥षम्यादयासब
स्पेह॥निरलोभी न्हकांम॥निस्वादी
निरबेरता॥सोई संतबरो यांम॥८॥लो
भमोहोहंस्यानही॥जैसेगुरब गुमांन
संमचरण दुरमतिमटी॥तबसाधलछ
परमांन॥९॥निरबेरी सब हंनसं॥निराधा
रतसाध तुरसी रेमति साधके म

साषी सत को ॥ छूटा सतपुरसां कौ भेद
सिष सतसं सीतप्रसाध ॥ किकरजम का
आइकरि बक्तारे नमंमैवाद ३ ॥ साषी
हरिजनहेतकरिदेवहै ॥ सीतजएकलगा
र ॥ वटकवीजज्यूंसंतदास ॥ हेतवेसेत
विसता ॥ ४ ॥ मुरलीसीतजलीजाए ॥ संतां
हदोसोइ ॥ कामक्रोधउरितेमिटै ॥ रामभज
नाबुधसोइ ॥ ५ ॥ कं बापावे अमरफलसं
तक ॥ गिनिसवास ॥ यासीमेरेमुकतिहै ॥ सेवं
चरणनिवास ॥ ६ ॥ परमेसरकाभावकोए
ककणंकोपाइ ॥ दा नजेतापाप ॥ तेतास

प्रसतातहरि चंद संत मैं कह्यो॥ चौपई
संत गुलाम दोनसुर चारे॥ देव न्नोग
तजि नगति निबारे॥ माहा प्रसाध संत
घर केरो॥ नागब मै पावे तहे चेरो॥१५॥
रोहबी नती अमरापुर ली जे॥ संत चर
ण करतारस मदी जे॥ ऋगन पा इरहे घर
चेरो॥ सोइ प्रसाध रांम जा तेरो॥१६॥ ता
ऋवन क अजनिति गावे॥ साषिता हो
सुषदेव सुणावे॥ राजा कह्यो व्यास सुत
सेती संत प्रसाध वो पमाएती॥१७॥ तब
सुषदेव भागवत सुनायो॥ संत प्रसाद मा
हातम गायो॥ सो प्रसाध निति जो पावे॥ बि

पतिका दास हरि भगति करावै १८ ॥ श्रुत
भाग दसम को प्रसंग करि कहत नहीं ॥ तु
हा ॥ मह मासी तप साधकी ॥ बरन्यौ कछु
इक राति ॥ नारद [illegible] माद अब सु
णि तही उपजै प्रीति ॥ १९ ॥ ब्यासदेव के
तन मही ॥ पचं म प्रगटी लाइ ॥ तद ब्या
कुल ह्वै हरि गुण की ॥ अति रकै उपाइ
२० ॥ चौपई ॥ एक समै नारद मुनि आ
ए ॥ ब्यासदेव तब दरसण पाए ॥ दंडौत जो
केरि परसन बूझे ॥ परनु तुम्है सब ही बि
धि [illegible] से ॥ २१ ॥ [illegible] ब्यास [illegible] ॥ ब्यास
है [illegible] सु [illegible] ६ तुम समान हू जा

कौनारी।तुमरी साधप्रम किपाल॥डु
बाजी क्क करो निराल।२२।हम वोये
बिधि के ग्रंथ बनाए।नाना बिधि के धर
मदिटाए।प्रथम च्यारि बेद बिसतारि
ने करीतिका अरथ बिचारि।२३।षट
सासत्र अरनो ब्याकरणं।कुनि मे पुरा
नकी यो बक्तनिरनं।तातें तपति लगीत
नमाही।तव मे बोहोरयु करी उपाइ।२४
और सासत्र कीए अनेका।तामें बरने
काम बसेषा।नारथ कथ्यो बोहोत बि
सतारा।न्प्र जप्र आगनि तनबटी अपा
रा।२५।अब मे डुषी

नन्नं भति दो वै निसतारा ॥ जो सैं व्यासक
री लुघताई ॥ तब नारद मुनि कह सम
झाइ रह्या ॥ भागवंत प्रथम स्कंधे अ
ध्या ५ ॥ ५ ॥ नारद वाक्य ॥ श्लोक ॥
नयतब चक्रिं चपद हरे यशो जगत
पवित्र प्रगृणीत कर्हिचित ॥ तत वाय
संन सुसिक ज्ञया ॥ २७ ॥ टीका ॥ चौपई
व्यासकारण तब ते कीन्हो पूरण ब्र
ह्म पद न ही चीन्हो सो निज बुसक
म तै न्यारा अमुध जगत कौ करै उधा
रा २८ अति सुचता दे आप मिलावै

सो जन रांम नांम गुण गावै॥ ता प्रभ कौं
तैं नहीं जांन्यो॥ धरम अरथ अरु कां
म बषान्यो॥२०॥ केवल काग अमवि
सतास्यो॥ रांम अमै पद नांहि समस्यो
अरु जो कह्यौ तो कहु इकाल्है सा कीं
न्हौ बोहोत अमप्रवेसा॥२१॥ मांनूं तीर
प काग लोन्हायौ॥ तृषि जल न्हाइ पु
नि त्रिष्टा आयौ॥ तातें सदा असुच
ही रहै॥ तीन ताप तनमांही दहै॥२२॥
जौं लू चरम रू करम उपासा॥ तौं लू हंस
ब्रित नहीं ब्यासा॥ ५८

छिनि औरन जाबै ३७ अकरनकरि
हरिनांमही सुरौ मुनि रसनां म गुण
गुणे हरि कै नांव अरण तिनकै
तिनतै जा सो सब ही ठरे जपे तेनि
ज साध स्वातिपद कृपा ता की सग
तिम अनूपा संतन को प्रजाव च्य
पार नां न बुधि कोजा तै पार ८०
अनंत गुण पार न ही जाको परक छ
एक मै संछेप जनांऊं उनके सात प्र
भाव दिषाऊं ८१ बेदव्यास सुक जा
न मुनिइन मांहि माहा मुनि नारद

चवै भवं मुने ॥ दास्यास्तु कस्याश्चनवे
दवादिनां ॥ निरूपितो बालक एव यो
गिनां ॥ शुश्रूषणे प्रावृषि निर्विविक्षतां
॥ ते मय्यपेताखिल चापलेऽर्भके दांत
धृतक्रीडनकेनुवर्तिनि ॥ चक्रुः कृपां यद्य
पि तुल्यदर्शनाः ॥ शुश्रूषमाणे मुनयो ॥
ल्पभाषिणि ॥ २४ ॥ उच्छिष्टलेपाननुमोदि
तौ द्विजै ॥ सकृत्स्म भुंजे तदपास्तकिल्बि
षः एवं प्रवृत्तस्य विशुद्धचेतसस्तद्धर्म एवा
त्मरुचिः प्रजायते ॥ २५ ॥ टीका ॥ चौपई ॥
सुनौ व्यास जान तौहि सुनाऊं कथा ॥

बेमधरम के परम बिसारद॥ सकल बुधि श्रेष्ट स्वांमी। कृनन्नौनि तुम नें ऐ अकांमी॥ धरि कृनितु मसीत कस्यौ संतन कें॥ जाते मेल मिटे सब मन कें। ऐ पुरुन मोहि बरन सुनावौ॥ अरु तन कीनपति बुझावौ॥ ४३॥ ऐसी किपा हो ६प्र नृतेरी॥ ताते अगनि बुझे अब मेरी ऐ सुनि तब बोले मुनि नारद॥ परम किपाल अरु जगति बिसारद॥ ०६॥ जो गरु ते पुष्प मस्क श्रीमधा ६॥ ५॥ मैं नारद बाक्य। श्लोक॥ अह पुरा ती ति

सी मन धारी ॥ भोजन पान आप में कीजै
तब कुबुध्या लड का कंदीजै ॥ ५६ ॥ भोजन
पान साध वे लेवे ॥ तब ही मोहि उचेष्ट देवै
बालक जांनि करे प्रतपाला ॥ इत बचन
बोले क्रिपाला ॥ ५७ ॥ साध प्रसाद है हम
लासा ॥ सो में निति ही पाऊ ब्यासा ॥ परमेश्व
र तम नहीं जान्यो ॥ अंन प्रसाद करि ता
कुं मांन्यो ॥ ५८ ॥ परिता को ऐसो परताप
मम दुष पीर मिटे संताप ॥ सीतल नी स
म द्रिष्टि प्रकासी ॥ ५९ ॥ साध क्रिपा तन मो
परि है ॥ निज सरूप की सुध तालही ॥ गंग
नाम मो कुं समझा यो ॥ जब मे ध्यान अपंन

तलायो ॥ ६० ॥ ध्यान करत तप ज्यो बैरागा
मेरे जागे प्र[illegible]ण जागा ॥ प्रभु अब मो कं
संगलीजे ॥ अपनो जन को कारज की
जे ॥ ६१ ॥ तब जन ने बोल्यो सुन रे बाला ॥ तु
म जननी की करो = प्रतपाला ॥ ऐमा ना जब
स्वाति के पेहो ॥ तब तुम उठि र बन कं जेहो
६२ खेती करह जन रमता न्या ॥ मम जन
नी मै वा दा हो रह्या ॥ माता मुई बंध सब
दहे ॥ तब मै उठर बन मै गए ६३ ॥ वा दा
जाई मै ध्यान लगाए ॥ एक अषम तताली
लाए ॥ ध्यान करत बो होत दिन बीते षान
पान मोह आवे न चीते ॥ ६४ ॥ ध्यान करत द

रिदरसण दीनो॥जीवनजनमसुफलमम
कीयो॥कुनिकोइ ऐसी होइ आइ॥सोहौ
दरसण गयो बिलाई॥८५ सोमे व्यास ग्र
तिव्ययोउदासा॥व्याकुलचितनही थिर
स्वासा॥ तबे नई आ कासकी बाणी॥
रामकिपाल अंतरकी जांणी॥८६॥न बे
कह्यो क्यू करे बिलापा॥न्हचल होइजयो
हरिजापा॥छतो दरसन औसर जांनो॥अब
तो कलपसमो पर मांनो॥८७॥बोहाल्य ब्र
ह्म फेरबिसतरहै॥तबे तुम ब्रह्माके पुत्रअ
वतरहै॥अरु तुम होइहो ब्रह्म बिचारी॥ह
रिके मन सब मे अधिकारी॥८८॥कलपमु

पूराण मे रोतन गयौ ॥ तब मैं सुत ब्रह्मा कौ
भयौ ॥ तातें नारद नाम कहायौ ॥ साधपु
रुषकौ यौ फल पायौ ॥६८॥ तबै पितासूं पूछी
बाता ॥ कहौ कृपा करि मेरे ताता ॥ कृप
धरम का हामैं कीयौ ॥ तातें मैं नारद पद ली
यौ ॥६९॥ ब्रह्मोवाच ॥ सुणौ पुत्र अब
मम बाचा ॥ सति करि जांणौं मनसा बाचा
संतसीतसौं दुष न करही ॥ जतन करै प
ण कबहुं न लहहीं ॥७०॥ जो मम मंत्रादिदेव है
जेते ॥ गंध्रब सिध मुनीबर केते ॥ संतसीत
तिन कूं कैं दुष जेन ॥ सो तुम तात लहौं त्र
ति सुख जेन ॥७१॥ जो जप ब्रत पूजा जांनि त्र ने

का॥जिगजोगबिनबिनधिजेषा॥बेदबि
चारसासत्रजेते॥सुनसुनधरमकर्‍त
श्रबकेते॥७२॥इनसबहिनकोफलनहीं
जैसो॥संतसीतसुतफलहैऐसो॥सीत
प्रसाधमाहातमन्यारी॥चंत्रमुषकाहाक
हैबिचारी॥७३॥ऐसोप्रसाधतातमुमपा
यो॥तातेंनारदनावकुहायो॥ऐसोब्रह्म
आपमुषभाषी॥श्रीभगवानकहीऐसाषी
७४॥सोब्रह्मामोकूंसमझायो॥संतप्रसा
धमाहातमगायो॥तातेंव्यासतुमरोहबि
चारो॥बिद्याकुलअभिमानिसबझारो
७५॥त्रिगुणभगतिनिरूपणाकरो॥संत

निवाजे रांम ॥ ८५ ॥ दुहा ॥ किसन देह पावन
करै संत चरणरज लेह ॥ तारज के कूपर
हरै जिन पाई नर देह ॥ ८६ ॥ चरण रेणु
बंदन करै किसन देव अवतार ॥ किते
पतित पावन करे यूं साधूं संगति सार ॥
८७ ॥ जुग जुग मैं अवतार धर ॥ संत जनन
हित काज ॥ एकादस मैं आइ करि ॥ यूं नाभी
ब्रजराज ॥ ८८ ॥ साखी ॥ संत चरणजल पान
बिन ॥ मिटै न उर के दाग ॥ ब्यास कहै बहु न
हीं उपजै ॥ बिषइन संग अनुराग ॥ ८९ ॥ कबी
र चरणामृत प्रसाद की ॥ सबसूं मोटी घात ॥ कां
म क्रोध की फल बुझै ॥ कहै अगम की बात ॥ ९०

इती प्रसादी मारातम संपूरण॥ अथ श्री
सील कौ अंग लिख्यते॥ सोरठा॥ पूरण ब्र
स प्रकास॥ भयो ज आपना घट मंही॥ कु
बधि काम कौ नास॥ सील रतन पायो स
ही॥१॥ राम चरण जी कही॥ साषी॥ राम
नाम राजा भया। सील भया अमराव॥
सील बिना पक चैन नहीं। कोट करै उपा
व॥२॥ कै मल्या॥ राम राम रस नाम है
सील दया उर मांहि यासम ती न्हलोक में
और धरम कोइ नांहि और धरम कोइ
नांहि साध सुम्रति सब गावै जनम मरण

मिटि जाइ त्रिभैन्द्र चलघरपावै ॥ रा
म जनन तन मन केर हौ सुष बिसराहि
रांम रांम रस नां रटै सील दया हरि मांहि
७ ॥ साषी ॥ सकल सास न सुमृत कहै
पुनि कहै संत सुजांन ॥ तुरसी सील सु धर
म सभि ॥ नदी धरम को ऊग्यांन ॥ १ ॥ चौ
पई ॥ सील धरम सब ही को टीको ॥
सील बिना सब लागे फीको ॥ तुरसी
जो मुष सुदर होई ॥ नासा बिना न सोभ
न सोई ॥ ८ ॥ साषी ॥ ग्यांनी ध्यांनी संज
मी सूरा बोदौत अनेक कहै कबीर

तपसी घणां॥सील वान कोइ रेक।७॥
सील रतन सब स्‌ं बडा॥ सब रतनन की
षांनि॥तीन लोक की संपदा रही सील
में आंन।८॥सील सहत सुमरण करै
अरसु कृत की बांणि॥रजब मिनषा
देह का॥फल पाया परमांण।९॥संज
म तन मन राषीये॥संजम इंद्री प्रांनि
संजम सेती सांइ मिले॥कहै दास जगनां
न॥१०॥ चौपई॥ अलप अन अलप
दीपांणी॥अलप ही निद्रा अलप री बां
णी॥तुरसी ऐसी जुगति गहाबै सोही

सुषनलसीलकौपावै ॥१८॥ साषी॥
कबीरबुरा बिसनमेंदेसलू करैसी
लकीसेव सीलपुजितत्तलोकमें कोई
लहैसीलकाभेव ॥१९॥ उक्तं॥ भेवलहै
सोयूगहै जंबूसरजप्र जानि॥ सिषताको
प्रसंग अब कहत सनह चैमानि॥२०॥
कवित॥ एकसाहधनवंततासकेपु
त्रबजोई जंबूसरतसनांमसीलधरज
नमतहोई पिताकीयोहरबबौहोतपरण
बौआरैकीयौ परणतजेघरनारिआ
पऊतरयूंदीयौ एकबणायाकेधीआ

गति न्है सुणि मतो विचारै॥ कैरे पिता सूं
अरज पुरष जंबूसर म्हारै॥ मांनू चालि
जुग भयो सुणि नरै लागौ खारी॥ कन्या
करी धूमधाम तातत बजानि विचारी॥
दीया ताहि नारेल परणन चालि करि आ
यो जंबूसर ताहां परणण हाथ ताको छिट
कायो॥ बालांरे दीयो इक बेरा तनादिध
रैन आरो॥ विषे मके वृजान आप निज
ग्यान विचारो॥ चले वासा ते आप आइ
बैठे निज भवना॥ लब त्रीया मतो विचा
र कीयो ताके ढिग गज वना॥ जंबूसर बैठे
जो हां सुमरे ते भवने

जोडिकै ॥ दरुंछांण लागी बात ॥ १४ ॥ दुहा
जो अखसर बुत सा लध ॥ न जैरांम निजरए के
तरी याती लैता स मन ॥ न्हाषे प्रसंग बबेक
१५ ॥ सो प्रसंग अब कहत हूं ॥ प्रथम त्री
या बाच ॥ या मैं सासै नां दि क्रु छि ॥ प्रगट
जानो साच १६ ॥ दुहा ॥ त्री या करत ए
बीनती ॥ कांम अपरबल जांनि ॥ आगे
जाती सो इगी ॥ मारू ढोरस मांन १७ ॥ मा
रू ढोर कथा ॥ नी या कथा ॥ सोरठा ॥ पली
यां गो रू बाड ॥ मरिष बौया अकलि बि
नि ॥ कोसे बाजरे षुवार मारू ढोर कू जांनाए
१८ ॥ दुहा ॥ तारित पांनि फूल उषारखोदि

नतीनलगा॥छुटोयी है अलानीहोनक
वहु जाईऐ ॥१९॥ त्रीया० ॥ स्याहन दोकी
सोइ मरकट ते मांगसत्रयो ॥ होसे स्त्रं
मरकट होइ कीयो नलाल चंदे वपद ॥
२०॥ जव० कोईसा हाशेनाहि ॥ जगसं
मह मे न्रु बता ॥ रहतु थिरु तरफ ॥ सो नदी
कागजकर कको ॥२१॥ त्रीया० नज्यो
नपूरणराम ॥ अह सुष सो ना तज्यो ॥ जा
कीगीकन गम ॥ बुध ली जुलट कतरहे
जव० ॥०॥ इंजा के सुष नास ॥ पासंग नास
तराम पद ॥ रै लो चाट न ग्रास ॥ बोयो मति
षपांहतो ॥२२॥ त्रीया० ॥ नृपति पति सु

तरेक जो नि॥ चल्यो जु चंद ए पोन को
आगे मन ई जुहै नि॥ मेरो बोयो गाठको॥
॥२४॥ दोहा॥ जगत सुष लो है आदि
ताहि गहै आपपान नर॥ अरिष ओम जु
नाहि॥ तजु कुदाली कनक की॥२५॥
ए सुनि परसंग सार॥ सब कै मन आंणद ब
ढ्यो॥ कीन्हो गाढि बिचार जंबूसरसु कु
निकस्यो॥२६॥ दोहा॥ जंबूसरसु जोर
कर॥ त्रीया करत प्रनाम॥ पुत्र मरे सब त
गा ए॥ सुजस बढै रहै नाम॥२७॥ चौपई॥ न
व नोवा बिनि नारदै॥ सुणो सकल तुम जो ह
ऐक प्रसंग अदभुत अति॥ करहु समम भाउ

तो हि।र णाबहृण ब्याहि मात धरी आन
जायै जंम। तीन्न नजि बनकै गया।र स्यौ
कै ए नाम॥२७॥ अष्टादस नाम नआ॥
एतीन का हेत॥ ताको परसंग अबकत
सुण ज्यो होइ सुचेत॥२०॥ चौपई॥ ऐकन
ग्र मे बेसाता कै॥ सुत कंन्या संगजनमेता
कै॥ ताको तुरती नाव कढायो॥ सुलतांकु
मेर नांम सो पायो॥२१॥ छोटै नथ तरज
न मे जाई॥ ताहि नदी मे दी ऐ बुराई॥ को
ई नयतल निकसे जाई॥ ऐक माहाजन
ली ऐ कढाई॥२२॥ वाकै पुत्र न हो तो ऐका

ऐहाहरिदा न्यौली यो बंबेका ॥ लड कौ
लै कगंज रौ बुहायौ ॥ लड की संद तद
रवाजै आयो ॥ ३३ ॥ दे षपी जरो औरही
बनी ये ॥ लड की काठलरी है जनी ते ॥
हो क बके न्यौ ऐदो असप्याना ॥ ता कौ ब्यु
क्त नयै परमानां ॥ ३४ ॥ चौस्यां मांहि जुवै
ठेज बड़ी ॥ सुलतां मुड़ का देषी त बदी ॥
तामैं अेक मेके कहहैरै ॥ बेनर नाई सुल
तां कु मेरै ॥ ३५ ॥ सुलतां आं क बिचार जु देषा
ता कौ पीछे की पोवं बेका ॥ नाई बैन बिदा
ऐ आंन ॥ सुलतां त ज्यो रद त लै वो जानि जु [illegible]

फ़ै मैनात तकी यो त्रिहस्या गा॥ वनव
न बिचरे है बैराग॥ इस बयाप कै न
मैं की यै॥ बीर बदन घर जा सो दा दे
रूपे संत बबे की बुजत भो है॥ सुणि
सुणि बचन स्रवन कानो नै॥ गहे कु
मेरजी की धो गव ना॥ हेरत आयो बे
सां के भवन॥ ४७॥ सो बेसां ता की महू
तारी॥ ता के रह्यो कर घर की नारी॥ ता
के पेट को एक सुत भयो॥ सुलतान स
धायक रह्यो॥ ४१॥ सुलतान चली वा हा से
जबही॥ बेसां के घर आई तबही॥ जब

वेसासं बचन उचारे ॥२४॥ अदसनाता
बिसतारे ॥ ४१॥ अगरनाता कौ ब्यौरो
सुमता ब्रह्मा चौ ॥ कवित ॥ नगरनाइ
का आदि दूसरी माता मेरी तुमसुत
की मै नारि प्रगट कै सासू मेरी मम
पावंद घर नारि सोक के सदा हमारी
तुम्है तात का सुता तो हि दादी मै धारी
मम भाई की जोइ लगे तु ना बुज मेरे
छीलन छिति तु जिमारि कंन्या ऐसी बि
धि टेरे घर नाता घट विधि नए मांहे
धुमदायौ सोइ ज्यान अगति बैरागल्यौ

जव धूम सों बतो होइ ॥ ७२॥ दूहा॥
सुलतां के एह बचन सुण ॥ पुनर्लणा त्न
ज्यो कुमेर ॥ कोइ है कही बोकाह ॥ सो
अब नाषो फेर ॥ ७३॥ सुलतान बाच
कवात ॥ बेसां तारे बास करतो दि
नउ बो नाइ ॥ बाप कहे मेंतो दि तुम्हे
घर मेरा माइ ॥ बांवद पर गट मोरपले
में व धी तेरे ॥ सास्को नरतार सदा सु
सरो है मेरे ॥ मम दादी को षसम तासत्
पिदादी कही रो ॥ ऐसा चो अपराधितज्यां
बिनि सुषन लही रो ॥ नगति बिनां नागे

नहीं ए षट पाप अघोर ॥ अरक बिनं
कनं नास वैर जनी कौ तिम जोर ॥ ४४ ॥
भारथा ॥ ऐ सुणि बचन कुमेर वज
मास्यो सोसोइ रह्यो ॥ सुलतान आषै फेर
नानूडीया लौमफ वै ॥ ४५ ॥ कवित ॥
सि सं आइ संम आइ बीर मम माता जा
यो ॥ कुनि आइ कौ बीज अता जौ ती
सं गायो ॥ जो नि सो कि कौ पूत मोदी सा
कं त बिचारे ॥ मम पावद कौ बीरम ही
देव रहे म्हारे ॥ दादी सुत काकौ कलंकि
सौ बिधि तो ह लाको ए ॥ ऐसे गुमान बि

वरकेसंगतुम्हारोकोमो है॥ ७६॥
सोरठा॥ जिनका अरकुमेरा कहे
इमकेसे निसतरे॥ सुलतां कहये
टेरा त्यागकरी रोमे भजो॥ ७७॥ दु
हा॥ जंबूसरबुधिवान अतिदाया
नारत्यागपान॥ तरीया मन आनद्व
ध्यो॥ गयो सकल अग्यान॥ ७८॥ सोर
ठा॥ त्रीयाबाच॥ जंबूसर बड़भाग
धनितेरी माता पिता॥ जन मत ही ज्या
राग॥ छानरतोपर बसत॥ ७९॥ जंव

लै एक चोर बांधी पोट ज प्रीति करि
ग्यान भयो तसौ गौर। जंबूसरकौ ग्यां
न सुणि ॥ ५० अष्टनारि ऐह ग्यान सु
णि नहीं संसो सबगयो ॥ चोर भए गल
तान सील ग्यान का बचन सुणि ॥ ५१
उक्त ॥ त्याग बिना पावै नहीं सीलप
दारथ सोइ जो त्यागै या सील कू तौ
नृक प्रापति होइ ॥ ५१ ॥ कंजग्या ॥ जो
कोई त्यागै सील कू सो पावै नरक अ
घोर अपकीरत होइ जगत में अगति

मोहि नहीं गेर जगतिमांहि नहीं गे
रे और कासु कहीं आशनैं विष
तनर पूर नर मुष चटैन को शदेवा
दास फिर तास कूं जम मारे कर जो
राजो कोइ त्यागै सील कूं सो पावे
नरक अघोर॥ ५२॥ नासकेतपुरा
ण को॥ श्लोक॥ अतिप्रवेबसहुनी
स्त्री गमन करोति ज॥ सयाति नरके घोरे
सील लोपकरा नरा॥ ५३॥ टीका॥ ऊह
कालपुरष नारी बजो॥ लेम अ ने ब

है और ॥ सो लह लोप जो करत है ॥ सु गैते
नरक अघोर ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ मयाति
नरक घोरे ॥ यावत् इंद्र चतुरदस ॥ तेवे
यो निस्सरस्नेषु ॥ भ्रमते पाप कर्मणं ॥
२७ ॥ चौपई ॥ घोर नरक मैं नर चै जावै ॥ जा
के उपक छु कहत न आवै ॥ चौदाई
न्द्र बीत है जाई ॥ तावत रहै नरक मैं जाई
२८ ॥ चौदै स्युजनम पासा पावै ॥ ज
नम पाइ अति कष्ट सहावै ॥ जात्री या सु
बिषै कुमावै ॥ सै सबेरवा के यत्न आवै

३९॥सोऊपुरषहीजडारहे॥सेंसबे
रयूजांणीसोंही॥पीछे ड्रषमिहूँ मेंसं
हे॥ताडुषकीगिणतीनहीलहे॥४०॥
दुहा॥सुणतत्रासजनरककी॥मेंन
मेंउपजीएह॥सीलनकरु त्यागीए॥
जावेजावोदेह॥४१॥साषी॥सिष ह
रोगिरतेपरो॥जावेबाहो सिरतोह॥
एजुत्रासभलदोहियो॥पेसीलनं ग्रम
तिहोइ॥४२॥आगनिदरोनदीयांबहे
मेलकुंजर मारोध्याइ॥एजुत्राससह
प्रीतिसुं॥पेसीलनगायोनसुराइ॥४३॥

धनि आगता कौ सदा ॥ जाके सील र
तन ॥ सुपनै कां मन ऊपजै ॥ हरि अजि
कीयो जतन ॥ ११ ॥ अथ दया कौ अं
गा ॥ साषी ॥ सिर दै दया संतोष धन अर
राम जन अधिकार ॥ रामचरण वा
का सुफल ॥ मिनषा जनम औतार
१ ॥ दया आव हिरदै रहै ॥ लोभ लेस कुछ
नांहि ॥ रामचरण वैसा बहै ॥ जगति परी
कै मांहि ॥ २ ॥ कवित ॥ दया धरम कौ मू
ल दया सब तप कौ कारण ॥ दया करै दि
न सुधि दया जीव कै अघ टारण ॥ दया

होइ सब सिधि बुधि को अति परकासा।
दयाउ पावन सुष दुष को करि है नासा।
दया ग्यान उदोत होइ राम रूप निज पा
इहै। तातै राम प्रताप जन मांहि चितला
इहै॥ दया मुकति को पंथ संतजन सा
रा गावै। दया हरै दुष धीर नीर मैं तुरंत
बचावै॥ दया ग्यान प्रकास दया हरि
पूजा जांनौ। इतै फूल फल जीव नाहि
पूजा मति मांनौं॥ तातै एह विचार करि द
या धारि हिरदै मांहि। कहै राम प्रताप जन
हरिपद मांहि समांहि॥ ६॥ [illegible]

कंदस्यो फल फूल कूं ज्यूं आवै ज्यूं
षाइ ॥ मोटी उदबंद षानका आगणत
रस्या समाइ ॥ आगणतरस्या समाइ
दया की सुधन पाई ॥ जिन्याइ दी स्वाद
प सूं ज्यूं पेट भराई ॥ राम चरणं आगति
नर जम कै द्वारै जाइ ॥ कंदस्यौ फल
फूल कूं ज्यूं आवै ज्यूं षाइ ॥ ॥ साषी ॥
आण को एषो पाणी पावै ॥ निरषधरै नदी
पाव ॥ राम चरण साचा कहै ॥ ऐप सवांत
णसु नाव ॥ कंम स्याग ॥ कपडो पदरैसा
र गाज जल कूं छाणै नांहि ॥ पावै जीवत्र

संपदी घंटवुटकै [illegible]
दि पंस [illegible]
धरमकदे ननने [illegible]
पानैके [illegible]
गननलके [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

दव्यासजी भाषीयो आरण्यमैंसमभा
८।।वेदव्यासकावाक्य।।श्लोक।।संव
त्सरेणयतपाप कुर्बतिमद्‌जायते।।ए
काहनतदान्प्रोति अपोतजलसंग्रह
त।।२।।टीका।।कवित।।कीरजाहदरी
याववरसलगजालीनाषै नितरो
जीनामसी ऐकबासुरनसीराषै वैस
बसोवैपापसकलबिधिकेमेजैसा अ
ए कालयो जलपीयांकरमइकदिनमैश्रे
सा निरमलबुधिकेसैरहे प्रमलीनस
सार अबजौलौपोनीरकेजाकोकतबि

चार॥१०॥श्लोक॥ वस्त्र अंगुलमात्रेण
वस्त्र अंगुलमावनो॥ तत्वव स्त्र का एक
त्यगलेतत जलपी त्ब॥११॥टीका॥ किरत
चौडो अंगुल बीस तीस अंगुल रोइस्यो
बो॥ कामे कंप डोषू बगुढी बिनि असे
ढाबो॥ करो दोवडानादि सासमें जलकुं
छाणो॥ यूं निरमलकरि पावऐ कफिर अै
सी जाणो॥ जीवाणीकी लछ बिनारे ना
गिणो ऐ भेद॥ अबजीवाकी रष्याक क्त
सुणसकलऐ भेद॥ १२॥ श्लोक॥ तस्मि
नवस्त्रस्थिता जन्तू स्थापयेत जलम
मध्यत ए वू ह्न॥ वापी वे त्रायो सयाति परमा

गति ॥१३॥ टीका ॥ किरानी ॥ जल किरा
याऐ जाण पोत बस्तन मुषे दै लै ॥ पा है
गल णे तुरत चप कसी जल मे मेल्है ॥ ता
के फेर ३ गइ षे लि ह्वो एपं जल ली जे ॥
यूं सब जीव उतारस केल जल मांही
कीजे ॥ जी वाण ऐसै करौ पून रमले
करि पीव ॥ करम नार नर नां चूटै परमग
ति होइ जीव ॥१४॥ अथ मन कौ अंग ॥
सोरठा ॥ कबीर मन जाणै सब बात जा
णत ही औगण करै काहे की कुसलात
लैदी पग कर वैठ पड़ै ॥१॥ साखी ॥ राम
चरण मन मसै करा कदे न आवे हाथि ॥

राम नां ऊलागे नहीं॥२ मैं बिकारी साषि
॥२॥ के अर्थ॥ जो मन लागे नांव सं
तौ फीका लागे भोग॥ चौरासी फेरा
मिटै छूटै दीरघ रोग॥ छूटै दीरघ रो
ग ब्रह्म का पद कूं पावै॥ सुष सागर मि
लजा इ लहरि ज्यूं उलटि समावै॥ राम
चरण रामै ज्यां सधै सकल ही जोग
जो मन लागे नांव सूं तौ फीका लागे भो
ग॥२॥ साषी॥ कबीर मन कै मते न चा
लीये॥ छाडि जैया बाण॥ कतवारी का
ताग ज्यूं॥ उलटि अपूठा आण॥ ४॥ क
बीर काया कदली बन है॥ मन कुंजर मै

मंत षेवट गपो नरतन है कोइ जांणेसा
धू संत ४ कबीर मै जांण्या मन मरगया
मन तौ हत्वा न्हत मूवां पीछै उठि लगे
ऐसा मेरा पूत ५ कबीर मन मृतग है
षिके गाफिल रहै न दास साध जो हाल
करै जब लग पींजर सास ६ मुरली
मन लागै न रही राम भजन सं आइ अमृत
प्याला ना पीवै जहर हलाहल षाइ ७
मन मधा ज्यूं उठ लै विषका बनाम
फार मुरली राम क्रिपा करै तो थिर होइ
षावैदार ८ सती रूपा ला सात दिन रहै
जगत मै सोइ मन रूप बाला राम जन मुर

लीतिप्रतिहोइ॥१०॥मुरली मनकी कां
मनां॥मिटै न आंन उपाइ॥सो देखिनही थि
किरहे जेरसनां रांमक्रु काइ॥११॥कबीरा
मारूं मनकं टूकटू कदेहोइजाइ॥बिषकी
क्यारी बाइकै॥लुणतक्रु पिछताइ॥११
कबीरमनगाफिल भया॥सुमरण लागै
नांहि॥घणीं सहैगो सासनां जमकी दर
घेमांहि॥१२॥कबीरमैमंता मन मारिरे
घटही भीतर घेर॥जबही चालैपीठदे
तब आंकुस देदे फेर॥१३॥कबीर मनांम
नौरथ छाडिदे॥तेराकीयान होइ॥पांणीं

मेंधी निकसै ॥ तौ लुषा षाइनको ॥ १४ ॥ क
बीर काया देवल मन धजा ॥ बिषै लहरि
फहराइ ॥ मन चाल्यां देवल चलै ॥ ताको
सरबस जाइ ॥ १५ ॥ कबीर जै यौ मन चलै
तौ फेरर नांइ लगाइ ॥ मन चाल्यां तन थां
नही ॥ ताका क छुन जाइ ॥ १६ ॥ [illegible]
रामचरण अजि राम कै मन की बाग सैं
मूढ़ाइ ढीली करै न दीजीऐ ढीली बीफ
रजाइ ढीली लां बी फरजाइ ॥ अजकद रसांउ
पजावै मन कौ यौ दी सुनाव बी फरचो
साथ न आवै ॥ याका बेग मिटाइ कैचा

पणी [illegible]चलाइ॥रांम चरण मनि राम
के मनको बाग सम्हाइ॥१७॥पग बेडी बैरा
गज डेग्यान आषसी मांहि नांव तो पग
लघाली ऐ तब मन कदी न जाइ तब मन
कदी न जाइ संत जन ऐसे आट के घिरयो
रहै घट मांहि निकस बाहिर नही सटके
रांमचरण यू साध के दष्यो गुण निरतांहि
पगबेडी बैरागहै ग्यान आषसी मांहि
१७॥सुणत सुणत सरवण भरे गाइ गाइ
भरे गाल॥फिरत फिरत गो माथके पै मन
को वो ही फाल॥पै मन को वो ही फाल रस
गुण बरतै मांही॥आवगइ सब बीत कांम

नो बी ती नो दी॥ राम भजन न्ह चा बिनो
रोद जगत की चाल॥ सुणत सुणत सख
ए जेरे गाइगा इ जेरेगा ल॥१ए॥ अथ
करम बिपाक गीता लिख्यते॥ श्रीम
अरजनो वाच॥ केन पापे जाए अंधा
केन पापे दलद्रता॥ केन पापे जाऐ कुष्टी
कथ्यत जिनारजन॥१॥ भगवानो वाच
पर दारेरा चेंते जाऐ अंधा॥ परजबे संदा
ली द्रता॥ ब्रह्महत्या जाऐ कुष्टी॥ सुणि द्रो
पाम वनंदना॥२॥ अरजनो वाच
केन पुनै लभते देम केन पुन गजबाज
क केन पुनै लभते नर देही कथ्यतज

जना॥३॥ गौतमोवाच॥ हेमदान
लक्ततेहेम॥ भोमदानगजवाजके॥ अ
नदान लभ्मतेनरदेश॥ सुणिहोपाकव
नंदनो॥४॥ अरजनोवाच॥ केन
पापे मृतेनारज्या॥ केनपापेपुत्रनास
को केनपापेनरो हीजडा॥ कथंतेजनार
जना॥५॥ गौतमोवाच॥ रिणपापे
मृतेनारज्या॥ घाथीपापेपुत्रनासकोमो
नत्नंगकरोहीजडासुणिहोपाकवनंदनो
॥६॥ अरजनोवाच॥ केनपापेनरा
नरकजाएते॥ केनथा कोकेनपा
पेनरोरोगा॥ कथंतजि ॥७॥ गौत

वानी वाच ॥ के
ते ब्रह्म दोषी अपुत्र के साधुने
हि रोगी ॥ सुणि सो पाकव नंदनो ॥
रजनो वाच ॥ केन पापे जऐ बेका
न पाये नारी बिधवा ॥ केन पापे मृते
जो कथय तज नारजना ॥
नोवाच ॥ गरजन पावे जऐ बेका ॥ परपु
रष संग मतै बिधवा ॥ आदि पापे गलते
ग्रजं ॥ सुणि सो पाकव नंदनो ॥
रजनो वाच ॥ केन पुनेलजते
केन पुन्य सरीरं मलं केन पुनंप्रा
ते रूपं कथय तजि नारजना ॥

गो वाच ॥ गुपतदानल जे ते अरथ ॥ परउपगारे सरीर निरमल ॥ तीरथसना
ने प्रापते रूप ॥ सुणहो पाकवनदनां ॥
१२ ॥ अरजनो वाच ॥ केन पावे नरे
काणं ॥ केन पावे लूला पिंगला ॥ केन पा
पे करण नासती ॥ कथं तज नारजनां ॥ १४
गगो वाच ॥ डिष्टान पावे नरे
काण ॥ नगतिनिद्या लूला पिंगला ॥ बि
सवासघाती करण नासती ॥ सुणहो पा
कवनदनां ॥ १५ ॥ अरजनो वाच ॥ केन
पुने लचते राज ॥ केन पुनि धनारधन ॥ के
न पुन्य प्रापते बिद्या ॥ कथं तज नारजनां ॥

॥१५॥ भगवानोवाच ॥ तपकसटे किंन
तेराजे ॥ होमदान धनार धन ॥ पूरबदत
बप्रापते बिद्या ॥ सुणि होपाम हव नंदना
॥१६॥ अरजनोवाच ॥ केन पापे नरो
अमली ॥ केन पापेम जरा ॥ केन पापेन
ऐखान ॥ कथ्यत जनारजना ॥१७॥ भग
वानोवाच ॥ गोत्रगवने नरो अमाली
ऊसेष्ट दाने । जरा ॥ परसेज्या न ऐखा
न सुणि होपाम हव नंदना ॥१८॥ अरज
नोवाच ॥ केन पापे नरो भीमका के
न पापे गिरधवा ॥ केन पापे न ऐजे बके
कथ्यत जनारजना ॥१९॥ भगवानोवा

वा॥ सुरापाने अरे मा रुक॥ बिधवाग
वनेगिरधवा। मास आहारी अरेजेव
क सुणि सो पाम्रवनंदना॥२०॥ अग
नोवाच॥ केन पुनिल भंते सुरगा के
न पुनि च मुकति कां केन पुन लभंते ग्या
न॥ कथ्यत जनारजना॥२१॥ अगवा
नोवाच॥ सत वत लभंते सुरगा बहा
ग्यानस मुकति कां आत्मबिचारी अरे
ग्यानी॥ सुणि सोपामवनदना॥२२॥ इ
ती संपूरण॥ अथ गीतारथ
लिख्यते आय सिवपद

थो ॥ शिवउवाच ॥ चौपई ॥ दि
एदसासुरगहेसोई ॥ जाकेपरजामथुर
योजोई ॥ वोइससहंसजोजनअ
रा ॥ धरमराइराजबिसतारा ॥ १ ॥ तामे
वदाजमबममांने ॥ तासंगचवदाको
ईहीजांने ॥ जमचवदाकेनामही
ष्य ॥ पारबतीतोसूंनसीराष्य ॥ २ ॥ प्रथ
मधरमराइकबेलदीऊजो ॥ तीजो
गअधरकवचजजो ॥ बकोदरपंच
हमकालीया ॥ सपतमकणीयाअष्ट
नलीया ॥ ३ ॥ नवचतुपत्रनदबेलद

सो मरे कौ दादस परमा॥ ट या काली या
त्री यो दस गं मा॥ निज अरी जत च बदे
नं मा॥ ७॥ इती च ने दस जम के नामा॥
ता कै अन्तर बो हेत अमा मा॥ रे सब
धरमराइ सुष आगे॥ अग्या कारी नत
पर मागे॥ ५॥ सुणि पारबती ता के नाम
जमपुर माहि बसे इक गाम॥ जमपुर
के बिसतार बेता कं॥ निनि निनि बो
रौ करइ समझा कं॥ ६॥ प्रथम अघाबी
सकुम नारी॥ नरक धार बोसो बिधि बि
चारी॥ अधम पुरष ता मैं बहु डूले॥ लोक

परलोक पापकर फलै ॥ ७ ॥ जैसो पाप
करै तैसो भुगतावै ॥ जैसो नर
कू पावै ॥ अब देवी नैद कूम
पापी अधम सासनो मानै ॥ ८ ॥ प्रथ
म कुम तामि सुर नाम तिम करफरर
हे सब गाम ॥ परकौ बित हरे पर
परसुत बेच अन आचरौ ॥ ऐते कस
हे सरबर ष तामे भुगतावै ॥ जम
ना बक्त तरी पावै ॥ दूसरो अधमता
मे सुर कुम ॥ स्त्री लाभ्ररयौ बक्त उम

चषूहीए॥ करि तामैं नाषे॥ पूर असत्री
रत अल षही आषे॥ पराईछुति बुरा
ई आषे परसंग दे परनद्या आषै ११
दोइ सहंसर बरष तामें रहै॥ जमकंकर
की सासना सहैं॥ तीसरो रोवर नरक
कुंभकहीए॥ मूरत रोवर तामें लइए॥ १२
स्तक लेवे अन्याव ही गांसो॥ ऊगो ऊ
गीसा बिपति आऐ॥ ऊगसा चासाचा
ऊगा॥ त्रीऐ सहंसर बरष तामें घरऊग
१३॥ ऐहीरीति करि सासना देवे रोवर नर
क अधमगति सेवे॥ चौथो मायारूद कं
ऊ अग्यात॥ तामें अनंत रोग नररहै बिष्यात

१४ जौ घुरषागां व बांधलै चालै जी
बैसै त असमहोइ आलै अजब
म्हका अरस्तांन मजार आदि जंतबहु
आंन १५ अरु जंत मालके बासी
कैहतै जाए बिसवासी तै च त्रसदस
षताईनरका मादारुजकुम लुगते
रकं १६ पांचमो कुम्ह कभीनरक
हीरे सोऊ कुम्ह नरक संभरहीरे
लबासी जीवसिंघारे जंगलमधबार
कैमारे १७ जंगलबु सतपराईल्या
जंगलानेबांणफोडघरआवै
सहसरबुषकभीसेवै जमकी

तो सों आसै कंकर । राजा गुनी बिनाप
र जानै मै । बिनि पिनी साषि भोगही मे
मै ॥ २२ ॥ देष्या बिना अन्यावती करै
साध सतावै पर धन हरै ॥ ते अष्ट सद
सर बर षतांही ॥ सुकर मुष के कुरूप
रांही ॥ २३ ॥ नमो अधकूपकुंभ होइ
प्रेवा प्रमाण मांस हैसोइ ॥ माषी माच
र जीव संतावै ॥ जल चर थल के जीव
मरावै ॥ २४ ॥ तेन व संद सर बरष ताहिता
मे ॥ अधकूपकुंभ सास नाजामै ॥ दस मो
करम भोग कुंभ जाणै ॥ करम कीट संत

रीयो तां एणे॥२५॥ आयुरबी बुसतबाट
नहीं षाई॥ पंचोरजक चोर लेजाई॥ पां
ति भेदकरमान ही मारे॥ असत्री परपु
रषकं धारे॥२६॥ पिता पुत्र बेव भ्रान षा
ई॥ ते दस सहंसर बरष नरकां मांही॥ ए
कादसमो पुतलेक कुरू॥ वीटां भूररवो
बोरो उरू॥२७॥ असत्री तो भरतार सीं लोभे
चाकर धणीं चोरही भ्रोपे॥ उण ह सांमी
चाकर होई॥ धणी मार चाकर वरू सोई॥
२८॥ ते रासहंसर बरष तांई॥ पुतले कनरक
सासना पांई॥ सा दस सकल मलीन डर

गंथ ॥ मुधमबुसत संूच स्यौ अबंध ॥ ११ ॥
जेगोतर बिभ्रचारी होई ॥ काम अंधफि
रगोरोन कोई ॥ ते बारा संदसर बषकुम
मारी ॥ उरगंधकुम यू जाए बिचारी ॥
३१ त्रीरोदसवो नावज जोई ॥ मुधमनी
ल नरपूरज होई ॥ षत्री बेस चोमए उति
म बेस्पादासी रत होई उरम ॥ ३१ ॥ अरूनी
च्याकुलकी अ सत्री धारे ॥ तीतेरा संदसर
बरषनर कामारे ॥ चत्र दस मो बेतर नर
क राधरूद संपूस्यो सरक ॥ २२ ॥ उरख
लदीन मुनषनेपीडे ॥ अतीत संताहू अनी

न आपाडे॥सेंतान रोइ मारा॥ नही चाले
तो चदा सहंसर बरष नरकामारे॥२२
प चरस मोई षबेद आसाता॥ताते ने लग
रयो विष्याता॥सुरापान आर मांस आहा
री॥ आषेट करिके जीव संघारी॥२३॥ ते पं
चरस सहंसर बरष तोइ॥ ईषबेद कुंभ
मांहि परां ही॥ बे मसा नरक सो बोड सनं
मा॥सुधम जनावर आम ष आना॥२४॥
निरबल राख्या पसू सिंघारे॥ न षेति सारे
जीव फिर मारे॥
तिं ताइ॥

६

सपतिदसमोरेतपाकुमकदीरे॥नातीर
तनरीकूलदीत॥असत्रीअत्रकेमोचन
कारी॥अनकुवारीजोगविचारी॥३७॥
तेसपतिदससहंसरवरषअतिरोग॥रे
तापानरकजमद्वारेभोग॥अष्टदस
कुकरमुषकुम॥कुकरमुषजमत्रासेमु
॥३८॥गुणचोरअरकनघणहोइ॥ब्र
सवासघातबीहापलटैसोइ॥तेअष्ट
दससहंसरत्रुषताई॥कुकरमुषकेकुम
परादीचले॥नवदस्यमोकुमदेअबचल
सरपवा॥कुवोप्रमोचवचनताकेसरि

धणंए सूंषाई झूठी बात बणावै नाही ॥
४० ॥ गुरपरमेसुर लोपै सोई ॥ लोनवदस
सहंसबरष ता मैं जोई ॥ बीसमो कुमलोद
पांनगणं ही ॥ लोदासू लो पूछ्यो नाई ४१
चांमण वैसहोहमद आहारी ॥ मांस षाइ
लंपट परनारी ॥ तेबीसमसहंसरबुषनरक
रहाई ॥ लोहो पांन नरक मांहि पराई ॥ ४२
ऐकबीसमो कुम्हे ष्योगण ॥ पाले पूरव
रयो बोहो औगण ॥ पूजा जनां की मेटक
रावे ॥ अधम बास ना पाप दिढावे ॥ ४३
नितिने मन मैं बिघन पराई ऐकबीसमसर

सपति दस मोरत पा कुष्ट कहीए। तातीर
तनरी कूलदीत ॥ असत्री अनके मोचन
कारी। अन कुवारी भोग विचारी ३७
ते सपति दस सहंसर बरष अतिरोग रे
तपा नरक जम द्वारे भोग ॥ अष्टदस
कुकर मुष कुष्ट कुकर मुष जमत्रासे मु
ष ३८ गुरु चोर अरु कृतघण होइ वि
सवासघात बोहरा पलटै सोई ते अष्ट
दस सहंसर बरषतांई कुकर मुष के कुष्ट
पराही ३९ नवदस मो कुष्ट है अव चल
सरपवा कूवांद्रस्यो वं चल ताके स्रवि

धणं सूं षाइ झूठी बात बणावै जाइ ॥
४० ॥ गुर परमेसुर लोपै सोइ ॥ तौ नव दस
सहंस बरष ता मैं जोइ ॥ बीसमो कुमलोह
पांनगणं ॥ लोहा सूला पूस्यो जाइ ४१
ब्रांमण वैस होइ मद आहारी ॥ मांस षाइ
लंपट पर नारी ॥ तेबीस सहंसर बरष नरक
रहाइ ॥ लोहा पांने नरक मांहि पराइ ॥ ४२
एकबीसमो कुम है ब्योगण ॥ पाले पूरर
यौ बोहो औगण ॥ पूजाजना की मेटक
रावै ॥ अधम बास ना पाप दिढावै ॥ ४३
नितिने मभै विघन पराइ ॥ एकबीससह

सरब्रूषनरक पराई ॥ दो० ४३ बीसमोत्रष
एराकस ॥ ताकुरु मैं निति षावै साकस
४४ ॥ जा कडु साकडु बीरचलावै ॥ मग
मारत्र ग्पात बुला वै ॥ पालामेलचरक
तसोई ॥ तौ बाबी स सद सरब्रूषताभेजोई
४५ ॥ त्रा यौ बीसमो बा दे सुका त्ता वै ॥ बावी
समुषकैराकसषावै ॥ बड पीपलसे ब्रिष
हहावै ॥ कै वाबावरीबो हो तट सावै ॥ ४
६ ॥ अनाथ जीव जल प्यासा मारै ॥ तौ त्री यौ बीस
सहं सरब्रूषनरकांमारै ॥ चत्रबीसमोत्र्यथवट
कुट ॥ तामैं डुरगंध भूयो परचंम ॥ ४७ ॥ सुतात्र

धापुरषबिफारे॥बांहांदेहकरिजागतमारे॥
तेचत्रबीससहंसरब्रषतांई॥ञ्रघवरनरक
संजुगतेमांही॥४८॥पंचबीसमोजीकरलंक
र॥तांहांजमजीजरमुषकेकंकर॥षुञा
रयीञ्रतीतञ्राइजारे॥तावंकुटकबचन
उचारे॥४९॥ञ्रायञ्रंनमाइञ्रतीतनिरा
से॥ताकोकोटघरजाइनासै॥तेपंचबीस
सहंसरब्रषजांम॥जुगतेजीजरनरकांगं
म॥५०॥षटबीसमोञ्रगनिपीडनांमां॥ञ्रग
निपुरदाहासंपूरनोतांमां॥ञ्रमागा
तीतसिंघारे॥बाहकसहं..।

वै जैसोकरमकरैतैसोभुगतालै गा तिही
एकौपारनपावै ५९ पापपुनिकौनरलोक
रांही साचुरूकौन्यावपरांही पारबती
एकहीसतोसू सांमोहोइसोपूछोमोसू ६०
सुषमकहीबिसतारस्रुतिकीनी ऐसतिजो
रूततंबोधजुदीनो ऐहूंनरककोभेदबता
यो तामैंपापकरैसोपायो ६१ औरकोईकव
रकसन्यारा सोरामनगतिसूपारउतारा सो
संतपुरषरामकेनगता पारउतारैनामसंजु
गता ६२ जाकेटगकोछपुरषाजाइ पारबती
वैनरकनहीजाई ६२

म र्थिमाजीदजीकी आरेल्मा। लिख्यते
अरेल्ल ।। नानातुरी पलाए चौह टैवे
एणे टेढी पाघ कुकार छोडाके निर
षाणे रूपरंग अरराग पवन खूबह
गसा हरिदा बाजी दकेता कैवेषाएा
कबाडारदगया ।१।। सिरपचरंगी पाघके
जामो जरकसी ।। हाथमै लालकबाए
कमरमै तरकसी ।। जाघर चंगी नारिदि
षावे आरसी ।। हरिदावाजी दजे नरच
ल्याम साए पढतापारसी ।।२।। सिरमैल
वेकेस चले गज चालसी ।। हाथग देस

मस्रिरउलकती ढालसी ॥ तेताजी अ
न्निमानकोहावद राक्षस हरिहो बाजीद
ज्यूंती तरक पर बाजरू पद लेजा इग्या ॥
२२ ॥ अज ढा लटै ऐक रांमकानामकी
जोकोइ जांणै ढाबजिसीका कामकी
सिवसनकादिक सेसल गपारहै बोटरै
हरिहां बाजीद जमयालादे जाइ लगैन
ही चोटरै ॥ ४ ॥ मनमतमे मेमत मरेतो
मारेरे ॥ कनक कांमणी कलेकट लेतोट
लरे ॥ साधांसेती प्रीति पलैतो पालरे ॥ हरि
हां बाजीद रामभजनमें देरु गलैतोगा

लेरपवा [illegible]
द्गो [illegible]
मात्यामान [illegible]
दरिद्दावाज्ञा [illegible]
रमछादि [illegible]
गवकें [illegible]
मे वेलि [illegible]
दरिद्दावा [illegible]
हैचेरक [illegible]
मोमाय [illegible]
मोय [illegible]

का । हरि सौं बाजीद माया अपनी जी
व कपापी ठेटका ॥ ८ ॥ अटकन दीअ
सरालु अजूब है आकारी । धुरकाब
ल की सुमधणी की चाकरी । आखिब
दै चौधारज लौ त्यास धका । हरि सौं
बाजीद जे नर उतरै पार सोइ कायका
॥ ९ ॥ जनम जात है बाद याद करि पीव
कै । मुसकल सै आसानि सोइ जाइ जी
व कै । जाकै हिरदै राम रैणि दिन रहत है
हरि सौं बाजीद नहीं मुकति मैं केर ल
त सब कहत है ॥ १० ॥ कारीगर करतार

कत्त नरहद की या। कडधडलिंगवणाद
नुजागत नजरी या।।जोआपीमीजोडिं चे
लएकू पगदीया।। हरिहोबाजा द ऊपर
केलसचढाइकदीपगजोइदीया।।११।।का
रीगरकरतारक त्तनरहद की या।। दसद
रवाजाराषि सहरपेदाकीया।। नषसन
मरलबणाइकदीपगजोइदीया।। हरिहो
बाजीद भीतर भरी अंगार कै कू पहुंगदीया
१२।।बुरी नली का न्याव क संईया मांगसी
पगमेंरसडीमारि गुरधमुषटी।। मो
होकमदेसी मार नैति नरत्नुण
बाजीदहिना च्यारिकामित

१८॥ धन जोबन का गरबन
छापरबा गमेद कोस गया नी ॥ राग
डा फल कबन मै फूली या ॥ दरि स
द फूली माया देषि अजन क्यू भूली या ॥
घडी घडी घडी याल पुकारया करत है
आवग ई सबबीत अलप सी रहत है ॥ सो
बेकास अ चैत जागि जप पावरे ॥ हरिहा
जीद चल ण आतिके काल बटाऊ
रे ॥ १६ ॥ हरि जन बेग सो इ जो हा चरणा इ
हरदै उपजै ग्यान राम ल्यो लाइ रे ॥
ए वा गम अगति नहीं राम की ॥ हरिहा
द बी रहब तेरी जान को है किस काम १

श्ररधनांव पाबांणतैरे नरलोइरे॥ रांमकाइ
तजगमांहि नबूझा कोइरे॥ जगकातै जभि
मांन बिलै होइ जाइगो॥ हरि हां दसती के
असवार कुता क्यूं खाइगो॥१७॥ पीव चल्य
परदेस क जोगन भै नडी॥ कोना सुंदरा मा
र अनूती मैल ई ढब्या॥ सब ससार अलष
जगाइया॥ हरि हां बाजीद ना सुरति वै पीव
केतनसी पाईया॥१८॥ पीव चल्या परदेस
कताला दे गया॥ हिवैरै बजर कुवारक कुंजी
लैगयो॥ औरं घणा रंगराग बोहोतकर खोव
णा॥ हरि हां बाजीद वा साइ ॥

१७ ॥ धन जोबन का गरब न करणां बीरे
छापरबूगमेद कोंहा गया नी रे ॥ राह
डा फूल के बन मे फूलीया ॥ हरि ह
द फूटी माया देषि अजम क्यू भूलीया ॥
घडी घडी घडी याल पुकास्या करत है
आवग ईस बबीत अलपसी रहत है ॥ सो
वे कोंहा अचेत जागि जप पावै रे ॥ हरि ह
जीर चलणां आखिर के काल बटाऊ
रे ॥ १८ ॥ हरि जन बेग सोइ जोंहा चे
हिरदै उपजे ग्यांन रांम ल्यो लाइ रे ॥
ए वो राम नगति नहीं रामको
द बीर्दबक्तपी जांन कोंहा किस

अधनाव पाषो एतरै नरलोइरे ॥ रामकह
तनग मांहि न बूझा कोइरे ॥ कमकते उन
मांन बिले होइ जाइगो ॥ हरि हां दूसती के
असवार कुता क्यूं षाइगो ॥१०॥ पीव चल्या
परदेस कजोगन मैं नहीं ॥ कोना सुंदरा सा
रअकती मैं लई उठ्यो सब संसार आलष
जगाइया ॥ हरि हां बाजीद वा सुरति पै पीव
कंत नहीं पाइया ॥११॥ पीव चल्या परदेस
कतजो दे गया ॥ हिवरै बजर कुवार कचो
लैगयो ॥ और घएा रंगराग को होत कापेष
एा ॥ हरि हां बाजीद वा सोई सैता प्रीति और न

हीदेष ता २० वाप्रीतम कै काज दिवानी
मै न्रइ लष्लौ गइ माहि अकेली मै गई
हाथि बपरा लेइ अलष जगाइया हरि
हा बाजीद वे सुरति वे जाव कहि नदी पाइ
या २१ कसी पै जाइ सलाम हमारे राम कै नै
नरह फडलाइ तुम्हारे नाम कै फल गया कु
मलाइ कल्या जी जावसी हरि हा बाजीद इ
स बाडी मे फेर अबर नही आवसी २२ जो
मलतो ताराम क बैगे ताकमे दिना च्यारि कौ
रेगा मिले गा पाप मे साइ बेगा सं माल जमांसे
राइ है हरि हा बाजीद जम के हाथि गि८ (
पटी कापाड है २३

१ दतकहूंकै कपिल जी बिंदीजमूम
तसार रांम चरणामा ह्वाराजिंदै प्रगटकेलिये
वतार ८ रांमचरणहै औतार
औ इसीयोकलहै मंझार पारकोजिनरधार छो
णनिजततनाकोइमूलकहै और जाकूं नाहीनें
कबोर पावतहै नकघोरसोहीघाविता जगतके
जडघीजीव हैबेतिनिपापनीव सुमैनेनिजपीव
माहाबुधहीण ऐसोमाहाकलूआयो रांमप्र
मनांहिनायो आंनआनमत भायोकोजनताक
भ्रण जिंदै रांमकरिकिरणाविपधारो आपिये
सुणि ग्यानना ध्योकरि निरणी बोहोजीवतारे
रांमचरणरांमरूप ब्रह्मकेजहेसरूप नगतिके
जनिजरूप ऐसेततभांरलेकाढकेजेसेग्यान
न

ॐ॥ है मुरलीराम माहाराजि का दा मे सो
नागा ॐ॥ नेत्र जागरत्र आप ताप बोहोजी
बोटारी॥ ग्यान न्न गति बैराग सील संतनैकी
नारी॥ एक दिहने कीजांन बांनत्र्मग्ण नै की
बोल्या॥ मिल्या जिग्यासी जी वतास का सांस
षोल्या॥ दिसूं दिसा प्रमां निजांनि मुरली प्रत
पा॥ चरचा प्रसंग मिष्ट इष्ट इ करां मसुजाप
॥ राम चरण प्रताप सूं मुरली नगेबगमद
त॥ मूरतराम कर जोडि कहे महमां कि सो
जत्रंत॥१३॥ ॥माला॥ गुरराम चरण प्रताप सूं
मुरलीरस इ मंतरक्षा॥ रहोरामहीराम

कोंमकीजडांगयाडी। प्रेमकेंमकमेटि[illegible]
त्रधिकीकडीयांझाडी। [illegible]
जब्रतीयोसबजगमांही। [illegible]
बकेंमप्रेमकीसंख्यानांही। [illegible] सभ्रपम
रजारमेटिकैचात्मायाग। [illegible]
कालब्रतीयोऐकमधा[illegible]
रिहरिश्रवतारन्यायसोजी[illegible]
ोमधरिनामकदूकेंदीजो[illegible]
केरूपकोंमरांवागकेंमास्यो [illegible]
सभिजांनिकंसक्रोधहीसियामो। [illegible]
रुपटप्रपंचमटमनबा[illegible]

सादीयै निवासा॥ नां वटैकर कतारी वे॥ ९॥ टेकरि वांनांरत्यान छांनां॥ तनमनधनल वारी वे॥ देसपतो लगप्रगट जरा॥ देसा मा लमसारी वे॥ २॥ सोकोई मिलीया लागज मुलीया॥ सांसास वे निकारी वे॥ सुरली हरा मरत उजागर॥ पीया ऐकौत रस्सारी वे॥ ३॥ नेपुरा रमपुरस्त्रीआ पविराज्या॥ जिगासी नरना री वे॥ रामइ वारो सतसंग सो के॥ कौ लौजी वजनमसुधारी वे॥ ४॥ आगम दे: पिया नौ॥ कूगा कूगी मारी वे॥ ५॥ रपुरधं निजांदां॥ मुरली

छेतरधांमचूंतरोसोकौ।रांमसन्तासुषका
रीवे।दासजिग्पासकरैऐसमीयो।बोहोवि
धसूंजसवारीवे।२।फागणविधऐकमको
समीयो।बांचैकथ्यासकारीवे।सिषसाषास
तसहजसरूप।जिग्पासमंगलउचारीवे।
७।आयाञ्जाज्पांजाइसमाया।पूरणब्रह्मम
झारीवे।मुरलीकीमहमांअतिन्यारी।मूरत
तापरवारीवे।८।पद।राग।७।३।सिषस
षाजग्पासकाहा।तासावोहोतअनेक।गु
रमुरलीप्रतापसूं।न्यारीधमबबेक।१८।ऐ
कोकंसन्त्रधिकअति।सतगुरकेप्रताप।

क्रोधक्रोधउदाससंतसूत्रभिकयीयारी
मायामोहोउदासपासिकीरासीकाटी
ममतविपतिउदासमुकतिकीचढीया
घाटी॥तनमनसूंउदासदासतोरामगु
रांका॥पापतापउदाससुषतौतन्यासु
रांका॥रागदोषउदासरामजीलगेपीया
रा॥कुबधिकुबधिउदासजगतसूंरहैन
यारा॥क्रमकर्मउदासगुरांकूंअरप्याअ
पो॥कूडकपटउदासनेष्ठमैंपाकोठापै
लोनषोनउदासपोकरसिव्रतकरारी
स्वादबादउदाससासबिचिरामउचारी

हरषसोगउदासआसतिहूंपुरकीयारी॥
जातिबरणउदासमांमतोमनकीपारी॥
जगतजालउदाससीलसतिह्रदैलीयां॥
आनमानउदाससाचसंतगुरकूंदीयां॥
मोहमायाजिधराजिउदासआससबजगक
तजीयां॥नांमजथागुणधारिरांमकौनांम
जनजीयां॥रांमलगनमनमगननयोह
तनेगुणांसासेनहीं॥गुरमुरलीरांमप्रताप
सूंनांमजथागुणहैसही॥२२॥छपै॥तुमगु
णबारनपाररांमरटिनरोजसूरा॥निरा
धारनिरआसबासनांकीनीचूरा॥म्पंन

जगतिके रूपअनूपमआसतुमारी॥ मदमोत
रूं तोरूं नहीं है तागतिमारी॥ गुरदेव उदासीरा
मजीतेजपुंजके नूर॥ सूरत रामके आसतुमा
रू औरसूं दूर रहै॥ उदेत यो बैरागत्यागकरिके
रिजसासो॥ दास गुरांका दोइ जीवकों न लौ बि
चारसो॥ सीलदयाकूं धारपार लो सागर रूं वा
रामनामसूंरत जगतसूं रहै ज जुदा॥ मन मेवा
सी मारका मुरजाद बिचारी॥ जीतिली यो जग
रूं वमं ति त्रिबेद करारी॥ छपै के पद लीअ छा
सो मेरा गु देव॥ रांमलगनके उरबसो करूं अ
पंकतसेव २७॥ सबद ईदो॥ अहो गुरदेव उदासी

रांमजी महरिकरे हरिनांमदीयो है। आपबिनां
कृपा आप देवै हरि आप अतो जनतो खलीयो
है। आपजागर है बुद्धि आगर ॥ भूतसुप ति
सूष नषी यो है। मनोरथ रामस जामको ॥ ति ति
सुरतिमे आपको ध्यान धीयो है॥ ॥९४॥ कित तारगु
रमुरली प्रतापपाप को मनक जानो। सतगुरको
बैन श्रेन हिरदा मे आनो। रहै जगतसू ह व न्यूरसा
हिबकी जान्यो। नहीं राषन हीं दोष बाचतो गुरुका
मान्यो। अचपति जू ॥ रागजू जनक सदा ॥
नमन जू जह मानसेस बिधि सुमरण ध्यानी। गो
रषजू गलतान रिषब जू जानै ग्यानी सुषजू
गह्यौ जत तत लेका रिज कीन्हो। अैसा गुण
मद षीया सतगुरु नदासी राम भौं गपानदास गुण पूजै

विदेवै पहूं च्यापु मपद धांम मै ॥ २६ ॥ कं॰ अस्या
सतगुर उदासी रांम जी पूरण ब्रह्म प्रमांण ॥ त्र
द्वतु तम ह मांजा सकी क रोन जाइ बषांण ॥ क
रोन जाइ बषांण ॥ ल त्रमनिवासो ॥ रटै रांम
हो रांम काम कै मंन क मारयो ॥ जिग पासी रांम
रम्मू रत क पलप ल तरि मै आंण ॥ सतगुर उद
सी रांम जी पूरण ब्रह्म प्रमांण ॥ २७ ॥ संन्यासी ॥ धर्
म कै सम गुरदेव निज आप है जाप जपादी सर्व
न लोकी ल्हो ग्यान दाता अर ध्यान दाता दे
सी उस मत तात णे पोषदी ल्हो ॥ आदि अंत
रगिरी कर सिंत नगाई ज्यूं सूर ॥ णेपत मपग
दी ल्हो ॥ पांच पचीस करी स करि पास करि रांम
हो रांम रट रसन लीन्हो ॥ ध्यान कौ धुन क अरस

बदकाती रहै कु बांणगुरु अपांनकी आंणा सोई कों
म अरु कोधक मारके गरद में मेली यो भैली यो
अगपांनको नग्र जो ऊ ओमे तो मूल निज सतगुर
देव जनदास है जासकी सरणि नोहो जीव आयाणप
नेंद ध्यानदै नगति बैराग देना बप्रताप कोनंद पाय
॥नेंद निजनाद को आप बिनि कं ण बिधि जानत
मानता जगत का भ्रम सो डूबत्या अरु बसन सिंघ
आराधतु मकरत है धरत है ध्यान जनदरस जी
डू। जनदास जदास ई लषाण जाणि। जासकी सो
नोर समरबचा षोतु मारी तो मरु मानिति आगम
तिगम सो आगम निति निति आषै॥ धनि गुरदेव
निज आपदो मापअरतो लमै   हीराम
प्रेमकरजो

॥२८॥ सवईया ॥ पूरण ब्रह्म प्रमातम कू परहै रूप त
गति के आप सदा ई ॥ कांम क्रोध लोभ कं मारि
के कारिकै धूरि मै गरद मिलाई ॥ आंनन मांन
और उपाधन लोक अपंक तरांम कं ध्याई ॥ गु
न देषी या उदासी रांम मै दोर घर रांम जू सू ताजि
आई रहै ॥ कवित्त ॥ माहाराज उदासी रांम प्रेम
पद के अधिकारी ॥ निबासी नि आस बास नास
क जनिवारी ॥ प्रेम जोग कं धरे सुर ब्रह्म कं जो
री ॥ प्रेम ज्ञान पत म जप प्रेम सुष के सागर ॥ प्रे
पद अधिकार प्रेम बुधि नके आगर ॥ प्रेम सुधं
ली एकब्रह्म के मन के नजन ॥ प्रेम ब्रतिक धारि
माहाराज हूरी पंकज ॥ प्रेमगरकू सें लागरांग त्रि लोकं
तोड्या ॥ माहा बैराग आरूढ़ रांम सू प्री

रस्री प्रतापसूं ॥ ३० ॥ प्रेम की बीनती संत उदासी
आपसूं ॥ ३१ ॥ सोरठा ॥ सेव्यगुरु से आंमेय जा बि
च्चिमे एक बात है जा दादू गुरसूं नेट ॥ मुर
ली रांम महाराजसूं ॥ ३२ ॥ दुहा ॥ जनसूं गपा
नजरूप ज्यो ॥ तजीया बसनकु संग ॥ सो जब्रुतक
धारीयो करण लगपासतसंग ॥ ३४ ॥ कवितमात्
हो ॥ मुरली रांमगुरदेवजी ता सिष उदासी रांमज
॥ अगारासे चौतीस चैत बिध संगति होई ॥ मन
मैरूप ऊमोगपा न नगति करि न जोड जोई ॥ गुरमु
षिस णी योगपानमानसब दूरि देधा सो ॥ रांमने
छा पत्र आपसो आ फिर समाद्र ॥ गांव धणी चेआ
दिबादिक रिस बैरि सा ई ॥ सूरापणो बोहो गाढ आ
कि किसकी नहीं मानी ॥ षातर राषी नांहि किसीसे

३५ ॥ दुहा ॥ आगम बचन जनाषीया ॥ सतगुर
नदासी रांम ॥ धूम रै सिक आषिकै ॥ पाधारे प्रम
धांम ॥ ३६ ॥ कवित ॥ सतगुर नदासी रांम आपमु
षि दफुरमाई साधू बैठ पास ज्ञा सकू रैसि
बताई साद्धि पुरे पनाम रांम ही रांम कहो जो
डु ल्है रांम मा हारा जि जा सस् मा लिम की जो
मनसा बाचन बाच सुरतिमे चरणमे ली प्रग
टक हुब नादू दे रुतो जाणी कहे ली ॥ उधव गंग
दास और हरिदी के नगता रांम दास ले आदि
और कोई संत जल गाता ॥ सरबस तां सदन
कहीयो बंदन रांमा ॥ बो है त अरज मा हारा
जिरा षीयो मेरी मांमा ॥ सिष साषा कर जोडि
ह मे को हो का हा फुरमावो ॥ रांम रांम मुषि कहै

ऐहैसेसमूरी तिसब। सतगुरस्वामीश्री
प। ब्रह्मपदमै मिलिगया। रामचरणप्र
कुपे [illegible] अबगतिकेअव
जेन रामचरणप्रगटभया। जासिषमुरलं
मरामकेरूपसवाई। बकेपुरसमनजी
सकीसोभसवाई। तासिषउदासोरांम
नेकरिब्रह्मसमाया। हरिगुरकैप्रताप
सेरिनहीधरिहैकाया। आदिअंतिलगि
रेषनहीइनीथारी। रांमरांमरटिरसन
नेकहरिनिवारी। संमतअठारासेअक
मगसरमासबिचारी। सुकलपषबुध
तिथउबारसम्बोइतीयारी। मकरस्य

योदिवसजिसबिरीयांतनत्याग्यो॥गुरघर
मेंगलतांनमनतोहरिपदलाग्यो॥गुरमु
रलीप्रतापसुप्रमधांमप्रापतिलया॥अ
बगतिकेअवतारजनरामचरणप्रगट
नया॥३०॥३हा॥मुरलीरांमप्रसादराजि
॥हैमोरेप्रतापा॥राइपुरतीरथसदी॥जा
बिराजेआय॥४०॥कवित॥प्रमधामके
हिरामरटिजाइसमाया॥अलयतिपु
अवतारधारिहरिनूपरआया॥बोहो
पधारेधांमजिसबिरीयांअधिकउछा.
होलरदमांमांबांकीयाफेरितोहरिजसगा

।त्रयंमनुजतनगद्यो। आपनोजनम।
।रा॥४१॥सारम।लीजेदिन न्नात्याग ।
।जोणो कोपधराइकरिप्यार जजन
।ब्रह्ममे॥४२॥कननमा
।हाराजिकीन्हइब्रह्मपदकीमु
ब्रह्मपदजाइपाइदसुषकीधाग त्र
सुकेमांहिजाइकेकीयासवाग नया
।चितचंदणइछ॥सोइ श्रीफ
बेवा॥सदननपा॥दोइ
।प्यारकरिताहिपधराइ
तारिनरबालकआइ

आवैखाल॥करतनआवैखाजबानरै नपेत्रकारी॥हिरदेवदेजुसेदगुरविन्द उतिउषनारी॥रामप्रेमकोबीनती॥गरु बदेक्रिपाल॥तोबीरामतिकरिगयासत गुरदीनदयाल॥५०॥हमविलखनयाहीर हेतुमकाहाकीयोमहाराज॥सरणागत तुमराषीयोगरुगरीबनवाज॥गुरुगरी बनवाजसाजएमेरोसुधरै॥करुनेहतउ तजाइजाइतोकाजहीबिगरै॥अबसर णाकीप्रतिपालकरिराषीयोमेरीलाज॥ हमविलषतयाहीरहेतुमकाहाकीयो

माहाराज॥ ५१॥ कवित॥ सतगुरउदासार
नरांमपदरांमतिकीन्ही॥ सिषसाषा
जिग्यासस बेमिलिमननमेंचीन्ही॥ होत
बोहोतदिलगीरधीरनहींतनमेंधरिहै
गदगदउरबकेपेमनेणांमेंनीझरझरिहै
हरिचंदआजोआनाथबनकेमांहिसि
धाया॥ वेसोवरयोउषमुषनहींकदबे
आया॥ गुरबिछुरनकोबारकोउषमुष
कह्योनजाइ॥ रांमपेमकरणाकरेरा
षोमोहिसरणाइ॥ पर॥ ५३॥ आबम
नबिचारीहो॥ रांमगरूनहीहर॥ परआं

ज्यूं आपी करै॥ रह्यास कलुखरयूर॥५३
करणी तन काइम रह्यौ॥ छाम्यो आंनस
रीर॥ कारिज तौ थरता नहीं॥ कारणसद
सधारा॥५४॥ गुर की पदत बिलास को॥
वारपार नहीं छेह॥ दास बिलास जकार
णे॥ मह मां नाषी रेह॥५५॥ गुर मह मा
कही अति अगम॥ प्रति निह पावत पा
रा॥ सेस मुखां नाषे सहसा॥ निह आवत नि
रधारा॥५६॥ गुर खपता पमह मा अगम॥ ना
रा॥ कही अभिक तेजे क
॥५७॥ र मह मा तो॥

हीया मंजारी वे काहा कहूं अब जोरन
जो काढूं प्रांनति कारी वे २ बो दीत दिना
चौतां ओदे बातां बिगतां [illegible] सारी वे
आई गांण अबसा ले निसदिन जाक नहीं
पड़े ल गारी वे ३ दरसण वे ता पांच जदेता
दी कंकर सिर धारी वे मीत चरणां मृत पद
न चै ता [illegible] अपारी वे ४ सुण देता सो

पचू असी बणाई वो॥ घड़ी पलक नहीं रहलातु
मबिनि॥ करवतश्रा छौ॥ बाई वो॥ टेक॥ बालक
ज्यूं बतलाता स्वामी॥ तब सुष अंतरपाई वो अबकै
सुषतो चीतां आवे॥ सदहरि सदहरि जी वजाई वो॥ १॥
बा सेवकस्यूं तुम मोटो कीन्हो॥ कीन्हो चरणांमा
हीं वो॥ सीतप्रसादी दे देपा स्यो॥ सो सुषतो अबनां
हीं वो॥ आछी कीन्ही असी बिचारी॥ सतगुरधाम
सिधाई वो॥ मोरा अंतरनी तरि छौ जी॥ धुणउपजे
त्रषाई वो॥ २॥ हो स्वामी तुम कांई कीन्हो॥ मो मनमै
नहीं जाई वो॥ राति दिवस मै चरणां रहतो॥ सो अबन
हीं सुहाई वो॥ ३॥ जोड जोड अब छाती कबके हीये
रूकनमाई वो॥ गुरदेव उदासी करी उदासी सोड

पकड्यो न जाई वे ।।५।। स्वांमी मांहौ सतगुर मेरा
घटि घटि रह्यो समाई वे ।। रांम लगन यूं ग्यान वि
चारो मन मैं धीरज ल्याई वे ।।६।। [illegible] ऐसी का हा बि
[illegible] हौ गुरदेव उदासी दाता ।। [illegible] बैरा
चारी ।। [illegible] तु म तो स्वांमी धांम पधार्या ।। [illegible]
ईकर व्रत धारी ।।१।। जक नहीं तन मैं छत्ती यां फाटै
बिरह अगनि तन जारी ।।२।। चक बीजू रै कब दि
न रूगो ऐ मैं दास तुम्हारी ।।३।। मण बिनि तिन दग
मात बिनि सुत ना रोइ रोइ अषीयां फारी ।।४।। ज
ल बिनि मींछी फल बिनि पंछी ।। प्राण कं मोर पुक
री ।। प्रीत तजत न्यारे पंथ निहारूं ।। नहीं सूरत
हारी ।। गुर बिछुरी यां सूं पत न पावै बीतां

तत्रकारी॥थाकवरपदौनुमलेगाया॥स्वांमी॥जैा॥
नषकैधारी॥ए॥रांमलगनकेत्रि॥ज्ञषतमे॥संतोस
तगुरमोषिपधारी॥१०॥पद॥३॥मोषिपधीरतलोक
रिजसासा॥केरिनपाछोआया॥टेक॥कमूजग
आवैहरिपदपावै॥गुरमुखलीपदपाया॥१॥सुखलो
कमैहरषछावा॥सबदेवतनदिखाया॥२॥लखी
पधासापावनकीन्सो॥मनसिलिमगलगाया॥३॥
धर्मराइकैआनंदरूवातीनदेहामननाया॥४॥जा
गोकरिकरिआघालेवै॥त्रिबासकजनआया॥५॥
सबसूरलीयाआघाचलीया॥रंकारपदपाया॥६॥
म्रतिलोककेलोगइ भारी॥मनमेबोहोपिछताया॥
॥७॥उदासीरांमजीमोषिपधारया॥
॥श्रीरामलगनकाहा

सूंदर सरहोइ साच समाया जसां जगति की जुग
ति रांमतौ रस नां गाया ॥ पताप सब काप जापन्न
जपाहीजपनौ रहै गुरां के सरणि भराण ज्यो मेटो
अपनो रांम रंग न साची कही या मै कसर जर्दे
ही जन किसोर कै सोरठी बै समै गुर मुरली पद
लागा रहै १ ॥ कि सोरदास करडी करी
बालपणां के मांहि गुरमुरली प्रताप सूं कुबधि
उपजी नांहि कुबधि उपजी नांहि जत की जुगति
बिचारी रांम भजन प्रताप कांम ना हरि लिवारी
रांम रंग नबंदन करै बार बार कर जोर पूराण
त प्रमाण थी जा ए दास किसोर २ ॥ करणी
ज्यां की अति घणी बरणी जावै नांहि गुर धूमीज

दास किसोर ॥ ५ ॥ ० रामचरणपदरजर
गी ॥ जाको माहातम जांणि ॥ साहिपुरो तीर
थ सही ॥ राम उगान बाषांणि ॥ ६ ॥ साहिपुरो नि
जन ग्रेहै जो हो है क्षेत्रधाम ॥ किसोरदास
तनत्यागी ओ ॥ रटत राम हो राम ॥ ७ ॥ रामज
न माहाराजि की ॥ प्रगट जांणि हजूर ॥ किसो
रदास फुगी तजी ॥ जन न करे ऋर पुरि ॥ ८ ॥
संमत अगरा त्रैसगै ॥ सांवण पून्यू तिथ प्र
म धाम प्रापति हुवा ॥ किसोरदासजी संत
॥ ९ ॥ किसोरदास माहाराज कूं बारबार प्रनां
म ॥ राम उगन है आपको ॥ बांनां जाट गु नाम
॥ १० ॥ किसोर तुमारै दरस को ॥ जु सरदी मन मांहि

कुसकिसी बिधिपूरीए॥ हीयो हमे हण जो हि:
११॥ किसोर तुमारे दरसकी॥ करवत बहगी त्रैन
॥ कारसा फिरि मिलता सही॥ तो कहते हितके
बैन॥१२॥ मन की मन मे रहै गई॥ तन की तन
ही मांहि॥ किसोर तुमारे मिलण की॥ बाहरि का
दाजण हि॥१३॥ बाहरि कहूं तो लजमरूं॥ कज
त्रबत्रा वैकूं न॥ तुमतौ हरिजन जिहरि रूवा॥ जे
से जलमें लूंन॥१४॥ लूंण मिल्या जल पद मही॥ तु
म ब्रह्म पद ही जांणि॥ गुरमुरली राम प्रताप सूं॥ पाए
पद निरबांण॥१५॥ गुर मिलीया मोटा सही॥ टोटा
ना ने तुरत॥ राम लगन के उरि बसो॥ किसोर तुमा
री सुरत॥१६॥ प्रेम रतन में मन बसो॥ सूरत सदा उ

रिमांहि ॥ किसोरदासमाहाराजकी ग्यांनदास
बसिजांहि ॥ १७ ॥ अथ रागभैरुं लिखते ॥ धंनि धंनि मा
हाराजि राजगरूजी उदासी ॥ चरणसरणिमरा
मिटै कटै कालपासी ॥ टेक ॥ तज्यां स्वाद बाद रहतेम
जत अविनासी ॥ ब्रह्मरूप अनूप अगति मुकतिप
रवासी ॥ १ ॥ तुमे राम मोरस्यांम नामके उपासी ॥ मो
हि देव देह तैं न सेव सुषरासी ॥ २ ॥ माहाराजि उदा
सी राम रांम गुण गासी ॥ राम लगन लगन मगन अव
रण रज प्यासी ॥ ३ ॥ पद ॥ १ ॥ धंनि धंनि माहाराजि राज
आय गुण नारी ॥ आप जाप जपे राम कांम नांनि
वारी ॥ टेक ॥ भ्रम ध्यांनी ब्रह्म ग्यांनी कलके मंझारि
बिपति फारि सुमति धारि लगी रांम तारी ॥ १ ॥ ब्र

हमां हिओतपोतको तिजगटारी॥नजै रांमतजै
कांमकाम मांमपारी॥२॥संतसूरनूरमुषिडुपरू
षजारी॥रटैरांम रटै कांमतज्यां बांमयारी॥३॥जी
वकाजिबणांजि हाजकाजराषिमारी॥नलेयारि
नलैतारिला रिलज्यो धारी॥४॥बकै संतलीयांतंत
जतसतधारी॥तजिबंसनयाह्संसजसजगसारो॥
५॥माहाराजि उदासी रांमतुजिचरणवारी॥रांमलु
गनलगनमगनआपकोबलिहारी॥६॥पद॥राग आ
रेल॥अहो उदासीराज काजमम कीजीयो॥सरण
ई साधार सरणि सुषदीजीयो॥मेरै मसतग आप
नपोगुरदेवजी॥परहां रांमलगनकी अरजबि
सनिजनेवजी॥१॥सतगुरज्यां नगनीरपीरम
रो॥सिघजिसा आथाहाथाहानहीको इरे॥

चरणां मांहि मन तूं लागी रे ॥ परि ह्वां साध उदासी
दरस कीयां नै नागी रे ॥४॥ साध उदासी रांम रांमक
रूप है ॥ जा के चरणां मांहि मियावत भूप है ॥ सीत
करै सरीर रांम रस निति पात है ॥ परि ह्वां रांम लग
न ता चरण मगन होइ जात है ॥५॥ जप ध्यान न रस
रांम कूं रटत है ॥ ता के दरसण कीएं पाप सब फट
त है ॥ सदा अचाही संत उदासी रांम जी ॥ परि ह्वां रा
म लगन ता सरणि सरत है कांम जी ॥६॥ काज सुध
रण हार रांम का सत है ॥ अमत्र धारा मेटि बतावै
तत है ॥ असे संत उदास पास कूं तजत है ॥ परि ह्वां
रांम लगन ता चरणा रांम कूं नजत है ॥७॥ का ह्वां
क सूं मै सो न सो न तो आगम है ॥ गीता अरु नागोत
क है फुनि निगम है ॥ सत गुर संत अरु रांम एकै

हीरूपहै।।परिहां रामलगनवैसंतसदाअनूपहै
।।किसविधमहमाकरूंउदासीरामकीम्मोकं
विकसीमोजरामकेनामकी।।पलपलमरोसोस
करूंतुजिवारणो।।परिहांलगनोपायोसुषतुमा
रेबारणो।।मेसनगुरदीनदयालदयानिधदेवजी
।।तुमचरणसरणकेमांहिलीयोहैमेवजी।।सुणो
उदासीरामरामम्हाहाराजिहो।।परिहांरामलगने
कीफ्रादिरषोममलाजहो।।१०।।लाजतुमारेहाथ
उदासीरामजी।।रषोतुमारेचरणदेहोमनकाम
जी।।तुमचरणकीरेकनिनाजमोबापजी।।परिहा
रामलगनकीअरजमेटीयोतापजी।।११।।तायमिटा
स्तुरतनिवाजोरामजी।।महरिकरोम्हाहारा
कसिहरिनामजी।।सुणोगुणकी

[illegible]उदासीवारणै ॥२०॥ माहाराजिउदासीरांम
दयाकादेसरे ॥ बूझतेजनकेमांहिपकडीयाके
सरे ॥ आयौतुमरैसरणिसुषकेकारणै ॥ परिहां
लगनौवास्योजाइ उदासीवारणै ॥२१॥ निरपख ॥ रहो
जगतउदासपासत्रिगुणकीतोड्या ॥ रह्यामनको
कांमरांमस्यूंप्रीतिजजोड्या ॥ रामरतनिर्बंधसिध
निजग्यानजकेरा ॥ सरणइसाधारबारमेंवणीया
केरा ॥ माहाराजउदासीरामकीमहमांकिसविधि
गाइए रामलगनमनआरथकेसतगुरचरणांजाइ
॥२२॥ सतगुरचरणांमांहिसुषतोअगमअपारा ॥ तनमन
अरपोदोइपोइसौमनकाकारा ॥ मनकारादेकुबधिज
सकलहरीकीजे ॥ सतगुरकेराबैनअेनहिरदामेंलीजे
सतगुरमेरासरवाजाणिउदासीराजि ॥ हलाबोलइ
जुगमहीरष्योलगनकीलाजि ॥२३॥ [illegible]

ग्रंगोह मष्ट द त ग्री की के म्रो लि गः ॥ गुर
रनवंदिवं ई लिध संत । सुनी म्रा षि त्पूं गों के
मेंता।जासुनिमोह द्रो हनंही व्यापे। होइनि
बेधरामके जोपे ॥१॥ कहोंजुप्रमपुरांनकी
साषी।जोप्रापतिनाहदसूजाषी।जेकुंटलो
कसबसुषकोधांम।तांहांविसनलिराजेपु
रांवनकांम॥२॥ तिहधांमगएब्रह्मादिनको
टिको॥रुद्र सुरइंद्रआदिक।तेतीसको
टिदेवतातहां।गंगाआदितीरथसबजहां
॥३॥सरबसुरसतीतहांसारदाआई।तहांच
लतपरसंगग्यांनऋषिकाई।सर
सनेयोलीना।तासमेंआते

ऊं नीरपिवावे तोहू पीऊं ॥१२॥ जिन तन मन दये
मोकूं अरप्यो ते मेरे अपनी गेहरु यरप्यो साधत
जे जतसत को धरमां तिनको है मोकूं सब सर
मां ॥१३॥ जे प्रेम प्रीति सां च प्रिति पारे तिनको है
यें धिकार हमारे धीर जे सहन संतोष बिचारी
समदृष्टि परदुष निवारी ॥१४॥ कनक कांमणी
में नेही नावे दयाधरम बिनि धरे न पावे बऊ
त जीव की रछ्या करे दुषादे षिकरु नांम नथ
रे ॥१५॥ इंद्र नके सुषत जे बिकारा कर मन मरम
को मारे नारा लो नमोर कांम नां त्यागी क्रोध
अगनि मे देह न दागी ॥१६॥ सुष दुष ताती रीजो
इ मां निंग्रमां निमें वरे ते न कोई निरार्चन तिरवै

रनिरदाई॥ श्रीमदभ्रजक्ति मद मछर ताबहु
री॥ ऐसे हैं मेरे निज जन गत॥ सो बिनदे से मिथ्या:
जगत बै मोतै चत अलनेही टारत॥ सो जग द्वि:
बिमुष ते फिरै ऊषमारत॥१९॥ वैश्रम संत हे ऐसो
प्रांभ जन को सदा करत हूं ध्यान॥ जो मम साधु
सूं द्रोह कराई॥ ताकें ह धुनो होत हूं लोई॥२०
ऽ दुर्बासा जो टोह करायो॥ लै जरत फि लो कहु
सुष पायो॥ जब फिर साध के सरने गयो तब जा
ई जरत ते सीतल भयो॥२१॥ मैं प्रहलाद को जाति
रस्य घ बिपुधा सो॥ गज फंद को टिगाह नग
रत परीक्षित तउ बासो॥ जाहां जाहां जन के संक
ट होइ ताहां ताहां हूं प्रगट तहू सोइ॥२२॥ मो हि रू

होसंतकूधारैपाव ६० ॥दासीउवाच॥ तवपि
तजुतरदासोसुचरांन ॥सुनायोविषतुमदेकरि
कांन निरपकैसोगकौनकोगाऊ ॥सोमोसु
बौरीसमझाऊ ६१ ॥नृपउवाच॥ तबना
रदकहतजोसोई ॥राजाकेसुतएकैहोई॥
ताकेमीचुआजिहांपाई ॥योराजागृहसोगसु
आई ६२ ॥[illegible]॥ सुनिदासीतबबोली
बांनी ॥एहरिषनीजैमेरीमांनी ॥राजासोगव
कैहोकाकौ ॥बिनसरबसतसोगकाहाती
कै ६३ ॥बारूजीतिबादरकीबाया ॥औरस
बूंदसुपनेकीमाया ॥ऐसेसकलबन्योसं
जोगा ताकौकाहाकरिकीजेसोगा ६४ ए

है जु कि जांहो ॥ तिनको मोह छुड कै नांहीं ॥८०॥
ऐसे संत बहोत नहीं माया रूपी कतिकै गेजैजूंके
या ॥ ऐक सरूप सतिकरि जानो ऐसे सकल स
ब मिथ्या मानौ ॥ ९० ॥ अरूफकल फूल विछु जो
लाइ पंषी नवर आवत तांहा सोई ॥ विफल
ना ऐसे प्रीत हित जि जावे सूकै सरवर हंस न आ
वे ॥ ९१ ॥ स्वारथ कोहै सब से सारा कोउ नका
हे संहित कारा जो नदी नाव बेगत है पानी
पार गए जित तित बिछरां नी पर जैसे नग
र मांहे हाट करि सौदागर लेगे सब बाट तै
सें लोग कटंब परिवारा सब सौदा काज नेहइ
को गया ॥ ९२ ॥ को कहर कै को कहर कावै को क

होइ बराबरि कोइ सूरग माहें। या जग कों ऐ
सो ब्यौहारा॥ तासूं न संत करे हित कारा। ५४ ऐ
बचन सुने दासी के जब ही। नारद कहै चलूं न है
अब ही॥ तब दासी जल ले गई तां हा के। राजी व
गी हुता जो हां के ५५॥ राजा न वाच॥ दासी सबों लीत
बरो नी॥ ऐती अवार कांहे तें आनी॥ सो ब्यौरो मो
कूं समझाई॥ ज्यूं मेरी आस द्या जाई ५६। दा
सी उवाच॥ तब दासी ने ब्यौरो सुनायो ऐक पु
पुरष कौ दरसन पायो। उन कहौ राजा ग्रह सो ग
॥ हम के हीय हरू वे संजोगा ५७। तिन सूं हम ब
हू बीनती कराई। पाव धारो प्रभू विपदर तन
पाई॥ वै आते नहीं रांमरस पागी। इती अवार वं

हांमोहिलागी [illegible] ६८ तेबचन सुंनि रांनी सुष आयो
तबरांनी आइ दरसन पायो अंजुरी जोरि बंद
नोकरै बारबार चरनन सिंधरै पए करी बि
नती करि बहु नाव प्रन्नराजा गिदअबधारौ
पाव पावनकी जेउ वारौ आजि जपूसुषरेद
मारैसबकाज ६० [illegible] तबबोले
नारद रिषराइ हमकूं चलै तुमारेसाइ पुत्रसो
गकीपीरा तुमकूं का होकरै कोऊवा जेमकूं
६१ जपूबरछी लगै बिन ढालकी चोट यूं पीरा
बकापुत्रकी चोट सोग आइ परतु है जांहांको
ऊगयांन ध्यांन रहै नहीं तांहां ६२ [illegible] त
बसुनिरांनी प्रित उतरदीयो कौहै रिषिदेह धारी

कै चिरजीयो सुर नर असुर यस्ने कीट पतंगा
थावर आदि सकै खट जंगा ॥ ६७ ॥ सदे आंमए
के सति साई ॥ अरु विगु नर चानी सहैन कोइ प
जूं जांके कुम्हार घरै बनै ताई ॥ अवछि आयेते
सब बिनसाई ॥ ६८ ॥ साधू हरष सोग तें न्यारो ॥ जि
नके एक इ ब्रह्म बिचारो ॥ ज्यूं बन से जीव उपजे
बिनसावे ॥ तिन को बन हरष सोग नहीं ल्यावे ॥
६९ ॥ यौ सत सती रहै जाग जे आय ॥ तिन केहू हरष सो
ग नहीं देवा ॥ हरष सोग जो तूं मन लावता ॥ तो तूं जे
ती सती न कहावता ॥ ७० ॥ सोग करै तें जोरे प्रान ॥ तेन
ही पावै पद निरबान ॥ येह संजोग होत ज्यूं जाई ॥ सो
सब औरो कहूं समझाई ॥ ७१ ॥

राज्यूं सराइ सबलहै बसेरा ॥ भोर भयें लागे सब
जाट ॥ ६८ ॥ जांनौं सब कुल कौ घाट ॥ ६९ ॥ येक दिनि
धारक बोहोरो होई ॥ या संजोग अब तरें सोई ॥ अ
पनें अपनें कारिज आए ॥ नयो काज तब बाटल
गाए ॥ ६९ ॥ येक पुरातम सापि बिषांनूं ॥ तेरि षतुम
धरि ली ज्यो कांनूं ॥ दिन संनमंध संजोग जुरायो ॥
राव बिप्र कौ ब्याह रचायो ॥ ७० ॥ तां हां मंकपत
न सब बैठे लोई ॥ राव बिप्र की भावरि होई ॥ सु
जी भावरि कारि ब्रिट कायो ॥ तब सब बोले तुम का
हा करायो ॥ ७१ ॥ जे कछु तुम्हारे मन मैं होई ॥ ते सब क
हो मैं राषूं सोई ॥ तब पांडे ए हनो लोबांनी ॥ हम मांगे
हम राय पै जांनी ॥ ७२ ॥ मेरो बचन लोपन हीं करे

मेरी स्त्री गर्भ पाव तौ हौं भै।। तब पंचनि [illegible]
कही पति कौं वच [illegible]
उपाय मंत्रि करूं तो [illegible]
देखा तब कायौ वि [illegible]
।रि बिवाह बिप्र लै आयौ [illegible]
धरम वंश्यौ [illegible] उपाय नहीं तौ रे [illegible] पति [illegible]
तौ हौं पग धारै।। [illegible]
हौ।। तासु तै विप्र व [illegible]
बालक भेल चल्यौ बन [illegible]
ता कौं कु नांहीं।। तब बालक [illegible]
चारा।। सुनि है बिप्र इक बात [illegible]

पपें छूटैं प्रांनी॥ रिनहत्या कबहूं नमुचांनी॥ मेरी पं
च मोहोर है नाई॥ ते देतूं कि तहूं कित जाई॥ ११॥ छू
टैं नही बिनदें नौ दीए॥ काहा होइ आस रोली ए॥ जं
म जनम छुटदेई सोई॥ जो तूं दावो कि चित होई॥ १२
तब बिप्र बिचार मोहोर जाइ दई॥ ते बालक नें ह
सि कर लई॥ पांच मोहोर दे निरंतर न्नयो॥ तब पा
के अपनै घरि गयो॥ १७॥ ६ जो पुत्र न यो तब सोई
ताहूं बन लै आयो जोई॥ बालक हूं लै चल्यो त
बपांके॥ तब बालक कहै जाइ कांहां छांके॥ १०
बैर नही काहू कौर है जांहां जाइ तांहां तांहि दे है
बैर नाव है मेरो तो सं॥ बिनि बैर दीयें नही छू

डी ॥ ग्रहकाहाकहेगोसोसुनिलीजे ॥ तबजाइपा
वग्रिहकूदीजे ॥ ८६ ॥ बालककहेहूं रिनयाकुम
रोतुमकूं छोंमोहिबनहीमंझारे ॥ हूंतीसमोसे
रतुम्हारीधरांऊं ॥ तेकरिकोरगदिमतुमहिनरांग
॥ ८७ ॥ तबवासुतहिपाकेग्रिहल्यायो ॥ यहदिसवंत
पानीरिषहिसुनायो ॥ याबिधकेपुत्रकलिगबंध
नाई बंधे अगपांनकेमबहूतोई ॥ ८८ ॥ एकपुसग
औररिषसुनो ॥ परकोअसबहे बहूगुनो ॥ एकने
एकहीबातिचबाई ॥ जासनमंधबेलेतनपाई ॥ ८
९ ॥ जीवतलूबहेताकेमसेल ॥ कछुकेसररहीसु
बझकाकेस्योतिकद्योसचोरताहांआए ॥ तिनम
करंकनेबचनसुनाते ॥ ९० ॥ तबचोरप्रसनकरत

नौऐसैसो॥ तुंकौहै यांद॥बां॥यतदे कैसे॥ बव
कउंतरवहदयो॥ हे है जो चांविदे बुद्धि ॥भं
॥ऐ॥१॥तुमबांधोपोटसुले ॥टह ॥
रुरैमनमांहां॥ अति नै नो
हवालऐसेकौ॥ ऐ॥२॥ सुनि
करमबसिसबविसवनरआ लौ॥ क उ ओट या
ज्यौसबअंगा॥क॥छ॥ केबधान ॥ क
रमब्रह्माकुलालकि रतकन है ॥ ह ॥ ज्यों ॥ छ ड
नहीजावौ॥करमरुदनिजा दि केर करमविसन
यनसंकटआइ॥ऐ॥ क रह सुद अंत जो सो
॥कंमब्रिंलासांवत ॥ लछे पति सनके
इहबमांआड़ि॥करमरु दने द नमाइ॥ आन

हूंजावै कबहूंक जचावै क बहूं गै कबआपरि
गावै १०५ एक राजकुंवारि जादिघु कायौ तेनई
बेरि ताफल तिन पायौ कहइ कबेर जांनिताथू की
सबजनबदतो लीयो नही चूकी १०६ ऐसे कर
थे मबधनबहूंकरै तेनजन बिचार बिनि कूंनि
सतरै जो टूंनहीं गपान बैराग तौ टूंनटूटै जग
वै कौ ताग १०७ तुम नली करी स्वामी पावध
रे म बक्कतषुलेत्र बनागहमारे साधदरस
सो द सबबिषदोई पापताप नेरहैं न कोई १०८
ऐपा नबचनमुनिरांनी केनले तबरिषराजा
की ढिगचले जबरिषनिरपकी निजरपरी
तबनिरप उठि करुवत करि चरन निसिर लायै

॥ १०१॥ तबनिरष [illegible]
मप्रीतिसोचरनप्रछारै॥ [illegible]
॥ कहैअबनिरपहूंपाव [illegible]
करिबैरेजबही॥ दिषव [illegible]
ही॥ काटेमुषतेंअैसेबैनं [illegible]
नं॥ १११॥ [illegible] हैं [illegible]
एहसोगअंसंजोदीसतहैसं [illegible]
रमांही ताकेकछूसुहावैनांहीं॥ [illegible]
टबकीजुगमांही॥ तुमकूंदीन [illegible]
अपनीदेहतेंपुत्रपायाया॥ [illegible]
रो॥ ११३॥ पुत्रसोगसंदोषनअरु [illegible] पुत्र [illegible]
मेर॥ पुत्रबिनांकौपिंडजरावै [illegible] बिनां [illegible]

११४ पुत्रविनां होइ निरवंस पुत्र है अपने तन कौ
अंस पुत्रपीर कैसे को रस है उर मांहे करवत सेवहै
११५ पुत्रकाज देवन कै करै जप तप दान वरत व
हु केरे पुत्रकाज ान सदिन जु क मांही अति दुख है
इ जवै भरि जांही ११६ पुत्रविनां ग्रिह सुनो होइ॥
पुत्र सै वधी सब सोई जाके होइ न कौ कपूत तासौंक
है जग मैं जु अकूत ११७ असै रिषके
ववन सुनि कै निरप बोलै ग्यान प्रवीन वचन निरमोलै
ऐ हो रिष य स्तुम कौ हा कयो यामत मै तो सब जु
गव स्यौ ११८ जूले जीव कौ हित कार जिन कै नांहि
ब्रह्म विचार असत रा पुरष स्परस के हेति तांहां मि
लत है वास जरेति ११९ ते तां को पिंड जमै ग्रन मांहि

मत फिरै ऐकही साथ ॥१२५॥ अंध कहे जु दिसंतर जा
हि॥ तहीं नर मैं ताकी सुधि नांहि॥ यो जग नर मैं माय
अग्यान॥ चेति न देषै कोऊ प्रान॥१२६॥ जन्म मरन दे
षै सब कोइ॥ तो ऊ नम्र रिष चेतन होइ॥ जांनै कीयो
ग्रन मैं बास॥ ता सब ही को होइ बिनास॥१२७॥ धरा दे
स्वकू जे पछिताइ॥ तेन मुकति मैं कबहूं जाइ॥ जो मोह
मांहि न यो जल मीन॥ तिन नर देह बादि ही कीन॥१२८॥
जैसे रेजगा कुसां चौगिनै॥ जम की आंच होत है तिनै
देह संगाइ मानै नोहा॥ चेतन षो जै बसत निरमोह
१२९॥ अहंममत बूड्यो संसारा॥ ता को होइ बकुत सि
रजनारा॥ जानियो सति करि यह जग ऐसो॥ म्रिगत्रस
नां को जल है तैसो॥१३०॥ बांझ पुत्र गुंजा क पित्र अंचो

॥से म स नंग ऐसो जग सो जो॥ र ही सर ण के है अगपं
नी॥ सुवा नर मि न त नी जग मा नी॥१३१॥ ज्यों अब य
संसार बध्यो है माया॥ अपनी काई आ पुरु साया॥ जड
सरीर अपनो करि जानो॥ सु चेतन कू न ही उ ला टि पि
छा नो॥१३२॥ ज्यू राजा एक सेज सुप सो यो॥ सुपने मे र
क है ब ड ते रो यो॥ जा गे तै वह सब डुष ना सी॥ त्यूं
ग्यान बिना डुष कै है न पा सी॥१३३॥ को का हू क्यों से
गन साथी॥ रूं गै पुत्र कलित्र प सू आ थी॥ ज्यो जल त
ग बुदबुदा होई॥ त्यु जुग उपं जित बिनस त सोई॥
॥१३४॥ ज्यो जा ती लोग एक न्न होइ आई॥ कुलि अप
ने अपने मारग जाई॥ ऐसो मित्यो कुटंब सजोगा॥
॥परे बिछोह सब नि हि लोगा॥१३५॥ ज्यू तरू पात प कि

कछु रिवाई॥ फेरि न छूत मंडप जैसें आई॥ औसैं मांकषौ
सरु होई। ताकों पिछा तापन कोई॥ १३६॥ छरदैं
पेषनौ सो जग जांनौ। तासौं प्रीति न करै सयांनौ॥ जूं
सैं मन रुपकूं लै कसूं मस रंगा। यौं तनकैं दिन कु निदै
ई नंगा॥ १३७॥ यूं साधु अबंधर है संसारा। नै जूमसं
कट मोच न हारा। लौ न मोह क्रोध न हीजरै। पर
कीपी रसाधु हरै॥ १३८॥ निरदाई साधु जन प्रांनी
दावै जगत जरैं अग्यांनी। सुनि हूं रिष ऐक प्रसं
गा। तासुं निरोड मोह को नंगा॥ १३९॥ राजा ऐक
सिल्या दि कनोकें। ताकों कथा तुम्हैं समझांऊं वी
निरूप कै डुवारै ऐक अतीत रहाई॥ सुसीलवांन
ति सुबदाई॥ १४०॥ ऐक दीसु तराजा के जोध्रि वात्र

कछु रिझाइ॥ फेरि नवतम मडप जैसे आइ॥ ऐसे मांकषे
षर होइ॥ ताको पिछा तापन कोइ॥१३६॥ छरहै ग
पेषनो सो जगजानो॥ तासो प्रीति न करे सयानो॥ जं
से मन लपकलैक सम लगा॥ यो तन कै दिन कु निदं
ईनंगा॥१३७॥ यूं साधु अबधरहै संसारा॥ नै जूमसं
कट मो चन लारा॥ लो नमोह क्रोध न हीजरे॥ पर
कीपीर साधु हरे॥१३८॥ निरदाइ साधुजन प्रांनी
॥दावै जगत जरै अग्यांनी॥ सुनि हरि षो एक प्रसं
गा॥ तासु निसोइ मोहको नंगा॥१३९॥ राजा एक
छित्याहि कनोंजे॥ ताकी कथा तुम्हैं समजाऊं॥ वि
लिरप के डुवारै एक अतीतर हाइ॥ सुसा सवा नं
ति सुषदाइ॥१४०॥ एक दीसु तराजा के जोग्रवा ग्र

तीतसूंपीत करै श्रुति सोई॥ अवस्था तौ तनैं न स
न बिचार्यो॥ कासीपुर सनकै चित धार्यो॥ १८४
तब नारक संग कै नयो उदासी॥ तब राजा श्री चारु
तपासी॥ कौ सुत तनु मन अब हि कम होई॥ अबै पुत्र
र नहीं कोई॥ ८२१॥ तब बासु कवि दोहुं नै दोई तु
मरौ कौ तो हूं प्रान तजां ही॥ तब जा सा कौ मन ना
ही॥ यो हरदेव कै दीसें नाही॥ १८३॥ सा वा सं चव
हू दिषरायो॥ बासक कै मन एक न आयो॥ बाल
क की अरबी नहीं जाई॥ जो लेगो तो पाप जिनाई
१८४॥ सो मर जास्वे है अैसी॥ जिहैं नाही सो दर्शन
सी॥ तब नृप मैं चकुही अैसी दोर नजर है॥
कर्कै कर पकराई॥ १८५॥ चदतु नवे॥

हैं नाइ। तुमतीरथगवनकरतसौजाइ॥ तबर
याव बिदासुतनयो। सुमती के संगि विगयो॥१
८५। एकबार्चेनगरतांगयेमकारा॥ बैगेजाइब
नीया के दुवारा॥ यह कुरी लैबनीयाके घरीयो॥
तिहकाढिलीयो॥ दुबरीोसटनरीयो॥१८१॥
तलैलकुटीचलेवेदोऊ॥ उनिकेमननहीसांसो
कोऊ॥ पहूंचेकासीपुरीमकारा॥ यहहैछेत्र
कीगरा॥१८२॥ अबसबकासीकेबिप्रआ
जिवांऊंतांहांजहांबैली मांधो॥ न्योंतोदीयोस
बनिसोमान्यो॥ तबसीप्रैनकेमनुगान्यो॥१८९
अबषेसोमायासीधोयावे॥ जेपोप्रातकालदी
प जिवावे॥ जबहिकुरीकोमुषषुलायो॥ तबलोस

सेरपै नीकसि आयो ॥१५०॥ तब निरपसुत मित्रन
समिकै गयो ॥ पीछै बिचारकरि लोतन जयो ॥ बा
लककहैसु ॥ संतअबमैकीयो ऐसो मंता ॥१५१॥
अबमै कासी करवतलेऊ ॥ अपनो देह बजा लिन
ही देऊ ॥ ह्वांके जाइ पुनअवतरो ॥ जिदेंलि हैसा
इ वाके उषकरो ॥१५२॥ तुमस्वामी दलगीरन होइ
॥ वा बनीयाइ वारपधारो सोइ ॥ स्वामी अलिबनी
याकै गयो ॥ निरपकेसुत जाइ करवतलीयो ॥१
५३॥ तब अतीत बनीयासकही ॥ तेरे पुत्र होइगो
सही ॥ तबबनीयानै अति प्रीति लगाई ॥ तुमसद
र हौ हम सेवक राई ॥१५४॥ तब पुत्र जयो बनी या
कैं सो ईघरीमहूरथ बाढै सोई ॥ तब अतीत सास

सूकहोइ॥ तुमयाकौ ब्याहकरौमतिनाहि
ऐक दिवसकहतनइ॥ सोइ॥ साहाकीनारि
सोइ॥ तुमकूकरचैनपराइ॥ पाबालक
वियाइ॥ १५६॥ जोगीजतीसन्यासाहोइ॥ तु
कीसीषसुनैमतिकोइ॥ मितिपतिम्र
मतगहरोयौ॥ तबबालककौ ब्याहरचा
तबबालककूदेहमकाहारहाइ॥ हम
तुमबेगबनाइ॥ तबब्याहपहलहीम
पजाऐ॥ अपनेघरनतैंसरसबनाऐ॥
ज्योमालबजंततिनकाजा॥ तबब्याऐ
जाऐबाजा॥ तपसीकोबचनसाछूबिस
महलनपेषतदोऊमरे॥१५७॥ सन्यासीव

...तबबेमनेउठिकानीमनुहारि॥
मकेउवारपधारे॥ तबबेमनेउठिकानीमनुहारि॥
१६९॥ निरपक्रिपाकरिमैतुमआरो॥ तुमहूंसीहा
साहूपगऐ॥ तुमपूरबलेपुनिपूरनतेजोडि॥ तोजा
ग्रकोढीपेकहेसबसोद्वि॥१७०॥ तबराजाकोढीग्रिह
आऐ॥ कोढीषाटबेग्रोघरपाऐ॥ तबकोढीकहयोआ
रोइ॥ षमसातीहमदीतजिताई॥१७१॥ तुमपूरबपु
निकोपूरनतजोडि॥ सोसुनोमेदहूबरनूसोइ॥ हम
तुमसाहूषेमचलेंनाथोबिविलकरीअकरीउ
दरभराइ॥१७२॥ एकदिनापरोसीमलीदाकरीयो
ग्रोरेसोलेहमकूंदीयो॥ हमतुमकहतलऐतब
अैसो॥ अबहमहूषांहिकरैअबतैसो॥१७३॥ त
हमहूबनाइमलीदाकसो॥ बाटिरव्यासूनआ

१०३ यह सब जनमकी कोटीनै करी तेराजा
केचितमे रही तबराजा धरम बहुत डरियो गे
साधु सेइ न जातिमे जागयो १०४ यह राजा को
कितब वरनो सोई पाप पुनि ऐसी गति होई
कोटिक मोटी नन के परे तो धरमो स्रवनों ध
रमन बिसरे १०५ दाखे सो हाथे म बखान ति
रहा वे को उगरे न ग्यान औरहु नारि बकसो ब
षान यहजग वो लारे सुनौ तुमकान १०६ हो गग
चरे स्थान के सोई गाव में नही आवन द को ई
तो हुपुहा ली बिल्ल गौ बहुत नाई तब दो ऊ मिलि
नो करी १०७ आव न चै गाव इक मांही ज्यों
मनु को ऊ जाने नाही तब उ औ कि का नो ऐके

कें ऽ इनैंपवेसकी यो तबगोकुं ॥ १८४॥ ते स्वानग
यो विप्रके ऽ वारा॥ तांहां रसोई पाई त्यारा॥ जबत्र्रथा
नेकाजकोवरीमेगयो॥ तबस्वान त्र्राइकेरोटीलयो
॥१८५॥ बांम्हन स्वानषात त्र्राइलीयो॥ तबतांको त्यो
नरीजयतिहे पीयो॥ स्वानत्रिपति नयोगयो तांहां
सोध्या जांहां ठिकानो न कोत्र्रो जुदाई॥ १८६॥ इ जो स्वा
नेबनीयागृह पेगो॥ तांहांबनीयारोटघरमेंले गो॥
तबपेगतस्वानदिदीयो किंवारा॥ बनीयालेकुतका
रुकीनी मारा॥ १८७॥ स्वानमारि त्र्रधम्रवों कुं बिकारे
॥ तबपूंछपाइगाहदीसनिकारो॥ तबक्रमकसट
करिपकुच्यो तांहां॥ इ जो स्वानवेगो जांहां॥ १८८॥ तन
सेगीपूछे क्यूं रेनाई॥ तूं ऽ षसोकेसेंत्र्राइ॥ तबकहि

तिन्नयौ दुषदाई ॥ २०३ ॥ साटौ टीयौ यापरकारा ।
यह देषौ याजगकौ ब्यौहारा ॥ इ जैजनमबासून कै
लीयौ ॥ ताने बिप्रहि बड़ सुषदीयौ ॥ २०४ ॥ होतपूत
नलछमी आई ॥ बहूतवचनपाप अरु करै कमाई
जिनि किन बिधमायालावै ॥ मातपिताकी सेव क
रावै ॥ २०५ ॥ पिताहि टहल कंजाननदेई ॥ यह श्रै
सेंदेनौ देइ जेई जैसौ करै सुत सो पावै ॥ ताथै संत
सबै सुषद्यावै ॥ २०६ ॥ वा सुत सौ ससौ ड जि कौ गयौ
पूडू जैसौ स्यानउ नतर न नयौ ॥ जैसी जाकी होइ कै
माइ ॥ तैसी होति नन्तारिपाई ॥ २०७ ॥ कौ काहू कौ हित
जानौ ॥ अपनौ सुकृत रहै तरुछानौ ॥ हम काकौ सोराषै
रै हो स्वामी ॥ सो गसौ होइ नजनमै षामी ॥ २०८ ॥ ऐसै

प्रकारकी मांफ है सोइ॥ दीऐ बिनां प्रभि लै संग कोइ॥ ऐक प्रसंग कथा और कहूं॥ सुनि रिष मोह कौं सा सो दहूं॥२०७॥ ऐक कुम्हार ता के सुत सोइ॥ म्हां डघ दाइ उपज्यौ जोइ॥ ओगूंजा मजरावे सूंत॥ कुंवन ब्रां के लाग्यै न्हूत॥२१०॥ कंधातै उतरै नहीं सोइ॥ कालह तसो लागे जोइ॥ कुम्हार बासन-नावत हो जबही॥ ऐक जोगी नै बालक कंधा देषी॥ तब जोगी नै पाव षाले षी॥ तब सिसू सो आइ ससै निलंक हो॥ अब या के तू कों लै दहै॥२११॥ तब बालक कर जो हि सिर ना ड़ी॥ या तात सिं नेह न देहू बताइ॥ तब कुम्हार सैं नस्सं मफाड़ी॥ या बालक की कछ आइ कुम्हार आइ सकै पाइ न परीयो॥

॥ स्वनजुंवारी चोरी होइ हरै ॥ स्वनसनमांध जगत सब
आंही ॥ निरबंधन कोइ दीसे नांही ॥ २२४ ॥ बिनां नग
ति न गवंत कीजे ते हैं सब बंधन मांही ते ते ॥ जगत
बिगूचर स्तो है सारो ॥ दावेदा छै बार बारो ॥ २२५
हंम हरि नग ति मो हो नही आंने हरि बिन सक
ल मिथ्या करि जांनें ॥ जूं सिंधमें जीव उपजे बि
नसाइ ॥ तो सिंधकै हरष सोग नही काइ ॥ २२६ ॥ सा
धू जगतें ऐसें न्यारे ॥ जूं रविको प्रतिबंब जलदि
मंझारे ॥ तूं बर बिमे घन नर है संमांइ ॥ यो संत प्र
माथै कूं उपजा आइ ॥ २२७ ॥ यूं साधू रहै न्यारे जग
मांही ॥ जूं तेल भिटै न नहीं पांनी मांही ॥ जो रंग न म
धि दरसावै ॥ हीरा अपनै रंग रदावै ॥ २२८ ॥ जो सो

नो कूं लगै न काइ॥ यूं मोहमें लसा धू न लंगाइ॥ सा
धी ज्रूतसंतजंनसोइ॥ अकास ब्रतरि विसिस तूंजो
इ॥२२९॥ जेप्रो वाजी गरबा जी करै॥ औरन के जिय
नां तोयरै॥ करम कलासंतसंमजाइ॥ अनचअंक
जूनलटै जाइ॥२३०॥ जे राजानें कथा बषानी॥ त
सबनारद कैमनमांनी॥ नारदफिरप्रसनकीयो॥
नहीं कोइ॥ तब उठि गए तांहां जांहां नरपसुलज॥
वती सोइ॥२३१॥ जब जिहि नारद को दरसन पायो
॥करिकै ब्रत चरननसिरनायो॥ तिहि मनुहार क
री न लै आए देवा॥ अब हम करै तुमारी सेवा॥२३२
तब रिषबोलै अैसी बानी॥ यह म्हां मो हो रहै
सानी॥ सोग संताप दीसत है मोहि॥२३८

बरषै लो हो॥ २३३ तब बोली निरपसुत की नारी॥ तुम
बकही यह कहा बिचारी॥ रांम घरि निसी तांहां सो
ताकोउ षमियो नही कोइ॥ २३४ करम आधीन
जीव बिचारे॥ बिछुरै मिलै नर मैं बऊ बारे॥ रांम जग
ति कूं समझै नांही॥ तातै नर मैं लछि कै मांही॥ २३५
जूं नदी का ग त्रिन बहि आवै॥ मारि हिलोर कऊ को व
हलगावै॥ ऐसो मिलाप मिल्यो सब कोई॥ जांहां आसे
तांहां बासो होई॥ २३६ जब यह देह आपनी जांनै॥ त
ब जग के हेत सति करि मांनै॥ तब चाहै सुत दारा बऊ
माल॥ इन कै सुष रहै षुसाल॥ २३७ तब ऐ स्त्री अ
नरथ करै॥ तिन कै जोग जोगि करि मरै॥ ऐक ऐक इं
द्री बऊ बति वंम॥ जिन पांच नियां चूं नि के कीये षंम

२३८॥ताकौकहूंसकलबिरदंत॥जेदतजेई संगायो
मंत्र॥जामतसुनिमनबकतहोई॥इन्द्रीसुषनैलो
जेसोई॥२३९॥नलनीलमधुमीनपतंग॥येबंधेऐक
ऐककेसंग॥नलजुतुचासपरसकेसाथ॥नीलस
रवनसबदकेहाथ॥२४०॥जूरनासागंधसोसोई
॥मीनसुजिभारससंजोई॥पतंगनेत्ररूपनेजारे॥
यूंपांचूंएकऐकनेमारे॥२४१॥जेपांचूंइन्द्रीनिकेरस
रचै॥तेकोहोकालपेकेसेंबचै॥जे्रेस्वादलागेो
जगअंध॥ताकोक्यूंथिररहैजुकंध॥२४२॥आपोवि
स जागेो॥देहसुषनसेबजते
ऊ
जनसाथा॥२४३॥उष

ए६॥ रिषभमंत्रदिहि सो आ द्वियो॥ राजा दे
पायो॥ आजिगुसांई इतनी कीजे॥ सबै
जे॥ ए७॥ बमेसग्यांन एकसोकही ए॥ बे
दरस गालही ए॥ रिष आग्या लेती स्त्रा
यो बो दोत सुषपाए॥ ए८॥ चरण पड़ि
ई आजिये सस सेन लीउ गाइ॥ निति नु
पावै॥ जाकी मह मा कहत न आवै॥ ए९
आजि हम पाया मन बुजन मका ग्र
प्रमारयबंधन मतिमानी॥ साधसेवे
१००॥ हरिहरिजन ए कही गाइ॥ ध्रूव प्रह
इ॥ तबै इंद्रबरदेन जुआयो॥ जबनार
द्यो॥ १०१॥ इतते उतरिचले है आगे॥ ता

पुरषहोइकाहाकीयो॥पुत्रनारिबेचनचितदीयो॥
ऐसोपुत्रदेषिहीजीजे॥ताकेसटैकाहाधनलीजे॥१
१३॥राजाउवाचा॥सुतअरुनारिसंतकूंदीजे॥संत
छांमिराषिकाहाकीजे॥नकटीरामजाइक्यूंनांही॥
राजाइषिकह्योमनमांही॥१४॥बंदररोकसहर
मैंहोई॥छुटोरहेधनीनहीकोई॥गिनकानाकतो
डिलेगयो॥सबकाहाकैमरहोनयो॥१५॥ऐसेसी
बिधितांहांकोगतिहोई॥देषिअचेनाकरैसबकोई
नारिपुरषसबअचरजभयो॥राजाकह्योसोहीहोइ
गयो॥१६॥दुहा॥सतसंतोषभ्रावैजांहां॥बचनस
हजसधिहोइ॥ध्यानदासअरुइहकारयहूं॥मूलनमांनो
कोइ॥१७॥सोरठा॥धरमपुहपकरिजांनि॥षिजिराजा

हरिचंदकह्यौ ॥ धांन ह्है उरिन्नां ॥ नि ॥ ऐ ह बार
मुष नीकस्यौ ॥ ११८ ॥ इतीश्री हरिचंदसतप्रथमो
भाष्यांनदासकृतौ ॥ उहा ॥ धरमराजौ तौ स
धरम गोसबजाई ॥ धरमरदैजा कौ पिते ॥ सो को
ये पद पाई ॥ १ ॥ चौपई ॥ इह इती यासमु नौतुमचा
ई ॥ इतनी गेर कोपसु षिसाई ॥ सी लषटै कौ नगति
कु मावै ॥ इहबी च अंतराइ क रावे ॥ २ ॥ सनकादिक
बैकुंटपधारे ॥ द्वारपाल तनब चनउचारे ॥ नगान
काहा आवत हौ मांही ॥ आगी छडीजानदे नांही
ए दरसन कौ अतिउकलाने ॥ पहैगाइ जा तजपूं जे
ने रुकी गजजपूसी सहलावै ॥ मनमे वाहाजांनूनै
ही पावै ॥ ३ ॥ दरसन बीचि अंतराइ करायौ ॥ कलौ

वपा है॥ अगत्ति तावदे घाटनपावै॥ येहसुनि बचन
रंनातांहांथ्यांइ॥ रि[illegible]यांनतांहांचलिआइ॥१०॥
पगनूपरबहुबिधिझूनकारा॥ सकलसिंगारबि
न्यौअंजसारा॥ घटामांहिबिजुसोहोवे॥ तनसिंग
रस्यसीबिधिसोवै॥११॥ कांमकेवैनबोहोतबिबि
बोलै॥ मुनिनमूगैनेत्रनहींषोलै॥ तबरंनातेहने
षवनायौ॥ बैलिचटीअरतनपलटायो॥१२॥ नेत्र
तीनसिसलीलाटा॥ सीसजटाअैसोकरिघाटा॥ क
रित्रसूलमांनूसिवसोहै॥ बांनीजोगतासमनमो
है॥१३॥ लागीसुरतितूटितांहांआइ॥ जोगबचन
सुनतेरूचिपाइ॥ तापीछैत्रीयाबिदनकीनो॥ सहि
तसिंगारनौअरसनीनो॥१४॥ छूटिसमाधिगई

मुनिकेरी॥ नारिसरीरकीयोतनफेरी॥ जंगी कोम
ना वचनबषान्यो॥ फेतिसरापनग्यो मुनिजान्यो
॥२५॥ मुनिरुवाच॥ हूंधी जौ औरहिजनी हारी॥ पह
ली बातजुलषी तुमारी॥ कलहकारनी ऐह कादा
कीयो॥ स्योसरूपहिंहू नगिलीयो॥२६॥ संन्नाउवाच॥
हूंवौ सरापनारियो जान्यो॥ सीसचैनधरिवचनब
षान्यो॥ तुमारोवचनअटरनहीटरै॥ मोहिजधारि
कितिसमरुनपरै॥२७॥ मुनिउवाच॥ देसकनोज
राइहै सोइ॥ ताकेजाइकन्यातूं होइ॥ प्रथीराजजा
तिचुहाना॥ तोकूं आनिबरेगे जांन॥२७॥ सांवतसू
रमरेगे नारी॥ कलहकारनीवचनउचारी॥ आगे
कथानहीबिस्तारी॥ न उचारी॥२९

आंगैमुनिकिरिष्यांनहिंलागौ॥नयौसंतोषकौ
पमननागौ॥नगतिकाजप्रसंगारेहुलायौ॥रंना
किरिसुरगापुरपायौ॥११९॥जबउहिकस्यौउधा
रबिताबौ॥तबउहिकस्यौनुगतिहेजावौ॥तदरि
चददोषमतिमानै॥धरमटरतकोपनलिजांनै
१२०॥ [illegible] ॥बिप्रबीजैराजासूनारी॥
॥गुदरिगईदोपहैरीसारी॥मोतिलैनतोईकोईनि
आवै॥कहिजीज्यौकहैकरिबतलावै॥२२॥नके
टीकस्यानाकबिनिकीनी॥गिनकाचलीनारिस्यौं
दीनीं॥मीचमोतिलैकौघरघालै॥कोकुबिकहैई
नहीउरिसालै॥२३॥टकुबिकहैसोहीहेजाई॥कहै
जीज्यौघरिनाहिनलाई॥बांनाकहैबचनसुनिमै

प्रबातरंजासूंआषी ॥ यऊआवईराजायूंदाषी ॥ क
हैरिषीसुरसुनिहोअया ॥ सीसआरकाहितुमलेसा ॥
३० ॥ देणकह्योपणिदांननदीयो ॥ बिसवामंत्रबेचणे
कीयो ॥ सकलराजबसुधाबितधांम ॥ असुहायीअ
रअंटतमांम ॥ ३१ ॥ तीनलाषतायोहेंओर ॥ संकल्प
कीयोदेणनहीगेर ॥ औरकाहांकुछिसुफतनांहीं
मांनसबेचदेऊंमांही ॥ ३२ ॥ रांनीकवरनिकासे
आहे ॥ सीसघासबेचनकूंलाए ॥ गयोव्योसपणको
ईनमुलावे ॥ डिगमेरीबांभणडबपावे ॥ ३३ ॥ हमतो
डषीकरमकेमारे ॥ परिहमिसजिबांभणआगेडभा
॥ कूंनमोलिलेहमअपराधी ॥ अबिमांनांहरिजगति
नसाधी ॥ ३४ ॥ अगनिसुसरमांउबाच ॥ अगनिसु

प्रबातरंजासूंजाषी॥ यऊजावदैराजायूंदाषी
हैरषीसुरसुनैहोनया॥ सीसजारकाहितुमल
३०॥ देणकरयोपत्तिदांननदीयो॥ बिसवामंत्रबेचणै
कीयो॥ सकलराजबसुधाबितधांम॥ अतसुहायीअ
रऊंटतमांम॥ ३१॥ तीनलाषतायीछेओर॥ संकल्प
कीयोदेणनहींगैर॥ ओरकांहंकुछितसुफतनांही
मांनसबेचदेऊंऊंमांही॥ ३२॥ रांनीकवरनिकासे
आहे॥ सीसघासबेचनकूलाए॥ गयोव्योसपणकौ
ईनमुलावै॥ हिगमेरीबांजणाउषपावै॥ ३३॥ हमतौ
उषीकरमकेमारे॥ पतिहमिसंजिबांजणाजणाउषपा
कूंनमोलिलेहमज्ञपराधी॥ अनिमांनीहरिजगति
नसाधी॥ ३४॥ अजनिसुसरमांउबाच॥ अजनिसु

सरमां कहै बिचारी ॥ हूं रूंमो हि तो सुत नारी [illegible]
मांगे सो तो दिउ वांकुं ॥ दो २ लि वाइ आपबुरि [illegible] २
५ ॥ मांन सम मोहि कहै जो कोइ ॥ ताकुं पाप बहोत [illegible]
होइ ॥ नर देही कुं मोहि बिकावै नो [illegible]
पद पावै ॥ २६ ॥ [illegible]
ही कोइ ॥ ताकोतन तपोंस मि सो [illegible]
हि करावै ॥ मिनषा देह धरि सो [illegible]
रि संगि जावै लवाइ ॥ [illegible]
नि सु सरमां नाषै रे हां ॥ इतने का [illegible]
२८ ॥ मिनष देषि का दाधन कोनि [illegible]
॥ तुम सब ही बात नोगि [illegible]
इ ॥ २९ ॥ साटि मेल ता ही कार [illegible]

विप्र कहै हे आरे मोपै मोठ लाय लैके जो
नतीजां ति रा जो कही प्यारे सुत बिनिता
पधारे बिछरत छिन नयो तन नी पीवावि
हे क्यूं नारी ६१ सुत कही तास पेम अके लां
तायां रा कुण टहल करावे सेवा करण के
कोई मोठ लाय दे पाणस्यां तिसोही ६२ करम
का है के जायो बुरे निमत जद हूं आयो
च बिरख केरेह गति लेबी पिता बिपति आप
दिविदेपी ६३ केछ नरपति कीटहे लन
अबकर ता ऐसी गति दीनो देह रूप सुपु
छि अपकारी गलै बांहा धरि रोवै नारी ६४
हो यो मुखि बोल न आवै सुत कहिता स नरपसम

कालाकांमकहिजांनै। [illegible] वारिप्रमोलि
टहलकंट्लीनी। गांठिमोठिमायागिनिदीनी। पांचव
रणकोवालकमांनै सोसुतकाटाटहलकहिजांनै। प
देवदेवकरिकीयोविलोहो। रांनीकवरनरपतिसुमो
हो। विप्रजाइन्त्रपनैघरिराष्यौ उरवचनकदेनहीमा
ष्यौ। ५२ जोजीवसरैजोटहलकरावै मिनषस्वातगी
कूंडपयावै विप्रसंगजोमिनषराहावै सोमिनष
सदगतिदीपावै ५३ विप्रवमोवडसश्रोतारी। तावै
सबदसिधिहैम्हारी। लाषकोडकीकूंनचलावै। वांकै
सबदमेरथहिम्रावै ५४ जैकोईकहैदायोकूंनाहीं। न
रपतिसतीलेतहैनांहीं छतीराजदेहकैंत्राया। सोवं
हेदयराईमाया। ५५ विसवामित्रकाहाविलनीयो। त्री

कदैवीनतीम्रो गमि कलांमसरग्ग इतेरी ६१॥
ग्रजकरीसादिवा निपाई जफड़ोम्हमनीकस्यो
ग्राई कंकवादैसागदैसारा लालेखिसतरदेह
गनहाग ६२ वांगाविकलसकलमुखकारा॥ग्रा
गेदंतबुराजगीहाग राजादेखिन्हमयोकहीया॥
न्याकंकलेजगोनईया ६३ बोयसुनतमारीम्हर
लोगे जगोग्राहराध्कैंग्रागे सगलौसायरैकउ
नहारी विसुधग्राइदेहजमधारी ६४ कंकरस
हतितउतलोग्राई दरिचंदकाजदेहैसाई तबदी
न्हमरिमवेनसुनावै दिनमोहिल्योवेनुमचावै ६५
यावोमोलबोलेतरिषजावै परिमाहल्योमेटदील
मैं नरसगरमकेहैजफडोकीजे सुखमांग्योमोलका

उपाइ ॥ ६३ ॥ करै ग्यांन सति ज्यो होइ ॥ होत बहो इसे
मिटै न कोइ ॥ चलि रो हो तासन्न्र पूटौ फेरी ॥ गुलांमन्न
सुन्न न्नयो कि सकेरी ॥ ६४ ॥ घरको धणी करै सोइ बा
जै ॥ तुमै घरि जो हि फिरू नहीं ल्याजे ॥ बौदो कान्हा मो
लि कौ लीयो ॥ धनी का जम सत गनहीं दीयो ॥ ६५ ॥
तब सारां मनि न्त्रैसी न्याइ ॥ हम सहि तास न्नेरि है
गाये जां हां बन मै न्नधयारै ॥ पो पफूलक्तबचा
सारै ॥ ६६ ॥ चढ्यो सूष सहि तासन्न्र केलो ॥ सो तौ
पो हो पहाथ तांहां मेल्यो ॥ सरप ऐक तरवरपरि हो
मस्यो ताथि पड्यो धुरसाइ ॥ ६७ ॥ सरप मस्यो हर
सो ॥ छूटै हाथ मार तै गिरयो ॥ सग लै बालमि लै
॥ कहै सहि तासक्ू न गति याइ ॥ ६८ ॥ कहै सी

गिपरीयौ तुम इतनौं साहिबइति कहीरे
षहोतबाहरवौ सुतरहितास
कालेश्रपमाहैंलाई होत
गनिसुसरमांबिप्रबमेरी
१० ई मो हिमरनकौ सोचन
षहोई सोबिनिमातकदै
रूवाती १० ई पितामेरौ
तिसनी रनरावेकरूका
बेश्रैश्रै मी बिधिहोई
यो ह
यो श्र ब
हीतासउचा

सत्यूंवैसबहूंवा॥ घडी च्यार जांनोंसबमूंवा॥१०९॥
तबै रांमकहि तासतें चौरे॥ जीवण नहीं मवण मनधा
रोसबलड कैन जबसुरति संभारी॥ बोदोरि लगे क
रणमन हीरी॥११०॥ तुम बिनिहमकेसें घरि जांही॥ यूं
रोहितासबनतहें नांहीं॥ कहै कहि तासकुं नोरे नाई
याहोरो हमतिरांमदुवाही॥१११॥ सोड काजवा चा॥ ने
तरिनतिश्रैसी कहे लीनीं॥ तबसबहीप्रकमादीनी॥
करपरांणमकगरिगारिचा लोटे बोद ई कोण घरघाले
॥११२॥ इनकी माइबूकि जबश्रावै॥ केहीऐ काहासो च
तऐ जाबै॥ बिनिमणि श्रप चहोसारे॥ रांनी जनीपंथनि
हारा॥११३॥ रांनी जवाच॥ सबबालक दे ध्यान मांहीं
रांनीसोच कीयो मनमांही॥ सब चौपे॥ करहोदिरिश्रा

जो बिचनत चारे ॥ सोहम कहे सेम ऊल्यौ सारे ॥ ऊंति चली
माता बनवोरी ॥ चली चली पोहूंची ती वोरी ॥ ४ ॥ सूत रो हीं
सपस्यो तां हां पायो ली यो गोदि मैं बो लबुलायो ॥ बोले पु
त्र काहा नयो तो ही ॥ तूं अब चल्यौ गोरन ही मोही ॥ ५ ॥ त
बसुषग यो परबादि स्याई ॥ दीन अनाथ चल्यौ तजि मा
ई ॥ परे गोदि मैं सीस नि वायो ॥ माता तबै कंठ लूलायो ॥ ६ ॥
[illegible] ॥ तब कुहि तास बात यूं नाषी ॥ माता ई
अकेली राषी ॥ मैं पापी कछू टहलन कीनी ॥ अब करता
ऐसी गति दीन्ही ॥ ७ ॥ चल्यौ और कछु कहन न पायो ॥ प्रा
कहै तहि च की संगि ध्यायो ॥ मरत न यो माता बिललाई
हु कोई संगि नहीं जाई ॥ ८ ॥ बनि अबला भ्रत ग सुत मासै
तिषि कहै सी दोऊं गया नासै ॥ सो चाए कपुनि मति तीर्द

वै ॥सुतजोभागमोरकरपावै॥ ॥ [illegible] नहीं [illegible]
हरकीयो॥सोकुहांपभारिंगलिलीयौ॥ [illegible]
होतहैनारी॥बौहोदषनसौचलीहै [illegible]
करिमंडहटश्रैयो॥ [illegible]
बियोगकहैको ताकौ॥ऐसौ कबीर [illegible]
मडहटषसौतांहां इंधननांही॥ [illegible]
॥बरषैमैघमाहदुषपावै॥ऐसौ [illegible]
वै॥१३॥चुनीकुटकलीमडहटकै [illegible]
हीहैरीती
इनांही॥१३॥कुसबालिजन
होतदुषदीया
रिजपरैतां॥१४ [illegible]

सतरतनऊपरि सोही ॥ बहैबांहांलैजाइबुहाई ॥ ऐसी
नांति दिन गयौ बिहाई ॥ १५ ॥ धूतौ देषि राजा मंत्रिऔं
यौ जा ॥ पौ बालत है छांनै ॥ लगै मालनै कौं नाडौं ना
ई ॥ पहूंच्यौ आइ तांहां सो राई ॥ १६ ॥ तब देषो रोहितासद
मूवौ ॥ राजा कह्यो काहा ऐहूवौ ॥ रांनी रोइ बिकल यूं नं
षी ॥ ज्यौं ज्यौं नइ तमूं तमूं हां दाषी ॥ १७ ॥ सुरज वंस कौ नाम
ही आयौ ॥ अतनी कही राजा दुष पायौ ॥ माया मोहो गि
नौ मति कोइ ॥ धरम सोच पुरषन कौ होइ ॥ १८ ॥ नगतम
रत सो चाहि आवै ॥ सोही सोच नगतनरि पावै ॥ जे को
ई कह्रं साध कौ मूंवा ॥ कारज जननि का रनै हूवा ॥ १९ ॥ का
न साध मूंवा कौ नांही ॥ कारज देह रूंदहै तांही ॥ देह धसांमु
कति पद पावै ॥ स्त गया नर कसे आवै ॥ २० ॥ तातै सो च बै

सो नहीं होइ॥ सुनि रुद्र हितास न्याति है सोइ॥ जैसे नाडौ म
ज्यो तहीं बारा॥ रांनी कसौटे बिबौहारा॥२८१॥ बसत
ऐक दुसरी मांही॥ बांचण बाजदे तत बषांदी॥ स्यांम
धरम की कथा सुनाइ॥ जौ नाडा बिनि दाग न पाइ स
बिसतर ले कदेह जो जांकौ॥ दिषि आगे मुष कांही
षाकौ॥ आधौ चीर फाडि दे मोही॥ तो सुत जांन्यो
गौ तोही॥ २॥ फाडि बीचते आधौ दीयो॥ पी छै दा
चेतन कीयो॥ आगनि दे इ गंगा मे न्हालो॥ ऐह होत
ब दो न्हम नषालो॥ २९॥ जै नाडौ लेरा जा जाइ॥ त
रांनी रिष मंरदआइ॥ तब रषक सौ बिचम कांही
होइ॥ रांनी पाइ परी अर रोइ॥ २९॥ रांनी
सुनत हितास मरन ही कीयो॥ लागी बार दाग मेंद

योः बालकबात्कही छै जोइ तेसबकरीबपुदु
बहोइ ॥ ... सेवगाव
मोहूं तौ सुततेरो ॥ कारजसकलकरतहौमेरो ॥ धर
मदादिसांधनमुषिहोइ ॥ स्वारथ ... मतिको
इ रह ॥ रांनीतपैस्त्रिहलैदीनां ॥ करमकसोटी आ
जदीनां ॥ कासीनृपहूतौ ए क श्रीरा ॥ षत्रीबको सत
चलिगौरा ॥ रांनीन्हाइ कहूं ह्रारधरी यो ... मत
चीलदिष्हि सो आयो ॥ लेकरिहारि ... जाइ
वांनतनीरनकू ध्याइ ॥ ... तनसुष नहीं हारग
लमेत्यौ ॥ काहूदेषतदीयोहै ... कोइ
रडतीयो ॥ बांधिगुलामममांहिदुषदीयो ॥ ए देवि
नहांरैके ... तिजाइ ॥ सनामोकि बेगो जा ...

काहू लीयो मारि हूं सो ॥ राजा कह्यो ने दंदे मोहीं ॥३१॥
बांदी लीयो बिप्र को हारा ॥ तन कै काजि चोर तुम मारा
॥ भरी हार तब राइ षदायो ॥ दे ब्यौहार मार ते ल्यायो ॥३२॥
पूछि नुजा बांधि तस लीन्हीं ॥ रिषदे षत कछ आरू न
दीन्हीं ॥ दादि चोर की देत जकोइ ॥ वा के संगि चोर सो
होइ ॥३३॥ जाइ राइ पै पड़ी रहाइ ॥ राम मुस्यो सो ही अब
आइ ॥ या कै काजि और हम मारा ॥ न्है की राक मुस्यो क्यू
हारा ॥३४॥ राजा कै बान्चा ॥ सुत ति पाक अैसो तन पा
यो ॥ काहि मन चोरी मैं लायो ॥ संगति साध लगी नहीं क
इ ॥ रिष आश्रम तै टहल कराइ ॥३५॥ तन सूं साधू सेव
कराइ ॥ मन दीयो चोरी कै माहीं ॥ कै सें या कू संगति
लागी ॥ बिपनी डौ चित पाछौ भागौ ॥३६॥ हां ली ज बा त ॥

मित्र श्री तारइमारा ॥ फ ॥ फट्टौ मज्जराउ निहारा पद्य श्र
गानि सुसरमा श्र जतन ती यौ ॥ सू करहू पसुरपति की
यौ ॥ व्यास श्रती तभारत न श्राया सो लेते रा चरण बद
या ॥ कासी राउ ना रिदु षदी यौ ॥ स व देवा मिलि सो तन
की यौ ॥ गिन कारू पस क्रिके श्राइ ॥ सो रत श्रागे च
लीपसाइ ॥ दो ॥ जतने कहू दरस तो पाए देव सुरकु
निस्याए जनम श्ररू मरन श्र बध्य के तुम्हारे देह
इ क बहू नहीं धारै ॥ दो ॥ चढि बिवाण देव ता श्राए
तेजोमइ सरीरसा पो ह पि बरसि जे जे श्ररू होइ
धुनि येहूत हलोकमे सोइ ॥ पद्य ॥ सपति को टितेकी
कल्याने तो सजितरै तहृमजा ने गागामधिरू हिता
सबुहायो ॥ तलये तरं तदृष्टि सो श्रायो ॥ दो ॥ राजापरि

परनाम कराइ॥ मातामि लीसी तल ता आइ॥ अगनि
दहै ते कंचन काढ॥ सुत रू हिता सं सरूप तन बाढै
॥६४॥ धूप दीप आरती संजोइ॥ सुरपति स्तुति करत है
सोइ॥ ब कोसती सारे जुग माही॥ तो उपसालि दूसरो
नाही॥६५॥ मांगि मांगि बोले सुरसारा॥ तेरे को जि अ
नितन धारा॥ तब हरिचंद कहै लिषि ऐसा॥ मांगन दे
खा मनाकेसी॥६६॥ रा जो [illegible] सतबादी मांगे
नही कोइ॥ मांग पास तर है नही सोइ॥ मांगो रूम नाव
अरु जागो॥ सतबादी मांगे नही तागो॥६७॥ तब सुर
कहै कछु तो लीजे॥ पीछै दोस हमें नही दीजे॥ तब ह
रिचंद कहै बरा ऐह कीजे॥ ऐसो कसट काहू जनि
दीजे॥६८॥ कलिजुग पाप करे सब कोइ॥ राजा पिर

ादुवी सब होई कहि दीया नगति कु
नोबता जैसो मरे हरि देवतिषि सुनो
ब्रह्मा कहै हो ईवर ऐसा तिहूं लोक
रपुरनागामथिमे जोई १० आपनसहस
अंतर लोक वीरच दीया हरिसुं ले आ
खिचनो नाथ मिले है आई ११ माथे हा
दीयो आप जसो वोह करि लीयो तो
ही काई पतिवरता त्र स्वातिम जाई ११
तासतसो नही कोई तीन लोक फिरि देषो
सो मिलि पूरण वरपाया नगति दानमें
या १२ तामस नगति होइ नही आवै स्वांति
सु नगति कुं मावै नगति केरै फल

र्ग॥दे वै झट काढ़ि॥१४॥ मैं मेरी करि तूं ति
नैहि फंद बास नांबी चिनश्रा ने ॥ भगवत
मैं कंदी जातो॥ हरि नप दे सकरमसो दी गं
रित कसोटी दूषै नाही॥ पीछै भगति होइ
ही॥ उपजै पे मनेमस बता गो॥ भगति श्रा
गति जागे॥१६॥ गहे गदाइ पेम हरि नावे
मांच जल नेत्र श्रावे॥ कलपात पह लीऊड़
गहा बसंत रतिपी छै श्राडि॥१७॥ पहलक
रि वंदी नी॥ पीछै श्राइ तास गति कीन्ही॥ सा
टी सरिपरि ली जे॥ माप्यो श्ररपि भगति के
टी॥ दुहा॥ भगति दुहेली राम की॥ षांमा की
सिर कै साटे मिलत है॥ तो सुहै गी जा॥ति

री कोइ ॥ ४९ ॥ काहै नपन नहीं मनिआं नै सो राजा
रि चंदकरि मानै ॥ नेषध सौ कुछि नगत नहोई
मै नगत जाणै सो ही ॥ ५० ॥ जिनि औगुन कौ दे
ह धराइ ॥ सब कौ औगुण लै ता जाइ ॥ औ मुषि
न बोल्या या आंनी ॥ औगुण तजै सोइ प्राणी ॥ ५१ ॥
तौ मेरा कौ होके न चली वे ॥ घाटि बाहिर कछु बो
न आवै ॥ जे कोइ कहै न जानै सोइ ॥ तो करू ते
कहन की होइ ॥ ५२ ॥ मेरे कहु सुनो तुम ज्ञानी स
सुनौ बचन तौ तसी बानी ॥ पूरौ औगुण नाही आनै
कूतै मरम कोइ कहा जानै ॥ ५३ ॥ बचन बचन मै
औगुन आनै ॥ सतका सबद उठ के बिमानै घटे बढे
नही नाहे जाइ ॥ जितो सुनी समझी सो गाई ॥ ५४ ॥

बिधिसोमेरीमति जानौ ॥ उनकौ औगुणमति को
इ मानौ उनकी गति उइ पै जानौ ॥ मनिषतु छिम
तिकूं पहचानै ॥६४॥ उदधदोत करि लीजौ ॥ दे
षणहार अगर ध्यानदास बसुधा लिषै ॥ भगवत
भगत अपार ॥६५॥ सब बकौं जिसु रस तिलगै स
बपिकत कहिमाहि ॥ रामस्मानि नम्रस कौ हरि
चरचा मति नाहि ॥६७॥ जो उचरै या ग्रंथ कूं सो उ
सुनै चितलाइ ॥ ध्यान लहै सो प्रमपद ॥ पाप ताप जी
र जाइ ॥६८॥ हरि चंदसत कूं सुनि कोइ ॥ ऐसी टे
क स्याइ ध्यान लहै सो प्रमपद ॥ जामें संसै नाहि ॥
॥६९॥ आइ तीन या ग्रंथ की ॥ धरम कथा बिसतार ॥
हरि चंदसत हिरदै धरै ॥ सो जन उतरै पार ॥ इति श्री हरि

चं ह स त प्रं थ्र न ज नो तं ह मु कृ ति प द्धां न द्व
लबार न न नां म्र ती ग्रो ध्मा ङ्गं पू र णा ङ्ह्मा ।
सोत्त्मा । दा । ष्ठं टा । ध्रा । चो पट्टी । ङ्कू ण । स र्व । ॥
ढ्ढ्र ग्रु की सं म्पू सं पूर णा । ती का स्रो को । ष्ठ दृ्धा
तो तू म्र पि री कै ले घे ह वा झो । स्र थ सा थ श्री कृ
ष्ण दास जी का रे ष ला ष्यि ते । प्रथम स ष्टो
। नमो सरबं गअर जब ब्यापी कनूं ज ब आधा
रे रहत तैरे ज ब मैं नूं र नारि पू रि प्रे मा तमा अ
सा षी सदा नाहि नेरे वार कहूं पार मधि नाहि जा
न्यो परे रहत रामि लौ कूं अलेष जोइ धारि कादा
स ओ ष्टू त बंदन करै नमो निरबाण बद सं मत
इ । ष्णा । गुरु ष्यान रि ष्या ग्यान दाता रु सो ही गुरु सार दै ओ

मअवतौनपावंमकूंपेलिहै पेलिहैं अगम
तिसहैतेजाऊं॥ जहांजगदीसकी जोतिजगमगै
झलमलैनूरप्रकासन्यारी॥ कारिकादासमन
अरपिऐआपणा॥ सतगुरवांममेसरीएपारी॥
गुरमहमाकोअंग॥ सतगुरगंनीरमभमपीरहै
रामही चरणजीब्रह्मरूपा॥ तासकीमहमिसे
हरिहू टीसबेबोहोरिआवैनदीग्रनकूपा
ग्रनकीतीपसूआपमोहिराषीयोदाषीयो
नवैरागनीको॥ रामही नगतिनिजनजनमे
कूंदीयोजगतजंजालसुषन्यौकीकौंभनि
गुरदेवमहमातुम्हेअगमहैनिगमासोन्यारि
तिनितिनावै कारिकादासव सरतौ

रांमही चराणकं सीसिरावे ६ रांममाहारा
जिकरतारहार करणांमदीदी नदयालदुष
ऊाकि संसार नोपारपलोकमे
रांमरटैणि दिनपीवषपीया पीवषके
पीवतां ऊरसबहीऊड्याकहरिकादिष्टि
ल्हिनाहिस्रावे कारिकादासप्रकासगु
रग्यानतेरांमकानजनसेरांमपावे ५
सतगुरदेवजीनेवमोकदीयोमनषाजन
मकोलाननारी तनअरमनकासुषतुछि
जांणीयाजगतकीरीतिसबलगीबारी सी
लघरसाचसुषसाधलछिप्रापतीजाप
तिऊलोकपतिकोबतायोजनमअरम

बिस

रणमै बोहोत बिरीयां कर्यौ अबकै नी गि
रो मपायो पाइ बिसं म श्रीरामसुषधाममेरा
ममाहाराजि कादरसकीया कारिकादास
गुरदेव प्रतापसूरामजी आपकेसरणिली
या है बीनती कीजो रांममाहाराजिमेसरणि
हूं रावलीमहरि करणांमइक्यूं नकीजे
करि पगसंसारमेअनंतदुषपूरिहै हरि आप
दीदारदीजो पतितपावनकरौकुटंवता
सबहरौबिड दसम्हारिलिहोरामतेरा कारि
कादासकरजोडिबीनतीकरैमैटिहोजी
वकाग्रनकरा बीनती बापजी एकतुम
सोचलौ और नहीं श्रीसरौमोहिदीसे तीन

हीलोकब्रह्मक नौषंकमेंकालकरि जोरसब
गेरपीसे॥ एकन्हकाटनिजसरणिहे आपकी
सोहीकरिमहरि अबमोहिदीजे॥ कारिकाटा
सकूकाढिजोसिधितेराम जी आमरे आपली
जोटी आप के आसिरे आनंद हे आपके आसि
रेबंध ॥ छूटे॥ आपके आसिरे मुकतिपदपा
ऽहे अमकासकलजंजीरटूटे॥ आपके आसि
रे आसपूगेसबे आपके आसिरे ग्यानपवे॥ का
रिकादासकहे आपके आसिरे रामहीरामसू
ध्यानल्यावो॥१॥ तुमसरणिकंम॥ रामरमतीतनिति
प्रीतसूसुमरी॥ डुमरी॥ काम अरकोधलो ना
मोहमदमानसबस्वादकूपरहरोग्यानबेरा

कै म्रूल त्तौजे व्राहि कादास निज नांव परताप स्रूसं
तेजन कालकै सी सिगाजे १४ रामप्रतापलै घिस
सब पीसीया दीसी या दल मैं साच पारी रामप्रताप
तैसुब बिसुष प्रगट्यू रामप्रतापतैकुबबिटारी रा
मप्रतापलैं ग्यांन प्रकासीया नासी याकी मन्न्नर्क्रो
धसारा ग्यौंक दास त्त्यब रामप्रतापतै न ऐसंसा
रसं सहज पोरा १५ रामकै रटिजन
रामपद पाइहैं जाइ जगदीस जांहांत्त्या परा जे राम
कै रटि जन राम कै पर सिहैं बरसिहैं न रतां हांगि
गा ति गाजे प्रेम प्रत्तावप्रबल सै प्रीति निति चित
चरणार बिधलीन क्रीवा व्राहि कादास गुरदेव प्र
तापसं त्त्याप सं त्त्याप मिलि नां हि जुवा १६ सब

दसेसुरतिमिलिसंगिचालीसहीत्रमजंजालस
बनासकीयारांमहीरांमरकारकी धुनिस्रुसुनिका
म्हलकेसहजलीया॥सुरतिअरसबददोउगिग
निमेमगनहेसघनबदजोहानीरबरसे॥वारिका
दासबिलासदेहअगमघरिपेध्यानकीजुगतिबि
निनाहिदरसे॥१७॥सबदकीघोरसेचोरसबन्ना
जीयागजीयाजिगनिचढिसतसुरा॥अगमफुणका
रआनंदमईहोइरहीबजेबोहोरीतिअनहदतुरा
आतमाजाइपरमातमांपरसीयाबरसीयापिवब
जांहाप्रेमपाणी तासम
बिचिरांमप्रतापकी
णका

नारकादास सरनंग इकरांमजी नी स्रग
दहुदा मांहि जु वा॥ ग्यै गरकेरे ग रक जुरगं
मभे ग रके है फ रक स सारस्र रहत जो गी॥ क
नक स्त्र रको मैं गी दो रह को त्याग है त्र जति वे राग
रस ब्रह्म नो गी॥ ब्रह्म रस पू रिया लो पी या प्री
ति स जी ति जु ग ग्राम बिश्राम पाया॥ पाइ बि
स रांम निरंजन निरभै भया जां हां न ही पउजे
है रे म काया॥ काया के पार कर तार न॥
जो कहे ह सरो दि ह मेना हि स्रावे॥ दारिक
दास प्रकास गुर गम तैरो महीरो मम मे रांम गावे॥

दिषीयानरिजांहातेरम्र
घुरेनादबोहोरीतिकारागगावे॥सुणतमनम
सघनसुषबिलसैहेदेह कानेहसबछाकि
कादासचढिसुनिकासिषरपरिपूरण
...नागलेक ...मबसत्रतज्योमग
नमहकबनिजपीवपाया॥पीवप्रमालमांप्रेम
बहेसेवसाचीजाहोनहीमाया मायात्र्प्ररम

हि गावै ॥ सेदनतै अगमबोनि
सकौ लै न्हर नर सूरि सब मांहि
रजौ लौ दकोइ नाहि पावै मन २
दास गुर नहीं चितकौ चितवनि
से है ॥ देवको मन हरि संतोषत
तिहै मांति है सा च करि रीति कोइ
कौ मन नालो मन नहीं जामकै जबही
बहीं ॥ मांति संतोष और सोच सुमर
कौ यौ मन मीन मोर हे ते हरि
कादा सब दास समार सरकि पति पाइ
तिन मै ॥ [illegible] बैराग का ख्यात

ताजुगुति बिनिजिष्टिहोइ बागञ्न
लकी कैदारूषसमसांनजोरहत
बिचारञ्ज्ञरनजनप्रब्रह्मकोसीसप
नितिराषों पारिकादासनाककछ
नहा
अरसंतसबलोगजाषे॥२३॥ञ्ना
तवैरागकैधारीऐमारीऐमनकेबेजि
मारेतबेतनघरिहोइहेतनकैघरिनहीं
स्वादसंगारसुषछाडीऐजीवका प्री
ानधरिगपांनपावे॥ ङजुमाइ
के
के

लै है सुषिम अर थूल को फल फल प
मूल कौ साषि म नगाइ गुर सबद क
बद षि नि अोर कारो राम को नाव गुर
नितु संत सुष देव अरू बेद गावै वा
चारि षो होरी ति सू राम ही राम सू ध्या
राम ही राम को ध्यान जन धरत है से सु
सारे बेद सो साषि इक नाव का नाषि है
सब भ्रम मारे भ्रम अर क्रम में जग
झी या सु लझी या साध सो राम गावै
स निवास न यो जा सक को होर
अोवै ३० राम को नाव निजपी
अोर सब स्वाद जग जहर रूपी

त्रातिकीरीतिसेंजनकरि [illegible]
नसबबोइकैरो कोधन्नरकहरि [illegible]
रेकरिमहरिदिलपाककरिहोइकैरो [illegible]
पपरिन्नरप्रतिन्नलहहलेसामसिर [illegible]
हैलो कारिकादासनरदेह [illegible]
सरणिहोइनागमबेले ३५ रामसे [illegible]
वकेपरहरोदेषिदोजिगको [illegible]
नमेइनसगिपरतहेभरतनहीधार [illegible]
मुगपातालनरलोककेजीवसब [illegible]
कोइनधारे कारिकादासगुर [illegible]
भंधसंसारसबढबकभार ३६ [illegible]
कोपारपावेनहीजगतिके [illegible]

क्तिकी रीति सै जतन करि राम को काम को सं
रसनबोइहारै॥ को अन्तर कहरि की लहरि लें
के करिम रहमि दिल पाक करि होइ रहै॥ रसरका मु
परिनूर अति नलहले स्याम सिर ऊपर है हाथ
रहे सो हरि का दास नर देह को लानत है सतगुर
रनि होइ अनाम बेले॥ ३५॥ राम सबै लि मन पा
के परहरी दे बिदा जिग को मूल है॥ जीव जजा
में जन सवि परत है धरत नहीं धीर नर अमरलके
ग पाताल नर लोक के जीव सब पीव को ध्यान ।
इन धारै॥ हरि का दास गुर ग्यान प्रकास बिनि
अंसमार सब ठबक मारै॥ ३६॥ जनम अर मरण
पार पावै नहीं जगति कछो किने अमैल

मैं कै सबो है. री तिकैल. नहैं जोति जगत। मेजि
फिरत सोउ. ग्रंथं कें पथ को। स्तोके ज्ञिनाप
मैं फिरत सद मत जे. ग्रंथ स्त्यो वारिकाद
सप्र. सल हीय धानको। वोस पदछ। सै कैत्रि कि
स्न्त्वा ३ ७ दषि रदेषि संसार स्तु पक्षा रहैम
य्यामें कु है. नोहन्नाई देषि दसकें ध्रनु जबी स
कोमाद। ह. कनि. कै कै. हन्न नस संदषाई लंके
स. त. हकोर. जनर नागते जागत है नसैकेनज
मैं ग्रंथ नर रांन प्रताप जोगद. नहीं माहि स्वघर
हृदीयैक. लप रामें जगत स्तु प्रस्रवह गरी
मध्य कल. ग्रंत वेरांन को होर. जको. ये। घरि
कै दासचित. स्कार कहत है रांन बिनो ग्रुगौ.

भ्रुगि जीये॥ ३० ॥ भ्रिगिरे भ्रुगिनर राम बिनि जरो
त मे धनन्नरधाम का मान का चा देषि लके सव
री ति ऐसी न एे न तका बार मब नयापा ठो
कनककीलकछिनिक मे पार की पूत न्याती जते
कालषाया॥ न्नापक न्ने तिकुछिक फन न्नीनामि
त्योनिस्त ऐसा कीया देषिमाया॥ राम बिनि न्नीव
कनाहि कोई न्नासरो केरवा जाद वा देषि सारा वा
रिकादास प्रत्याग करि जगत सुष राम के सुमरिन
र होइ पारा॥ ३१॥ हे वराही सकल कारन्नति के ज
रा बिबधि बिधि नाद न्नी सांण बाजे पीवि मातंगकी
न्नापन्नासए कीयां बो होत सैन्यापती संगि राजे तो
क मे थो क

ते जाती। मं.१ अमरारअरबो.. नपाइकसै
ऊकमसेचाहिजो नाइसारी नाहिनौजोबन
अम्रगप. सहीसांमअरसातदपछुलपावे
रिकादास ५ कंरांमकीलगातिबिलिहोइबेरांनै
मप.रिजाव ४७ जगतकैमांहि जंजालबोहे
र..नकाजीवफालतांहिहरिनांवजाल्यौ ऐहधन
५.सअ्रतनारेसुनसंसौ मुठअपणाइमाहि
उथजाल्यौं सुपक.सरकनई.सुपलमैंपाइहै
रिलसे.स गालिपासिलेवै कारिकादासरदा
सहोइजगातसंसा.तकेहिरि.सपदक्यांनलेवै
४८ कामिहैलाहि.समनप..कर.स्यासकीजास
सी.प्रीतिलंगवाकैजावै ..न.नअसरध्या.नबैरागै

नगहाइ ह्रकसंसारसं हेतल्यावै॥सांच अरसी॥
लसंतोष नीजातहै षातहैं कालनरषुवार होइ॥
द्वारिकादासउदासतातेरहो रामकोभजनकरिवे
षषोइ॥४१॥कालेलता॥ कंमअरकालकी जाल
असरालहैहोइ वकृलसंसारषाया. तीनहीलो
कआधीनएहकालकेसकलबुह्माकसोदेषिना
या॥सुषिमअरथूलअसथलछोकैनहीष्यरहैरे
वुचिसेदेवदेषो॥द्वारिकादासरटिरामनिरवाण
पदवचतवरीयामकोइसतएको॥४२॥
कालबलेबानकेपेलिचोगानमेहोइसु
नमुषिनिजनावलेवैा॥भ्रमअरकंमसवछाकीएजी
वकापावकेहेतितनमनदेवे॥सारसाचेमतेषतमें
ऊपिरह्याजेगजामाजाहातेगवाजे॥

रिक)दासत पकैमनयांसव्व्वाव १ रामेव

रणकीसरणिम पुगीमेरीज्ञास इंदजि

नरडुंलजयः कर्दैव्वारकादस य

सवत १८ ७० समररत्न मांवगसुद सयतिवाग

त्रीजयति पोजतनगर कीयागोटको त्यार

तीनसंतमे होसनगरकेप्रताप

नगुरुदासीरामजी आग्याहीत्राप

दी रचुमेनारामजी षेमदासानजदास तीन

सतकैसीषामदी हरदैनीयाऊलास थान